श्री

काव्य शिक्षा सटीक

तीसरा भाग ।

छन्द वर्णन ।

जिसमें-छंद भेदोपभेद, मात्रा विचार, शुभाशुभ दग्धाक्षर, सूची, प्रस्तार नष्ट उद्दिष्ट, गणागण विचार, छन्द नियम, तदु-परान्त मुख्य २ त्रिविध प्रचलित छंद,—सरल लक्षण, भावार्थ, उदाहरण सहित वर्णित हैं

जिसे

सय्यद हैदरशाह, उपनाम शाह कवि,

ग्राम पीहार, तहसील वा डाकघर नर्वल,

प्रांत कानपुर निवासी ने-

अपने परम प्रिय काव्य प्रेमी नवशिक्षित विद्यार्थियों

के लाभार्थ रच कर

अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छपा कर

प्रकाशित किया ।

सुकबि होहिं यहि पढ़ि सब कोऊ ।

ईश्वर कृपा बचन फुर होऊ ॥

प्रथम बार ५०० प्रतियां   मूल्य ।) आना

समर्पण ।

१-श्रीयुत विज्ञ गुणज्ञ बुध! राम चरण पितु रूप ।
नमि सादर दशमी बिजै, भेंटत भेंट अनूप ॥ १ ॥
२-ग्रंथकाव्य शिक्षा मधे, भाग तीसरो छन्द ।
होहिं उपस्थित शरण सो, ग्रहण करिय सानन्द ॥ २ ॥
३-यदपि आप जानत सकल, छंद प्रबंध सुपंथ ।
तउ न अजीरण होइ है, यह छोटो सो ग्रंथ ॥ ३ ॥
४-नहिं कवि नहिं कोविद कछू, नहिं भाषा को ज्ञान ॥
बचन तोतरे बाल के समुद सुनिय दै कान ॥ ४ ॥
५-अधिक काह बिनती करौं, आप अहौ सरवज्ञ ।
है भरोस अपनाय यहि, करिहौ शाह कृतज्ञ ॥ ५ ॥

सेवक (शाह)

काव्य शिक्षा।

तृतीय भाग—छन्द वर्णन

पाठ १

छन्द का लक्षण।

दोहा—बरण मत्त यति गति नियम, पद समता अवसान।
वेद चरण रचना रुचिर, छंद शाह सो जान ॥१॥

भावार्थ—मात्रा, वर्ण, यति, गति का नियम और पदान्त में समता जिस रचना में पाई जाती है उसे छन्द कहते हैं। प्रत्येक छन्द में वेद अर्थात् चार चार पाद वा पद वा चरण होते हैं।

छन्द के भेद।

दो०—मात्रिक वर्णिक दोय विधि, लौकिक छन्द विख्यात।
छंद जाति मात्रिक कहत, वर्णिक वृत्त कहात ॥२॥

तिनके पुनि सम, अर्द्ध सम, विषम, शाह त्रय भेद।
साधारण दंडक उभय, सम के गुनि उपभेद ॥३॥

भा० छन्द दो भांति के पाये जाते हैं, एक वैदिक, दूसरे लौकिक। वैदिक छन्दों का काम केवल वेदादि अध्ययन करने में पड़ता है, और अन्य समस्त काव्य लौकिक छन्दों में ही पाये जाते हैं। अतएव इस ग्रंथ में लौकिक छन्दों का ही वर्णन किया जाता है।

छन्द दो प्रकार के हैं, मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक को जाति वा छन्द और वर्णिक को वृत्त कहते हैं। फिर मात्रिक और वर्णिक के तीन तीन भेद हैं, सम, अर्द्ध सम और विषम। और फिर मात्रिक, वर्णिक सम के दो दो उपभेद हैं, एक साधारण दूसरे दंडक।

दो० मात्रा सम चहुं पदन में, छंद मातरिक होय।
तुल्य बरण चारो चरण, वर्ण वृत्त है सोय ॥४॥

चहूं चरण सम कल वरण, तिहिं सम कहि कविगीत ।
इक तय द्वै चौ पाद सम, छंद अर्द्ध सम होत ॥५॥
सम नहिं चारों चरण जहँ, विषम जानिये ताहि ।
इक तें बत्तिस मत्त लौं, कल सधारण आहि ॥६॥
इक तें छब्बिस बरण लौं, वर्ण सधारण मान ।
बत्तिस छब्बिस तें अधिक, दंडक शाह बखान ॥७॥

भा०—जिस पद्य के चारों चरणों में मात्राओं की संख्या का प्रमाण एक समान हो, वर्ण चाहे जितने हों उसे मात्रिक छन्द कहते हैं, जैसे—दोहा चौपाई, छन्द, सोरठा आदि । और जिस पद्य के चारों चरणों में वर्ण संख्या और उन वर्णों के गुरुत्व लघुत्व का क्रम एक सा मिले उसे वर्ण वृत्त कहते हैं, यथा—नगस्वरूपिणी, भुजंगप्रयात, तोटक, सवैयादि ।

जिस छन्द वा वृत्त के चारों चरणों में मात्रा वा वर्णों की संख्या समान रहती है उसे सम कहते हैं, । और जिसके पहिले, तीसरे अर्थात् विषम चरण एक समान हों, और दूसरे, चौथे अर्थात् सम चरण एक समान हों उसे अर्द्ध सम कहते हैं, । और जिसके चारों चरण बराबर न हों उसे विषम कहते हैं । मात्रिक में प्रति पद ३२ मात्राओं तक के जो छन्द हैं वे साधारण और ३२ मात्राओं से जो अधिक हैं वे दंडक कहाते हैं, और वर्ण वृत्तों में २६ वर्ण तक साधारण और उनसे अधिक वर्ण वाले दंडक कहाते हैं । दंडक अर्थात् दंडकर्त्ता कहने का प्रयोजन यह है कि इनके पदों के उच्चारण करने में मनुष्यों की सांस भर आती है, यही एक प्रकार का दंड कहने मात्र को है ॥

पाठ २

लघु गुरु मात्रा बिचार ।

ह्रस्व वर्ण के उच्चारण करने में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं । यथा—अ, इ, उ, ऋ, क, कि, कु इत्यादि (इसी प्रकार और भी जानो) । मात्राओं की गणना में इनकी एक ही एक संख्या मानी जाती

है। छन्दः शास्त्र में ह्रस्व वर्ण को लघु कहते हैं। उसकी एक मात्रा मानी जाती है। लघु का रूप ऊर्ध्व रेखा (।) द्वारा प्रकाशित किया जाता है। इसके अन्य नाम ल, ला, लो, लौ, इत्यादि हैं।

दीर्घाक्षर के उच्चारण करने में जो काल लगता है उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं, यथा—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः इत्यादि (इसी प्रकार और भी समझो)। मात्राओं की गणना में इनकी दो २ संख्या मानी जाती है। छन्दः शास्त्र में दीर्घाक्षर को गुरु कहते हैं, उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं। गुरु का रूप वक्र रेखा (ऽ) द्वारा प्रगट किया जाता है, इसके अन्य नाम ग, गा, गो, गौ इत्यादि हैं। गुरु और प्रकारों से भी माने जाते हैं। यथा—

दो०—आदि सँयोगी बिन्दु युत, विसर्गादि गुरु होय।
कहुं पदान्त में कल्पना, करत शाह कवि कोय।

भा०—संयोगी वर्ण के आदि का लघु वर्ण गुरु होता है, यथा—मत्त, सत्य, धर्म्म, कर्म्म इत्यादि, यहां म, स, ध, क, गुरु माने जायँगे, परन्तु कहीं २ संयोगी के आदि का लघु भी लघु ही माना जाता है, यथा—कन्हैया जुन्हैया आदि यहां क, जु, लघु ही माने जायँगे, कारण कि क वा जु के उच्चारण में अधिक काल नहीं लगता।

जिस वर्ण के ऊपर अनुस्वार हो वह भी गुरु है, यथा—संत, अंग, आदि यहां स, अ, गुरु माने जायंगे। परंतु यदि अर्द्ध चन्द्र बिन्दी हो तो गुरु न माना जायगा, यथा-जहँ तहँ आदि, यहां, ज, त, लघु ही माने जायँगे।

जिस वर्ण के आगे विसर्ग हो वह भी गुरु है, यथा—दुःख, सुःख, इत्यादि यहां दु, सु, गुरु माने जायँगे।

संस्कृत में कहीं २ आवश्यकतानुसार पदान्त में लघु को भी गुरु मान लेते हैं, यथा "पद्मान्त पद्म भव शाह विभोनमामि" यहां अंत्याक्षर "मि" गुरु माना जायगा, कारण कि यहां उसको गुरु मानने की आवश्यकता है। इसी प्रकार भाषा काव्य में पदान्त अथवा यमकालंकार एवं

छन्द की शुद्धता के अर्थ कवि लोग यदा कदा व्याकरण की भी उपेक्षा कर निजेष्ट संपादित करते हैं, अर्थात् हल् को सस्वर, दीर्घ को ह्रस्व, ह्रस्व को दीर्घ मान लेते हैं, यथा—पद्म की जगह पदम, सीय की जगह सिय और हंस की जगह हंसा इत्यादि (इसी प्रकार और भी जानो)। परंतु ध्यान इस बात का रहे कि जहां लघु वर्ण माना जाता है वहां उसकी एक मात्रा मानी जाती है और जहां गुरु माना जाता है वहां उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं। वर्ण का गुरुत्व अथवा लघुत्व उसके उच्चारण पर निर्भर है। यथा—

अर्द्धाली—गुरु कहँ लघु गुरु लघु को पढ़ै। सुख समेत जो मुख सों कढ़ै ॥२॥

भा०—यदि वर्ण गुरु हो और मुख से उसका उच्चारण लघु की भांति होवे तो लघु ही माना जाता है, और यदि वर्ण लघु हो और उच्चारण गुरु का सा होवे तो गुरु ही माना जाता है।

मात्रा को मत्त, मत्ता, कल, कला, भी कहते हैं।

पाठ ३

शुभा शुभ दग्धाक्षर वर्णन।

कवियों को काव्य करते समय अक्षरों के शुभा शुभ फल पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

दोहा—यश कस चख धज दक्ष घन, छडग स्वरौ शुभ जान।
पांच झहर भष दग्ध गनि, चौदा अशुभ बखान ॥१॥

भा०—क, ख, ग, घ, च, छ, ज, ड, द, ध, न, य, श, स, क्ष, ये पन्द्रह अक्षर और स्वर जिन को संस्कृत में अच् कहते हैं सब शुभ हैं परन्तु ऋ ऌ ॡ का प्रयोग भाषा में प्रायः नहीं होता। और ङ, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष, ह, त्र, ज्ञ, ये अशुभ हैं। इन २१ अशुभाक्षरों में से भी भाषा कवियों ने झ, भ, र, ष, ह, पांच अक्षर मुख्य चुन लिये हैं, जो अति वर्जनीय हैं और दग्धाक्षर कहलाते हैं।

दो०—धरहु छन्द के आदि नहिं, अरण झहर भष पांच।
मङ्गल सुर बाची गुरू, धरे न आवै आंच ॥२॥

भा०—पद्य के आदि में झ, भ, र, ष, ह, इन पांच दग्धाक्षरों का रखना महादोष है, यदि रक्खे तो गुरु कर देवे अथवा सुर वा मङ्गल वाची शब्द रक्खे ऐसा करने से दग्धाक्षर का दोष मिट जाता है। यथा

दो०—झार खंड किहिं लगि फिरत, कत धावत चहुं धाम।
शाह क्यों न निज हिय लखै, घट घट बासी राम ॥१॥

इस के आदि में झकार दग्धाक्षर है परन्तु गुरु होने से अदोष है।

दो०—भरत राम रिपुहन लखन, सीय सहित हनुमान।
जन्म २ बसि शाह हिय, करत रहिय कल्यान ॥२॥

इस के आदि में भकार दग्धाक्षर देव वाची शब्द के साथ में है अतएव अदूषित है।

दो०—रघुपति सियपति जगत पति, माया पति भगवान।
बिनय शाह की सुनब हित, देहु न अंगुरी कान ॥३॥

इसके आदि में रकार दग्धाक्षर है परंतु देव वाची शब्द के साथ होने से दोष रहित है।

दो०—षटमुख के गज मुख गिनत, हंसि २ लोचन मुंड।
शाह तेउ पग दाबि श्रुत, उनकी नापत सुंड ॥४॥

इसके आदि में षकार दग्धाक्षर है परंतु देव वाची शब्द के साथ होने से दूषण रहित है।

दो०—हरि ढूंढ़त हिय शाह छिन, छिन ढूंढ़त गिरि पांति।
भयो न एको ओर को, रजक श्वान की भांति ॥५॥

इसके आदि में हकार दग्धाक्षर है परंतु सुर वाची हरि शब्द के आदि में होने से निर्दोष है।

पाठ ४
प्रत्यय वर्णन

दल—प्रत्यय तें प्रगटत बिबिधि, संख्या छन्द विचार ॥१॥

भा०—जिसके द्वारा नाना प्रकार के छन्दों के विचार और संख्यादिक प्रकाशित हों उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।

सम्पूर्ण छन्दः शास्त्र में नव प्रत्यय हैं । उनके नाम ये हैं :—

जयकरी—सु प्रस्तार सूची खँड मेरु । नष्ट उदिष्ट मरकटी मेरु ॥
पुनि पाताल पताका जान । ये नव प्रत्यय शाह प्रमान ॥२॥

भा० १—प्रस्तार, २ सूची, ३ पाताल, ४ उद्दिष्ट, ५ नष्ट, ६ मेरु, ७ खंडमेरु, ८ पताका और ९ मर्कटी ये नव प्रत्यय हैं ।

इन में से प्रत्येक के आदि में मात्रिक वा वर्णिक शब्द संयुक्त कर मात्रिक वा वर्णिक दोनों प्रकार के प्रत्ययों का बोध कर लेना चाहिये । परंतु इन नवों में से—

अर्द्धाली—समुझि लेहु सूची प्रस्तार । नष्ट उदिष्ट मुख्य ये चार ॥३॥

अर्थात्—सूची, प्रस्तार, उद्दिष्ट, नष्ट ये चार प्रत्यय मुख्य हैं। और एक ही रीति से मात्रिक वर्णिक दोनों प्रकार के सिद्ध होते हैं, अत एव क्रमशः उन्हीं चार प्रत्ययों का वर्णन आगे सूक्ष्मतया किया जाता है ॥ ।

१ सूची

दल—सूची तें प्रस्तार बिन छंद अंक को ज्ञान ॥१॥

भा०—जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के जितने छंद वा वृत्त बन सकते हैं उनकी संख्या बिना प्रस्तार जान लेने को सूची कहते हैं ।

सूची जानने की रीति ।

अर्द्धाली—सूची कलयुग पछली जोर । दुगुन बरण [illegible] धरु अगलो ओर ॥२॥

भा०--पिछले दो कोष्ठांकों का योग आगे के कोष्ठ में रखते जानेसे अभीष्ट मात्रिक सूची निकल आती है । और पिछले कोष्ठांक को दूना कर के आगे के कोष्ठ में रखते जानेसे अभीष्ट वर्णसूची सिद्ध होती है ।

परंतु इतना स्मरण अवश्य रहे कि प्रथम आड़ी और ऊर्द्धरेखा खींच कर एक अभीष्ट कोष्ठक बनालो । और पहिली आड़ी पंक्ति में १,२,३,४,५,६ आदि क्रमशः अभीष्ट संख्या लिखो और उसी संख्या के नीचे दूसरी आड़ी पंक्ति में सूची के अंक लिखो । मात्रिक सूची जानने के लिये पहिले तीन

कोष्ठक इस प्रकार भरो कि पहिले में एक, दूसरे में दो, और तीसरे में तीन का अंक लिखो, फिर चौथे कोष्ठ से अभीष्ट कोष्ठक उक्त नियमानुसार भरलो। और वर्णसूची जानने के लिये पहिले कोष्ठ में दो का अंक लिखो, फिर अभीष्ट कोष्ठक उक्त रीत्यनुसार भरलो।

उदाहरणार्थ ९ संख्या तक की सूची नीचे लिखी जाती है।

संख्या मात्रा वा वर्ण की	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मात्रिक छन्द संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५
वर्ण वृत्त संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२

इस कोष्ठक से जाना गया कि ६ मात्राओं के १३ छंद और ४ वर्णों के १६ वृत्त बनते हैं। इसी प्रकार और भी जानो।

२ प्रस्तार।

दो०--सु प्रस्तार ते रूप सब छंद अंक के जान ॥ १ ॥

भा०--जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के जितने भेद हो सकते हैं उन के रूप दर्शाने को मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार कहते हैं।

प्रस्तार निकालने की रीति यह है--

पद्धटिका--लघु धरौ आदि गुरुतर निशंक। करि नकल दाहिने बाम अंक॥
करि बरण २ कल २ समान। प्रस्तार अंत सब लघु प्रमान॥

भा०-- आदि गुरु के नीचे लघु लिखो, फिर दाहिनी ओर जितने स्थान खाली हों उनमें वैसेही चिन्ह लिख दो जैसे कि ऊपर हैं, फिर बाईं ओर जितने स्थान ख़ाली हों उनमें गुरु के चिन्ह लिखो। वर्ण प्रस्तार में लघु गुरु का बिचार न करते हुए यह स्मरण रक्खो कि प्रत्येक भेद में वर्ण समान रहें अधिक न हों। और मात्रिक प्रस्तार में इस बात का ध्यान रक्खो कि प्रत्येक भेद में पहिले भेद के बराबर मात्रा हों, अधिक न हों, यदि किसी भेद में बाईं ओर गुरु लिखने से एक मात्रा बढ़ती होतो गुरु न लिखकर केवल लघु ही लिखो। जब तक सर्व लघु न आ जावें, तब तक यही रीति करते जाओ, जब सर्व लघु आ जावें तो उसी को अंतिम भेद जानो॥

परंतु स्मरण रहे कि वर्ण वृत्तों में प्रथम भेद सर्व गुरु का होता है। और मात्रिक छंदो में सम कलों अर्थात् २,४,६,८, इत्यादि का प्रथम भेद सर्व गुरु का और विषम कलों अर्थात् १,३,५,७, इत्यादि में प्रथम भेद इस प्रकार लिखा जाता है कि प्रथम लघु लिखकर फिर उसके आगे (दाहिनी ओर) जितने गुरु अवश्य हों लिखे जांयगे, जैसे ।, ।ऽ, ।ऽऽ, । ऽऽऽ इत्यदि ये सब प्रथम भेद हैं।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण प्रस्तार दिया जाता है।

मात्रिक प्रस्तार ६ मात्राओं का

१				ऽ	ऽ	ऽ
२			।	।	ऽ	ऽ
३			।	ऽ	।	ऽ
४			ऽ	।	।	ऽ
५		।	।	।	।	ऽ
६			।	ऽ	ऽ	।
७			ऽ	।	ऽ	।
८		।	।	।	ऽ	।
९			ऽ	ऽ	।	।
१०		।	।	ऽ	।	।
११		।	ऽ	।	।	।
१२		ऽ	।	।	।	।
१३	।	।	।	।	।	।

वर्ण प्रस्तार ४ वर्णों का

१	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
२	।	ऽ	ऽ	ऽ
३	ऽ	।	ऽ	ऽ
४	।	।	ऽ	ऽ
५	ऽ	ऽ	।	ऽ
६	।	ऽ	।	ऽ
७	ऽ	।	।	ऽ
८	।	।	।	ऽ
९	ऽ	ऽ	ऽ	।
१०	।	ऽ	ऽ	।
११	ऽ	।	ऽ	।
१२	।	।	ऽ	।
१३	ऽ	ऽ	।	।
१४	।	ऽ	।	।
१५	ऽ	।	।	।
१६	।	।	।	।

इसी प्रकार और भी जानो।

३ उद्दिष्ट ।

दो०—उद्दिष्टहिं तें जानिये छंद रूप को अंक ॥ १ ॥

भा०—मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार के दिये हुए किसी भी रूप की—भेद संख्या बताने को उद्दिष्ट कहते हैं ।

उद्दिष्ट जानने की रीति यह है ।

दोहा—सो उदिष्ट छन्दांक में गुरु अंकिनि करि दूरि ।
वरणअर्द्ध कल गुरु जहां शिर पग सूची पूरि ॥

भा०—सूची के अंकों में से गुरु चिन्हों के ऊपर जितने अङ्क हों उनको जोड़ कर सम्पूर्ण छन्दांक (जैसे ४ वर्णों का छंदांक १६ है और ६ मात्राओं का छंदांक १३ है इसी प्रकार और भी जानो) में घटाओ जो शेष रहे उसी को उत्तर जानो । वर्णोद्दिष्ट में इतना ध्यान रक्खो कि पूंछे हुए रूप के ऊपर सूची के अङ्क आधे २ लिखो अर्थात् २, ४, ८, १६ के बदले १, २, ४, ८, इत्यादि । और मात्रिकोद्दिष्ट में सूची के अङ्क पूरे २ लिखो अर्थात् १,२,३,५,८,१३ इत्यादि, परंतु जहां २ गुरु के चिन्ह हों उनके शिर पर और पगतल अर्थात् ऊपर तले दोनों स्थान में सूची के अंक लिखो और लघु के केवल शिर ही पर लिखो, यह नियम मात्रिकोद्दिष्ट ही में है वर्णोद्दिष्ट में नहीं ।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण उद्दिष्ट दिया जाता है ।

—मात्रिकोद्दिष्ट—

छै मात्राओं का यह कौन सा भेद है ? ।

(ऽ । ऽ ।)

```
        १ ३ ५ १३
प्रक्रिया ऽ । ऽ । =१३—(१+५)
        २   ८
```

=१३—६=७

∴ उत्तर ७ भेद है

—वर्णोद्दिष्ट—

चार वर्णों का यह कौनसा भेद है।

(ऽ ऽ । ।)

```
        १ २ ४ ८
प्रक्रिया ऽ ऽ । । =८
```

पूरी सूची ८×२=१६

१६—(१+२)=१६—३=१३

∴ उत्तर १३ वां भेद है

इसी प्रकार और भी जानो—

४ नष्ट ।

दो०— नष्टहिं तें छन्दांक को कहत रूप निरशंक ॥ १ ॥

भा०— मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार के किसी भी भेद संख्या के रूप बना देने को नष्ट कहते हैं । नष्ट जानने की रीति यह है—

जय०—नष्ट प्रश्न हरि छंदनि अंक । शेष तुल्य करि लिखिये अंक ४
वरण अर्द्ध कल सूची पूर । गुरु कर अगिली कल कर दूर ॥ २ ॥

भा०—पूछे हुए अंक को छंदांक (जैसे ४ वर्णों का छंदांक १६ और ६ मात्राओं का छंदांक १३ है ऐसे ही और भी जानों) में से घटाओ, जो शेष रहे उस अंक के बराबर दाहिनी ओर से बाईं ओर को जो २ अंक घट सकते हों उन्हीं को गुरु कर दो और जो अंक रह जावें उन स्थानों को लघु रूप का स्थान समझो । वर्ण नष्ट में सूची के अंक आधे २ लिखो अर्थात् २,४,८,१६ के बदले १,२,४,८, इत्यादि और मात्रिक में क्रमानुसार पूरी सूची लिखो जैसे १,२,३,५,८,१३ इत्यादि और मात्रिक में इतनी बात का विशेष ध्यान रक्खो कि जो २ अंक गुरु हो जावें उनके आगे की एक २ मात्रा मिटा दो ।

परन्तु जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के प्रस्तार के जिस भेद का रूप निकालना हो उतनी कल्पित मात्रा वा वर्ण के समान लघु रूप लिख कर ही उनके शीर्ष पर सूची लिखनी चाहिये ।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण नष्ट लिखा जाता है।

मात्रिकनष्ट	वर्ण नष्ट
छे मात्राओं में ८ वां भेद कैसा होगा?	चार वर्णों में ११ वा भेद कैसा होगा?
	१ २ ४ ८
१ २ ३ ५ ८ १ ३	। । । ।=८×२=१६ पूरी सूची
। । । । । ।=१३—८=५	१६—११=५
। । । ऽ ० । पूछा हुआ रूप	ऽ । ऽ । पूछा हुआ रूप

ऐसे ही और भी जानों

पाठ ५

गण प्रकरण ।

विदित हो कि मात्रिक छन्दों के गण पांच होते हैं, टगण, ठगण, डगण, ढगण, णगण । परंतु आज कल इन की विशेष आवश्यकता न देख, केवल वर्ण गणों का ही वर्णन किया जाता है ।

तीन २ वर्णों का एक २ गण होता है, ऐसे गण आठ हैं, वे सब नीचे लिखे जाते हैं ।

वसंत तिलका—मो भूमि श्री मिलत नो दिन सुःख कीजै ।
भो चन्द्र शाह यश यो जल वृध्य लीजै ॥
जो सूर्य शोक प्रद-रो अगिनी जरावै ।
सो वायु देइ भ्रम तो नभ शून्य पावै ॥१॥

भा०—इसकी टीका के लिये निम्नांकित कोष्ठक देखिये ।

क्रम संख्या	गणनाम	देवता	फल	रेखारूप	उदाहरण गणाक्षरों में	उदाहरण अन्यक्षरों में	संकेताक्षर
१	मगण	पृथ्वी	श्री	ऽ ऽ ऽ	[illegible]	[illegible]	म
२	नगण	दिवस	सुख	। । ।	नगन	कमल	न
३	भगण	शशि	यश	ऽ । ।	भागन	मोहन	भ
४	यगण	जल	धनद	। ऽ ऽ	यगाना	बिहारी	य
५	जगण	रवि	शोक	। ऽ ।	जगान	मुरारि	ज
६	रगण	अग्नि	जारक	ऽ । ऽ	रागना	राधिका	र
७	सगण	वायु	भ्रम	। । ऽ	सगना	गिरिजा	स
८	तगण	व्योम	शून्य	ऽ ऽ ।	तागान	गोपाल	त
	गुरुवर्ण	...	...	ऽ	गा	रा	ग
	लघुवर्ण	...	...	।	ल	म	ल

छन्दः शास्त्र में "म, न, भ, य, ज, र, स, त, ग, ल" इन्हीं दशाक्षरों द्वारा (जो अष्ट गण और गुरु लघु के सूचक एवं संकेताक्षर हैं) कार्य्य सम्पादन होता है ।

उपर्युक्त आठों गणों के केवल रूप स्मरणार्थ यह दोहा भी कंठस्थ कर लेना योग्य है ।

दो०—आदि मध्य अरु अन्त लघु, क्रमशः य,र,तामान ।
भ,ज,सा,में गुरु मानिये, म,न, तिहुं गुरु, लघु जान ॥ २ ॥

भा०--जिस त्रिवर्णात्मक समुदाय के आदि में मध्य में और अंत में

। ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ ।

लघु वर्ण हो उसे यथा क्रम "यरत" अर्थात् यगण, रगण, और तगण कहते हैं । वैसेही जिस त्रिवर्णात्मक समूह के आदि में मध्य में और अंत

ऽ । । । ऽ । । । ऽ

में गुरुवर्ण हो उसे क्रमशः भ, ज, स, अर्थात् भगण, जगण, और सगण कहते हैं । और जिस त्रिवर्णात्मक समूह के तीनों वर्ण गुरु और लघु हों उसे

ऽ ऽ ऽ । । ।

यथा क्रम "म,न" अर्थात् मगण और नगण कहते हैं ।

गण गणना नियम ।

वर्ण वृत्तों में गण की गणना इस प्रकार करनी चाहिये कि आदि से लेकर तीन २ अक्षरों में गण घटित किये जावें, अन्त में जो वर्ण शेष रहें वे गुरु अथवा लघु होंगे ।

शुभाशुभ गण ।

दो०—म,न, भ,य, शुभ ज,र, स,त, अशुभ, शुभ कहि मङ्गल मूल ।
शाह आदि नर काव्य के, अशुभ धरहु नहिं भूल ॥ १ ॥

ऽ ऽ ऽ । । । ऽ । ।

भा०—आठ गणों में से "मन भय" अर्थात् मगण, नगण, भगण और

। ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ

यगण ये चार गण शुभ हैं और "जर सत" अर्थात् जगण, रगण, सगण,

ऽ ऽ ।

और तगण ये चार गण अशुभ हैं । नर काव्य रचते समय इस बात का अवश्य ध्यान रहे कि छन्द के आदि में कोई अशुभ गण न पड़ने पावे, क्योंकि कुगण पड़ने से छन्द की रोचकता नष्ट हो जाती है। अतएव प्रत्येक छन्द

के चारोंचरणों में से प्रथम चरण के तीन वर्णों में ही चार में से किसी एक शुभ गण का प्रयोग करना उचित है।

द्विगण विचार ।

यदि दैव संयोग से छन्द के आदि में कोई अशुभ गण पड़ ही जावे तो द्विगण का विचार प्रथम चरण के आदि के छः अक्षरों में ही कर लेना चाहिये, शेष चरणों में इनके बिचार की आवश्यकता नहीं।

दो०—मगण नगण ये मित्र हैं, भगण यगण गनि दास ।
उदासीन "जत" जानिये, रस रिपु करत विनास ॥ १ ॥

छप्पय—"मित्र मित्र" सिधि शाह, करत जय "मित्र दास" जुर ।
"मित्र उदासी" हानि, "मित्र रिपु" मित्र नाश फुर ॥
"दास मित्र" मिलि सिद्धि, "दास द्वै" देत हानि करि ।
"दास उदासी" क्लेश पराजय करत "दास अरि ॥
फल अल्प "उदासी मित्र" मिलि, दुःख "उदासी दास" दै ।
"द्वै उदासीन" मिलि अफलप्रद, "उदासीन" रिपु द्वेष भै ॥२॥

दो०—शत्रु मिलि शून्य फल, शत्रु दास प्रिय नाश ।
शत्रु उदासी शंक अति, शत्रु शत्रु मिलि नाश ॥ ३ ॥

यह उपर्युक्त सब विचार केवल नर काव्य के लिये है नकि दैव काव्य के लिये। क्योंकि दैव काव्य में अशुभ गणों का दोष नहीं माना जाता। अशुभ गण से यह अभिप्राय है कि जगण, रगण, सगण और तगण, जब पूरित शब्द हों, तभी दोष है। यथा—महान, बखान इत्यादि। यदि पूरित शब्द न हों किन्तु पृथक २ दो शब्दों के संयोग से इन चार में से कोई गण सिद्ध होता हो तो दोष नहीं है। यथा—तुलै न, करै न इत्यादि। ऐसेही और भी जानो।

गणागण विचार ।

दो०—मत्त छंद गुनि दोष गण, वर्ण वृत्त निरदोष ।
मंगल काव्य सु गान सुर, कछु न दग्ध गण दोष ॥

भा०—गणागण का दोष केवल मात्रिक छंदों में ही माना जाता है वर्ण वृत्तों में नहीं। यदि वर्ण वृत्तों में भी गण का दोष माना जाय तो

जिन वृत्तों के आदि में जगण, रगण, सगण और तगण हैं वे निर्दोष बन ही नहीं सकेंगे । हां ! जहां तक हो सके मंगल बाची शब्दों में ही भूषित किये आवें तो और उत्तम है । यदि ऐसा नियम न सध सकै तो कोई हानि भी नहीं । परन्तु मात्रिक छन्दों में भी मंगल बाची और देव बाची शब्दों तथा देव कथाओं के प्रसंग में दग्धाक्षर वा गणागण का दोष नहीं माना जाता । कहा है एक प्राचीन कवि ने—

दो०—इहां प्रयोजन गण अगण, और द्विगण को काहि ।
एकै गुण रघुबीर गुण, त्रिगुण जपत हैं जाहि ॥

पाठ ६

संख्या सूचक शब्दाः ।

काव्य में जहां कहीं संख्या दर्शाने का काम पड़ता है वहां कवि जन प्रायः संख्या सूचक शब्दों का ही प्रयोग किया करते हैं, अतः वे शब्द संक्षेपतः नीचे लिखे जाते हैं ।

० १ २
दो०—व्योम शून्य कहि चन्द्र इक, दोय पक्ष भुज नैन ।
३
अग्नि काल पुनि ताप त्रय, त्रिगुण राम शिव नैन ॥१॥
४
पाद वेद युग चार फल, वरण अवस्था चार ।
मुख बिरंचि के चार ही, आश्रम चार बिचार ॥२॥
५
कन्या इन्द्री शंभु मुख, पांचै कहियतु बान ।
यज्ञ भूत गति पांच ही, पांडव पांचै मान ॥३॥
६
राग शास्त्र अलिपद ऋतू, रस वेदांग छ ख्याल ।
७
मुनि सागर स्वर लोक गिरि, अश्व बार सत्र सात ॥४॥

८
योग याम बसु सिद्धि पुनि, दिग्गज कहिये आठ ।

९
अंक भक्ति भूखंड ग्रह, निधि नव करिये पाठ ॥ ५ ॥

१०
दश दिशा अरु दोष दश, रावण के दश भाल ।

नारायण अवतार दश, दश कहियतु दिक्पाल ॥ ६ ॥

११
सकल सुकवि जन के मते, एकादश शिव मान ।

१२
आभूषण रबि राशि को, द्वादश करत बखान ॥ ७ ॥

१३
परम भागवत किरण नदि, तेरह विश्वहि देव ।

१४
विद्या मनु चौदह रतन, भुवन चतुर्दश लेव ॥ ८ ॥

१५ १६
तिथि पन्द्रह षोड़श कला, संस्कार शृंगार ।

१७
द्वै संकेत मिलाय कै, सत्रह करु निरधार ॥ ९ ॥

१८ १९
अठरा व्यसन पुराण कहि, उन्निस द्वै संकेत ।

२०
नख बिंशति संख्या लिखी, शाह कबिन के हेत ॥ १० ॥

संख्या संकेतों के बदले उनके पर्य्यायी शब्द लिखने से भी दोष नहीं है । यथा—चन्द्र के बदले शशि, रवि के बदले सूर्य्य और इन्द्री के बदले गो इत्यादि ।

पाठ ७

छंद नियम ।

यदि सच पूछा जाय तो छंदों का सांचा जिह्वा है अर्थात जिह्वा के

सचे से ही छन्द बनते हैं और छन्दों की तुला श्रवण हैं। कहा है एक प्राचीन कबि ने-

दो०-तौलत तुल्य रहै न ज्यों, तुला कनक तिल आधु ।
त्योंही छन्दो भंग को, सहि न सकत श्रुति साधु ॥ १ ॥

अर्थात्-जैसे आधा तिल भी सुवर्ण तौलने से तुला तुल्य नहीं रहता वैसेही साधु कर्णों को अति अल्प भी छन्दो भंग सहन नहीं हो सकता । अतएव छन्द रचयिता को उचित है कि वह निम्न लिखित नियमों पर अवश्य ध्यान रक्खे—

१-किसी भी छन्द वा वृत्त की रचना के पूर्ब्ब उसकी ध्वनि अर्थात् चाल अथवा लय का भलीभांति अभ्यास कर लेवे और रच कर प्रत्येक छंद को विशेष कर सवैया, कवित्त, दंडक इत्यादि को अवश्य दुहरा कर पढ़े, कारण कि उनका सम्पूर्ण आशय चतुर्थ पद वा चतुर्थ पद के उत्त-रार्द्ध के आश्रित रहता है, जब तक चतुर्थ पद पढ़ने का समय आता है तब तक प्रथम तीन चरणों का सम्बन्ध ठीक स्मरण नहीं रहता, परन्तु दुहराने से सब आशय भलीभांति समझ में आ जाता है ।

२-दो०-धरहु निरर्थक शब्द नहिं, पूरण हित पद छंद ।
"ईर" पीर सब हरहिंगे, यथा शाह रघुनंद ॥ २ ॥

अर्थात्-पद पूर्णार्थ छन्द में निरर्थक अक्षर वा शब्दों का प्रयोग न करै, यथा-इस दोहे में मात्राओं की पूर्णता के अर्थ 'ईर' निरर्थक शब्द का प्रयोग किया गया है । यह निरर्थक दोष है । ऐसेही और भी समझो ।

दो०-अरुपद के अरु चरण सों, बरण मिलत यति भंग ।
शाह यथा श्री राम सी,-ता भजु सहित उमंग ॥ ३ ॥

अर्थात्-यथा संभव यति वा विश्राम परही छंद पद समाप्त करै, अन्य पद के अक्षर अन्य पद से न मिलने पावैं। यथा, इस दोहे के दूसरे दल में "सीता" शब्द का "ता" अक्षर दूसरे पद के साथ मिला हु-आ है । यह यति भंग वा छन्दो भंग दोष है । ऐसेही और भी जानो ॥

अब हम आगे ३६ प्रकार के उन मुख्य २ छन्दों वा वृत्तों का वर्णन करते हैं, जो आज कल बहुत प्रचलित हैं, और जिनका काम प्रायः भाषा

कविता में विशेष पड़ता है। उनका व्योरा इस भांति है, (मात्रिक) सम,—साधारण ८, दंडक १, अर्द्धसम ४, विषम २, और (वर्णिक) सम-साधारण १९, दंडक २, कुलयोग ३६ ॥

पाठ ८

सम प्रकरणम् ।

तत्रादौ

मात्रिक साधारण ॥

१ तोमर ।

लक्षण—तोमर रवी गल अंत ।

भावार्थ—तोमर छन्द के प्रत्येक पद में (रबि) १२ मात्रा होती हैं। अंत में (गल) गुरु लघु होते हैं। यथा—

उदाहरण—हे राम ! दाया धाम । कीजै दया बसुयास प्रभु ! दीनबंधु कहाय । करुदीन शाह सहाय ॥ १ ॥

२ पद्धटिका ।

ल०—पद्धटिका बसु बसु जगण अंत ।

भा०—पद्धटिका छन्द के प्रत्येक चरण में (बसु बसु) ८, ८ के बिश्राम से १६ मात्राएं होती हैं। अंत में जगण होता है। यथा—

उ०—करुणा निधान भगवान राम । करि कृपा देहु संतत बिराम ॥
हे प्रभु ! कहायतू दीन नाथ । करु शाह दीन जन को सनाथ ॥ २ ॥

३ चौपाई ।

ल०—चौपाई षोड़श ज,त, अंत न ।

भा०—चौपाई छंद के प्रत्येक पद में (षोड़श) १६ मात्राएं होती हैं अंत में (ज,त) जगण अथवा तगण न होना चाहिये—यथा—

उ०—कृपा धाम हे राम ! उदारा । कृपण भयो कस हमरिहिं बारा ॥
सम दरशी जग नाथ कहाई । अनुचर शाह लेहु अपनाई ॥ ३ ॥

सूचना—यदि इस छंद के चारों चरणों में अंत की एक २ मात्रा कम कर दी जावे अर्थात् अंत्याक्षर लघु रहे तो प्रति पद १५ मात्राओं का जय करी नामक छंद होता है। चौपाई आदि जो छंद चार पदों में लिखे जाते हैं उनके आधे अर्थात् दो पदों को अर्द्धाली कहते हैं॥

४ रोला।

ल०—रोला छंद विराम शंभु तेरा पर कीजे।

भा०—रोला छंद के प्रतिपद में (शंभु तेरा) ११,१३ के विश्राम से २४ मात्राएं होती हैं। अंत में गुरु लघु का कोई नियम नहीं है। यथा—

उ०—हे प्रभु! आनँदकन्द देहु आनन्द घनेरो। दीनदयाल दयाल होइ दीनहु तन हेरो॥ प्रणत पुकार तुरंत सुनन हारे भगवाना। अब जनि बैठहु शाहबेर अँगुरी दै काना॥ ४॥

५ नरेन्द्र।

ल०—छंद नरेन्द्र कला रवि यति करि, बरण अंत गुरु कीजै।

भा०—नरेन्द्र छंद के प्रतिपद में (कला,रवि) १६,१२ के विश्राम से २८ मात्राएं होती हैं अंत में गुरु होता है॥ यथा—

उ०— तुम हो राम चराचर स्वामी, हौं तेरो हौं चेरो।
तुमसों हमसों नाथ औरहू, है, संबंध घनेरो॥
तुम्हैं दीन जन भावत अतिशय, हौं अतिदीन कहायो।
शरणागत पालक बिलोकि प्रभु, शरण शाह तब आयो॥ ५॥

६ हरिगीतिका।

ल०—हरि गीतिका षोड़श दुआदश, अंत लघु गुरु दीजिये।

भा०—हरि गीतिका छंद के प्रतिपद में (षोड़श, दुआदश) १६,१२ के विश्राम से २८ मात्राएं होती हैं। अंत में (लग) लघु, गुरु होते हैं। इसकी ५,१२,१९,२६ वीं मात्राएं सदा लघु रहती हैं॥ यथा—

उ०—हे राम! यश धन धाम बहु विश्राम सँग विद्वान दे।
संतान सभ्य सुबुद्धि विद्या, स्वस्थता सनमान दे॥

निज भक्ति कविता शक्ति मंजुल, वृद्धि संतत कीजिये ।
औरौ न मांगेउं होउ जोउ सोउ, शाहसुख प्रभु दीजिये ॥ ६ ॥

७ चवपैया ।

ल०—साजौ चवपैया, दिशि, बसु, भूषण, अंतमांहिं गुरु लाई ।

भा०—चवपैया छंद के प्रतिपद में (दिशि, बसु, भूषण) १०,८,१२ के विश्राम से ३० मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु होता है ॥ यथा—

अच्युत अविनाशी, आनँदराशी, अजर अमर अविकारी ।
अव्यय असुरारी, अधम उधारी, अनुचर आरति हारी ॥
अज अलख अरूपा, अकल अनूपा अनघ अनंत अनामा ।
सच्चित् आनंदा, आनँदकन्दा, करौ शाह उर धामा ॥ ७ ॥

८ त्रिभंगी ।

ल०—ये छंद त्रिभंगी, दिशि बसुबसु रस, रचौ अंत महं धारि गुरू ।

भा०—त्रिभंगी छंद के प्रतिपद में (दिशि, बसु, बसु, रस) १०,८,८, और ६ के विश्राम से ३२ मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु होता है । यथा—

अनवद्य अकाया, अजित अमाया, अगुण अगोचर भेख धरौ ।
अद्वैत अभेदा, अखिल अखेदा, आदि अंत नहिं, देख परौ ॥
अनुचर अघ हरणा, अशरण शरणा, अनवच्छिन्न नित्त लसौ ।
सचराचर स्वामी, अन्तरयामी, सदा शाह के चित्त बसौ ॥ ८ ॥

सू०—यदि इस छंद के प्रतिपद के अंत में आठ २ मात्राएं और बढ़ा दी जावें तो १०, ८, १४ और ८ मात्राओं के बिश्राम से प्रतिपद ४० मात्राओं का मदनहर दंडक हो जाता है ।

पाठ ९

वर्ण साधारण ।

१ श्लोक ।

ल०—श्लोक योग लगौ षड्ग । अरव ला सम पाद कौ ॥

भा०—श्लोक के प्रतिपद में (योग) ८ वर्ण होते हैं । (लगौ) पांचवां वर्ण लघु और (षड्ग) छठवां वर्ण गुरु होता है । और सम अर्थात् द्वितीय

चतुर्थपदों में (अश्च ला) सातवां वर्ण भी लघु होता है। इसके अतिरिक्त अन्यवर्णों के लिये कोई नियम नहीं है। यथा—

उ०—दीनानाथ दयासिन्धु। शान्तरूप रमापते! ॥
शाह चित्त बसौ नित्य। विष्णु श्रीकमलापते! ॥ १ ॥

सू०—इस वृत्त का लक्षण एक पद में पूर्णतया सन्निवेशित न हो सकता था, अतः विवश दो पदों में लिखा गया, पाठक कोई भूल न समझें।

२ प्रमाणिका।

ल०—प्रमाणिका जरौ लगौ।

। ऽ ।   । ऽ ।
भा०—प्रमाणिका वृत्त के प्रतिपद में (जरौ लगौ) एक जगण, एक रगण,
 ।   ऽ
एक लघु और एक गुरु होता है। यथा—

उ०—अनादि आदि कारणं। अनेक भक्त तारणं ॥
अनीह शाह श्री निधे।। दयालु होहु श्री विधे! ॥ २ ॥

सू०—इसे नगस्वरूपिणी भी कहते हैं।

३ इन्द्रवज्रा।

ल०—स्यादिन्द्रवज्रा त भुजा जगौगा।

ऽ ऽ ।
भा०—इन्द्रवज्रा वृत्त के प्रतिपद में (त भुजा जगौ गौ) दो तगण,
। ऽ ।   ऽ
एक जगण और दो गुरु होते हैं। यथा—

उ०—लोकेश लक्ष्मीपति चक्रपाणि। रामेश रामावर श्री अमानी ॥
श्रीनाथ नारायण भक्त प्यारे। ही में बसौ शाह सदा हमारे ॥३॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारो चरणों में आदि का वर्ण लघु कर दिया
। ऽ ।   ऽ ऽ ।   । ऽ ।   ऽ
जाय, तो प्रतिपद एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु का उपेन्द्र-वज्रा नामक वृत्त हो जाता है। इन्द्र वज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से १६ वृत्त बनते हैं, विस्तार भयात् वे यहां नहीं लिखे गये, परन्तु प्रत्येक चरण

के आदि में गुरु की जगह इन्द्रवज्रा और लघु की जगह उपेन्द्रवज्रा के पद समझ लेना चाहिये।

४ रथोद्धता।

ल०—है रथोद्धतहु रो न रो लगो।

ऽ।ऽ
भा०—रथोद्धता वृत्त के प्रतिपद में (रो न रो लगो) एक रगण, एक
।।।   ऽ।ऽ   ।   ऽ
नगण, एक रगण एक लघु और एक गुरु होता है। यथा—

उ०—भक्त पाल भगवन्त भूपते। राम राघव हरी रघूपते! ॥
कारुणीक करुणा धरे रहौ। बास शाह उर में करे रहौ ॥ ४ ॥

५ शालिनी।

ल०—शालिनी साजौ म तो पत्त गो गो।

ऽऽऽ
भा०—शालिनी वृत्त के प्रतिपद में (म तो पत्त गो गो) एक मगण
ऽऽ।   ऽ
दो तगण और दो गुरु होते हैं। यथा—

उ०—पद्मी लक्ष्मी कांत व्यालारि गामी।
राघौ सीता नाथ बैदेहि स्वामी ॥
केशौ दाया सिंधु गोबिन्द माधौ।
हे हे स्वामी! शाह के काज साधौ ॥ ५ ॥

६ वंशस्थविलम्।

ल०—बनाय वंशस्थविलं जतो जरो।

।ऽ।
भा० वंशस्थविलं वृत्त के प्रतिपद में (जतो जरो) एक जगण एक
ऽऽ।   ।ऽ।   ऽ।ऽ
तगण एक जगण और एक रगण होता है। यथा—

उ०—हरे! मुरारी जन दीन बांधवा। मुकुन्द गोविन्द वृजेन्द्र माधवा ॥
दयालु दामोदर श्याम सांवरे। सुशाह के हीय तुरंत आवरे ॥६॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों में आदि का वर्ण गुरु कर दिया

ऽ ऽ । ।ऽ । ऽ।ऽ

जावे तो प्रतिपद दो तगण, एक जगण और एक रगण का इन्द्रवंशा वृत्त होता है।

७ तोटक।

ल०—यहि तोटक वृत्त सवेद रचो।

।।ऽ

भा०—तोटक वृत्ति के प्रतिपद में (स वेद) चार सगण होते हैं। यथा—

उ०—भगवन्त अनंत रमा रमणं। दुख दारिद दीनन के शमनं॥

करुणा निधि केशव मोद प्रदा। प्रतिपाल करो जन शाह सदा॥७॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों के आदि में एक लघु और रख दिया जावे, और अंत में के गुरु निकाल कर शेष रहे हुये अन्त के लघु

।।। ऽ।। ऽ।ऽ

वर्ण गुरु कर दिये जावें तो प्रतिपद एक नगण दो भगण और एक रगण का द्रुतविम्बवित नामक वृत्त हो जाता है।

८ भुजङ्ग प्रयात।

ल०—भुजङ्ग प्रयातो य चौ साजि लीजै।

।ऽऽ

भा०—भुजङ्ग प्रयात वृत्त के प्रतिपद में (य चौ) चार यगण होते हैं। यथा—

उ०—अहिल्या तरी मुक्त भै भीलनी की।

करी बेगिरक्षा दुखी द्रौपदी की॥

जहां जो पुकारे तहां सुद्धि लीन्हीं।

प्रभो! शाह की बेर क्यों देर कीन्हीं॥ ८॥

९ वसन्ततिलका।

ल०—साजो वसन्ततिलका त भ जो ज गो गो।

भा०—वसन्ततिलका वृत्त के प्रतिपद में (त भ जो ज गो गो) एक

ऽऽ। ऽ।। ।ऽ। ऽ

तगण, एक भगण, और दो जगण और दो गुरु होते हैं। यथा—

उ०—पद्माक्ष पद्म भव शाह विभोनमामि ।
चक्री जगेश कमलेश खगेश गामी ॥
हे ! हे !! दयानिधि प्रभो ! गज मुक्ति कारी ।
संसार जन्मित विपत्ति हरौ हमारी ॥ ९ ॥

१० मालिनी ।

ल०—न जुगुल मय नैना, मालिनी सिद्धि लोका ।

भा०—मालिनी वृत्त के प्रति चरण में (न जुगुल मय नैना) दो
। । ।   ऽ ऽ ऽ   । ऽ ऽ
नगण, एक मगण और दो यगण होते हैं (सिद्धिलोका) ८, ७ पर यति होती है यथा—

उ०—भुवन तिहुं बिलासी, लोक बैकुंठ बासी ।
प्रणत दुख बिनाशी, मूर्त्ति आनन्द राशी ॥
प्रभु ! द्रुत सुधि लीजै, प्रार्थना कान कीजे ।
सब बिधि सुख दीजै, शाह कल्याण कीजे ॥ १० ॥

११ नराच ।

ल०—नराच वृत्त साजि लीजिये जरो जरो जगो ।

। ऽ ।
भा०—नराच वृत्त के प्रतिपद में (जरो जरो जगो) एक जगण, एक
ऽ । ऽ   । ऽ ।   ऽ । ऽ   । ऽ ।   ऽ
रगण, एक जगण, एक रगण, एक जगण और एक गुरु होता है । यथा—

उ०—गयंद गीध गौतमी तिया जटायु भीलनी ।
निषाद नीच पातुरै गती मिली अभीलनी ॥
बिलंब ना करौ कछू निजै सुबानि सो धरौ ।
प्रभो ! रमेश बेगि शाह के कलेश को हरौ ॥ ११ ॥

सू०—इसे पंच चामर भी कहते हैं ।

१२ शिखरिणी ।

ल०—शिखर्णी को साजौ ऋतु शिव यमो नोस भलगो ।

भा०—शिखरिणी वृत्त के प्रति पद में (य मो नो स भ ल गो) एक

। ऽ ऽ   ऽ ऽ ऽ   । । ।   । । ऽ   ऽ । ।   ।

यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, एक लघु और एक

ऽ

गुरु होता है। (ऋतु, शिव) ६,११ पर यति होता है। यथा—

उ०—खरारी कंसारी, तनिक सुनिये शाह बिनती।
सुखी कीन्हें जेते, करहि तिनकी कौन गिनती॥
उतै को ना देखो, सुख प्रद इतै को रुख करो।
करौ नाहीं देरी, प्रभु सब हमारे दुख हरौ॥ १२॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों में यगण की जगह जगण, मगण की जगह सगण, नगण की जगह जगण, और भगण की जगह यगण,

। ऽ ।   । । ऽ

रखकर ८,९ पर यति मानी जावे तो प्रति पद एक जगण, एक सगण,

। ऽ ।   । । ऽ   । ऽ ऽ   ।   ऽ

एक जगण, एक सगण, एक यगण, एक लघु और एक गुरु का पृथ्वी वृत्त होता है। और यदि पृथ्वी के चारों चरणों मे प्रथम जगण की जगह नगण, दूसरे जगण की जगह मगण दूसरे सगण की जगह रगण, और यगण की जगह सगण रखकर ६, ४, ७, पर यति मानी जावे तो प्रति

। । ।   । । ऽ   ऽ ऽ ऽ   ऽ । ऽ   । । ऽ   ।

पद एक नगण, एक सगण, एक मगण, एक रगण, एक सगण एक लघु

ऽ

और एक गुरु का हरिणी वृत्त होता है।

१३ मन्दा क्रांता।

ल०—मन्दाक्रान्ता, युग रस मुनी, मोभ नोतो त गो गो।

भा०—मन्दाक्रान्ता, वृत्त के प्रतिपद में (मो, भ नो, तो, त, गो गो)

ऽ ऽ ऽ   ऽ । ।   । । ।   ऽ ऽ ।   ऽ

एक मगण, एक भगण एक नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं। (युग, रस, मुनी) ४,६,७ पर यति होती है॥ यथा—

उ०—लक्ष्मी स्वामी, कमलज विधे ! विष्णु पक्षी खरारी ।
हे ! दैत्यारी, प्रभु सियपते ! दीन सन्ताप हारी ॥
दाया कीजै, बिनय सुनिये, शाह की हे ! रमेशा ।
केशौ मेरे, तुरत सिगरे, काटि दीजै कलेशा ॥ १३ ॥

१४ शार्दूल विक्रीड़ित ।

ल०—ये शार्दूल विक्रीड़ितौ रबिमुनी, मो, सो, ज, सो, तो, त, गो ।

भा०—शार्दूल विक्रीड़ित वृत्त के प्रतिपद में (मो, सो, ज, सो, तो,
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽ
त, गो) एक मगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, दो तगण और एक गुरु होता है । (रबिमुनी) १२, ७ पर यति होती है ॥ यथा—

उ०—शांताकार नवीन कंज नयने ! शारंग धारी प्रभो! ।
विश्वाधार नृसिंह भक्त सुखदा, दीनार्त हारी विभो! ।
हौं हौं होत निमग्न सिंधु दुख में, कैसे लहौं थाह को ।
स्वामी दौरहु बेगि बांह गहिकै, काढ़ौ निजै शाह को ॥ १४ ॥

१५ स्रग्धरा ।

ल०—साजौ ये स्रग्धरा को, गुण मुनि करिकै, मोर भोनोय रामै ।
ऽऽऽ
भा०—स्रग्धरा वृत्त के प्रतिपद में (मोर भोनोयरामै) एक मगण,
ऽ।ऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ
एक रगण, एक भगण, एक नगण, और तीन यगण होते हैं । (गुण×मुनि) ७,७,७ पर यति होती है ॥ यथा—

उ०—अन्तर्य्यामी सुरेशा, विरज निरगुणे ! ब्रह्म निर्वाण दाता ।
मायाधारी खरारी, सगुण बपु धरे, भूपते ! दीन त्राता ॥
गोपीप्यारे कन्हैया, मुरलिधर हरे ! कृष्ण कान्हा कन्हाई ।
हे स्वामी ! शाहबांछा, पुरवहु सिगरी , काह देरी लगाई ॥ १५ ॥

॥ पाठ १० ॥

वर्ण साधारणान्तर्गत सवैया वर्णन

दल—सम तुकान्त जिहिं वृत्त की ताहि सवैया जान ।

भा०—जिन वृत्तों के तुकान्त अर्थात चारों चरणों के अंत्याक्षर एक से होते हैं, उन्हें सवैया कहते हैं। सवैयाओं में प्रायः गुरु लघु का क्रम ठीक २ न मिलने के कारण कभी २ पाठकों को भ्रम होता है कि यथार्थ में ये सवैया हैं या कोई विशेष मात्रिक छन्द। प्रथम लिख चुके हैं कि वर्णों का गुरुत्व अथवा लघुत्व केवल उच्चारण पर निर्भर है न कि लिखावट पर। यदि लिखावट पलट दें, तो शब्द ही अशुद्ध और निरर्थक हो जावें। अतएव शब्दों को प्रायः जैसे के तैसे ही रहने देते हैं और प्रसंगानुसार गुरु का उच्चार लघु और लघु का उच्चार गुरु करके इष्ट गण मान लेते हैं, ऐसे प्रसंग विशेष दृष्टिगत होते हैं। परंतु यथा संभव शब्द एवं पद योजना ऐसी होनी चाहिये कि प्रत्येक चरण में गणों के रूप स्पष्ट रूप से दीखपड़ें॥ सवैया वृत्त कई प्रकार के होते हैं, परंतु उनमें से केवल मुख्य २ भेद नीचे लिखे जाते हैं॥

१ मत्तगयंद।

ल०—मत्त गयंद त्रिविंशति अक्षर भो मुनि गो भुज साजि सवैया।

भा०—मत्त गयंद सवैया के प्रतिपद में (भो मुनि गो भुज) सात

ऽ।। ऽ

भगण और दो गुरु अर्थात् २३ अक्षर होते हैं॥ यथा—

उ०—कै कलिकाल कराल बिलोक तिलोकपते बिय बानि धरी है।
कै कहुं दूर पै कीन्ह निवास जो दास पुकार न कान परी है॥
कै अरु पापिन दीनन तें अबहूं कमती करनी हमरी है।
शाह कलेश निवारन काज रमेश! कहो कह देर करी है॥ १॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों में अंत का गुरु वर्ण लघु कर

ऽ।। ऽ ।

दिया जावे, तो प्रतिपद ७ भगण एक गुरु और एक लघु का चकोर नामक सवैया होता है। और यदि अंत का गुरु वर्ण निकाल ही डाला

ऽ।। ।

जावे अर्थात् २२ ही अक्षर रक्खे जावें तो प्रतिपद ७ भगण और एक गुरु का मदिरा सवैया होता है॥

२ किरीट।

ल०—वृत्त किरीट बनै अति सुन्दर भो बसु चौबिस आखर धारत।

ऽ।।

भा०—किरीट सवैया के प्रतिपद में (भोबसु) आठ भगण अर्थात् २४ अक्षर होते हैं॥ यथा—

उ०—स्वामि ! महा पछिताव की बात है रावर आछत हौं दुख पावत।
नव्य भली रचिकै यश काव्य प्रशंसि तुम्हैं नित शाह सुनावत॥
द्रव्य धरा सुख साज के देत भैं क्यों उर में असमंजस लावत।
तू जगदीश्वर भूपति है मम हौहुं कवीश्वर तेरो कहावत॥ २॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों में अन्त का लघु वर्ण गुरु कर

ऽ।। ऽ।ऽ

दिया जावे तो प्रतिपद सात भगण और एक रगण का अलसा नामक सवैया हो जाता है॥

३ मकरंद।

ल०—भलो मकरंद हि चौबिस आखर जो मुनियो धरिलेहु बनाई।

।ऽ।

भा०—मकरंद सवैया के प्रतिपद में (जो मुनियो) सात जगण और

।ऽऽ

एक यगण अर्थात् २४ अक्षर होते हैं॥ यथा—

उ०—अघी अति मैं तुम पातकी पावन हौ यदि तौ जनपाप हरौगे।
महानहौं दीन मैं दानि महा तुम हौ तब दीनता ताप दरौगे॥
नियुक्त नहीं कर तूति ही पै कछु तारि हौ तौ यश छाप धरौगे।
जु पै प्रभु शाह अहौ करुणाकर तौ करुणा तुम आप करौगे॥ ३॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों में अंत का गुरु वर्ण लघु कर

ऽ।ऽ

दिया जावे तो प्रतिपद आठ जगण का माधव नामक सवैया होता है। और यदि अंत का गुरु वर्ण निकाल ही डाला जावे अर्थात् २३ ही अक्षर

।ऽ। । ऽ

रक्खे जावे तो प्रतिपद ७ जगण एक लघु और एक गुरु का सुमुखी सवैया होता है॥

४ दुर्मिल।

ल०—यहि दुर्मिल सो बसु लेहु बनाय पदै प्रति चौबिस आखर है॥

। । ऽ

भा०—दुर्मिल सवैया के प्रतिपद में (सो बसु) आठ सगण अर्थात २४ अक्षर होते हैं॥ यथा—

उ०—बहु धूम करै नित गाय बजाय गंधर्ब औ किन्नर द्वारन में।
सुर बृन्द अनेक विधी तब नाम जपैं यश भूरि उचारन में॥
कहु शाह भला किमि कान परै सुनि तूती की नाद नगारन में।
प्रभु दीन दयाल ह्वै देर करी कसदीन विपत्ति बिदारन में॥ ४॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों के अंत में एक एक गुरु और बढ़ा

। । ऽ

दिया जावे अर्थात् २५ अक्षर कर दिये जावें तो प्रतिपद ८ सगण और एक

ऽ

गुरु का सुन्दरी सवैया होता है। और यदि अंत में दो लघु बढ़ाये जावें

। । ऽ ।

अर्थात् २६ अक्षर कर दिये जावें, तो प्रतिपद ८ सगण और दो लघु का कुन्दलता नामक सवैया हो जाता है॥

पाठ ११

समान्तर्गत दंडक प्रकरण॥

तत्रादौ।

मात्रिक दंडक।

१ झूलना।

ल०—झूलना साजिये राम दिगपाल मुनि अंतमें अवशि गुरु वर्ण कीजे।

भा०—झूलना दंडक के प्रतिपद में (राम, ×दिगपाल, मुनि) १०, १० १० और ७ के बिश्राम से ३७ मात्राएं होती हैं। अंत में गुरु होता है॥ यथा

उ०—लिखत लिपि माथ में, ब्रह्म तब हाथ ते।
नाथ यदि ह्वै गयो होय धोखो।

सुःख के थान में, भूलते दुःख लिखि भर दयो होय मसि रंग चोखो ॥
राम तिहिं लेख पै, ध्यान ना देहु अब, अकर कृत करखि निज बानि धारो ।
सुःख धन धाम दै, शाह बिश्राम दै कर्म की रेख पै मेख मारो ॥१॥

सू०—यदि इस दंडक की यति ८,१२,८ और ९ पर मानी जावे तो करखा नामक दंडक होता है ।

वर्ण दंडक ।

वर्ण दंडकों में साम्प्रति कबित्त बिशेष प्रसिद्ध हैं अतः आगे उन्हीं का उल्लेख किया जाता है ।

वर्ण दंडकान्तर्गत-
कबित्त वर्णन ।

दल—दंडक मिलत तुकान्त सम, मुक्तक कवित बखान ।

भा०—जिन दंडकों के तुकान्त अर्थात् चारों चरणो के अंत्याक्षर एक से होते हैं उन्हें मुक्तक कबित्त कहते हैं । मुक्तक कहने का प्रयोजन यह है कि ये कबियों को गणागणादि के बंधन से मुक्त करने हारे हैं । मुक्तक के प्रति पद में केवल अक्षरों की संख्या का ही प्रमाण रहता है, और अंत में गुरु वा लघु का भी नियम होता है । इसके अतिरिक्त और कोई बिशेष नियम नहीं है । परन्तु इतना और स्मरण रहे कि कबित्त में सम प्रयोग अत्यन्त कर्ण प्रिय होते हैं । यदि कहीं विषम प्रयोग आ जावे तो उसी के आगे एक बिषम प्रयोग और रख देने से बिषमता नष्ट हो कर समता प्राप्त हो जाती है । दो वर्ण के समूह को सम और तीन वर्ण के समूह को बिषम प्रयोग कहते हैं ।

कबित्त कई प्रकार के होते हैं परन्तु यहां पर केवल मुख्य मुख्य भेद ही लिखे जाते हैं ।

१ मनहर ।

ल०—मनहर कबित सिंगार तिथि यति मानि,
इकतिस आखरनि अंत गुरु करिये ।

भा०—मनहर कबित्त के प्रति पद में (सिंगार तिथि) १६, १५ के बिश्राम से ३१ वर्ण होते हैं । अंत का वर्ण गुरु होता है । यथा—

उ०—पतित उधारन भय हौ तारि पापिन को,
प्रभुता दिखैबो हेतु प्रभु नाम धारे को ।
दाया करि दीन पै कहाये तुम दीन द्याल,
दीना नाथ बने हौ सनाथ कै अपारे को ॥
कीन्हें तैं सहाय धाय २ जन दीनन की,
शाह दीन बंधु मिली पदवी तुम्हारे को ।
बिपति हरैया अब तबहीं कहैहो राम,
हरिहौ जबहिं दुःख दारिद हमारे को ॥१॥

सू०—इसको घनाक्षरी भी कहते हैं ।

२ रूप घनाक्षरी ।

ल०—रूपक घनाक्षरी कबित्त यति सोरा सोरा,
साजि लेहु बत्तिस बरण लघु धरि अंत ।

भा०—रूप घनाक्षरी कबित्त के प्रति पद में १६, १६ के बिश्राम से ३२ वर्ण होते हैं । अंत का वर्ण लघु होता है । यथा—

उ०—पापिन में मुखिया हौं दुखिया हौं दीनन में,
सकल बृतान्त कहौं काहि २ दीनानाथ ।
आपनो हितैषी जानि जाहि मैं सुनाऊं जाय,
बिपदा ग्रसित पाऊं ताहि २ दीनानाथ ॥
धर्म्म कर्म्म हीन त्योहीं देखि असहाय शाह,
हा हा नाद सुनि बेगि त्राहि २ दीनानाथ ।
दीनन के बंधु सुख सिंधु करुणा के धाम,
आनँद के कंद राम पाहि २ दीनानाथ ॥२॥

सू०—यदि इस कबित्त के चारों चरणों में अंत के दो दो वर्ण लघु रक्खे जावें तो जलहरण नामक कवित्त होता है, और यदि चारों चरणों में आदि से अंत तक सब वर्ण लघु ही रक्खे जावें तो प्रति पद ३२ लघु वर्ण का डमरू कवित्त होता है ॥

इति सम प्रकरण ।

—

पाठ १२

अर्द्ध सम प्रकरण-तत्रादौ

मात्रिकार्द्धसम ।

१ बरवै ।

ल०—बरवै छंद विषम रबि, सम मुनि गोल ।

भा०—बरवै छंद के बिषम अर्थात् प्रथम, तृतीय चरणों में (रबि) बारह २ मात्राएं और सम अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ चरणों में (मुनि) सात सात मात्राएं होती हैं । अंत में (गोल) गुरु, लघु होते हैं । यथा—

उ०—शाह दास के स्वामी, हे रघुराज! ।
बाहँ गहे की अब तौ राखहु लाज ॥१॥

२ दोहा ।

ल०—दोहा जन बिषमनि सरन, सम जत कल किरणेश ।

भा०—दोहा छंद के बिषम अर्थात प्रथम, तृतीय चरणों में (किरण) तेरह तेरह मात्राएं और सम अर्थात् द्वितीय चतुर्थ चरणों में (ईश) ग्यारह

। । ऽ ऽ । ऽ

ग्यारह मात्राएं होती हैं । बिषम चरणों के अंत में (स र न) सगण, रगण

। । ।　　　　　　　　　　। ऽ ।

अथवा नगण होता है, और सम चरणों के अंत में (ज त) जगण अथवा

ऽ ऽ ।　　　　　　　　　　। ऽ ।

तगण होता है । परन्तु बिषम चरणों के आदि में (ज न) जगण न होना चाहिये । यथा—

उ०—समरथ सब लायक सबल, हे प्रभु ! करणा भौन ।
शाह दुसह दुख दरन में, तुम्हैं कठिनता कौन ॥२॥

। ऽ ।

सू०—दोहे के आदि में जगण पूरित शब्द का रखना दोष है, परन्तु यदि पृथक् २ दो शब्दों के मिलने से जगण सिद्ध होता हो तो दोष नहीं है ।

३ सोरठा ।

ल०—सोरठ बिषमनि ईश, सम तेरा दोहा उलटि ।

पाठ १४

छन्दाभिज्ञ काव्य रचयिता को यह भी जानना आवश्यक है कि कौन २ रसों के लिये कौन २ छन्द अनुकूल वा प्रतिकूल हैं। यद्यपि यह बात अद्यावधि निश्चित नहीं हुई है, कारण कि सर्व कवियों की प्रकृति प्रायः एक सी नहीं होती, तथापि वर्णवृत्तों के विषय में जो कुछ बहुमत से स्थिर हुआ है वह एक कोष्टक द्वारा नीचे दर्शाया जाता है॥

संख्या	रस	छन्द जो अनुकूल हैं	प्रतिकूल
१	शृंगार	शार्दूल विक्रीड़ित, बसन्ततिलका, पृथ्वी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रांता, मालिनी, स्रग्धरा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, रथोद्धता, द्रुतविलम्बितादि ...	पथ्यादि
२	हास्य	दोधक, तोटक, भुजङ्गप्रयात इत्यादि ...	पृथ्वीआदि
३	करुणा	मालिनी, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, पुष्पिताग्रादि ...	दोधकादि
४	रौद्र	शार्दूलविक्रीड़ित, हरिणी, स्रग्धरा, रथोद्धता, अनुष्टुप्आदि ...	शिखरिणी आदि
५	बीर	शार्दूलविक्रीड़ित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थविलं, शिखरिणी, स्रग्धराआदि ...	प्रहर्षिणी, मालिनी आदि
६	भयानक	शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा, पथ्यादि ...	मालिनी आदि
७	वीभत्स	शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा, वंशस्थविलं, रथोद्धतादि ...	मंदाक्रांतादि
८	अद्भुत	शार्दूलविक्रीड़ित, नंदिनी, कुसुमविचित्रा, शालिनी, स्वागता, उपचित्र, वसन्ततिलका, इन्द्रवज्रादि ...	शिखरिणी आदि
९	शांत	शार्दूल विक्रीड़ित, शिखरिणी, मंदाक्रांतादि ...	कुसुम विचित्रादि

बिदित होकि यह बिचार केवल वर्ण वृत्तों हीं के लिये है। मात्रिक सब छंद तथा कबित्त सवैयादि तो सब रसों के लिये अनुकूल हैं। यहां पर यह भी कह देना उचित होगा, कि उपर्युक्त कोष्ठांकित, दोधक, स्वागता, कुसुम बिचित्रादिकों का समावेश चौपाई छंद में समझ कर, और प्रहर्षिणी, नंदिनी, उपचित्र, पुष्पिताग्रा। पथ्यादि की हिन्दी भाषा में आवश्यकता न देखकर ही उनका बर्णन इस भाषा प्रधान छोटी सी पुस्तक में नहीं किया गया। शेष सब छंद यथा स्थान में लिख दिये गये हैं॥

उपर्युक्त ज्ञान प्राप्त होने के साथही इस विषय से अभिज्ञ हो जाना भी उत्तम प्रतीत होता है, कि कौन विषय किस छंद में वर्णित होना चाहिये। यद्यपि इस विषय में भी अभी बहुत कुछ न्यूनता है, तथापि वर्णवृत्तों के लिये बहुसम्मति से जो निश्चय हुआ सो हम पाठकों के भेंट करते हैं। देखिये निम्नांकित कोष्ठक!।

संख्या	विषय	उपयुक्त छन्द	संख्या	विषय	उपयुक्त छन्द
१	ऋतु	उपजाति	४	बर्षा, प्रबास	मन्दा क्रान्ता
२	नीति	वंशस्थ बिलम्	५	स्तुति, यश, शौर्य्य	शार्दूल विक्रीड़ित, शिखरिणी
३	चन्द्रोदय	रथोद्धता	...	...	...

प्रगट हो कि यह बिचार केवल वर्णवृत्तों ही के लिये है। मात्रिक सब छन्द तथा कवित्त सवैयादि तो सब रसों के लिये अनुकूल हैं।

अंत में सर्व सज्जन कवि कोबिद पाठक महाशयों से सविनय निवेदन है कि इस पुस्तक में यदि कहीं कुछ त्रुटि प्रतीत होवे तो कृपया सूचितकर मुझे चिरबाधित करने की कृपा करें॥ शम्॥

इति श्री सय्यद छेदाशाह उपनाम शाहकवि कृते काव्य शिक्षान्तर्गत छंदवर्णनंनाम तृतीयो भागः॥ ३॥ शुभम्भूयात्-

(विशेष प्रार्थना)

आशा है कि इस तृतीय भाग छंदवर्णन को पढ़कर काव्य प्रेमी सज्जन महाशय काव्यशिक्षा प्रथम भाग (कवि वर्णन) वा द्वितीय भाग (काव्य वर्णन) और चतुर्थ भाग (शब्दार्थ वर्णन) को अवश्य ही पढ़ने की कृपा करेंगे। साथही यह भी विदित होवे कि काव्यशिक्षा नामक ग्रंथ में काव्य की समग्र सामग्री का वर्णन किया गया है, जिन महाशयों को कवि बनने की इच्छा होवे इसे अवश्य अवलोकन करें, यदि एक बार आद्योपांत मनन करने से काव्य निर्माण शक्ति न उत्पन्न होवे तो उपालंभ पूर्ब्बक पुस्तक का मूल्य लौटाय लेवें।

यह काव्यशिक्षा ग्रंथ द्वादश भागों में समाप्त हुआ है। सर्ब साधारण की सुगमता के हेतु उसके प्रत्येक भाग पृथक् २ मुद्रित हो रहे हैं, और वे यथा समय पाठकों की सेवा में क्रमशः उपस्थित होते रहेंगे॥

विद्वत्सुअलम्। विनीत-(शाह)

ॐ

गोत्रावली—प्रवराध्यायी

अर्थात्

ब्राह्मण गोत्र सम्बन्धी मात्र के योग्य है

जिसको

पण्डित छेदालाल शुक्ल ब्रह्मचारी उपदेशक ने

(ग्राम दहेली कोश १ सवई—जहां भये तिवारी रमई)

संपादनकी

और

संवत् १९४३ में कान्यकुब्जमंडल प्रयागराजने संशोधनकी

यह पुस्तक नीचे लिखे पते पर मिलेगी

उपदेशकोंके पास वा जिला—कानपुर डाकखाना
कठार गोरक्षा पाठशाला ग्राम दहेली में रामरत्न
रामगोपाल शुक्ल के पास मिलैगी

कानपुर

कैलास-यंत्रालय पं० शिवशंकरलालवा० के प्रबंधसे मुद्रित हुई

चौथीबार १०००] [मूल्य ~)

श्रीगणेशायनमः ।

वेद भाष्य भूमिका ।

ब्राह्मणास्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत ॥

टीका—इस सृष्टि में जो मुखके सदृश उत्तमहै वह ब्राह्मण, जिसमें बल वीर्य अधिक हो अर्थात् बाहू सदृश वह क्षत्री है, जो उरू के समान अनेक स्थानों पर जाके वणिज कर वह वैश्य, और जो पग अर्थात् नीच अंगो के समान मूर्खत्वादि गुणवाला हो वह शूद्र है । ऐसी सृष्टि के उत्पन्न करने वाले पूर्ण व्यापक परमात्मा को दंडवत करता हूं । य० अ० ११ मं० ११

प्र०—हमारे पूर्वज लोग कौन थे और क्या पढते थे ?

उ०—ऋषि थे और वेद पढ़ते पढ़ाते थे वह वेद यह हैं:—

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इन चारों वेदों को ऋषि लोग पढ़ते थे और इसी कारण से चारों वेदों के द्विजाति अनेक गोत्रों में प्रकाशित हैं जैसा कि यजुर्वेद के भारद्वाज गोत्र में और भारद्वाज गोत्र के ऋग्वेद, में और इसी गोत्र में सामवेद और अथर्ववेद के द्विजाति भी हैं इसी तरह कश्यप गोत्र में चारों वेदों के द्विजाति हैं संशय का कारण नहीं इस लिये यह गोत्राबली प्रवराध्यायी प्रमाण गुरु चरित्र वा मनुस्मृति अध्याय दूसरा श्लोक १७ से २२ के अनुसार सब गुणज्ञ लोगों के सन्मुख रखता हूं कि आप पढ़ें और बालकों को पढावे क्योंकि ब्राह्मण जगद् गुरू कहलाते हैं परंतु आपही अपना हाल नहीं जानते अब द्विजाती मात्रको यह जानना उचित है कि गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा, सूत्र, प्रवर, सिखा, पाद, देवता, आदि सब जानना योग्य हैं अब हम चारों वेदों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं अपना वेद बदलने के अर्थ जिसका जौन हो ।

ऋग्वेद—का उपवेद आयुर्वेद, शाकल, वाष्कल, आश्वलायन आदि १२ भेदहैं यह समग्र हाल गुरु चरित्र के देखने से सूचित होता है। शिखा बाम, पाद बाम, देवता ब्रह्मा, गायत्री छंदः।

यजुर्वेद—इसके ८६ भेद हैं उपवेद धनुर्वेद, शाखा माध्यंदिनी, वाजसनेयी आदि, सूत्र कात्यायन, शिखा, पाद दाहिन, शिव देवता, त्रिष्टुप् छन्द।

सामवेद—उपवेद गांधर्व, शाखा कौथुमी, शिखा, पाद बाम, अनुष्टुप्छन्दः, देवता विष्णु।

अथर्ववेद—का उपवेद मंत्र शास्त्र, शाखा पैप्पल, शिखा, पाद बाम इन्द्र देवता, अनुष्टुप् छंदः।

शौचक्रिया का मन्त्र।

उत्तिष्ठंति सर्व देवानां, तिष्ठंति महीतले। मल मूत्र करिष्यामि, मम दोषो नदीयते॥

दतून तोड़ने का मन्त्र।

बंशपती बन वर्धती, पत्र पत्र बनराज। मम हेत मुख मंजनी, दतून दे बन राज॥

अथ दंतधावन मन्त्र।

आयुर्बलं यशो वर्चाः, प्रजापति वशूनिच। धर्म संतान वृद्धिःस्यात्, तन्नो देव वनस्पतिः॥

अथ सूर्य्यार्घ्य मन्त्र।

एहि सूर्य्य सहस्रांशे तेजो राशे जगत्पते॥ अनुकम्पय मांभक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥ १॥

गोत्रोत्पन्नोहं,	वेद,	उपवेद,	शाखा,	सूत्र, ।	प्रवर,			। शिखा,	पाद,	देवतास्म०
भारद्वाज	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	बार्हस्पत्य	भारद्वाज	दाहिन	दाहिन	शिव
कश्यप	सामवेद	गांधर्व	कौथुमी	गोभिल	कश्यप	असित	दैवल	वाम	वाम	विष्णु
काश्यप	सामवेद	गांधर्व	कौथुमी	गोभिल	काश्यप	आवत्सार	नैध्रुव	वाम	वाम	विष्णु
वत्स	सामवेद	गांधर्व	कौथुमी	गोभिल	भार्गवच्यवन	आप्नवान	जामदग्न्यऔर्व	वाम	वाम	विष्णु
शांडिल्य	सामवेद	गांधर्व	कौथुमी	गोभिल	शांडिल्य	असित	दैवल	वाम	वाम	विष्णु
धनंजय	सामवेद	गांधर्व	कौथुमी	गोभिल	बिश्वामित्र	माधुच्छंदस	धनंजय	वाम	वाम	विष्णु
उपमन्यु	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	उपमन्यु	वाशिष्ठ	अभ्रतवसु	दाहिन	दाहिन	शिव
कात्यायन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	कात्यायन	किल	दाहिन	दाहिन	शिव
सांकृत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	सांकृत	सांख्यायन	किल	दाहिन	दाहिन	शिव
गर्ग	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	सैन्य	गार्ग	दाहिन	दाहिन	शिव
गौतम	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	बार्हस्पत्य	भारद्वाजगौतम अत्रि		दाहिन	२, शिव
पाराशर	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	पाराशर	वाशिष्ठ	सांकृत	दाहिन	दाहिन	शिव
कौशिक	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अघमर्षण	कौशिक	दाहिन	दाहिन	शिव
कौशिल्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अघमर्षण	माधुच्छंदस	दाहिन	दाहिन	शिव
भार्गव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	च्यावन	अल्पवान	दाहिन	दाहिन	शिव

वशिष्ठ	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माधंयदिनी	कात्यायन	वशिष्ठ	इंद्रप्रमदा	भारद्वसिति	दाहिन	दाहिन	शिव
अंगिरसि	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माधंयदिनी	कात्यायन	अंगिरस	वार्हस्पत्य	द्रोणाचार्य	दाहिन	दाहिन	शिव
कृष्णात्रि	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माधंयदिनी	कात्यायन	आत्रेय	आर्चनानस	श्यावश्व	दाहिन	दाहिन	शिव
अत्रि	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आत्रेय	आर्चनानस	श्यावश्व	दाहिन	दाहिन	शिव
कौण्डिन्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	काण्वी	कात्यायन	वशिष्ठ	कौडिन्य	मैत्रावरुण	दाहिन	दाहिन	शिव
कपि	यजुर्वेद	धनुर्वेद	काण्वी	कात्यायन	आंगिरस	आमौह्य	बौरुच	दाहिन	दाहिन	शिव
विष्णुवर्धन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माधंयदिनी	कात्यायन	आंगिरस	पौरु	कुत्सत्रासदस्य	दाहिन	दाहिन	शिव
नितुंदन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माधंयदिनी	कात्यायन	आंगिरस	पौरु	कुत्सत्रासदस्य	दाहिन	दाहिन	शिव
वाभ्रव्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अवदल	वाभ्रव्य	दाहिन	दाहिन	शिव
पूर्ण	ऋग्वेद	आयुर्वेद	आश्वलायन	आश्वलायन	विश्वामित्र	देवराज	पूर्ण	वाम	वाम	ब्रह्मा
मुद्गल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	भार्यश्वा	मुद्गल	दाहिन	दाहिन	शिव
मिहरस	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	कुशिक	कौशिक काश	काश्यकाश्यपेय	दाहिन	दाहिन	शिव
सावर्णी	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	सावर्णी	पुलस्ता	पुलह	दाहिन	दाहिन	शिव
मौनस	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मौनस	भार्गव	बधस	दाहिन	दाहिन	शिव
असिल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	असिल	वाशिलु	कौशल	दाहिन	दाहिन	शिव
वाशिल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वासिल	अत्रि	आर्चिस	दाहिन	दाहिन	शिव
शौनक	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	शौनक	शैव	भावन	दाहिन	दाहिन	शिव

चांद्रायण	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	चांद्रायण	बात्स	बत्स	दाहिन	दाहिन	शिव
बामदेव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	बामदेव	माध्यायन	गौतम	दाहिन	दाहिन	शिव
मांडवच्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मांडव्य	मांडूकेय	विश्वामित्र	दाहिन	दाहिन	शिव
दालभ्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	दालभ्य	आंगिरस	वार्हस्पत्य	दाहिन	दाहिन	शिव
गांगेय	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	गांगेय	गर्ग	सांख्यतित	दाहिन	दाहिन	शिव
सिंहल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वासिल	धाराणिषु	सारस्वत	दाहिन	दाहिन	शिव
मौकल्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मौकल्य	आंगिरस	वार्हस्पत्य	दाहिन	दाहिन	शिव
वैहल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वैहल	आशिल	बहल	दाहिन	दाहिन	शिव
देवरात	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	देवरात	वैष्णा	रैस्त	दाहिन	दाहिन	शिव
यस्क	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	वैतहव्य	शावतस	दाहिन	दाहिन	शिव
मित्रयुव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	बाध्राश्व	दिवोदास	दाहिन	दाहिन	शिव
विद	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	और्व	जामदग्न्य	दाहिन	दाहिन	शिव
वैन्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	वैन्य	पार्थ	दाहिन	दाहिन	शिव
आयास्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	आयास्य	गौतम	दाहिन	दाहिन	शिव
शारद्वत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	गौतम	शारद्वत	दाहिन	दाहिन	शिव
जातूकर्ण	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अत्रि	वशिष्ठ	जातूकर्ण	दाहिन	दाहिन	शिव
उद्वाह	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	उद्वाह	बामदेव	वशिष्ठ	दाहिन	दाहिन	शिव

हरित	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	अंबरीख	यौवनाश्व	दाहिन	दाहिन	शिव
जामदग्नि	यजर्वेद	धनर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	जामदग्नि	भृगु भार्गव	बत्सच्यावन	दाहिन	दाहिन	शिव
शौश्रवाश्व	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भारद्वाज	बिश्वामित्र	औदले	दाहिन	दाहिन	शिव
बृहस्पत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अंगिरस	बृहस्पत	भारद्वाज	दाहिन	दाहिन	शिव
अगस्त्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अगस्त्य	आत्रेय	आर्चनानस	दाहिन	दाहिन	शिव
मंगल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	बासुक	मंगल	दाहिन	दाहिन	शिव
तायल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	बासुक	तायल	दाहिन	दाहिन	शिव
मीतल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	बासुक	मीतल	दाहिन	दाहिन	शिव
गोयल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	बासुक	गोयल	दाहिन	दाहिन	शिव

यह वेंदोक्त संकल्प ग्रहण करो

बिज्ञापन ॥

बिदित हो कि सम्पूर्ण महाशयों से प्रार्थना है कि निज गोत्र सम्बन्धी बातों को पढ़ें और बिचारें जिस से अपना धर्म कर्म मालूम हो और स्वः धर्म में तत्पररहें इस लिये धर्मात्मा जन इस पुस्तक को प्रति वर्ष को ब्राह्मणों को देकर महान् पुराय के भागी हों ।

गायत्री।

अ—उ—म्—ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्यधीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात्। यजु० अ० ३ मं० ३५

शब्दार्थः।

व्याहृती

प्रणव ओं—यह परमेश्वर का मुख्य नाम है.

भूः—जो संपूर्ण देह धारियोंका प्राण दाता तथा प्राणसेभी प्रियहै

भुवः—जो धर्मात्माओं के क्लेश को निवारण कर देता है.

स्वः—जो सर्व व्यापक है.

तत्—उस परमात्मा को.

सविता—जो सर्व जगत् का उत्पादक पालक है.

वरेण्यम्—जो वरने योग्य ग्रहण करने योग्य है.

भर्गः—जो तेज तेजस्वी तथा तेज स्वरूप है.

देवस्य—देवक जगदीश्वर का.

धीमहि—ध्यान करते हैं स्मरण करते हैं.

धियः—बुद्धि विचार मनोरथ संकल्पादि को

यो—जो सर्वज्ञ सर्व व्यापी सर्व शक्तिमान् सर्वोपरि है.

नः—हमारी उपासकों की.

प्रचोदयात्—प्रेरित करे शुद्धकरे अपनी ओर आरूढ करे॥

श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः ।

श्रुति-स्मृति-पुराणप्रभृति-प्रमाण-कदम्बविभूषितः ।

श्रीवृन्दावननिवासि-श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसुतेन

पण्डित दुर्गादत्तशर्म्मसामवेदिना

विरचितः ।

पण्डित श्रीदेवीसहायशर्म्मणा संशोधितः ।

अडोरा ख्यातियुत-गिरिधारिलालपुत्रेण

बालमुकुन्दशर्म्मणा मुद्रापयित्वा प्रकाशितः ।

कलिकातानगरे

७५ नं० तुलापट्टीस्थभवने

रामनारायणपालेन

नारायणयन्त्रे

मुद्रितः ।

सम्वत् १९५०

श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः ।

श्रीराधागोपालगुरुचरणाब्जेभ्यो नमः ।

प्रणम्य श्रीमतीं गङ्गां कल्पान्तकलिगामिनीम् । श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः क्रियते भ्रान्तिमुक्तये ॥ १ ॥ अथ च, कलेर्दशसहस्राणि विष्णुस्त्यक्ष्यति मेदिनीम् । तदर्द्धं जाह्नवीतोयं तदर्द्धं ग्रामदेवता ॥ इति सनत्कुमारसंहितास्थस्यास्य श्लोकस्य सम्बन्धतात्पर्यानभिज्ञाः केचनवाला इतिवदन्ति अस्मिन्नेव कलौ पञ्चसहस्राब्दमनु श्रीगङ्गा स्वधामयास्यतीति तदसङ्गतमेव । अत्र श्लोकेऽष्टाविंशतितमस्य आधुनिककलिकथनाभावात् तथा च ग्रामदेवानामपि प्रत्यक्षमेवफलदत्वेनाधुनागमनविरोधात् । अपि च प्रत्येककलिपरत्वमस्य वाक्यस्य यदि स्यात्तर्हि भगीरथादनुजातेषु कलिषु यात्राऽपत्तिस्त्वेऽप्यदानिघनात्त्वात् कल्पान्तकलिज्ञापकं वाक्यमेतत् तदुक्तं ब्रह्मवैवर्तपुराणे—पृथिवी गङ्गया हीनाभविष्यत्यस्मिन् कलौ । तदैव विष्णुस्त्यक्ष्यति मेदिनीं नरपुंगवेति अतोऽस्मिन् कलौ गङ्गायाः स्वधामगमनं नानुसन्धेयम् वेदश्चाप्यत्र सदा स्थितिज्ञापकत्वात् अत्र ऋग्वेदस्य नवमाष्टकद्वितीयेऽध्यायेऽष्टादशवर्गानन्तरं विंशतिऋगात्मकमिदं परिशिष्टम् । यत्र गङ्गा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती यत्र सोमेश्वरीदेवस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दोपरिस्रव इति । एतदर्थश्च । यत्र यस्मिन् स्थले गङ्गा च अस्ति यमुना च अस्ति प्राची पूर्ववाहिनी सरस्वती च अस्ति यत्र गङ्गायमुनासरस्वतीसङ्गमोऽस्तीतिभावः तत्र त्वं माम् अमृतं कृधि कुरु हे इन्दो इन्द्राय परिस्रव सोमं देहीति अत्रवर्त्तमानकालक्रियासम्बन्धोऽस्ति अतोऽष्टाविंशतितमेऽस्मिन् कलौ गङ्गाप्रयाणाङ्गीकारे पञ्चसहस्राब्दमन्वपि वेदवाक्यमेतावदेव स्थास्यति तर्हि कथं सर्वदा सत्यस्य वेदस्य सत्यत्वं भविष्यति किन्तु गतवस्तुनो वर्त्तमानत्ववर्णनेन मिथ्यावादित्वं लोके वेदेऽपि प्रसिद्धमेवास्ति अतस्तद्वेदेऽपि भविष्यत्यतोऽस्मिन् कलौ गङ्गा-

मस्ति तत्कथमादरणीयं स्यात् किञ्च तत्र माम् अमृतं कृधि अमरं कुर्वित्यनेनैव गङ्गायमुनासङ्गमस्थलस्याप्यमरत्वं सूच्यते * तथाऽत्र मन्त्रे गङ्गा च इति चकारग्रहणं समुच्चयार्थं इति बोध्यं तथैवापरा च ऋग्वेदीयपरिशिष्टश्रुतिः अष्टमाष्टके तृतीयेऽध्याये षड्वर्गानन्तरमियमेका ऋक् यथा सितासिते सरिते यत्र सङ्गथे तत्राप्लुतासोदिवमुत्प्लवन्ति ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासोऽमृतं भजन्ते इति। एतदर्थश्च। यत्र स्थले सितासिते सरिते सङ्गते सिता शुक्लवर्णा गङ्गा असिता कृष्णवर्णा यमुना उभे नद्यौ मिलिते तत्र तयोः सङ्गमे आप्लुतासः कृतस्नानाः जनाः दिवं स्वर्गं उत्प्लवन्ति उत्पतन्ति ये च धीराः तन्वं तनुं विसृजन्ति तेजनासः जनाः वैनिश्चयेनामृतं मोक्षं भजन्ते प्राप्नुवन्तीति अत्रापि उत्प्लवन्ति विसृजन्ति भजन्ते इति वर्त्तमानकालक्रियाकथनेन गङ्गायमुनयोः सङ्गमस्य नित्येन भगवता वेदेन नित्यत्वं प्रतिपाद्यतेऽतस्तावदेव श्रीगङ्गायाः कल्पान्तं भुवि स्थितिविषये वेद एव प्रमाणम् ननु वेदे वर्त्तमानपरोक्षादिकालस्य क्वचित् क्रियासुनियमो नास्ति तद्वदत्राप्यनियमोऽस्तु इति चेन्न ॥ यदिडाप्रदेशिनी दिवोगाचिपथा सरिदिति श्रुतेः तथा वामनपुराणे मानसिकस्नानवर्णने ॥ इड़ा भागीरथी गङ्गा पिङ्गला यमुनानदी। तयोर्मध्यगता नाड़ी सुषुम्णाख्या सरस्वती ॥ १४ ॥ इति श्रुत्यादिप्रतिपादितविराजः पुंसो मुख्यनाड़ीत्वेन गङ्गाया ग्रहणात् शताध्यायि प्रयागमाहात्म्येऽपिगङ्गास्तवे। त्वंमोक्षलक्ष्मीस्त्वमसि प्रभा च त्वंब्रह्मनाड़ी वरनाड़िकासि। त्वंब्रह्ममायासि विचित्रगासि त्वंब्रह्मरूपासि नमोनमस्ते इति यावद्विराजः स्थितिस्तावद्गङ्गास्थितिः शरीरस्थितौ नाड़ीनामपि तत्र स्थितत्वात् अत्र श्रुतौ वर्त्तमानकालक्रियानियमोऽवाधित एव तेन गङ्गास्थितिरप्यवाधिता तथा चैवं श्रीभागवतस्य मतमपि वर्त्तमानकालक्रियया प्रदृश्यते। यथा। पञ्चमस्कन्धे यत्तद्वावर्वीरव्रत औत्तानपादिः परमभागवतोऽस्मत्कुलदेवताचरणारविन्दोदकमिति या मनुसवनमुत्कृष्यमाणभगवद्भक्तियोगेन संक्लिद्यमानान्तर्हृदय औत्कण्ठ्यविवशा मीलितलोचनयुगलकुड्मल-विगलितामलवाष्पकलयाभिव्यज्यमान-रोमपुलककुलकोऽधनापि परमादरेण शिरसा विभर्त्ति ॥ अन्यदपितत्रैव। समचव इव

सबहुमानमद्यापि जटाजूटैरुद्वहन्ति ॥ तथा चैवम् ॥ ततोऽनेककोटिसहस्र-विमानानीकसंकुलदेवयानेनावतरन्तीन्दुमण्डलमाप्लाव्यब्रह्मसदने निपतति तत्र चतुर्द्धा भिद्यमाना चतुर्भिर्नामभिर्नदनदीपतिमेवाभिनिविशति इत्यादि एवं बहुवाक्यवृन्दैः कल्पान्तकलिपर्य्यन्तमत्र श्रीगङ्गास्थितौ नास्ति सन्देहावसरः कल्पान्तकलिं विना श्रीगङ्गाप्रयाणेऽन्यकलिसंख्याकसूचकप्रमाणाऽभावात् बृहद्विष्णुपुराणादिषु स्पष्टोक्तत्वाच्च तथा श्रीगङ्गाचरणैरपि भगीरथं प्रति कृतप्रतिज्ञत्वाच्च तदुक्तं प्रायश्चित्ततत्त्वे यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्यो दिवि कल्पपादपः । यावत्समुद्रे वड़वानलश्च वसामिराजं स्तवचक्रवाते इति तथा सम्मोहनतन्त्रे "संसारसागरोत्तीर्णकारणाय नृणां सदा । श्रीगङ्गा-द्रवरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्यतिष्ठति" ॥ १ ॥ तथा भारतेऽपि दानधर्मे युधिष्ठिरं प्रति भीष्मवाक्यम् । तत्स्थानकंब्राह्मणमभीप्समानैर्गङ्गासदैवात्मवशैरुपास्या इति अत्रोभयोरपि वाक्ययोः सदा शब्दः कल्पान्तकलिपर्य्यन्तस्थितिद्योतकः श्रीवाल्मीकीयरामायणेऽपि भगीरथं प्रति विरञ्चिवाक्यं सागरस्य जलं लोके यावत्स्थास्यति पार्थिव । सगरस्यात्मजास्तावत् स्वर्गे स्थास्यन्ति देव-वदिति । अत्र सागरस्थं गङ्गाजलं ज्ञेयम् अगस्त्यकृतपानमनुश्रीगङ्गयैव कृत तत्पूर्त्तित्वात् अधुनापि तथा तस्या एव तत्पूर्त्तिकर्त्तृत्वाच्च अन्यथा चेद्वड़-वानलेन क्रियमाणोऽब्धिर्न्यूनतां यायात् । उक्तञ्चब्रह्माण्डपुराणे—"त्रिवि-क्रमपदोद्भूता ब्रह्माण्डशिखरोद्भवा । परा विष्णुपदीगङ्गा समुद्राऽऽपूर्त्ति-कारिणी" इति । भारते तु । कुम्भजेन कृतसमुद्रपानमनुसागरस्य पूर्त्तिः श्रीगङ्गया कृता क्रियते चेत्याख्यानं विस्तरेणोक्तम् अतएव कल्पान्तकल्यवधि-केव नरदृष्ट्या * गङ्गा स्थितिरिति निश्चीयते । किञ्च । अस्यैव कलेः पूर्वसन्ध्यांश-पञ्चसहस्राब्दमनुगङ्गाप्रयाणाङ्गीकारे सर्वैरेव श्रुतिस्मृतिपुराणादिभिः कलौ गङ्गाया एव चतुर्वर्गप्रदत्वं प्रतिपाद्यते तत्कथं सङ्गतं स्यादतो नास्त्यत्र कलौ तथान्येषु च प्रयाणशङ्कापीति बोध्यम् । अथ कलौ श्रीभागीरथ्या एव चतु-र्वर्गप्रदत्ववाक्यानि प्रलिख्यन्ते ॥ तावत्तु, शिवपुराणे, नास्ति गङ्गासमं तीर्थं कलिकल्मषनाशनमिति ॥ स्कान्देऽप्ययं श्लोकः अत्र च कलिकल्मषनाश-कत्वं प्रयाणे सति कथं सङ्गतं स्यात् अतोऽत्र कलौ न प्रयाणशङ्केति पुनः

पुनः प्रदर्श्यते अत्र श्लोके कलिशब्देनैव प्रयागाभावः कलेर्दशसहस्रान्ते इति वाक्यस्यापि कल्पान्तस्थितिपरत्वञ्च सूच्यते एवमग्रेऽपि लिङ्गप्रमाणकेषु बोध्यम् । तथा नारदीये । कलौ तु परमब्रह्मप्राप्तये सद्वरं नृणाम् । गङ्गाजलस्य सेवा तु सद्योपायो महर्षय इति । तथा स्कान्दे काशीखण्डे सप्तविंशेऽध्याये । कृते तु सर्वतीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम् । द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गैव केवलम् ॥ १ ॥ ध्यानं कृते मोक्षहेतुस्त्रेतायां तच्च वै तपः । द्वापरे तु द्वयं यज्ञाः कलौ गङ्गैव केवलम् ॥ २ ॥ कलौ कलुषचित्तानां परद्रव्यरतात्मनाम् । विधिहीनक्रियाणाञ्च गतिर्गङ्गां विना नहि ॥ ३ ॥ तत्रैव विष्णुं प्रति शिव-वाक्यं, यज्ञदानतपोहोमजपाः सनियमा यमाः । गङ्गासेवासहस्रांशं न लभन्ते कलौ हरे ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ वृथा कुलं वृथा विद्या वृथा यज्ञा वृथा तपः । वृथा दानादि तस्येह कलौ गङ्गां न यो भजेत् ॥ ५ ॥ मत्स्यपुराणे— ब्रह्मादिदेवलोकानां मुक्तेश्च प्राप्तये नृणाम् । गङ्गा च परमा हेतुः कलिकाले विशेषतः इति ॥ कौर्मेऽपि, कलौ गङ्गैव गङ्गैव कलौ गङ्गैव केवलम् । कः कलौ मुक्तिमाप्नोति गङ्गासेवां विना नरः ॥ १ ॥ भारतेऽपि पिण्डप्रकरणे, गङ्गायाञ्च गयायाञ्च पिण्डदानं समं मतम् । विशेषतः कलियुगे गङ्गापिण्डं प्रशस्यते इति ॥ किञ्च । सर्वेषां तीर्थानामपि वासः श्रीगङ्गायां कलाविति ब्रह्माण्डपुराणे, कलौ तु सर्वतीर्थानि स्वं स्वं वीर्यं स्वभावतः । गङ्गायां प्रति मुञ्चन्ति सा तु देवी न कुत्रचित् ॥ १ ॥ तथा भविष्योत्तरे तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटिश्च तीर्थानां वायुरब्रवीत् । सर्वदा कलिकाले तु गङ्गायां नात्र संशय इति ॥ अथ स्कान्दे दर्शनमाहात्म्यम् । विधूतपापा ये मर्त्याः परब्रह्मस्वरूपिणीम् । सहस्रसूर्यप्रतिमां गङ्गां पश्यन्ति ते कलौ ॥ १ ॥ ब्रह्माण्डे तु विशेष उक्तः, दृष्टा जन्मकृतं पापं स्पृष्टा जन्मशतस्य च । स्नाता जन्मसहस्राणां हन्ति गङ्गा कलौ युगे इति ॥ अन्यच्च स्कान्दे, सिद्धयः सिद्धलिङ्गानि स्वर्णलिङ्गान्यनेकशः । प्रासादरत्नखचिता रत्ना-मणिगणास्तथा ॥ १ ॥ गङ्गाजलान्तस्तिष्ठन्ति कलिकालप्रपीडिताः । अत-एव हि संसेव्या कलौ गङ्गेष्टसिद्धिदेति ॥ तथा भविष्येऽपि, स्वर्ण-लिङ्गानि दिव्यानि तथा दिव्यौषधानि च । महारत्नानि यान्येव

गङ्गासमान्यस्तिष्ठन्ति निगूढानि सहस्रशः॥ अतएव सुसंसेव्या कलौ गङ्गैव केवलम् इति॥ किं बहुना उक्तवाक्येषु नैकमपि वाक्यमयथा भवितुमर्हतीत्यतोऽत्र कलौ गङ्गायात्रोत्पादका अज्ञानिन एव अविचारित्वात् तेषामविचारित्वं त्वग्रिमप्रकरणे स्पष्टी भविष्यति किञ्च, श्रीगङ्गायाः भगवद्विभूतित्वेनापि नास्ति कल्पान्तस्थितौ सन्देह इति प्रतिपाद्यते। गीतायाम्, अश्वत्थश्चास्मि वृक्षाणां ओषधीनामहं यवः। इति प्रभृति भगवदुक्ततद्विभूतीनां यत्र यत्र पूर्वं तेनैव तन्निवासः कल्पितस्तत्र तत्रैव लोकक्षेमहेतवे कल्पान्तं स्थितिर्निःसन्देहैव यथा उच्चैःश्रवो वज्रेन्द्रैरावतादीनां स्वर्गे वासः, अश्वत्थादीनां भुवि, अनन्तादीनां पाताले, तथा स्रोतसामस्मि जाह्नवीति भगवदुक्तविभूतित्वे श्रीगङ्गाया अपि त्रैलोक्ये वासः, क्षितौ तारयते मर्त्त्यान् नागांस्तारयते ह्यधः। दिवि तारयतेऽमर्त्त्यांस्तेन त्रिपथगा स्मृता॥ १॥ इति स्कान्दोक्त्या तस्यास्त्रिपथगामित्वात् स्रोतसामिति षट्साहचर्य्यत्वात्रेति किञ्च, बदरिकाश्रमाद्यारभ्याऽऽसमुद्रान्तं केवलं गङ्गाश्रयाणामेव मायापुरीप्रान्तप्रभृतितीर्थानां माहात्म्येषु कलिकल्मषनाशकत्वं नित्यत्वं च तेषामुक्तमेव तत्तन्माहात्म्यप्रकरणेषु अत्र ग्रन्थभूयस्त्वभयात्तत्तद्वाक्यानि नो लिख्यन्ते तर्हि गङ्गायात्राङ्गीकारेऽत्र कलौ तेषां नित्यत्वे कलिपापनाशकत्वे च मिथ्यात्वाऽऽपत्तिस्तथा पुराणादीनां मिथ्यावादित्वं च स्यात् अतो गङ्गायात्राकथनमप्यसंगतमेव पुराणादीनां भगवद्रूपत्वेन सत्यत्वात् तथा कलेरन्ते भाविभगवत्कल्किचरणैः श्रीगङ्गातटे कृत तपःसमाधित्वात् तत्रैव मुनिभिः कृत गङ्गास्तवनाच्च व्यासोक्तकल्किपुराणे तृतीयेऽंशे ऽ जनविंशेऽध्याये विंशादिश्लोकेषु स्पष्टमेवैतत् यथा हिमालयं मुनिगणैराकीर्णं जाह्नवीजलैः। परिपूर्णं देवगणैः सेवितं मनसः प्रियम्॥ २०॥ गत्वा विष्णुः सुरगणैस्तत्रारु चतुर्भुजः। उषित्वा जाह्नवीतीरे सस्माराऽऽत्मानमात्मना॥२१॥ इत्यादि अथान्यदपि तत्रैव। गङ्गां स्तुत्वा समायाता मुनयः कल्किसन्निधावित्यादि। किं बहुना वेदप्रभृतिप्रमाणवृन्देन कल्पान्तं कलिं विना सर्वथा श्रीगङ्गायाः स्वधामगमनस्याऽभाव इति दिक्।

इति श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे श्रीनन्दकिशोरशास्त्रि-सुत-दुर्गादत्तकृते

श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः ।

नीराकारं निर्विकारं नौमिब्रह्मनिरन्तरम् । येनार्पितो भ्रमः पापिधीषु गूढार्थवाग्गणैः ॥ १ ॥ अथात्र शास्त्रवाक्येषु विरोधः क्व च दृश्यते । सोप्यऽस्यतेऽद्य पौत्रेण रामदत्तस्य शास्त्रिणः ॥ २ ॥ अधुना कलेर्दशसहस्रान्ते इति श्लोकस्यार्थमेव वस्तुतोऽन्तिमकलिपरं दर्शयितुं तावद्ब्रह्मणोदिनप्रमितिरुच्यते । श्रीभगवद्गीतायां, सहस्रयुगपर्य्यन्त महर्य्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्रान्तान्तेऽहोरात्रविदो जना इति ॥ अत्र युगशब्देन युगचतुष्टयसहस्रपर्य्यावर्त्तो बोध्यः । तथा च ब्रह्मणो दिनस्यैव कल्पसंज्ञा यत्र चतुर्दशमन्वन्तराणि भवन्तीत्यपि ज्ञेयम् । उक्तञ्च श्रीमद्भागवतेऽष्टमस्कन्धे एतत्कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्त्तितम् । यत्र मन्वन्तराण्याहुश्चतुर्दशपुराविदः ॥ ११ ॥ इति तत्रैव द्वादशस्कन्धेऽपि, चतुर्युगसहस्रन्तु ब्रह्मणोदिनमुच्यते । सकल्पो यत्र मनवश्चतुर्दशविशाम्पते ॥ २ ॥ तदन्ते प्रलयस्तावान् ब्राह्मी रात्रिरुदाहृता । त्रयो लोका इमे यत्र कल्पन्ते प्रलयाय वै ॥ ३ ॥ एष नैमित्तिकः प्रोक्तः प्रलयो यत्र विश्वसृक् । शेतेऽनन्तासने विश्वमात्मसात् कृत्य चात्मभूः ॥ ४ ॥ इति वाक्यैरिदं निष्पन्नं भवति प्रथमकृतयुगादौ लोकत्रयरचना भवति तथा चान्तिमे कलौ लोकत्रयप्रलयः तदैव तत्र विष्णुभक्तायाः देवानां भूत्यागः सम्भवतीति पुराणेषु सर्वत्रैव स्फुटमस्ति तदत्र विस्तरभयान्न प्रदर्श्यते । तस्मिन्नेव काले कलेर्दशसहस्रान्ते इति श्लोकार्थः संघटते पुरोडाशं चतुर्द्धा करोतीत्यस्याग्नेय उपसंहारवत् तदन्ते प्रलयस्तावानिति नियमाच्च अतएव श्लोकार्थस्त्वप्ययमेव बुध्यते । यथा दशसंख्याने इति धातोरच्प्रत्यये कृते दश इति सिध्यति तेन दशशब्दवाच्येन संख्यानेन गणनया सहस्रस्य अन्तो यत्र अत्र मध्यमपदलोपीसमासः । कलियुगस्य प्रथमत आरभ्य गणनया सहस्रपर्य्यावर्त्तस्य अन्तःसमाप्तिर्यत्र तस्मिन् काले सति यद्वा योऽन्तःप्रविश्यभूतानि भूतैरत्त्यखिलाश्रय इति भागवततृतीयस्कन्धोक्तेः दशति दंष्ट्रयादारयति अत्ति सर्वभूतानीति दशः कालः दंशदशने इति धातोः मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानमिति कः प्रत्ययः सहस्रस्य सहस्रपर्य्यावर्त्तस्य अन्तो यत्र दशश्चासौ सहस्रान्तश्च दशसहस्रान्तः कलेः कलियुगस्य सर्वक्षयकारकसहस्रपर्य्यावर्त्तसमाप्तिविधायके काले जाते सतीति भावः अन्तिमे कलाविति फलितोऽर्थः यद्वा तत्र स्थले सूर्य्यानक-

संवादश्रवणात् रविः स्वसारथिनं तं संबोधयति हे दश ! हे पच्चिन् ! दशः पच्चीविहङ्गम इति हलायुधकोशात् कलेः सहस्रान्ते सति तदा विष्णुः मेदिनीं त्यच्यति तदर्द्धं विष्णुत्यागकालस्य अर्द्धं कालं प्राप्य । प्रणष्टे द्वादशादित्ये प्रलये समुपस्थिते । तदा वै प्रलयं यान्तु गङ्गाद्याश्च सरिद्वरा इति पुराणान्तरवाक्यात् तस्मिन्नेव कलौ इयत्कालप्रमाणं प्राप्य विष्णुर्भुवं त्यच्यति तत्कालस्यार्द्धप्रमाणं प्राप्य प्रथमतः श्रीगङ्गा मेदिनीं त्यच्यति तदर्द्धं इयत्काले गङ्गाभुवं त्यच्यति तत्कालस्यार्द्धप्रमाणं प्राप्य पूर्वमेव ग्रामदेवताः पृथ्वीं त्यच्यन्ति अन्तिमे कलौ प्रथमतो ग्रामदेवाः भुवं त्यक्त्वा स्वगम्यस्थानं यास्यन्ति तदनन्तरं श्रीजाह्नवी यास्यति तदनन्तरं विष्णुरिति फलितं तात्पर्य्यम् ॥ नन्वत्र विष्णोः वाराहाद्यवतारमूर्त्तिषु काचनमूर्त्तिः वा स्वयमेवैतद्ब्रह्माण्डाधिनाथो गृह्यते तथा च पयस्विनी-मन्दाकिनी-सरय्वादिरूपेण गंगाबहुत्वश्रवणात् का गंगा तथा के च ग्रामदेवा इति ॥ अत्र क्रमेणोच्यते अत्रावताराणामभावादग्रहणम् अतएव विशप्रवेशने इति धातोः विष्णुरिति सिद्धौ सत्यां यस्य सत्तया जगत्स्थितं सविष्णुर्ज्ञेयः । यस्माद्विष्टमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः । तस्मात् संप्रोच्यते विष्णुर्विशेर्धातोः प्रवेशनादिति ॥ विष्णुपुराणतृतीयांशप्रथमाध्यायवाक्यात् स एवैतद्ब्रह्माण्डाधिपतिराकल्पान्तं जगत्स्थितिकारको महापुरुषोऽत्र गृह्यते एष एव सत्तावान् विष्णुः स्वसत्तया कल्पान्ते मेदिनीं त्यच्यति । तदुक्तं श्रीमद्भागवतपञ्चमस्कन्धे विंशेऽध्याये तेषां स्वविभूतीनां लोकपालानां विविधवीर्य्योपबृंहणाय भगवान् परममहापुरुषो महाविभूतिपतिरन्तर्य्याम्यात्मनो विशुद्धसत्वधर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्य्याद्यष्टमहासिद्ध्युपलक्षणं विष्वक्सेनादिभिः स्वपार्षदप्रवरैः परिवारितो निजवरायुधोपशोभितैर्भुजदण्डैः संधारयमाणस्तस्मिन् गिरिवरे समन्तात् सकललोकस्थितये आस्ते ॥ ४० ॥ आकल्पमेव वेषंगत एवमात्मयोगमायया विरचितविविधलोकयात्रागोपीथायेत्यर्थः ॥४१॥ इति वाक्यात् कल्पमध्ये कस्मिन्नपि कलौ विष्णोर्यात्रा सुतरां निरस्तेति। अथ चेवं भगीरथरथखातावच्छिन्नप्रवाहत्वं गंगा इति कतलक्षणवती भागीरथी गृह्यतेऽत्रेति तथा च ग्रामाधिष्टातृदेवताः स्थितिं च तासां प्रदर्शयितुमन्यासामपि ब्रह्माण्डान्तर्गतवस्त्वधिष्टातृदेवतानां कार्य्याधिकारस्थिति-

कालः प्रोच्यते। पाद्मे । यत्र यत्राधिनाथेन नियुक्ताः पालनादिषु। आकल्पान्तं प्रवर्त्तन्ते ता अधिष्ठातृदेवता इति वाक्यात्सर्वासामधिष्ठातृदेवतानां श्रीमहाविष्णोराज्ञया तद्दत्त स्वस्वविहितकर्माधिकारतायामाकल्पं जातायां सत्यां न कस्यापि वस्तुनोऽधिष्ठातृदेवतायाः स्वाधिकारप्रयुक्तकालात् पूर्वमेव स्वगम्यपदयात्रा सम्भवतीति भावः फलितः। ताश्च लोकपाल-दिक्पाल-पर्वतपाल-दुर्गपाल--वनपाल-सन्ध्यापाल--प्रदोषपाल--शुभाशुभ-कर्मफलप्रदप्रभृतिभेदेन बहुविधाः सन्ति॥ प्रदर्शिताश्च दिङ्मात्रं श्रीमद्भागवते षष्ठस्कन्धे षष्ठेऽध्याये धर्मपत्नीवंशवर्णने यथा, भानोस्तु वेद ऋषभ इन्द्रसेनस्ततो नृप। विद्योत आसील्लंबायास्ततश्च स्तनयित्नवः॥ ५॥ ककुभः संकटस्तस्य कीकटस्तनयो यतः। भुवो दुर्गाणि जामेयः स्वर्गो नन्दिस्ततोऽभवत्॥ ६॥ विश्वे देवास्तु विश्वाया अप्रजांस्तान् प्रचक्षते। साध्योगणस्तु साध्याया अर्थसिद्धिस्तु तत्सुतः॥ ७॥ मरुत्वांश्च जयन्तश्च मरुत्वत्यां बभूवतुः। जयन्तो वासुदेवांश उपेन्द्र इति यं विदुः॥ ८॥ मौहूर्त्तिका देवगणा मुहूर्त्तायाश्च जज्ञिरे। ये वै फलं प्रयच्छन्ति भूतानां स्वस्वकालजम्॥ ९॥ सङ्कल्पायाश्च सङ्कल्पः कामः सङ्कल्पजः स्मृतः। वसवोऽष्टौवसोः पुत्रास्तेषां नामानि मे शृणु॥ १०॥ द्रोणः प्राणो ध्रुवोऽर्कोऽग्निर्दोषो वसुर्विभावसुः। द्रोणस्याभिमतेः पत्न्या हर्षशोकभयादयः॥ ११॥ प्राणस्योर्ज्जस्वतीभार्या सह आयुः पुरोजवः। ध्रुवस्य भार्या धरणिरसूतविविधाः पुरः॥ १२॥ इत्यादि अत्र विविधाः पुर इत्यस्यायमभिप्रायः पुरपत्तननगरग्रामादिभेदेन पुराणां बहुत्वे सति तदधिष्ठातृदेवतानामपि विविधत्वम्॥ ताश्च भूमौ मण्डलपाल-क्षेत्रपाल-ग्रामदेवीबालदेवीखर्परीदेवीबृद्धादेवीश्मशानीप्रभृतिसंज्ञया प्रसिद्धाः एता एवाऽत्र गृह्यन्ते याश्च ग्रामपूजनमारी शान्तिप्रभृतिपद्धतिषु प्रकाशिताः याभिर्विना न ग्रामरचना रक्षा च मारीप्रभृत्युपद्रवेभ्यो भवितुमर्हति इत्यादि शास्त्राशयमज्ञात्वा वृथैव विष्णुपदीप्रयाणेऽधुना कोलाहलः क्रियते खपुष्पदर्शनवन्मूर्खैरिति सर्वथा निश्चीयते शास्त्रवचनैरित्यलम्॥ ननु गङ्गास्थितिसूचकवाक्यसमूहेन युक्त्या च सनत्कुमारसंहितास्थश्लोकतात्पर्य्यमन्तिमकलिपरं प्रतिपादितं तथापि तन्न मञ्जुलं प्रतिभाति अन्यपुराणादिवाक्यानां गङ्गागमनविधायकानां तत्र संघटनाऽभावात् तानि वाक्यानि च

श्रीवेदानामिदानीं निर्गमाभावात् अतएव निर्गमवाक्यानां तत्तद्ग्रामदेव-
वेदादियात्रासूचकवाक्यानामिव गतकल्पीयत्वं स्पष्टमेव। प्रत्यक्षमेवेदानीं
ग्रामदेवानां वेदमन्त्राणां च दत्तफलत्वात्। तथाच बहूनामनुग्रहो न्याय्य
इति शास्त्राचारेणापि स्वल्पानां यात्रावाक्यानां कल्पान्तरे ग्रहणं योग्यम्।
स्थितिविधायकवाक्यानां बहुत्वात्। अथोक्तमपि बहुलं पुनः प्रतन्यते॥
केदारखण्डे वदरीमाहात्म्ये प्रथमेऽध्याये। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घोरे कलियुगे
नरैः। कर्त्तव्यो वदरीवासः पापिनामपि मुक्तिदः॥१॥ यत्र साक्षात्सरिच्छ्रेष्ठा
गङ्गापापौघनाशिनी। यत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च विष्णुश्चैव सुरोत्तमाः॥२॥
गन्धर्वाप्सरसश्चैव किन्नरा गुह्यकास्तथा। प्रमथा यक्षरक्षांसि वसन्ति हरि-
मानसा इति वाक्ये गङ्गावासस्तत्र निरन्तरमुक्तः॥ तथान्यत्र तत्रैव॥ अग्नि-
होत्रादिकर्माणि सापायानि कलौ युगे। गङ्गास्नानं हरेर्नाम निरपायमिदं
द्वयम्॥१॥ अन्यत्र तत्रैव॥ त्रेताणां पञ्चकं पृथ्व्यां स्थास्यति प्रवरे कलौ।
गङ्गाद्वारं स केदारं काशीगङ्गागमस्तथा॥ गङ्गापि संगता यत्र सागरेण
महामते। गङ्गापि स्थास्यतेऽत्रैव सत्यमेतच्छिवेरितम् इति। स्कान्दे। गङ्गा
मुक्तिप्रदा नित्या सदा ध्येया मनीषिभिः। लोपस्तस्या न वै जातु यतः
सा ब्रह्मरूपिणी॥१॥ भारते वनपर्वणि पुलस्त्यतीर्थयात्रायाम्। सर्वं कृत-
युगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम्। द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं गङ्गाकलियुगे
स्मृता॥१॥ गच्छध्वं हि सुरागङ्गां ज्ञात्वा विश्वमशाश्वतम्। अदूरे च कलौ
प्राप्ते मुक्तिर्वो वाञ्छिता यदि॥२॥ तथा कलेरन्ते युगप्रवृत्तये गङ्गाविष्णुभ्यां
देवप्राकट्यतीर्थदानधनधर्मस्थापनं क्रियते इति स्पष्टम्। भविष्ये कलिधर्म-
व्यवहारे प्रथमेऽध्याये। धर्मो विलुप्यते सर्वः सत्यं च प्रलयं गतम्। पृथ्वीमन्द-
फला जाता कुटिला उत्तमा जनाः॥८॥ धर्मो रसातलमितस्तारितं गङ्गया
जगत्। प्रच्छिन्नत्वं गता देवा गङ्गया प्रकटीकृताः॥१०॥ नास्ति गङ्गासमो
देवो नास्ति गङ्गासमः प्रभुः। प्रच्छन्नपातकैः पापैः स्नानवांश्चैवमुच्यते॥११॥
इत्यादि। अतः कलौ। गङ्गातीरे वसेन्नित्यं गङ्गान्तोयं सदा पिवेत्।
दीक्षितः सर्वयज्ञेषु सोमपानं दिने दिने॥ इति गौतमादीन् प्रति व्यास-
वाक्यं पुनस्तत्रैव द्वादशेऽध्याये कलेरन्ते देवानां प्रार्थनया। तदा विष्णुर्भवे-
द्राजादानत्यागी कृतेक्षणः। नद्यः सर्वाः प्रकटिता गङ्गया परमेश्वर॥ २३॥

विष्णुश्च दानवानर्थानपाङ्गङ्गा तथा धनम् । इति तस्मिन्नेवाध्यायेऽग्ये वैश-म्पायनवाक्यम्, अप्रार्थना द्विजा धन्या धन्य व्यासवचस्तथा । गङ्गासर्वयुगे धन्या पातिव्रत्ये रताः स्त्रिय इति ॥ ४० ॥ तथा सामस्तुतयश्च इरावतीं मधु-मतीं पयस्विनीममृतरूपामूर्जस्वतीं त्रिदिवप्रसूतां गङ्गां श्रितास्त्रिदिवं व्रजन्ति ॥ १ ॥ ऋषिजुष्टां विष्णुपदीं पुराणां पुण्यधरां मनसा हि लोके । सर्वात्मना जाह्नवीं ये प्रपन्नास्ते ब्रह्मणः सदनं प्रयान्ति ॥ २ ॥ उस्रैर्जुष्टा-मिषतीं विश्वरूपामिरावतीं जनयित्रीं गुहस्य शिष्टैः सेव्याममृतां ब्रह्मकान्तां गङ्गां श्रयेदात्मविशुद्धिकामः ॥ ३ ॥ इति । अर्थश्च ॥ इरावतीं सरस्वतीरूपां मधुमतीं सर्वप्रियकरां पयस्विनीं जलरूपां तत्रापि अमृतरूपां विकार-रहिताम् ऊर्जस्वतीं बृहद्बलां त्रिदिवप्रसूतां ब्रह्मलोकात् प्रकटीभूतां गङ्गां ये श्रितासः गङ्गामाश्रयन्ति ते त्रिदिवं व्रजन्ति ॥ १ ॥ विष्णुपदीं विष्णुप्राप्तिकरां ब्रह्मणः सदनं ज्योतिःस्वरूपं ब्रह्म ॥ २ ॥ उस्रैः देवैः सेवितां इषतीं स्वेच्छावतीं स्वप्रकाशाम् इरावतीं विद्याप्रदाम् अमृताम् अपायशून्यां विष्णुकान्ताम् इति ॥ ३ ॥ अत्र वर्त्तमानकालक्रियया नित्यत्वं द्योत्यते तथाऽमृताम् इति विशेषणेन स्फुटमेवाऽऽकल्पं स्थितिरुक्तेति विभा-वयन्तु सुधियः । तथाच ऋग्वेदेऽष्टमाष्टके तृतीयेऽध्याये षष्ठे वर्गे पञ्चमो मन्त्रः । इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमꣳ स च तापरुष्ण्या असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जकीये शृणु ह्यासुषोमयेति ॥ ५ ॥ इत्यत्र गङ्गायाः सहचरत्वदर्शनात् सर्वाभिः सहैव यात्रा प्रतिसूच्यते । सहचरत्वं यास्कमुनिना स्फुटीकृतं निरुक्ते अ० ८ पा० ३ खं ५ इमं मे गङ्गे यमुने सर-स्वति शुतुद्रि परुष्णिस्तोमं आसेवध्वम् असिक्न्या च सह मरुद्वृधे वितस्तया-चाऽऽर्जकीये आशृणुहि सुषोमया चेत्यादि । अत्र सायणभाष्ये प्रतीके एवोक्तं तदङ्गभूतास्तिस्रः प्रधानभूताः समस्तूयन्ते इमं मे इति मन्त्रेणेति अत्र विराजः पुंसोऽङ्गत्वप्रतिपादनात् विराट् स्थितिपर्य्यन्तं गङ्गास्थितिरिति भाष्यकारमतमित्यलमतिपल्लवितेन ।

इति श्रीनन्दकिशोरात्मजकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे द्वितीयं प्रकरणम् ।

यस्यास्तत्त्वं न जानन्ति कलिमायाविमोहिताः । समन्तः शास्त्रगर्त्तेषु नौमि

तां जाह्नवीं पराम् ॥ १ ॥ अथवैतिथिपत्रेषु गङ्गायुल्लेखकारणम् । प्रोच्यते शास्त्रवचनैः सद्धाक्येश्च यथा मति ॥ २ ॥ ननु यदि निर्गमावधिवाक्यानां गतकल्पीयत्वं दृढीकृतं तर्हि पूर्वजैः शास्त्रकुशलैस्त्रिपथगामिनीस्नानपुरःसरधर्मावलम्बिभिः कथं न तिथिपत्रेषु श्रीजाह्नव्यायुल्लेखे निषेधः कृत इति चेत् तत्रोच्यते । तिथिपत्रेषु ज्योतिर्विद्भिस्तावदुपोद्घाते एव कृतादीनां लक्षणानि प्रलिख्यन्ते । तानि तु युगायुः प्रमाणधर्माधर्मविष्णववतारसंख्यादिरूपाण्येव तथा गङ्गायुल्लेखनमपि कलिलक्षणत्वेनैव विज्ञेयं चेति । तत्र तानि सर्वाण्येव लक्षणानि तु नहि प्रत्येकयुगचतुष्टयावृत्तौ संघटन्ते किन्तु तेषु कियल्लक्षणानि प्रतियुगावृत्तौ घटन्ते । कियल्लक्षणानि तु क्वचित् क्वचिदेव । यथा । वाराहमत्स्यकूर्मनृसिंहवामनपरशुरामरामबलभद्रश्रीकृष्णचन्द्रावताराणां कल्पे सकृदेवाऽऽविर्भावित्वेऽपि तिथिपत्रेषु कृतादीनां मध्येऽनियमतया कृततदवतारगणनात्वेन युगलक्षणमात्रमेव । तथाऽन्ते कलौ गङ्गायात्राभावित्वे सत्यपि गङ्गायुल्लेखस्य कलिलक्षणमात्रत्वेनैव तेषां तात्पर्य्यमिति । अथावताराणां सकृदेवाविर्भावे प्रमाणान्युच्यन्ते । कल्पावतारा इत्येते कथिता वामनादयः । प्रतिकल्पं यतः प्रायःसकृत्प्रादुर्भवन्त्यमी ॥ १ ॥ तत्रापि क्वचित् क्वचिद्विशेषो दृश्यते । यथा श्रीवराहः । द्विराविरासीत्कल्पेऽस्मिन्नाद्ये स्वायंभुवान्तरे । प्राणाद्विधेर्द्वरोद्धृत्यै चाक्षुषीये तु नीरतः ॥ १ ॥ मत्स्योऽपि प्रादुरभवद्द्विःकल्पेऽस्मिन् वराहवत् । आदौ स्वायंभुवीयस्य दैत्यं घ्नन्नाऽऽहरच्छ्रुतीः ॥ २ ॥ अन्ते तु चाक्षुषीयस्य कृपां सत्यव्रतेऽकरोदिति । श्रीनृसिंहस्तु षष्ठेऽन्तरेऽब्धिमथनान्नृहरेः पूर्वभाविता अतः प्रागेव कूर्मादेर्व्यक्तिं षष्ठेऽन्तरे गत इति । श्रीकूर्मस्तु । पाद्मे प्रोक्तं दधे क्षोणीमयमेवार्थितः सुरैः । शास्त्रान्तरे तु भूधारीकल्पादौ प्रकटोऽभवत् । इति द्विराविरासीत् इति कृतयुगावताराः । अथ वामनः । वामनस्त्रिरभिव्यक्तिं कल्पेऽस्मिन् प्रतिपेदिवान् तत्रादौ दानवेन्द्रस्य वाष्कलेरध्वरं ययौ ॥ १ ॥ ततो वैवस्वतीयेऽस्मिन् धुन्धोर्यज्ञमसौ गतः । अदितेः कश्यपाज्जातः सप्तमेऽस्य चतुर्युगे ॥ २ ॥ प्रतिग्रहकृते जातास्त्रय एव त्रिविक्रमाः इति । श्रीपरशुरामस्तु । रेणुका-यमदग्निभ्यां गौरो व्यक्तिमसौ गतः । प्राहुः सप्तदशे केचिद्वाविंशेऽन्ये चतुर्युगे ॥ १ ॥ श्रीराघवेन्द्रः । कौशल्यायां दशरथात्नवदूर्वादलद्युतिः । त्रेतायामाविरभवच्चतु-

विंशे चतुर्युगे ॥१॥ तथा हरिवंशे प्रथमपर्वण्येकचत्वारिंशेऽध्याये । चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरःसरः । जज्ञे दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः ॥१२१ कृत्वात्मानं महाबाहुश्चतुर्द्धा प्रभुरीश्वरः । लोके राम इति ख्यातस्तेजसा भास्करोपमः ॥ १२२ ॥ इति वैवस्वतीयेऽस्मिन्नेवेति ज्ञेयं इति त्रेतावतारः । अथ रामकृष्णौ त्वष्टाविंशतिमे द्वापरान्ते कृष्णद्वैपायनादनुजाताविति स्पष्टमेव । विष्णुपुराणे पञ्चमेऽंशे त्रयोविंशेऽध्याये । मुचुकुन्दवाक्यं कृष्णं प्रति ॥ पुरा गर्गेण कथितमष्टाविंशतिमे युगे । द्वापरान्ते हरेर्जन्मयदुवंशे भविष्यति २६ इति द्वापरावतारौ ॥ अथ बुधकल्किनावष्टाविंशतितमे कलावेव केचन चैतौ प्रतिकलौ मन्यन्ते इत्यत्रत्वऽस्वकृतोपयोगित्वान्नोच्यते अत्र विशेषव्याख्या जिज्ञासा चेत्तर्हि लघुभागवतामृते पद्मब्रह्माण्डादितः संगृहीता द्रष्टव्या । किं बहुनाऽवतारादिवद्भागीरथीव्यवस्था च निःसन्देहैव विष्णुपुराणादिषु चरमे कलौ तद्वात्राप्रमाणत्वात् अतएवावतारलेखनवद्गङ्गायुर्मात्रलेखेऽपि नो काचिद्दोषापत्तिरिति तात्पर्य्यम् । किञ्च अवतारादिगणनावत् केवलं भागीरथ्यायुः कलौ पञ्चसहस्राब्दमितमिति मात्रलेख्ये सत्यपि उक्ततात्पर्य्यानभिज्ञैरधुना गङ्गायुर्क्रांसक्रमस्तु प्रत्यब्दमन्धपरंपरयैव प्रलिख्यते अन्ते कलौ तद्भावित्वेन वेदादिषु तदऽप्रतिपादनात् । ननु च ज्योतिःशास्त्रमतेन ज्योतिर्विद्भिः पूर्वतोऽधुना पर्य्यन्तलेखः कृतः क्रियते चेत्यतो नान्धपरंपरा इति चेत् तदप्यसङ्गतम् । सूर्य्यसिद्धान्तादिसिद्धान्तेषु मकरन्दग्रहलाघवादिकरणग्रन्थेषु वाराहसंहितादिषु च विष्णुपदीयात्रानयनकथनाऽभावात् सिद्धान्ताद्यकथित सोपपत्तिक-जाह्नवी-यात्रासाधक-गणितान्तरस्याऽद्यावधि-श्रवणस्याप्यभावाच्च नन्वन्धपरंपरयैव बहुकाललेखस्य सदाचारतायां ग्रहणमस्तु इति चेन्न तद्-संगतम् अन्धपरम्परायाः सदाचारताऽभावात् सदाऽऽचरितवेदकुलपरम्परा-द्वयविरोधित्वाच्च अथ परम्परात्रयलक्षणानि । वेदवाक्यानुकूलरीत्यनुसरणं वेदपरम्परा । वेदाविरुद्धहितार्थसूत्रकल्पितरीत्यनुसरणं कुलपरम्परा । शास्त्रविरुद्धस्वमतिकल्पितमार्गानुसरणमन्धपरम्परा । एषा नूनमग्राह्या लोकद्वयहानिदत्वात् अतस्तिथिपत्रेषु गङ्गायुर्क्रांसक्रमलेखनमपि नरकप्रदमतो दूरतस्त्याज्यं विमत्सरैरास्तिकैरिति प्रार्थयामि सुमतीनिति । अथाऽत्यन्तभ्रमितबुद्धीनामेव दृढबोधाय श्रीजाह्नव्यायुर्क्रांसक्रमलेखेऽन्धपरम्परैव कारण-

मित्युक्तमपि पुनः प्रतन्यते तत्रापि कारणत्रयं पूर्वमासीत् । यथा । प्रथमन्तु । कलेर्दशसहस्रान्ते इति सनत्कुमारसंहितास्थ कार्त्तिकमाहात्म्याष्टमाध्याय-चतुर्विंशस्य श्लोकस्य तथान्यश्लोकानां च सम्बन्धतात्पर्य्यानऽभिज्ञत्वेनैवाऽविचारिभिरुक्तादेनैव गङ्गायुर्ह्रासक्रमोल्लेखः कृत इतीषद्दर्शितमपि पुनः प्रदर्श्यते तत्राधुना तावत्तदविचारित्वे भ्रमबाहुल्यदर्शनार्थं युगचतुष्टयावस्थाव्यवस्था निरूप्यते श्रीभागवते तृतीयस्कन्धे एकादशेऽध्याये । कृतं त्रेताद्वापरञ्च कलिश्चेति चतुर्युगम् । दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैः सावधानं निरूपितम् ॥ १८ ॥ चत्वारि त्रीणि द्वे चैकं कृतादिषु यथाक्रमम् । संख्यातानि सहस्राणि द्विगुणानि शतानि च ॥ १९ ॥ इति देवायुः प्रमाणेन युगावस्था नरायुः प्रमाणेन युगावस्था ब्रह्मवैवर्त्ते कृष्णखण्डे षण्णवतितमेऽध्याये । अष्टाविंशतिसहस्राण्यधिकं परिमाणकं । लक्षाणां च सप्तदशनराणां परिकीर्त्तितम् ॥६५॥ षण्णवतिसहस्राणि लक्षैर्द्वादशभिः सह । नृणां वर्षैर्महाभाग त्रेता प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ ६६ ॥ चतुःषष्टिसहस्राणि लक्षैरष्टाभिरेव च । नृणां वर्षैर्द्वापरञ्च कालज्ञैः परिकीर्त्तितम् ॥ ६८ ॥ द्वौ च त्रिंशत्सहस्राणि चतुर्लक्षप्रमाणकम् । नृणां वर्षैः कलियुगं प्राहुर्वेदविदो जनाः ॥ इति तत्रापि पूर्वसन्ध्यांशयुगपश्चिमसन्ध्यांशभेदेन त्रिधावस्था सन्ध्यांशयोरन्तरेण यः कालः शतसंख्ययोः तमेवाहुर्युगं तज्ज्ञा यत्र धर्मो विधीयते ॥ इति भागवते तृतीयस्कन्धे मैत्रेयवचनात् तत्र कलेस्तु नरायुः प्रमाणेन तावत् षट्त्रिंशत्सहस्राब्दमितः पूर्वसंध्यांशः ततः षष्टिसहस्राधिकत्रिलक्षाब्दमितः कलिः ततस्तदुत्तरसंध्यांश इतिक्रमः । तत्राधुना कलेः पूर्वसंध्यांश एव ततः कलिर्भविष्यतीति हेमाद्रिप्रभृतिग्रन्थेषु स्पष्टमेव तत्रैव च पुराणादिसम्मतेन युगानां चतुश्चरणवत्त्वं संध्यांशमध्ये कोऽत्वेति प्रतिपादितं तत्र पूर्वसंध्यांशः प्रथमे पादे संगृहीतः उत्तरश्चतुर्थे पादे इति बोध्यम् । एवं च सति अष्टसहस्रोत्तरैकलक्षाब्दपरिमितः कलेरेकः पादः एवं चत्वारः पादास्तस्येति तत्राद्यपूर्वस्मिन्नेव संध्यांशसहिते प्रथमे पादे संध्यांशपरिमाणवर्षाणामेव मध्ये तिथिपत्रेषु चरमकलिलेख्य गङ्गायुर्ह्रासक्रमलेखनं न सम्भवन्ति उक्त श्लोके तथान्येषु च कलिशब्दस्य संध्यांशयोरन्तरेणेति वाक्येन । तथा विष्णुपुराणेऽपि तृतीयेऽध्याये संध्यासंध्यांशयोरन्तयः कालो मुनिसत्तम ॥ युगाख्यः स तु

विज्ञेयः कृतत्रेतादिसंज्ञितः । इति पराशरवाक्येन च युगपरत्वात् अतएव नैव संध्यांशपरत्वं कलिशब्दस्य शास्त्रोक्तयुगावस्थानियमविरोधात् संध्यांशयोरन्तरेणेति वाक्ये मिथ्यात्वापत्तेश्चेति । किम्बहुना इत्याद्याशयतात्पर्य्यानभिज्ञाः केचनचये मुग्धाः श्लोकार्थे तु कलिशब्दस्य युगपरत्वमुक्त्वापि भ्रान्त्यैव स्वमनीषया कल्पितेऽनर्थे विश्वसिताः अधुना कलेः पूर्वसंध्यांश एव श्रीजाह्नव्याः स्वः प्रयाणाऽब्दोनकरणं प्रतिवत्सरं लिखन्ति वदन्ति चैवं तेषां मतेनैव तन्मतं निरस्तं इदानीं कलेरप्रवृत्तेरिति एवं च सिद्धान्ते सति तेषां भ्रान्तमतीनां एतत्कलिविषयकारोपितभ्रमार्थेऽपि भ्रमदर्शनात् महदसङ्गतेनाज्ञानेन तिथिपत्रस्थजाह्नवीदेव्यायुर्ज्ञानसंक्रमलेखाग्रहे जड़ान्धपरम्पराप्रभावमृते किं खलु वाच्यं स्यादिति सद्धास्यं विभायन्तु सन्तः इति ॥ १ ॥ अथ द्वितीयं कारणं मन्मुखश्रुतमेव प्रलिख्यते केचनचकस्य चिद्गङ्गाभक्तस्य स्वदेशाधिपस्याज्ञानुवर्त्तिनस्तदानीं श्रीविष्णुपद्यभक्तानामपि मोक्षमभीप्समानाः स्वयमपि श्रीजाह्नवीप्रभावज्ञाः तदविश्वसितानपि प्रत्युत्साहयितुं तान् ससाम इत्युक्तवन्तः भोजना: श्रीब्रह्मद्रवसेवनेन पापिनामपि शीघ्रं मुक्तिर्भवतीत्यस्माद्धर्मज्ञाः यूयमेव जाह्नव्याः सविधिस्नानं कृत्वाऽस्मिन्नेव जनुषि मुक्तिभाजो भवत चेद्यदीह विघ्नभावः स्यात्तर्ह्यागामि जनुषि तु नूनमेव वो मुक्तिर्भविष्यति । नन्वेवं गङ्गामाहात्म्यं तर्हि पुनर्जन्मान्तरे गङ्गाभक्तिस्नानादिकं कृत्वा भवन्तरिष्याम इति चेत् तत्तु महद्दुर्घटं श्रीभागीरथ्या अल्पकालस्थितेर्यत्र कुत्र लब्धप्रमाणत्वात् अतएव सर्वभावेन गङ्गां शीघ्रं भजत जन्मान्तराणान्तु इह कृतपापपुण्यादिभुक्तौ सत्यामल्पकालत्व दुर्विचिन्त्यत्वात् इत्येवं गङ्गाविमुखजनकदम्बप्रोत्साहनपराः कृतोपदेशा घोषाः पुनश्चाल्पकालेनैव गङ्गास्नानधर्मपरांस्तान् क्वचित् क्वचिदालक्ष्य तद्विश्वासायाऽन्येषां च प्रवर्त्तनाय श्रीगङ्गानिर्गमावधिवर्षाणामूनकरणं प्रत्यब्दमङ्गीकृत्य तथा तिथिपत्रेषु प्रकाशितवन्त इति । तदानीं च महात्मानोऽपि चैतद्विचारं कृतवन्तः । नच धर्म्मसमो बन्धुर्न च धर्म्मसमं यशः । न च धर्म्मसमो लाभो नैव धर्म्मसमं सुखम् ॥ १ ॥ तस्मादुपार्जयेद्धर्म्ममवरेणापि कर्मणा । सर्वसिद्धिकरं नित्यं परत्र च गतिप्रदम् ॥२॥ इति स्मृतेः । येन केन प्रकारेण यथापि परिभावितम् । धर्मं न दूषयेत् प्राज्ञः सेवतां संसेवयेत् सदा ॥ १ ॥ इति नीतिशास्त्रवाक्यादपि तथा

च न स्वधर्मात्परो योगो न स्वधर्मात्परं तपः । न स्वधर्मात्परो यज्ञो न स्वधर्मात्परं बलम् ॥ १ ॥ तस्मात् संस्थापयेद्धर्मं न हि धर्मसमः सुहृत् । निर्मूलेनापि मार्गेण वर्द्धितं वर्द्धयेत् स्वयम् ॥ २ ॥ [illegible] इदं निष्पन्नं भवति स्वकपोलकल्पितमार्गेण वाऽन्यकल्पितान्धपरम्परामार्गेणापि केनचिदेव स्थापितं तीर्थस्नानदानपूजायज्ञादिरूपं धर्मं श्रद्धया सेवेत तथाऽस्नानऽभ्युपदिश्य संसेवयेत् तेनैव प्रथासेव्यमानं च धर्मं न विदूषयेत् इति स्मृत्याद्याशयादव्यवहारणं [illegible] शङ्कमानाः अथच कलेः पञ्चसहस्राब्दान्ते [illegible] आपतिते तु श्रीजाह्नवी-तत्त्वदर्शिनः [illegible] दत्वा पुनः [illegible] कारि-[illegible] तेषामस्नुस्नानां [illegible] ज्ञात्वापि श्रीजा[illegible] तात्कालीयप्रजाकल्याणाय [illegible] विद्वांसः स्वयमपि तत्र [illegible] इति ॥ २ ॥ अथ तृतीयं कारणं तु यथाश्रुतं प्रलिख्यते । यथा [illegible]-[illegible] वैदिक-धर्मपालकानां राज्ये [illegible] यवनराज्यमासीत् तेश्च यादृशीहानिरस्मद्धर्मे कर्मणि च कृता तां वक्तुं हृदयदाहपूर्वकं सकम्पश्च रोमोद्गमयुता भवति तनुः तथापि तत्रैतावदेवोच्यते । तत्कृतास्मद्देवप्रतिमामन्दिरादिखण्डने सति नः पूर्वजान् परावरज्ञान् [illegible] तैर्यवनभूपैर्दृष्टतयोक्तं यूयं स्वपूज्या गङ्गा-प्रभावं दर्शयत नो चेत्स्नानं त्यजध्वम् अन्यथा चेद्बोवन्धनं करिष्याम इति । अतः सर्वे [illegible] स्वेष्टमेकं कुर्वन्तु भवन्त इत्येवं सति देशकालज्ञैः परमापन्नैस्तैर्महात्मभिः परस्परं संमन्त्रणं कृत्वा विचारं च गत्वा यवनेशपार्श्वमित्युक्तम् । [illegible]-[illegible] स्वयमेवाऽस्थिरायाः कं प्रभावं दर्शयिष्याम इति । ततश्च । पुनः सनत्कुमार-संहिता कार्त्तिकमाहात्म्याष्टमाध्याय-चतुर्विंशतितमः श्लोकस्त्वेत-[illegible] तद्वचनपूर्वकं स्वधर्मरक्षणाय प्रमाणत्वेन दर्शितः ततश्च दृष्ट्वा [illegible] यवनैरपीच्छापूर्वकमेतदुक्तम् एवं चेत्तर्हि स्नातं भवद्भिर्या गङ्गात्वमऽतो यथेच्छं स्नानं कुरुत किन्तु [illegible] तिथिपर्वसु [illegible] प्रत्येकवत्सरं कुरुत तथाच [illegible]-

शकाब्दलेखवत्तत्रास्मदीयशकमपि लिखतेति श्रुत्वाऽऽपन्नास्ताः परमकुशलास्ते विद्वांसः स्वकीयधर्मविरोधिनामपि तेषामुक्तवचनद्वयं तदा स्वधर्मरक्षणार्थे स्वीचक्रुरिति तत आरभ्य तद्राज्यमन्वप्यऽन्धपरम्परालेख्यः प्रवृत्त इति। किञ्च अत्राऽविश्वसितैस्तु कोविदैः तद्राज्यसमयस्थतिथिपत्रेष्वेव श्रीभागीरथ्या आयुर्ज्ञासक्रमलेखस्तथा यवनशकोल्लेखश्च नूनं द्रष्टव्यः। पूर्वत आसीद्वा तत आरभ्यैवेति। अस्मज्ज्येष्ठपितृव्यैः श्रीमोहनलालशर्मभिस्तु मदग्र एव पूर्वकालीययवनराज्यतिथिपत्राणि तत्पूर्वाण्यपि विलोक्य तन्निश्चयः कृतः श्रीगङ्गानिर्गमाऽब्दोनकरणं न तु यवनराज्यतः पूर्वमासीत्। इत्यत्राज्ञानां दृढविश्वासाय सुमतिभिः पुनरपि तथा दृष्ट्वा निश्चयः कारयितव्य इति। किम्बहुना तदारभ्याद्यपर्यन्तमापन्नुत्तैरपि ज्योतिर्विद्भिः कैश्चित् पण्डितैर्विचारं त्यक्त्वाऽन्धपरम्पराग्रस्तैः प्रत्यब्दं श्रीगङ्गायुर्ज्ञासक्रमलेखः क्रियते इत्यलम् ॥ १ ॥ इति श्रीरामदत्तात्मज-श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसङ्कलिते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

गङ्गापाङ्गादुरङ्गानामङ्गानामपि शोधकाः। अभङ्गानङ्गमङ्गाङ्गभङ्गाख्यास्ते जयन्ति हि ॥१॥ अथागमनमब्दाया: पुराणेषु विरुध्यते। काशीरामप्रणीतेन सङ्गतिस्तस्य लिख्यते ॥ २ ॥ ननु च कदा भुवि गङ्गाप्रादुर्भावो जात इति न निश्चयपदं समायाति। पुराणादिषु तस्य बहुप्रकारेण वर्णनात्। तथाहि वाल्मीकीयरामायणे तु। भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्यन्दनमास्थितः प्रायादग्रे महातेजा गङ्गा तञ्चाप्यनुव्रजत् ॥ १२ ॥ इत्यादिश्लोकैः। ततः सगरात्मजोद्धारे सति विरञ्चिवाक्यम्। प्राप्तोऽसि परमं लोके यशः परमसम्मतम्। यच्च गङ्गावतरणं त्वयाकृतमरिन्दम ॥ ५१ ॥ अनेन च भवान् प्राप्तो धर्मस्यायतनं महदित्यादिना। गङ्गाप्रादुर्भावः सप्तमेऽस्मिन् वैवस्वतमन्वन्तरे चतुर्विंशे त्रेतायुगे कपिलाज्ञया भगीरथतपोनिमित्तक आसीदिति। एवं भागवते नवमस्कन्धे नवमेऽध्यायेऽपि। भगीरथः सराजर्षिर्निन्ये भुवनपावनीम्। यत्र स्वपितॄणां देहा भस्मीभूताः स्म शेरते ॥ १० ॥ रथेन वायुवेगेन प्रयान्तमनुधावती। देशान् पुनन्ती निर्दग्धानाऽऽसिञ्चत्सगरात्मजान् ॥ ११ ॥ इति सगरात्मजोद्धारायैव भगीरथकृत एव प्रसिद्धः ॥ अथास्यात्तरोधक एव

द्वितीयो गङ्गाप्रादुर्भावस्ततो भगीरथात् पूर्वमेव वैवस्वतमन्वन्तर एव सप्तमे
त्रेतायुगे बलेर्यज्ञे त्रिविक्रमचरणजातः श्रूयते । भागवते पञ्चमस्कन्धे सप्त-
दशेऽध्याये । तत्र भगवतः साक्षाद्यज्ञलिङ्गस्य विष्णोर्विक्रमतो वामपादाङ्गुष्ठ-
नखनिर्भिन्नोर्ध्वाण्डकटाहविवरेणान्तः प्रविष्टा या बाह्यजलधारा तच्चरणपङ्क-
जावनेजनारुणकिञ्जल्कोपरञ्जिताऽखिलजगदघमलापहोपस्पर्शनाऽमला सा-
क्षाद्भगवत्पदीत्यनुपलक्षितवचोऽभिधीयमानाऽतिमहता कालेन युगसहस्रोप-
लक्षणेन दिवो मूर्द्धन्यवततारेत्युक्तेन । न च दिवो मूर्द्धन्यवततारेत्युक्तेन विय-
द्गङ्गा ज्ञायते सा भगीरथानयनात् पूर्वं भुवि नावततारेति वाच्यम् । पञ्चमस्कन्ध-
सप्तदशाध्यायवाक्येनैव तस्या भुवि आगमनप्रसिद्धेः । तथाहि । तथैवालक-
नन्दा दक्षिणेन ब्रह्मसदनाद्बहूनि गिरिकूटान्यतिक्रम्य हेमकूटान्यतिरभसतर-
रंहसा लुठयन्ती भारतमभिवर्षं दक्षिणस्यां दिशि जलधिमभिप्रविशति ॥९॥ तथा
विष्णुपुराणेऽपि विष्णुपादविनिष्क्रान्ता प्लावयन्तीन्दुमण्डलम् । समन्ताद्-
ब्रह्मणः पुर्यां गङ्गा पतति वै दिवि । सा तत्र पतिता दिक्षु चतुर्द्धा प्रत्यपद्यत
सीता चालकनन्दा च चक्षुर्भद्रा च वै क्रमादिति वाक्यवृन्देन गङ्गाया भुव्या-
गमनं च प्रसिद्धम् । एवं च सत्येऽस्याप्यवतरणस्य प्रतिबन्धका स्वायंभुव-
मन्वन्तरे गङ्गास्थितिः श्रूयते । भागवते चतुर्थस्कन्धे पृथुचरिते । गङ्गायमु-
नयोर्नद्योरन्तरा क्षेत्रमावसन् आरब्धानेव बुभुजे भोगान् पुण्यजिहासया
इति श्लोकेन पृथुराज्यं तु स्वायंभुवमन्वन्तर एवासीत् तथाच स्वायंभुवेऽन्तरे
यज्ञ एवेन्द्रोजात इति भागवते प्रथमस्कन्धे तृतीयेऽध्याये । ततः सप्तम
आकूत्यां रुचेर्यज्ञोऽभ्यजायत । सयामाद्यैः सुरगणैरपात्स्वायंभुवान्तरम् ॥१२॥
तथा तत्रैव चतुर्थस्कन्धे प्रथमेऽध्याये । तां कामयानां भगवानुवाह यजुषां
पतिः । तुष्टायां तोषमापन्नो जनयद्द्वादशात्मजान् ॥ ६ ॥ तुषिता नाम ते
देवा आसन् स्वायंभुवान्तरे । मरीचिमिश्रा ऋषयो यज्ञः सुरगणेश्वरः ॥ ८ ॥
इति वाक्येन । तथाच पृथुकाले यज्ञ एवेन्द्रः इति पृथुचरितेनैवावगम्यते
यज्ञेन सह तस्य विरोधात् तयोर्विरोधशान्त्यर्थं ब्रह्मवाक्यं च तत्रैव श्रूयते
न वध्यो भवतामिन्द्रो यद्यज्ञो भगवत्तनुः । यज्जिघांसथ यज्ञेन यस्येष्टास्तनवः
सुरा इति श्लोकेन । इत्यतः स्वायंभुवान्तरे यज्ञे इन्द्रे पृथुराज्यमतस्तत्र गङ्गाया
विद्यमानत्वं निःसन्देहमेवेति । अन्यत्र च यस्मिन् यज्ञे महादेवे दक्षस्य

विद्वेषः समजनि तस्य विश्वसृग्भिः कृतस्य [illegible] प्रयागे तैः कृतमित्यपि श्रीभागवते चतुर्थस्कन्धे श्रूयते। यथा, [illegible] यत्र गङ्गायमुनयान्विता विरजेनात्मना सर्वे स्वं स्वं धाम ययुः सुरा इति। तदपि स्वायंभुवमन्वन्तर एवासीदिति गम्यते प्राचीनबर्हिषो राज्ञस्तत्र सत्त्वात् तथाहि। वाता न वान्ति नहि सन्ति दस्यवः प्राचीनबर्हिर्जीवति होग्रदण्ड इति। दक्षयज्ञविध्वंसनायागतेषु रुद्रभटेषु यज्ञस्था ऋत्विगादयस्तत्स्त्रियोऽपि वितर्कयामासुः अतो बुध्यते प्राचीनबर्हिः [illegible] राजाऽऽसीत् यज्ञश्च तदानीन्तन इन्द्र आसीत्। तथाच दक्षयज्ञविनाशे भूतादिपीड़ितान् सुरान् प्रति ब्रह्मणोवाक्यम्। नाहं न यज्ञो न च यूयमन्ये ये देहभाजो मुनयश्च तत्त्वम्। विदुः प्रमाणं बलवीर्ययोर्वा यस्यात्मतन्त्रस्य क उपायं विधित्सेत् इति। अस्य टीकायां च [illegible] यज्ञस्तदानीन्तन इन्द्र आसीदिति लिखितम्। [illegible]। स्वायंभुवेऽन्तरे गङ्गाया [illegible] सर्वथा निश्चीयते। स्वयं मनुनैव सा गङ्गा सा कुर्वन् गमः [illegible] स्थित्ते गङ्गास्नानस्य कथनात् [illegible] तत्कृतगङ्गाग्रहणाच्च एवं [illegible] दैनन्दिन[illegible]ऽपि गङ्गा-स्थितिः श्रीभागवततृतीयस्कन्धे सनकादीनां श्रीविष्णोर्लोक [illegible] गमने श्रूयते। स्वर्द्धुन्युदार्द्रैः [illegible]। एवं च सति दैनन्दिनप्रलये तथा प्रथमे [illegible] यदि गङ्गायाः स्थितिः पृथिव्यामासीत्तर्हि [illegible] रथेन उद्भवः किमिति निरूपितः ततोऽपि [illegible] मन्वन्तरे चतुर्विंशे त्रेतायुगे भगीरथद्वारा श्रीगङ्गायाः [illegible] इति कथं सङ्गच्छते। इति सन्देहे जायमाने [illegible]। [illegible] प्रादुर्भावस्य तद्भगवतः प्रादुर्भावतस्त्वेऽपि [illegible] पुनः पुनर्वर्ण्यते। यथा, भूगोलकावर्णने [illegible] वराहाद्यवताराः वर्णिताः तेश्वामवतारास्तत्र तत्काले श्रूयन्ते यथा। [illegible] उपास्यः श्रीनारायण उपासकः श्रीनारदः तत्राऽन्येष्वपि खण्डेषु ते तेऽवतारास्तेषां तेषां च उपासकाश्च सन्ति। एवं च सति। [illegible] स्वायंभुवदक्षादेव जातायां मूर्त्यां धर्म्मान्नरनारायणौ [illegible]

ततोऽपि पूर्वं स्वायंभुवमन्वन्तरे भरतखण्डे पूज्यत्वेन नरनारायणौ स्थितौ भगवदवताराणां देवभौमबिलवैकुण्ठेषु मूर्त्तिभेदेन स्थितत्वं यावत्कल्पाधिकारस्तावन्निश्चितम् । तथाच पाद्मे वैकुण्ठसदने नित्ये निवसन्ति महोज्ज्वलाः अवतारास्तदा तत्र मत्स्यकूर्म्मादयोऽखिलाः । हानोपादानरहितानैव प्राकृतिजाः क्वचित् । न च पाद्मवचनेन वैकुण्ठपदश्रवणात् भौमोबिलस्थ वैकुण्ठो न भवतीति वाच्यम् । यत्र यत्र भगवान् साक्षात्तिष्ठति तत्र तत्र वैकुण्ठोऽस्तीत्यभिप्रायात् वैकुण्ठपदस्योपलक्षणत्वाच्च मन्निकेतन्तु निर्गुणमिति भागवतैकादशस्कन्धे भगवद्वाक्याच्च । एवं च सति श्रीगङ्गाया न केवलं त्रिविक्रमचरणोद्भवत्वमङ्गीकर्त्तव्यं तस्याः सुगुणब्रह्मद्रवत्वात् तच्चरणोद्भवत्वं च केनचिद्धेतुना श्रीनृसिंहादिवदाविर्भावो मन्तव्यः। भगवतो यथाविर्भावे निमित्तं तद्वद्गङ्गाया अप्याविर्भावे निमित्तं स्वीकर्त्तव्यम् । तथाच गीतायां परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्म्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे इतिवद्गङ्गाया अपि ज्ञातव्यम्। तथाहि यतः कल्पारम्भस्तत एव ब्रह्माण्डरचनासहभूतः भूलोग-खगोलयोः प्रादुर्भावस्तत्सहभूतः भुवि समस्तक्षेत्राणां गङ्गायमुनादिनदीनां सुमेर्वादिपर्वतानां च प्रादुर्भावो ज्ञेय इति एवं स्थितिश्चाऽऽकल्पान्ता विज्ञेया च अतः स्वायंभुवमन्वन्तरमारभ्य चतुर्द्दशमन्वन्तरेषु श्रीगङ्गापि लोके स्थास्यत्येव तथापि केनचिन्निमित्तेन तिरोभावे जाते वैवस्वतमन्वन्तरे त्रिविक्रमचरणादुद्भूता ततस्तु केनचिद्धेतुना तिरोभावे सञ्जातेऽपि कपिलब्रह्मर्षिणा । ब्राह्मणातिक्रमे दोषो ब्राह्मणेनैव हन्यते इति वाक्यानुसारेण ब्राह्मणापराधजं दोषं ब्राह्मणपादोदकसेवनेनैव नश्यतीति प्रख्यापयित्वा श्रीभगवदवतारवामनब्रह्मर्षिपादोदकेन सगरात्मजोद्धारोऽस्त्वित्यभिप्रायवता च भो राजन्! विधिकमण्डलुस्थवामनपादशौचजलं गङ्गारूपेण यदायास्यति तर्हि त्वत्पूर्वजोद्धारो भविष्यतीत्यंशुमते कृपयाऽऽज्ञादत्ता इति कपिलाज्ञापूर्व्वके भक्तवत्सला गङ्गा अलकनंदारूपेण भूमौ स्थितापि भागीरथीति द्वितीयरूपेण प्रसिद्धिं गत्वा पुनरलकनन्दायामेव देवप्रयागे मिलित्वा सगरात्मजानुद्दिधीर्षुर्वैवस्वतमन्वन्तरे भगीरथद्वारा प्रादुर्भूता इति गम्यते। आगतस्य पुनर्गमनं विना पुनरागमनं न घटते इति नियमात् स्वायंभुवान्तरे तिरोभावे कारणं मन्तव्यम् । अत्र श्रीगङ्गाया आविर्भावतिरोभावौ केवलं मनुष्याणां

दर्शनाऽदर्शनात्मकौ बोध्यौ विराजः पुंसो नाडीरूपेण सदा स्थितत्वात् तथा चात्र * सप्रमाणिका उपपत्तिर्लिख्यते जह्नुना योगबलेन क्रोधात्पीता गङ्गा पुनरपि वैशाखशुक्लसप्तम्यां तद्दक्षिणकर्णादुद्भूता इति प्रमाणं पुराणादावस्त्येव । तथाच ब्राह्मे । वैशाखशुक्लसप्तम्यां जह्नुना जाह्नवीपरा । क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणादिति । तथाच वाल्मीकीयरामायणेऽपि बालकाण्डे । ततो हि यजमानस्य जह्नोरद्भुतकर्म्मणः । गङ्गासंप्लावयामास यज्ञवाटं महात्मनः ॥ २१ ॥ तस्यावलेपनं ज्ञात्वा क्रुद्धो जह्नुस्तु राघव । अपिबत्तु जलं सर्वं गङ्गायाः परमाद्भुतम् ॥ २२ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वा ऋषयश्च सुविस्मिताः । पूजयन्ति महात्मानं जह्नुं पुरुषसत्तमम् ॥ २३ ॥ गङ्गाञ्चापि नयन्ति स्म दुहितृत्वे महात्मनः ॥ २४ ॥ ततस्तुष्टो महातेजाः श्रोत्राभ्यामसृजत्पुनः । तस्माज्जह्नुसुतागङ्गा प्रोच्यते जाह्नवीति च ॥ २५ ॥ जगाम च पुनर्गङ्गा भगीरथरथानुगा । सागरञ्चापि संप्राप्ता सा सरित्प्रवरा तदा ॥२६॥ इतिवत् स्वायंभुवान्तरेऽपि ज्ञेयम् । इत्येवं सिद्धान्ते जायमाने गङ्गाप्रादुर्भावे तथा भगीरथरथखातनिवासाय श्रीगङ्गयैव कृतप्रतिज्ञत्वाद्भगीरथानयनादनुकल्पान्तं गङ्गास्थितिविषयेऽपि सुधीभिः सन्देहो न कार्य्य इति ॥ किञ्च । नन्वत्र कलियुगद्वितीयपादयात्राविधायकवाक्यमपि श्रूयतेऽतः किमिति भगीरथानयनादनुगङ्गायात्रा नेत्युच्यते तथाहि केदारखण्डे सप्तसप्तत्यधिकशततमेऽध्याये गङ्गावासुकिसंवादे । भगीरथेन कैलाशादानीतास्मीह वासुके । निमन्त्रितास्मिभूमौ हि पितॄणां मुक्तिकारणात् । साम्प्रतं तदवश्यं हि कर्त्तव्यं भगवन्मया । चरमेऽस्मिन् युगे भूय आगमिष्यामि ते स्थलम् । इदानीं मुञ्च मां शीघ्रं समुद्रे मे गतिर्मतेति ॥ तथा चापि भगीरथं प्रति गङ्गावाक्यं तत्रैव श्रूयते । भगीरथमहाप्राज्ञ एवमेव भविष्यति । यावच्चन्द्रश्च सूर्य्यश्च स्थास्यन्त्यम्बरमण्डले ॥ तावत्कीर्त्तिर्महाराज भविता ते त्रिलोकके । नामापि तव च श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ कलेर्द्वितीयपादे तु गमिष्यामि पुनस्स्थलमिति । एवं च सति । पूर्वं निर्णीताऽन्तिमे कलौ गङ्गायात्रासुतरां निरस्तैव पूर्ववदत्रापि कारणश्रवणादिति । अत्रोच्यते । वासुकिं प्रति तु मूर्त्तिदर्शनदायकश्रीभागीरथीवरप्रदानाऽभिप्रायोऽस्तीत्यत्र बोध्यम् । कुतः । यस्यामलं दिवि यशः

* गङ्गाऽऽविर्भावतिरोभावनिमित्त ।

प्रथितं रसायां भूमौ च ते भुवनमङ्गलदिग्वितानं । मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधोगङ्गेति चेह चरणाम्बुपुनातिविश्वम् ॥४४॥ इति भागवतदशमस्कन्धस्थप्रतितमाध्यायवाक्यात्पाताले भोगवतीति प्रसिद्धधारायाः सदा विद्यमानत्वात् ब्रह्मद्रवस्य पुनः प्रवेशोनसङ्गच्छतेऽतः श्रीब्रह्मवैवर्त्तपुराणे प्रकृतिखण्डनवमेऽध्याये । द्रवाधिष्टातृदेवी या रूपिणा प्रतिमा भुवि । नवयौवनसम्पन्ना-रत्नाभरणभूषिता इत्यादिश्लोकोक्ता चिद्द्रवस्यैवानिर्वचनीयाशक्तिर्मूर्त्तिमतीप्रसिद्धास्ति तस्या एव भक्तेच्छया सर्वत्र दर्शनदानं गमनं च सङ्गच्छते । तथाचोक्तं कैश्चिदभियुक्तमहानुभावैः । स्वर्गे भुवि च पाताले द्रवरूपा सदा स्थिता । तथापि तस्मादन्यत्र चाहृता यज्ञकर्मणि ॥ भक्तैश्च दर्शनं दातुं याति मूर्त्तिमती शिवा । तथा लोकत्रये मूर्त्त्या क्रमात्सन्निहिता भवेदिति । ब्रह्मपुराणेऽपि । षष्ठ्यादौ कृष्णपक्षे तु भूमौ सन्निहिता भवेत् । यावत् पुनरमावास्यादिनानि दशनित्यशः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्य दिनानि दशनित्यशः । पाताले सन्निधानं तु करोति स्वयमेव हि ॥ २ ॥ शुक्लैकादशिकादीनि गङ्गास्वर्गतरङ्गिणी । पञ्चम्यंतानि सा स्वर्गे सदा सन्निहिता भवेदिति । अतएव नारीभ्यो गङ्गावरप्रदानं तेषां स्थलं गत्वा मूर्त्तिदर्शनात्मकमेवेति निश्चीयते । त्वया समग्रभावेन स्थेयं भारतखण्डके इति भगीरथप्रार्थनानन्तरं भगीरथमहाप्राज्ञ एवमेव भविष्यतीति गङ्गावरप्रदानदर्शनात् । किञ्च । यदि च जलप्रवाहगमनवरदानमेव चेद् गृह्यते तदपि एकांशेन कविजयदेवस्येच्छया तद्वाप्याविर्भाववदत्रापि ज्ञेयम् । तथापि नास्त्यत्र क्षतिरिति । किम्बहुना, द्रवरूपायास्तु भागीरथ्यायाता भगीरथपूर्वजोद्धारादनु प्रलयकालमृते कदापि न सम्भवतीति सिद्धान्त इत्यलं विस्तरेण ।

इति श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसूनु-दुर्गादत्तकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

चिद्द्रवस्यैव या शक्तिस्तदधिष्टातृदेवता । वन्दे तां जाह्नवीं दिव्यां मकरासनसंस्थिताम् ॥१॥ अथ चाऽच्युतरामस्य मीमांसकशिरोमणेः । प्रपौत्रपुत्रजेनाम्ना मूर्त्तिभेदक्रमोऽस्यते ॥ २ ॥ ननु च गङ्गायाः सगुणब्रह्मद्रवत्वं यदुक्तम् । तत्कथं सगुणब्रह्मद्रवतामगादिति तथाच तस्यैवाऽपरामूर्त्ति-

चतुर्भुजा मकरवाहना प्रोक्ता शास्त्रेषु श्रूयते च । उत्फुल्लामलपुण्डरीक-रुचिरा कलशेशविध्यालिका कुम्भेष्टाभयतोयजानि दधतीभिर्नागेन्द्रालङ्कृता । हृष्टास्या शशिशेखराऽखिलनदीशोणादिभिः सेविता ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथीसाधकैरित्यादिभिः श्लोकैः । सा किं निमित्तं जातेति । यदि च भक्तकार्य्यार्थमेवेति पूर्वमुक्तं गृह्यते तत्तु स्मरणनामोच्चारणादिनैव भवितुं शक्यते इति सन्देहे जायमाने अत्रोत्तरः क्रमेणोच्यते । यथा निर्गुणस्य परमात्मनः स्वेच्छया* लीलाविनोदाय चिच्छक्तिमुपाश्रित्य निर्विकारसगुण-ब्रह्मत्वं प्रतिपाद्यते तथैव स्वेच्छयैव सगुणब्रह्मणो निर्विकार-नीराकारत्वं बोध्यम् । तत्तु भक्ताः संसारेऽध्यात्मादितापतप्तानां तापनिवृत्त्यर्थमेव मन्यन्ते । तथाच स्मर्य्यते । निराकारमुपासन्ते साकारमपि केचन । वयं संसार-सन्तप्ता नीराकारमुपास्महे इति । स्कान्देऽपि पार्वतीशिवसंवादेन जगद्-द्धारायैव जलाकारत्वं स्पष्टीकृतम् । तथाहि अक्षरं यत्परंब्रह्म यस्मिन् सर्व-मिदं ततम् । कथं तज्ज्ञायते लोके किं नाम तद्वद प्रभो ॥१॥ कथं मास्मिन् चरमे युगे विप्रादयः परम् । तेषां भक्तिविहीनानां कथं कलियुगे गतिः ॥२ इति पार्वतीप्रश्ने सति । योऽसौ सनातनोदेवः परात्मा जगदीश्वरः । उवाच भक्तिसम्पन्नां सारात्सारतरं प्रभुः ॥ ३ ॥ परात्मा निर्गुणः शान्तो व्यक्तो-ऽव्यक्तो निराश्रयः । सर्वात्मा सर्वभूतेशः सत्यानन्दो निरञ्जनः ॥ ४ ॥ एक एव हि लोकात्मा सत्वादिगुणवर्जितः । तदेव परमंब्रह्म जलात्मा भगवानजः ५ यत्तद्म्बुनि महादेवि आपोरोचितदुर्गमे । ब्रह्माण्डकोटयो यस्मिन्ननन्ता ब्रह्म-कोटयः ॥ ६ ॥ उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति जलब्रह्मण्यनेकशः । ब्रह्माण्डं प्रति-ब्रह्मादित्रयो देवाः सवासवाः ॥ ७ ॥ इतितद्ब्रह्मविज्ञेयमनन्तं विश्वतो-मुखम् । तदेव सर्वरूपेण ब्रह्माण्डेषु प्रवर्त्तते ॥ ८ ॥ यदेतत्परमं ब्रह्मद्रवरूपं महेश्वरि । गङ्गाख्ययापुण्यतमं पृथिव्या मासकर्णिकम् ॥ ९ ॥ इति अन्यच्च तत्रैव काशीखण्डे सप्तविंशेऽध्याये । बहिःस्थितं जलं यद्वन्नारिकेलान्तरे स्थितम् । तथा ब्रह्माण्डवाह्यस्थं परंब्रह्माम्बुजाह्नवी ॥ २७॥ इति । भारते-ऽपि योऽसौ विश्वम्भरोदेवश्चित्स्वरूपीजनार्दनः । स एव द्रवरूपेण गङ्गाम्भो नात्र संशय इति । अथात्र ब्रह्मद्रवोत्पत्तिः प्रकारान्तरेण ब्रह्मवैवर्त्ते प्रकृति-

* एकोऽहं बहु स्यामिति श्रुतिदर्शनात् ।

खण्डे दशमेऽध्याये श्रूयते श्रीराधाकृष्णयोः कार्त्तिक्यां रासमण्डले शिवो जगाम । एतस्मिन्नन्तरे शम्भुर्ब्रह्मणा प्रेरितो मुहुः । जगौ श्रीकृष्णसङ्गीतं रासोल्लाससमन्वितम् ॥ १५३ ॥ मूर्च्छां प्रापुः सुराः सर्वे चित्रपुत्तलिका यथा । क्षणेन चेतनां प्राप्य ददृशू रासमण्डलम् ॥ १५४ ॥ स्थलं सर्वं जलाकीर्णं राधाकृष्णविहीनकम् । अत्युच्चै रुरुदुः सर्वे गोपागोप्यः सुरा द्विजाः १५५ ध्यानेन ब्रह्मा बुबुधे सर्वमेवमभीप्सितम् । गतश्च राधया सार्द्धं श्रीकृष्णो द्रवतामिति ॥ १५६ ॥ ततस्तैरभिष्टुतः सराधः श्रीकृष्णः स्वदर्शनं च ददावित्यादि तत्र विस्तरतोऽस्ति । तथा देवीपुराणेऽपि । शिवसङ्गीतसंमुग्ध-श्रीकृष्णाङ्गसमुद्भवाम् । राधाङ्गद्रवसंयुक्तां तां गङ्गां प्रणमाम्यहम् ॥१॥ इति । तथाचैवं नारदपञ्चरात्रेऽपि श्रूयते एकदा नारदः सरस्वत्याः सकाशाद्गानविद्यामधीत्य हर्षितो मुनिर्ब्रह्मलोकं गत्वा पितरं नत्वोवाच श्रूयतां मदधीतं नादतत्त्वं समीचीनं वाऽसमीचीनमिति श्रुत्वा च मम श्रवणाधिकारो नास्तीति हसन् कपर्दिनं प्रति प्रेषितः सः शिवमपि तथैवोवाच ततस्तेनापि विष्णुं प्रति प्रेषितः ततो विष्णुनापि ब्रह्मशिववदुक्त्वा कृपया गोलोके प्रवेशितः तत्र चानेकब्रह्माण्डाधिनाथं दृष्ट्वा नत्वा स्वाभिप्रायं निवेदयित्वा तदाज्ञप्तः सभेदं रागमिश्रं जगौ ततश्च तद्गानश्रियन्त्रितश्चिद्घनः कृष्णो द्रवतामगादिति ।* एतच्च कल्पान्तरभेदेनेत्यूह्यम् । यद्वा केनचिद्धेतुना भक्तानां प्रीतये प्रलयाभावेऽपि मार्कण्डेयाय दर्शितमायाबलवत्तदपि सम्भवतीति नात्र विरोध इति तत्त्वमवधेयम् १ अथ चिद्द्रवस्याऽपरामूर्त्तिः किन्निमित्तं जातेत्यतोच्यते कल्पाधिकारिणां देव-नक्षत्र-ग्रह-सिन्धु-नद्यादीनां च मूर्त्तिद्वयं भवति । तत्राद्यया तु स्वाधिकारस्थले स्थित्वेश्वराज्ञा क्रियते एव तथाप्यवान्तरकार्य्यविशेषेषु प्रभोरिच्छयैवाऽपरया मूर्त्त्या तानि क्रियन्ते इति । उक्तञ्च नारदाद्यैः । आद्यामूर्त्तिस्तु देवानां स्वीये धाम्नि विराजते । तस्याः सकाशादुत्पन्ना द्वितीया कार्य्यसाधिका ॥ १ ॥ कार्य्यं विधाय तत्पश्चात् स्वाधिष्ठाने विलीयते । तथापीश्वरमूर्त्तीनां नित्यत्वन्न विरुध्यते ॥ २ ॥ नित्यत्वाद्ब्रह्म एवास्य कालातीतत्वतस्तथा । कालस्यापि नियन्तृत्वात्परत्वात्प्रकृतेरपि ॥ ३ ॥ इत्यादिना यथा सूर्य्यादीनां कल्पाधिकारे स्वे नित्यमूर्त्त्या स्थितिर्नित्यैव तथापि कार्य्यविशेषेषु अत्रि-कश्यपादिगृहे मूर्त्तिभेदेन प्राकट्यं श्रूयत एव तथाहि श्रीभागवते

चतुर्थे । सोमोऽभूद्ब्रह्मणोऽंशेनेति । विवस्वानर्य्यमापूषेति षष्ठस्कन्धवाक्येन च एवञ्च कृत्तिकादीनि नक्षत्राणीन्दोः पत्नास्तु भारतेति षष्ठस्कन्धवाक्येनैवाऽश्विन्यादिनक्षत्राणामपि मूर्त्तिद्वयं दृश्यते तथा मेर्व्वादिपर्वतानामपि पृथुकृतपृथ्वीदोहने । गिरयो हिमवद्वत्सा नानाधातून् स्वसानुषु इति भागवतचतुर्थस्कन्धेऽस्ति मैनाकेन तु मूर्त्तिमता समुद्रोत्प्लवने हनुमतः स्वशिखरे स्थित्वा कपेः सत्कारः कृतः संवादश्च वाल्मीकीय रामायणे प्रसिद्ध एव । एवं समुद्रेणापि मूर्त्तिमता राघवेन्द्रः प्रपूजितः । सिन्धुः शिरस्यर्हणं परिगृह्यरूपी पादारविन्दमुपगम्य बभाष एतदिति भागवतनवमस्कन्धे दशमाध्यायवाक्येन सिन्धोर्मूर्त्तिद्वयं भाति तथैव तत्रैवाष्टमस्कन्धेऽष्टमाध्याये रमाभिषेके । मूर्त्तिमत्यः सरिच्छ्रेष्ठा हेमकुम्भैर्जलं शुचि । इति वाक्येन नदीनां च मूर्त्तिभेदः प्रसिद्धः । तथा पाद्मीये भागवतमाहात्म्ये तृतीयेऽध्यायेऽपि । वेदान्तानि च वेदाश्च मन्त्रास्तन्त्राः समूर्त्तयः । दशसप्तपुराणानि षट्शास्त्राणि तथाऽऽययुः १५ गङ्गाद्याः सरितस्तत्र पुष्करादि सरांसि च । क्षेत्राणि च दिशः सर्वा दण्डकादिवनानि च ॥ १६ ॥ नगादयो ययुस्तत्र देवगन्धर्वकिन्नरा इत्यादि । अन्यत्र च पुराणेषु लेखोऽस्त्यत्र विस्तरभयान्न प्रलिख्यते किंबहुना । यथा । नद्यस्तदा तदुपधार्य्य मुकुन्दगीतमावर्त्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः आलिङ्गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः इति भागवतदशमस्कन्धवाक्येन श्रीयमुनायाः प्रवाहरूपेण साक्षाद्व्रजमण्डले श्रीकृष्णलीलासुखं प्राप्ताया अपि पुनः द्वारकालीलाविनोदाय । कालिन्दीति समाख्याता वसामि यमुनाजले इति कालिन्दीनाममूर्त्त्या तपः कृत्वा पट्टमहिषीषु स्थितिर्दृश्यते तथैव सगुणब्रह्मद्रवस्याप्यन्या मूर्त्तिः द्रवाधिष्ठातृत्वेन प्रसिद्धा पुनर्वैकुण्ठादिषु । गङ्गा-सरस्वती-लक्ष्मीश्चैतास्तिस्रः प्रियाहरेरित्यादिवाक्यदर्शनात् तल्लीलाविनोदायैवेति । तथा कार्य्यविशेषेषु भक्तानां कल्याणाय दृढविश्वासाय च द्रवरूपेण लोकत्रये व्याप्तापि पुनश्च विष्णुलीलासाहाय्यार्थं विशेषपतितोद्धारार्थं च विष्णुवदवताराणि सैव धत्ते भक्तादीनां शापानुग्रहकारिणीति तत्त्वमवधेयम् । ननु तल्लीलाविनोदायैवेति यदुक्तं तन्न संघटते तस्यास्तदन्यत्रापि रूपान्तरेण प्रवृत्तिदर्शनात् तथाहि वाल्मीकिविरचितश्रीगङ्गाष्टके । मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि इति वाक्येन पार्वतीसपत्नीत्वेन

शिवस्यापि भार्य्या गङ्गेति सूच्यते । तथाच कल्किपुराणे तृतीयेऽंशे । सुधाभिषक्तपाङ्गना हिमगिरीशकूटस्तनी सफेनजलहासिनी सितमरालसञ्चारिणी चलल्लहरि-सत्करावरसरोज-मालाधरारसोल्लसित-गामिनी जलधिकामिनी राजते। इति मुनिभिः कृतगङ्गास्तवोक्तेः एवं भागवतप्रथमस्कन्धे एकोनविंशेऽध्याये परीक्षिच्चरिते। इति स्मराजाध्यवसाययुक्तः प्राचीनमूलेषु कुशेषु धीरः। उदङ्मुखोदक्षिणकूल आस्ते समुद्रपत्न्याः स्वसुतन्यस्त भारः। इति वाक्येन तथा तत्रैव नवमस्कन्धे विंशेऽध्याये। शलस्य शन्तनोरासीद्गङ्गायां भीष्म आत्मवानिति वाक्येन च समुद्रशन्तनुभार्य्यात्वेन निर्द्दिष्टेति कष्टपाश इति। अत्र समाधानं न च वाल्मीकिकृतगङ्गाष्टकोक्त्या शिवभार्य्या गङ्गेति वाच्यम्। तत्र गङ्गातरङ्गाणां शिववामाङ्गस्थिताऽम्बा शृङ्गारच्चालनकर्तृत्वेन। सपत्नशब्दस्य शत्रुतापरत्वात्। अथच। सरसामस्मि सागर इति भगवदुक्त्या तद्विभूतित्वे सति गङ्गायाश्च तद्रूपत्वेन नदीरूपायास्तद्भार्य्यात्वे न हानिः एवं च हरिवंशे विष्णुपर्वणि त्रिपञ्चाशत्तमेऽध्याये इन्द्रादिदेवविरञ्चिसंवादे। भूयश्चैव मया शप्तः समुद्रः सह गङ्गया। सकारणां मतिं कृत्वा युष्माकं हितकाम्यया २३ यस्मात्त्वं राजतुल्येन वपुषा समुपस्थितः। गच्छात्वंमहीपालो राजैवत्वं भविष्यसि ॥ २४ ॥ तत्रापि सहजां लीलां धारयन् स्वेन तेजसा। भविष्यसि नृणां भर्त्ता भारतानां कुलोद्वहः ॥ २५ ॥ शान्तोऽसीति मयोक्तस्त्वं यच्चाऽसितनुतां गतः। सुतनुर्यशसा लोके शन्तनुस्त्वं भविष्यसि ॥ २६ ॥ इयमप्यायतापाङ्गी गङ्गा सर्वाङ्गशोभना। रूपिणी च सरिच्छ्रेष्ठा तत्त्वामुपयास्यति ॥ २७ ॥ इति ब्रह्मवाक्येन शन्तनोरपि समुद्रांशेनावतीर्णस्य भार्य्या गङ्गांशरूपा जाता इत्यादि सर्वमनवद्यमिति विभावयन्तु सुधिय इति शिवम्।

इति श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसूनुकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे

पञ्चमं प्रकरणं समाप्तम्।

महिमा राजते यस्याः सदा प्रत्यक्षमेव हि। तथाप्यज्ञानपश्यन्ति वन्दे तां सूर्य्यनिम्नगाम् ॥ १ ॥ अथ गङ्गाप्रतापानि प्रलिख्यन्ते समासतः। ततोऽन्तिमे कलौ याता यथाक्रममुदीर्य्यते ॥ २ ॥ तत्र तावत्तु सहस्रतमेऽन्तिमे कलौ श्रीभागीरथीयात्रां वक्तुम् अधुना पूर्वोक्तश्रुतिस्मृतिपुराण-

वाक्यकदम्बेष्वपि नूनमविश्वसितानां केषाञ्चिदल्पमतीनां गङ्गाभक्तिप्रवर्त्तन-पूर्वकमाकल्पमम्बास्थितिदृढ़निश्चयाय श्रीजाह्नवीजलामृते सदा विद्यमानानि भूमण्डले प्रसिद्धानि लोकोत्तरचमत्कारकारकस्य प्रतापस्य विलक्षणानि लक्षणानि प्रदर्श्यन्ते संगृहीतैः कतिपयैः श्लोकैः । यथा । भूमण्डलस्थपानीया-द्विशेषो जाह्नवीजले धृते जले कृम्यऽभावः प्रथमं लक्षणं विदुः ॥ १ ॥ इति तु सरितां वाऽन्यक्षुद्रप्रवाहप्रस्रवादीनां सङ्गमस्थलं विहायान्यत्र शुद्धे श्रीगाङ्ग एव बोध्यम् । एवमग्रेऽपि लिख्यमानेषु वाक्येषु व्यवस्था ज्ञेया । चिरं काचस्य पात्रेषु धृता आपोऽङ्गसन्ति वै । गाङ्गं जलं तु न तथा द्वितीयं लक्षणं विदुः ॥२ कूपादिनीरमस्वादु भवत्येव चिरं धृतम् । गाङ्गं जलं तु न तथा यथा पूर्वं तथा धृतम् ॥३॥ इति तृतीयं० । कुगन्धितं धृतं नीरं चिरं कूपादिनीरवत् । न तथा जाह्नवीतोयं चतुर्थं लक्षणं त्विदम् ॥ ४ ॥ चिरशब्दोऽत्र बहुदिन-स्थित्यपेक्षयाऽनुमीयते इति । वर्णान्तरं मलिनतां भवत्येव धृते जले । न तथा भीष्मसू तोये पञ्चमं लक्षणं त्विदम् ॥ ५ ॥ धृते जले तूर्णनाभि जाला-कृतिनिभं मलम् । भवत्येव हि पात्रेषु न क्वचिज्जाह्नवीजले ॥ ६ ॥ इति षष्ठं० ॥ तैलविन्दुनिभं लक्ष्म जायते सर्ववारिषु । स्थापितेषु चिरं पात्रे जाह्नव्यऽप्सु न कर्हिचित् ॥ ७ ॥ इति सप्तमं० । गङ्गानीरप्रवाहस्य प्रकाशो जायते निशि । कृष्णायां व्योम्नि मेघाढ्ये नान्याऽपां स्यादिदर्शनम् ॥८॥ अयं भावः कृष्णपक्षरात्रौ गगने मेघाच्छादितेऽन्धकारभरेऽपि दिनेऽपि गङ्गाप्रवाहस्य प्रकाशो भवति दर्शनं च । तथान्यनदीप्रवाहस्य न भवतीत्यष्टमं लक्षणम् ॥८ गङ्गाप्रवाहमध्ये तु शुक्लामार्गाकृतिर्निशि । दृश्यते साधुभिर्नैव परदाररतैः खलैः ॥ १ ॥ कृते स्नाने तु गाङ्गेषु लोकते पापिनोऽपि ताम् । कृष्णरात्रि निशीथेऽपि गगने जलदाकुले ॥ ९ ॥ इति नवमं० । जले वातादिदोषाणा-मभावो जाह्नवी भवे । स्पष्टं भिषग्भिरपि वा आयुः शास्त्रे विलोकितम् १० इति दशमं० । अभावे ह्यनुपानस्य गङ्गाम्भिर्दीयतेऽगदः । ददते तद्गुणं तास्तु स्फुटमेतज्जगत्त्रये ॥ ११ ॥ इत्येकादशं० । विधिना सेवनेनैव रोगशान्ति कृदौ-षधम् । गङ्गातोयं तु सर्वत्र किमन्याऽगदसंग्रहैः ॥ १२ ॥ अत्र विधिस्तु पाक-सिद्धिपानस्नानादिष्वपीष्यते । अथ गाङ्गस्याऽगदत्वे आथर्वणीश्रुतिश्च हिमवतः प्रस्रवन्ती सिन्धौ समहसङ्गमः । आपोहमह्यं तद्देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषज-

मिति । एतदर्थश्च । हिमवतः पर्वतात् प्रस्रवन्ती प्रस्रवन्त्याः प्राकट्यं कुर्वन्त्याः यस्याः सिन्धौ समुद्रसङ्गमः समुद्रेण साकं यस्याः सङ्गमोऽस्तीति भावः । सा गङ्गा तत् सर्वशास्त्रेषु लोकेषु वा प्रसिद्धाः देवीः प्रकाशमानाः आपः अपः जलानि मह्यं ददन् ददातु कीदृशा अपः हृद्योतभेषजं हृदयप्रकाशकौषधं यद्वा हरति गदानि इति हृत् द्योतं प्रसिद्धभेषजमिति द्वादशमं लक्षणम् । हरिद्वारात्तु वायव्ये शुद्धे भागीरथाश्रमे । मौक्तिकाभं पयो यच्च न स्यान्नीलोत्निभं क्वचित् ॥ १३ ॥ इति त्रयोदश० । अन्यनद्यादिनीरस्य सङ्गमेन विवर्जिते । शुद्धे गङ्गाप्रवाहे तु शैवालं नैव जायते ॥ १४ ॥ इति चतुर्दशमं० । तद्वदेव हि गाङ्गेये पूकोत्पत्तिर्न जायते । केचिदेतद्धि गच्छन्ति शुद्धे भागीरथाश्रमे ॥१५॥ इति पञ्चदश० ॥ गङ्गास्नाने कृते पश्चात्स्वेदो जायते यदि । तनौ दुर्गन्धितो न स्यादित्येवं गाङ्गजं महः ॥ १३ ॥ इति तु कूपादिजलेन पुनः स्नानात्पूर्वमेव ज्ञेयं तथाच स्नाने विधिरपेक्ष्यते इति षोड़श० । गङ्गोद्गमस्थानजलं तुलायामपि तोलितम् । सुतप्तस्वर्णखण्डस्य पातितो नैति हीनताम् ॥ १७ ॥ अत्रैवंविधिः गङ्गोत्तरीयं जलं तुलायां त्रित्रिपलमितं संतोल्य शुद्धे पात्रे स्थापयेत् ततः सुवर्णमुद्रां वा सुवर्णाङ्गुलीयं वह्नौ सुसन्तप्य पात्रस्थिते तस्मिन्नेव जले पातयेत् ततः स्वर्णमुद्राऽङ्गुलीयकं वा तु शीतलतां याति किन्तु तज्जलमुन्मानितं न ह्रासमेति । एतत्तु मथुरा प्राक् चतुःक्रोशस्थेरायाख्ये ग्रामे गुरुकुले विद्याध्ययनसमये श्रीमन्नैष्ठिकब्रह्मचारिभिः श्रीहरिनारायणशर्म्मभिर्मद्गुरुभिरेव केनचिद् ब्राह्मणेनानीतं जलं विधिना तप्तस्वर्णांगुलीयकपातेन परीक्षितं मया दृष्टम् इति सप्तदशमं० । दक्षिणप्रान्तदेशेषु काम्बोजे जांङ्गलादिषु । भवत्यनन्तनीरस्य पात्रादुद्गमनं मखे ॥ १८ ॥ अत्र गङ्गायात्रा जलानयनविधेरावश्यकताऽस्ति अत्रेयं रीतिः । उक्तदेशेषु गङ्गायज्ञः गङ्गोट इति तद्देशेषु ख्यातः तत्रत्यैर्जनैः श्रीगङ्गायां स्नात्वा गृहे गत्वा च क्रियते तत्र हवनादनु कस्मिंश्चित्कांस्यादिपात्रे सकाचपात्रं गङ्गाजलं स्थाप्य अन्यैः प्राकृतैर्वा स्तोकैर्भागीरथीं स्तुवन्ति तदा तुष्टा जाह्नवी काचपात्राज्जलोद्गमनं करोतीति प्रसिद्धमेवैतदित्यष्टादशमं० । तृषः शान्तिर्जले पीते भवत्येव स्फुटं भुवि । गांगस्य पानमात्रे तु क्षुदऽभावः क्षणान्तरम् ॥ १९ ॥ इत्येकोनविंशकं० । पीते गंगोद्भवे तोये शान्ताबुद्धिस्तु तत्क्षणे । सत्त्वोद्गमश्चित्तशुद्धि-

भवतीति महोऽद्भुतम् ॥ २० ॥ इति विंशति० । पीते गांगे तदैवाशु श्रीहरि-स्मरणं हृदि । स्वाभाविकं प्रजायेतेत्येवं गंगोद्भवं महः ॥ २१ ॥ इत्येकविंश० । श्रीकौथुमीय शाखोक्तजाह्नवीमन्त्रपाठतः । गङ्गातरङ्गोच्छलनं जायते हर्ष-कारकम् ॥१॥ तटस्थपाठकस्यान्ति गाङ्गप्रसरणं तथा । अन्यत्रापि हि पाठेन पात्रादुद्गमनं त्वपाम् ॥२२॥ इति द्वाविंशति० । चातुर्थिकज्वरान्मुक्तो भवतीति स्फुटं भुवि । गङ्गाप्रवाहस्नातेति कथमेव न चाद्भुतम् ॥१॥ अपेक्ष्यते विधिस्त्वत्र गायत्रीजपपूर्वकः । पूर्वं ज्वरागमनतो गाङ्गमध्यस्थितिस्तथा ॥ २३ ॥ इति त्रयोविंशति० । प्रत्यहं गाङ्गपानेन मुखगन्धं विनश्यति । तदौषधिस्तते नृणामित्येवं गाङ्गलक्षणम् ॥ २४ ॥ इति चतुर्विंशति० । अत्रापि विधेराव-श्यकता, गङ्गाजलेन रचिता पाकसिद्धिर्विलक्षणा । सुस्वादूरोगरहिता भव-तीति महो न किम् ॥ २५ ॥ इति पञ्चविंशति० । प्रेतादिजनिता बाधा गङ्गास्नानेन नश्यति । ते च प्रीता भवन्तीति यत्र तत्र प्रदृश्यते ॥ २६ ॥ इति षड्विंशति० । अत्रापि विधेराग्रह एवमेवाग्रेऽपि बोध्यम् । कृते स्नाने तदै-वैषदामोदो जायते तनौ । धियासनोपमेयः स्यात्तदऽलौकिकभावतः ॥ २७ ॥ इति सप्तविंशति० । नित्यं गाङ्गस्य पानेन तथा तद्रेणुलेपनात् । तनोः कुष्ठामयो नूनं क्षीयते नात्र संशयः ॥ २८ ॥ इत्यष्टाविंशति० । कूपाद्यापः कृमियुता जाह्नवीजलपाततः । शुध्यन्ति चैतद्गङ्गायास्तेजोलोकोत्तरं न किम् ॥ २९ ॥ इत्येकोनविंशत्० । अत्र नास्ति विधेराग्रहः ॥ गाङ्गैर्गङ्गा-रजः पिण्डं कृत्वा कण्ठे निबन्धनात् । पिशाची बाधयामुक्तो नितरां जायते शिशुः ॥ ३० ॥ अत्र मृत्पिण्डकरणं विधिना स्नात्वा सप्रार्थनं सप्तम्यां रवि-दिने । वा कुह्वां चन्द्रदिने मध्याह्ने श्रीविष्णुपदीपूजनानन्तरं विधीयते पुरुष-सूक्तपाठं वा गङ्गासूक्तपाठं तदा कुर्य्यात् । इति त्रिंशत्० । जन्मान्तरे ब्रह्म-हत्याकरणात् कच्छपीगदः । जायते चोदरे नृणां गाङ्गपानाद्विनश्यति ॥३१॥ इत्येकत्रिंशत्० । तथा च खर्प्परीरोगो नृणां कुक्षौ प्रजायते । गङ्गारजो भक्षणेन दिग्दिनैः सोऽपि नश्यति ॥ ३२ ॥ रजोभक्षणमत्र प्रातः सायं च शयनसमये पलार्द्धमितं ज्ञेयम्, इति द्वात्रिंशत्० । गङ्गाजलेन मृत्पिण्डं विधाय स्थापयेद् बुधः । कालान्तरेऽप्यऽशनतो मुखे स्वादुसुगन्धकृत् ॥ ३३ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्० । वृक्षेषु यत्र जायेत बन्ध्यात्वं पुष्पबन्धनम् । तच्च नश्यति

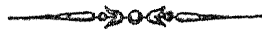
गाङ्गव्या जलसिञ्चनमात्रतः ॥ ३४ ॥ इति चतुस्त्रिंशत् । किं बहुना इत्याद्यनन्तलक्षणप्रतापवत्याः श्रीभागीरथ्याः पयसि यदा उक्तलक्षणाऽभावः स्यात्तदैव भागीरथ्याः स्वधामगमनम् बोध्यमिति सिद्धान्तः । एतच्चेवान्तिमे कलौ भविष्यतीत्यपि च विशेषतो दर्शयितुं श्रीगङ्गायात्राकालक्रमः पूर्वत एव प्रलिख्यते । अन्तिमे कलौ तावदेव सार्द्धद्विसहस्राब्दमिते काले सति ग्रामाधिष्ठातृदेवतागमन आपन्ने ग्रामेषु विग्रहादिविघ्नाः दृश्यन्ते ततो ग्रामदेवतानां स्वगम्यपदयात्रा भविष्यति ततश्च ग्रामादिलुण्ठनं वह्निदाहश्च पुनः पुनः प्रवर्त्स्यति तथा नारीप्रभृतिरोगोत्पत्तिश्चेति तस्मिन्नेव काले काशीस्थशिवलिङ्गानां पाताल*यात्रा भविष्यति तदुक्तं सनत्कुमारसंहितोक्तकार्त्तिकमाहात्म्ये द्वाविंशेऽध्याये प्राप्ते कलियुगे घोरे शौचाचारविवर्जिते तत्संख्यैर्वर्षशतैर्गतैर्देवो महेश्वरः । वाराणसीस्थलिङ्गानि पाताले स हि नेष्यति ॥३६॥ इति ततश्च काशीलोपकालपर्य्यन्तं लिङ्गचिह्नमात्रमेव यत्र तत्र स्थास्यति एवं च सति चतुःसहस्राब्दमिते काले पर्वतस्थदेवताः स्वगम्यस्थलं गमिष्यन्ति इत्यपि तत्रैवोक्तं, चतुर्वर्षसहस्रैस्तु शैलस्थाः सर्वदेवताः । सत्तां त्यक्त्वा गमिष्यन्ति मानसञ्च सरोवरम् ॥ ४२ ॥ इति एवं सति पञ्चसहस्राब्दमिते काले आपन्ने सति भुवि दिव्यन्तरिक्षे च भूकम्पादयस्त्रिविधा उत्पाता भविष्यन्ति तस्मिन्नेव काले वाराणसी अन्तर्द्धानं गमिष्यति एतदपि तत्रैवोक्तं, ततो द्विगुणवर्षैस्तु गङ्गावाराणसी तथा । भविष्यति ह्यदृश्या सा सत्वरन्तु मुनीश्वर ॥ ३७ ॥ ततो द्विगुणवर्षैरिति ग्रामदेवतायात्राकालाभिप्रायेणैवोक्तमिति ज्ञेयं ततश्च, अन्तर्हिता यदा काशी भविष्यति महामुने । नाशः स्वाङ्गिकचिह्नानां निःप्रभा सकला जनाः ॥ ३८ ॥ चतुर्द्देशेषु दुर्भिक्षं महामारीसमुद्भवः । गोवधश्चापि सर्वत्र मृत्तिकाभस्मसन्निभा ॥ ३९ ॥ तदैव च । गङ्गाद्वारात्तु या धारापतेद्भागीरथाश्रमे । हरिद्वाराच्च वायव्ये तस्यालोपो भविष्यति ॥ ४० ॥ अत्र प्राकृतनदीवत् श्रीगङ्गानाशो न बोध्यः किन्तु विष्णुवद्वैकुण्ठयात्रैवेति ज्ञेयम् उक्तञ्च ब्रह्मवैवर्त्ते कृष्णजन्मखण्डे कृष्णवाक्यं, स्वयं च देवीवैकुण्ठे वेष्टयित्वास्ति सन्ततम् । तस्या विनाशः प्रलये नास्त्येव हि यथा मम इति । लोमशसंहितायान्तु, गङ्गायात्राकालस्तिथिवारात्मकोप्युक्तः ।

* शेषान्तिके मूलग्रामात्रास्त्रिशदेष ।

माघमासे सिते पक्षे द्वादश्यां भृगुवासरे। पञ्चपञ्चाशत्तमेऽब्दे गङ्गालोपो भविष्यति ॥ १ ॥ ततः परं नर्मदायामाहात्म्यं भविता भुवीति ॥ १ ॥ अन्तिमे कलौ तदानीन्तनशकेश्वरवर्षाभिप्रायेण पञ्चपञ्चाशत्तमेऽब्दे इत्युक्तम्। ये तु इदानीं वैक्रमशक एव दिवसितास्तेऽविचारिणः उपहास्याः अत्र श्लोके वै क्रमशककृत्ववस्यकथनाऽभावात् अन्यच्च च। शरैः पञ्चभिरङ्कचन्द्रे मिताब्दे भृगौ माघमासे सिते द्वादशेऽह्नि। भवेद्यामयुग्मे चतुर्थे च लग्ने यदा स्यात्तदा देवनद्या विलोप इति। तस्मिन्नेव दिने गोवर्द्धनादीनां यात्रा च पुराणान्तरे श्रूयते। माघमासे सिते पक्षे एकादश्यां भृगोर्दिने। श्रीमद्गीता च गायत्री-गोवर्द्धनगिरिस्तथा ॥ १ ॥ गुरुर्गोविन्दभक्तिश्च तुलसीपूजनं तथा। शालिग्रामः सामगानं गङ्गया सह नश्यति ॥ २ ॥ इति अत्र पूर्वयोर्वाक्ययोर्द्वादशी-ग्रहणं कृतम् अपरवाक्ये एकादशीग्रहणं न विरुध्यते वैष्णवानां मते पूर्व-विद्धाभयादेकादशीव्रतस्य द्वादशीपरत्वं वर्त्ततेऽतस्तद्भावेनात्रापि एकादशी-शब्देन द्वादशीग्रहणमिति बोध्यम्। किञ्च यावद्भागीरथीगङ्गा तावद्वेदाः कलौ युगे इति वाक्यात्तदानीमेव वेदा अपि ब्रह्मलोकं प्रयास्यन्ति तदानीं सर्वेषां पुष्करादितीर्थानां यात्रापि सनत्कुमारसंहितायां कलेर्दशसहस्रान्ते इति श्लोकाग्रिमे श्लोके निगदिता यावत्तिष्ठति गङ्गात्र तावत्तीर्थानि सन्ति च। यदैवा-ऽदृश्या गङ्गा स्यात् को वाऽस्मत्पापमाहरेत् ॥२५॥ विचार्य्यैवं सुतीर्थानि गमिष्यन्ति धरातलादिति एवं तदैव श्रीयमुनायाः प्रतीचीसरस्वतीप्रभृतीनां गङ्गानां यात्रा च भविष्यति उक्तञ्च पुराणेषु पाद्मादिषु। गङ्गा च यमुना चैव सरयूश्च सरस्वती। शतभागा चन्द्रभागा रम्या सिन्धुर्महानदी ॥ १ ॥ सर्वास्ताः प्रलयं यान्ति वर्जयित्वा तु कल्पगामिति। प्रणष्टद्वादशादित्ये प्रलये समुपस्थिते। सरितश्च लयं यान्तु गङ्गाद्याश्च सहस्रशः॥१॥ नर्मदे तिष्ठ देवि त्वं सप्तकल्पानु-गामिनी इति तदानीन्तने कलावेव गंगायात्रामनुनर्मदाया एव माहात्म्य-प्राधान्यम् अधुना तु सर्वतीर्थवत् स्वशक्त्यनुसारेण तस्या अपीति ज्ञातव्यं तथा च गङ्गामनुसप्तकल्पपर्य्यन्तं नर्म्मदामाहात्म्यप्राधान्यनियमः सप्तकल्पानु-गामिनीति वाक्येन सूच्यते, अथ तदानीं गङ्गायात्रासूचकलक्षणानि प्रद-र्श्यन्ते सनत्कुमारसंहितायां भागीरथ्यां गतायान्तु मर्कटीतन्तुसन्निभाः। भविष्यन्ति तदा कीटास्तोयं नीलीनिभं तथा ॥ ४१ ॥ इति अन्यच्च च श्रूयते

सूक्ष्माकारास्तु क्रमयो भविष्यन्ति धृते जले । यदा यास्यति स्वं धाम गङ्गा त्यक्त्वा महीतलम् ॥१॥ कालपाके धृतं तोयं क्रमशो ह्रासमेष्यति । अस्वादु-किञ्चित्सलिलं भविष्यति तदा तथा ॥ २ ॥ गङ्गोद्गमस्थानजलं तुलायामिव तोलितम् । तत्समुद्रप्रपातेन किञ्चिद्ध्रासमवाप्स्यति ॥३॥ किञ्च, ततो नदी-प्रवाहस्तु किञ्चित्कालं घटिष्यते । ततःपरं हि खातेन सहितः सोऽपि नंक्ष्यति ॥ ४ ॥ किम्बहुना दैनन्दिनप्रलयकालम्बिना मध्ये नास्ति भागी-रथीयाबेति शास्त्रसिद्धान्त इति शिवम् । अनेन मन्मुखोत्पन्नव्याख्यानेनाऽर्पि तेन तु । जगदात्मा परम्ब्रह्म नीराकारं प्रसीदतु ॥ १ ॥ ऋष्यऽब्धिनवभूवर्षे वैक्रमे तीर्थनायके । माध्यां पूर्णे निशानाथे . यदाभि सहस्रादिनाम् ॥ २ ॥ श्रीगङ्गयैव कृपया सन्दर्भोऽयं प्रकाशितः । निमित्तमात्रं व्याख्यानेऽस्तोऽप्यर्हं हि कृतोऽव्यया ॥३॥ किञ्च, श्रीशाण्डिल्यकुलाऽऽनन्दतरणिः श्रीसामवेदार्थ-विद्याशीच्छ्रीहरिवंश इत्युत भुवि ख्यातिं गतः पण्डितः । तस्मादर्स्मधुरन्धरः कविवरो दामोदराख्यो ह्यभूत्सत्सुतो भगवान् क्षितीन्द्रमुकुटैः संपूजिताङ्घ्रिः कविः ॥४॥ तत्पुत्रोऽच्युतराम उज्ज्वलगुणो मीमांसकस्तत्सुतो नाम्ना देवमणिः कवीन्द्रतिलकः सद्दीपिकाकारकः । तत्सूनुः कुलहृद्वेदनकरो वेदार्थनिष्ठापरः काशीराम उवाच यः कविमुदे वेदस्तुतौ दर्पणम् ॥ ५ ॥ तत्पुत्रः कविरामदत्त उदितो ज्योतिर्विदां भूषणस्तस्मान्नन्दकिशोर उत्तमयशा जातो मदीयः पिता । दुर्गादत्त इमां प्रथामधिगतः सोऽहं तदङ्घ्र्यर्चको याचेऽस्मिन् यदि किञ्चिदूनमधिकं तच्छोधयन्तूत्तमाः ॥६॥ निजं निरञ्जनं नित्यं निर्मलं निरुप-द्रवम् । चतुर्वर्गप्रदं चेतः चेतश्चिन्तयचिद्घनम् ॥७॥

इति श्रीवृन्दावननिवासि द्विवेदिनन्दकिशोरशास्त्रिजकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे षष्ठप्रकरणम् ॥ समाप्तोऽयं सन्दर्भः ।



मत्पूर्वजानां मथुरीपसंस्थे रायाख्य आसीच्चिरतो निवासः ।
वृन्दावनेऽहन्तु वसामि तत्र सन्दर्भलब्धिर्भवितेच्छुकानाम् ॥ १ ॥

श्रीवृन्दाबनवासि श्री नन्दकिशोर शास्त्रिजी के ज्येष्ठपुत्र दुर्गादत्त जीने गङ्गातत्त्वसंदर्भ नाम से जो ग्रन्थ किया हैं उस का संक्षेप करता हूं। इस कलि के ५ हजार वर्ष के बाद गङ्गा न रहेगी। यह समझना ठीक नहीं है क्योंकि कलियुग में गङ्गा कहनेवाले शास्त्रवाक्य किसी कलि की संख्या नहीं कहते हैं इससे जिसमें प्रलय होगा वुह अन्त्यका हजार वां कलि समझना सो वड़े विष्णुपुराण में लिखा है पृथ्वी गङ्गा से हीनअन्ति के कलियुग में होगी। सो यही ऋग्वेद के ७ अष्टक २ अध्याय १८ वर्ग २० वी ० परिशिष्ट श्रुति—और ऋग्वेद के ही ८ अष्टक ३ अ० ६ वर्ग की १ परिशिष्ट श्रुतियों से हमेश गङ्गास्थिति भूमि पर है यह इस ग्रन्थ में सावित है विद्वान समझ लेंगे। और प्रायश्चित्त तत्व—ग्रन्थ में लिखा है। श्री गङ्गाजीने भगीरथ से प्रतिज्ञा की है जब तक भूमि पर तुलसी पूजी जायगी। और आकाश में बृहस्पति स्वर्ग में कल्पवृक्ष समुद्र में बड़वानल बसेंगी तब तक में तेरे इस रथचक्र के गर्त में बसुंगी ऐसे और भी संमोहन तन्त्र भारतदानधर्म वाल्मीकि रामायण ब्रह्माण्ड पुराण के वाक्यों से भूमि पर हमेशा गङ्गाका रहना सूचित है। वे वाक्य इस ग्रन्थ में लिख दिये हैं—और दूसरे प्रकार से भी समझना चाहिये जो अब कलियुग के इस अल्पांश में ही गङ्गा जाती तो कलियुग में पदार्थ चतुष्टय देनेवाली गङ्गा को पुराण क्यों कहते—सो वाक्य शिवपुराण नारदीय स्कन्द काशी-खण्ड मत्स्यपु० भारत ब्रह्माण्ड आदिके बहुत इस ग्रन्थमें लिख दिये हैं और गङ्गा विष्णु विभूति है यह भागवत और गीता में लिखा है तो जिस विभूतिका वास जहां है वुह प्रलय तक उसी जगहस्थित है जैसे उच्चैः-श्रवा ऐरावत वज्र आदि स्वर्ग में यव अश्वत्थ आदि भूमि पर अनन्त आदि पाताल में तैसे गङ्गाका भी वासत्रिलोकी में होनेसे ३ लोक में स्थित है और बदरिकाश्रम से लेकर समुद्र तक जो गङ्गा तटके ही आश्रयसे तीर्थ है उनके माहात्म्यों में उनको नित्य और कलिपापनाशक कहा है तो फिर साफ गङ्गाका रहना सावित है और इस कलियुगके अन्त में कल्किभगवान् पृथ्वीके भारको दूर करके गङ्गातट पर तप करेंगे। यह कल्किपुराणके ३ अंश १९ अध्याय में स्पष्ट है फिर गङ्गाजाना कहना महा अज्ञान है।

इति श्रीगङ्गातत्व० १ प्रकरण संक्षेप: ॥ १ ॥

अब और भी यात्रासूचक पुराणवाक्योंका विरोध दूर करते हैं तहां प्रथम—कलेर्दश० इसी श्लोकसे अन्तिम कलियुग स्पष्ट करते हैं इस श्लोक में विष्णुशब्दसे सर्वव्यापीका बोध है सो सिवाय प्रलयके पृथ्वीको नहीं छोड़ सक्ता है यह भागवत ५ स्कन्ध २० अध्या० ४०।४१ में गद्यसे स्पष्ट है और सहस्रान्त कलि में प्रलयका नियम होने से जो कलिकी संख्या न कहो तो भी कुछ हानि नहीं है और अब ग्राम देवताओं की यात्रा में प्रत्यक्ष ही विरोध है क्योंकि वे ग्रामदेवी वालदेवी बुढ़ियामाई मसानी आदि नामोंसे प्रसिद्ध है भावानुसार फल भी देते हैं और हर एक छोटे बड़े यज्ञों में क्षेत्रपाल रूपसे पूजे जाते हैं इसीसे और कलियुग में यात्रा स्पष्ट कहती है इसपर इस ग्रन्थमें बहुत लिखा है और ऐसे वाक्य ब्रह्मवैवर्त्त आदि पुराणोंमें भी है उनका भी आशय इसी श्लोक रीतिसे अन्तके कलिपर है किसी कलिकी वे भी संख्या नहीं कहते हैं इसपर इस ग्रन्थमें सिद्धान्त बहुत लिखा है संस्कृतज्ञ देख लेवे और कसरतराय भी मानी जाती है इस से स्थूल बुद्धियोंको गङ्गासे रहने में कसरतराय दिखानेको और भी स्कन्दकेदारखण्ड भविष्य पुराण सामवेद श्रुति ऋग्वेद की श्रुति निरुक्त आदिके प्रमाण लिख दिये हैं इस ग्रन्थमें देखलो । इति द्वितीय प्रकरणम् ॥ २ ॥

अब तिथिपत्र लिखित गङ्गायात्रा क्रमकारण कहते हैं । जैसे तिथिपत्रोंमें प्रथम ही धर्माधर्म विष्णु अवतार रूप ४ युगोंके लक्षण लिखेजाते हैं परन्तु विष्णु अवतार तो हर एक युगकी आवृत्तिमें हमेश होते है नहीं किन्तु कल्प में १ वखत कोई २ दो वखत होते हैं परन्तु युगके केवल लक्षण अभिप्राय से लिखे जाते हैं ऐसे ही अन्तिम कलि में ही गङ्गायात्रा नियम होनेसे कलि लक्षणमात्र ही गङ्गायात्रा लेख ५००० वर्षमात्र समझना चाहिये और अब जो प्रतिवर्षमें आयु घटाते हैं यह अन्ध परम्परा है क्योंकि जो इसी २८ में कलिमें गङ्गाजानेवाली होती तो और भी किसी वेदांग ज्योतिषके ग्रन्थ सूर्य्यसिद्धान्त आदि मकरन्द ग्रहलाघव आदि में जरूर ही लेख होता सो है नहीं इस पर इस ग्रन्थमें बहुत सिद्धान्त लिखा है तिसके अन्त में स्थूल जाहिर बात यह हैं जब औरङ्गजेवनामक यवनेशने हमारे धर्मपर प्रतिमाखण्डन आदि अत्याचारके समय श्रीगङ्गातट पर स्नानदान आदि धर्मको न

सद्दकर तिस समयमें प्रसिद्ध२ पण्डितोंको कैद कर लिया और बोला गंगा-स्नान छोड़ दो या गंगाका कुछ प्रताप दिखावो यह सुनके कारागारस्थ पण्डितोंने एकान्तमें परस्पर सलाह करके ग्रन्थोंमेंसे कलिसंख्या न कहनेवाले यात्रासूचक प्रमाण दिखाके उक्त म्लेच्छका वंचन किया और उक्त अत्याचारी उग्रदण्डीके कहनेसे भयग्रस्त पण्डित तिथिपत्रों में गंगा आयु प्रतिवर्ष घटाने लगे और हिजरी सन तारीख मुहर्रम ईद आदि का भी लेख लिखने लगे इसका निश्चय उक्त यवनेश राज्यसे पूर्वके पत्रोंको देखकर कर लिया है और भी करलो—इति तृतीय ३ प्रकरणम् ।

अब चतुर्थ प्रकरण में गङ्गाजीके भूमिपर आनेका जो पुराणों में विरोध है वह दूर किया जाता है—तहां प्रथम परस्पर वाक्योंका विरोध कहते हैं—जैसे बाल्मीकरामायण बालकाण्ड और विष्णुपुराण श्रीभागवत नवमस्कन्ध आदि में भगीरथ राजा गङ्गाजीको लाये हैं यह प्रसिद्ध है सो भगीरथ रामचन्द्रका पूर्वज है और रामचन्द्रजी या सात में वैवस्वत मन्वन्तर के २४ में त्रेता में भये हैं या ते २४ में ही त्रेता में गङ्गाजी आई यह निश्चित है—या में दूसरा विरोध यह है कि इस सप्तम मन्वन्तरके सप्तम त्रेतामें बलि दैत्यके यज्ञमें वामनजीके चरणसे गङ्गाजी उत्पन्न हुई है। ऐसे ही तीसरा विरोध यह है कि प्रथम मन्वन्तर स्वायंभुव नाम है उस में भी भूमिपर गङ्गाजीका होना साबित है सो ब्रह्मपुत्र दक्षके साथ शिवजी से विरोध विश्वसृष्टान के जिस यज्ञ में हुआ है उसी यज्ञका अवभृथक संज्ञक स्नान यज्ञकर्त्ताओंने गङ्गा में किया है भागवत चतुर्थस्कन्ध में यह लिखा है और वह यज्ञ प्रथम मन्वन्तर में ही भया है और खास मनु स्मृति में गङ्गास्नान झूठाके वास्ते प्रायश्चित्तविधि में मनुजीनेही लिखा है और भी प्रमाण संस्कृत में इस विषय के लिख दिये हैं तो अब अन्योन्य वाक्यों में विरोधसे गङ्गाके आगमन में महान् सन्देह है सो नहीं मानना चाहिये—क्योंकि जैसे श्रीविष्णु वाराह नृसिंह आदि रूपसे जम्बूद्वीपके ९ खण्डन में उपास्यरूपसे सृष्टिकी आदि ते ही स्थित है तथापि प्रभुने नरायण नृसिंह आदि अवतार भक्तरक्षा धर्म्म वृद्धि आदि विशेष कारण से फिर लिये हैं—ऐसे ही श्रीगङ्गाजी की भी

व्यवस्था समझनी—तिसका खुलासा तात्पर्य्य यह है—जबसे सृष्टि भई है और जब तक सृष्टि रहैगी तबसे ही गङ्गाजी है और तदन्त तक रहैगी भी—तथापि कालान्तर में किसी कारणसे माहात्म्य छिप जानेके सबबसे इस सप्तम वैवस्वत मन्वन्तर में वामन चरण द्वारा प्रकट होके माहात्म्य बढ़ाया—तिसके बाद कपिलदेवजी ब्राह्मणावतारके क्रोधाग्निसे भस्म भये सगरपुत्रोंके तारणार्थ वामन ब्राह्मणका चरणोदक चाहिये क्योंकि ब्राह्मणके शापसे मरा ब्राह्मणानुग्रहसे ही तरता है इस स्मृतिशास्त्र वाक्यसिद्धान्तको जतानेके लिये—भगीरथपर प्रसन्न होके भागीरथी दूसरी धारासे प्रकट होके देवप्रयाग में अपने नित्यरूप अलकनन्दा में मिलके सगरपुत्रोंको तार दिया। इस रीतिसे उक्त शास्त्रवाक्यों में कुछ विरोध नहीं है। इस विषय में प्रमाण संस्कृत में लिख दिये हैं—अतएव गङ्गाजीके आनेके विषय में और अब प्रलय तक रहने में कुछ सन्देह न करना चाहिये। यदि कोई सन्देह करे कि केदारखण्ड में लिखा है कि कलियुगके दूसरे चरण में वासुकीनागके लोक में जानेका गङ्गाजीने ही वासुकीको वर दिया है तो जरूर ही उस काल में गङ्गामाहात्म्य यहांसे जाता रहेगा। यह भी विचार ठीक नहीं है क्योंकि वासुकिको मूर्त्तिदर्शन देनेका वर दिया है इस विषयके भी ब्रह्मपुराण आदिके प्रमाणु संस्कृतमें इस ग्रन्थमध्य लिखे हैं। इति गङ्गातत्वसन्दर्भभाषासंक्षेपे चतुर्थप्रकरणम् ॥ ४ ॥

अब पञ्चम प्रकरण में श्रीगङ्गाजीके स्वरूपका निर्णय कहते हैं—अब कहीं २ शास्त्रों में श्रीगङ्गाजीको सगुण ब्रह्म ही द्रवित हो गंगारूप है यह लिखा है और उसी जलाकारकी शक्ति चतुर्भुजी मकरवाहना लिखी है सो ये दोनों किस कारणसे हुए। यदि कहो भक्त कल्याणार्थ हुए तो उस ब्रह्मके स्मरण नामोच्चारण आदिसे ही भक्तरक्षा हो सक्ती है। इस सन्देहको दूर करते हैं। यथा—जैसे निर्गुण ब्रह्म अपनीही इच्छासे सगुण भया तैसेही स्वेच्छासे निर्विकार जलाकार है। सो भक्त, उसे केवल संसार में अध्यात्म आदि तापोंसे तप्तोंके तापशान्त्यर्थ ही मानते हैं। सो स्कन्दपुराण में शिव पार्वतीसंवाद से स्पष्ट है और भी प्रमाण भारतके इस ग्रन्थ में लिखे हैं और भक्तेच्छासे भी ब्रह्मको जलाकार होना ब्रह्मवैवर्त्त प्रकृतिखण्ड के १०

अध्याय में स्पष्ट है। रासमण्डल में शिवजीके गानसे श्रीराधाकृष्ण जलरूप रूप हो गये यह देवीभागवत में भी लिखा है—ऐसेही कहीं २ यह भी लेख है श्रीनारदजीके गानसे भी जलरूप श्रीकृष्ण गोलोक में भये हैं वह कल्पभेदपर है। विरोध नहीं है अथवा एकही कल्प में दोनों बात घट सक्ती हैं जैसे प्रलय बिना भी इस मन्वन्तर में मार्कण्डेय मुनिको प्रभुने प्रलय दिखाय दी है तैसे यहां भी विरोध नहीं है। अब चतुर्भुजी मूर्त्ति होनेका कारण कहते हैं—जैसे कल्पाधिकारि देवताओंके १ मुख्यरूप और दूसरा रूप विशेष कार्य्यसाधक ईश्वर इच्छासे होते हैं यथा—सूर्य्य चन्द्रमा आकाश में नित्य मूर्त्तिसे भ्रमण करते हैं तथापि विशेष कार्य्यार्थ कश्यप अत्रिके ग्रह में प्रकट होके सूर्य्यवंश, चन्द्रवंश चलाये हैं सो पुराणों में प्रसिद्ध हैं। तैसे यहां भी समझ लेना चाहिये इस विषय पर इस ग्रन्थ में बहुत प्रमाण द्वारा सिद्धान्त लिख दिया है विद्वान समझ लेंगे या औरों को समझाय देंगे। इति पञ्चमप्रकरणम्॥ ५॥

अब इस प्रकरणमें श्रीगङ्गाजीके प्रत्यक्ष प्रताप लक्षण कहते हैं, जो कि श्रीगङ्गाजल में मौजूद हैं।

१ प्रथम चिरकाल भी धरे गङ्गाजलमें कीड़ा नहीं पड़ते हैं १

यह और नीचे लिखे लक्षण अन्य नदी आदिके मिलाप स्थानसे भिन्न गङ्गाजलमें समझने चाहिये।

२ सीसीमें धरा गङ्गाजल और जलकी रीतिसे स्वतः घटता नहीं है।

३ चिरकाल धरा भी गङ्गाजल अन्य जलवत् स्वादुहीन नहीं होता है।

४ और जलवत् धरा हुआ गङ्गाजलमें दुर्गन्ध नहीं उठता है।

५ और धरे हुए जलमें रंग पलट जाना और कुछ मलिनता होजाती है सो गङ्गाजल में नहीं होती है।

६ चिरकाल धरे और जल में ऊपर मकरीका सा जाला पड़ जाता है सो गङ्गाजल में नहीं पड़ता है।

७ और धरेजलके ऊपर तेलकी सी बूंद पड़ जाती है, सो गङ्गाजल में नहीं पड़ती है।

८ अंधेरी रात्रि में मेघयुक्त आकाश होने पर भी दूरसे श्रीगङ्गाजी की धाराका दर्शन होता है।

९ पर्वके दिन और भी कभी २ बीच धारा में सपेद दूधकी सी धारा न्यारी मालूम होती है, परन्तु परलोकगामीओंको नहीं दिखती हैं किन्तु गङ्गास्नानके बाद उनको भी उस धाराका दर्शन होता है।

१० अन्य जलवत् श्रीगङ्गाजल में वात आदि दोष नहीं है और जो किसी२ को वादीसा मालूम पड़ता है। सो रोगोंको उखारके बाहर निकालता है। यदि सेवन ही किये चला जाय तो मनुष्यको शुद्ध निरोग कर देता है।

११ औषधिके अनुपानके अभाव में गङ्गाजलसे औषधि दी जाती है। तब गङ्गा जलही उक्त अनुपानका गुण दे देता है।

१२ यदि कोई सर्वदा गङ्गाजलसे ही स्नान भोजन पानका नियम करे तो जीवन पर्य्यन्त रोग देह में नहीं होता है।

१३ भागीरथके आश्रम में जल मोतीके सदृश ही रहता है नीला कभी नहीं पड़ता।

१४ श्रीगङ्गाजी में सिवार नहीं होती है।

१५ तथा घोंघाजीव भी नहीं होते हैं।

१६ गङ्गाजलके स्नान करनेके बाद पसीना आने पर पसीना में वास नहीं होती हैं परन्तु विधिसे स्नान करे।

१७ गंगोत्तरीके जलकू तोलके उसमें गरम करके मोहर छोड़नेसे भी जलका वजन नहीं घटता है।

१८ जांगल (जैपुर) आदि देशोंमें गङ्गायज्ञमें सीसीसे गंगाजल उमगता है।

१९ गंगाजल पीनेसे प्यासके साथ क्षुधा भी निवृत्त थोड़ी देर होजाती हैं और जलसे नहीं होती किन्तु क्षुधा और लगती है।

२० गंगाजल पानसे शान्तबुद्धि सत्वगुणकी प्रकटता कोमल हृदय क्षण-मात्र होजाता है यदि विधिसे सेवैगा तो उक्त गुण हमेशा रहेंगे।

२१ गंगाजलके आचमनसे ही उस समय स्वतः हरिस्मरण होजाता है।

२२ किनारेपर बैठके गङ्गासूक्तके पाठकरनेसे स्वतः गंगाजल उछलता है।

२३ विधिसे गंगास्नान करनेसे चातुर्थक ज्वर जाता रहता है।

२४ विधिसे हमेस गंगाजल पीनेसे मुखगन्धरोग जाता रहता है।

२५ गंगाजलसे रची पाकसामग्री ज्यादा स्वाद निरोग होती है ।

२६ हमेश अमावास्या आदि पर्वमें गंगास्नान नियमसे प्रेतबाधा दूर होजाती है और कहीं २ प्रेत भी प्रसन्न होकर गंगास्नान मागते हैं ।

२७ गंगास्नान करनेसे उस समय देहमें सूक्ष्म सुगन्ध निकसती है और जलस्नान से देहमें कुछ दुर्गन्ध निकलती है ।

२८ गंगाजल स्नान पान भोजन पाक नियमसे और गंगाजलसे गंगारज सानके देह में लेप करनेसे कुष्टरोग दूर होजाता है ।

२९ कूपजल में कीड़े परजाने पर गंगाजल थोड़ा उसमे छोड़ने से कीड़ा जाते रहते हैं ।

३० विधिसे बनाकर गंगारजकी गोली कण्ठमें बांधनेसे बच्चोंका श्मशान पसली सूखारोग दूर होजाते है ।

३१ कच्छपी (कछुई) रोग गंगाजलपानके नियमसे पेटमेंही शान्त होता है ।

३२ खर्परी (खपरिया) रोग भी सिर्फ गंगारज के खाने से ही १० दिन में शांत होजाता है ।

३३ गंगाजल में सानके मट्टीका गोला कालान्तर में खानेसे स्वादु सुगन्धि देता है ।

३४ गंगाजलके सीच देनेसे वृक्षोंका बन्ध्यारोग जाता है ।

इत्यादि और भी अनन्त लक्षण है ये सब उक्त लक्षण प्रलयकाल की थोड़े से दिन पहले अन्तके कलियुग में गंगायात्रा होजाने पर जलमें न रहेंगे उसकाल में गंगाकी यात्राका क्रम दिखाते हैं यथा—

अन्त कलिमें २॥ हजारवर्षान्तमें ग्रामदेवता चले जांयमे तब काशीस्थ शिवलिङ्गोंकी सत्ता जाती रहेगी । ४ हजारवर्षान्त में पर्वतस्थ देवता स्वगम्यपदको जायँगे और पांच हजारवर्ष बाद काशीका लोप होजायगा और समस्त भूमिकी मृत्तिका भस्मतुल्य होजायगी तब श्रीगंगाजी बैकुण्ठ पधारेंगी—यात्रामुहूर्त लोमश संहिता आदि में लिखा है उस कालका जो शकेश होगा उस के ५५ में संवत् के माघशुक्ल द्वादशी शुक्रवार मध्याह्न मेषलग्नका है इसी मुहूर्त में श्रीगोवर्द्धन परवत गीताजी गायत्री ईश्वर गुरूभक्ति तुलसी पूजा शालग्राम सामवेद गान पृथ्वीसे चले जायँगे—तब ही सब तीर्थ भी यमुनादिक पुण्य नदी भी चली जायगी सिर्फ प्रलयतक-उस समय खाली नर्मदा रहि जायगी । उसी समयमें गङ्गा की शुद्धधारा के जलमें कीड़ा पड़ने लगेंगे उक्त लक्षण एक भी न मालूम पड़ेगा इससे अब भ्रम दूर करके निरन्तर पतितपावनीका स्नान पूजा आदिकरो शुभम् ।

श्रीदुर्गादत्तानुजरामलालकृत: श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे भाषासंक्षेप: समाप्त: ।

शुद्धिपत्रम् ।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
जम्म	जन्म ...	४ ...	२३
साहचर्य्यत्वाच्च	साहचर्य्याच्च	५ ...	१३
स्मष्ट	स्पष्ट ...	५ ...	२१
चतुयुग	चतुर्युग ...	६ ...	१०
सूर्यानरु	सूर्यानूरु ...	६ ...	२८
गङ्गा	गङ्गात्वं ...	७ ...	२६
लतलक्षणवती	लक्षणवती ...	७ ...	२६
खर्परी	खर्परी ...	८ ...	२१
भ्रमन्तः	भ्रमन्तः ...	१२ ...	२८
विंशतिमे	विंशतितमे ...	२४ ...	५
सनत्कमार	सनत्कुमार ...	१५ ...	२
संसेवयेत्	सेवयेत् ...	१६ ...	२८
सुगुण	सगुण ...	२१ ...	८
त्मकामवेति	त्मकमेवेति ...	२३ ...	१५
ऽधिश्टाह	ऽधिष्ठाह ...	२१ ...	६

विज्ञापन ।

विदित हो कि यह ग्रन्थ डेरागाजिखांपुर निवासि श्रीयुत गिरिधारीलाल जी के पुत्र बालसुकुन्द अडोरामदीवीकाठगानमें ग्रन्थकर्त्ता की आज्ञा लेकर विना मूल्य देने को छपवाया है सो निम्न लिखित स्थानोंमे स्पष्ट अक्षरोंमें केवल पत्र द्वारा ठिकाना देनेसे मिल सकेगा और ग्रन्थकर्त्ता की आज्ञासे सब कोई छाप सक्ता है और छपवाय सक्ता है ।

पुस्तक मिलने का ठिकाना ।

पण्डित श्रीदुर्गादत्तशर्मा
अठखम्भा वृन्दावन
जिला मथुरा ।

बालमुकुन्द कम्पनी
नई पवैयापट्टी नम्बर ५१
कलकत्ता ।

अमरकोषनामावली

भाषाअर्थसहित

अर्थात् अकारादि के क्रम से हकारपर्यंत

पण्डित चक्रपाणि सेकन्ड मास्टर नार्मिल

स्कूल

इलाहाबाद

ने

बाबू रामसहाय साहब हेड किलार्क दफ़्तर

साहब इन्स्पेक्टर बहादुर मदारिस रुहेलखण्ड

की सहायता से

और

बाबू जवाहरलाल साहब हेड किलर्क दफ़्तर

साहब इन्स्पेक्टर बहादुर मदारिस इलाहाबाद की

सम्मति से पाठक और विद्यार्थियों के अर्थ बनाई

पहलीबार १००० जिल्दें {एक पुस्तक का मोल ॥=

मतबअ चश्मे फ़ैज़ मेरठ में छापी गई

सङ्केत इस पुस्तक के ये हैं

पुल्लिंग	=	(पु)
स्त्रीलिंग	=	(स)
नपुंसकलिंग	=	(न)
पुल्लिंगस्त्रीलिंग	=	(पु स)
पुल्लिंग नपुंसक लिंग	=	(पु न)
पुल्लिंग स्त्रीलिंग नपुंसक लिंग जो तीनों लिंग में है	=	(त्रि) वा (३)
अव्यय	=	(अ)
बहुवचन	=	(बहु०)

इस पुस्तक के बनाने का परिश्रम बाबू रामसहाय साहब और बाबू जवाहरलाल साहब को $\frac{2}{3}$ भाग बेच दिया गया है

प्रकट हो कि

यह पुस्तक केवल अमरसिंह कृत अमरकोष का भाषा है और किसी दूसरे कोष के नामों का भाषा नहीं है

श्रीगणेशायनमः

अ

अंश (पु.) भाग
अंशु (पु.) किरण
अंशुक (न.) वस्त्र
अंशुमती (स) सालपर्णी
अंशुमत्फला (स) केला
अंस (पु.न) कन्धा
अंसल (पु.) बलवान्
अंहति (स) दान
अंहस् (न) पाप, वेग
अंहिति (स) दान
अंह्रि (पु) चरण, पद
अ (अ) अभाव
अकरणि (पु) शाप
अकूपार (पु.) समुद्र
अकृष्णकर्मा (त्रि) पुण्यात्मा
अक्ष (पु.) १६ माशा
अक्ष (न) तोलविशेष - इंद्रिय - सौंचर
अक्ष (पु) बहेड़ा - रीढ - पांसा - प्रसन्न - स्फटिक जुआखिलनेका अंग
चक्र - व्यवहार
अक्षत (पु.न) गीलेचं
अक्षदर्शक (न) न्यायाधीश - पंच
अक्षदेवी (पु) ज्वारी
अक्षर (न) मोक्षादि
अक्षरचुंचु (पु) लेखक
अक्षरजून (पु) लेखक
अक्षरसंस्थान (न) लिखा
अक्षवती (स) जुआ
अक्षाग्रकीलक (पु) गाड़ीका कुलावा
अक्षांति (स) असहन
अक्षि (न) आँख
अक्षिकूटक (न) हाथी-केनेत्रोंका गोलक
अक्षिगत (त्रि) वैरकेयोग्य
अक्षिब (न) समुद्रनोन
अक्षीब (पु) सहजना
अक्षीब (न) समुद्रनोन
अक्षुर (पु) तालमखाना
अक्षोड (पु) पिलुआवृक्ष
अक्षौहिणी (स) १० अनीकिनी संख्या
अखंड (त्रि) सब
अखात (पु.न) सरोवर
अखिल (त्रि) सब
अग (पु) वृक्ष
अगद (पु) औषध
अगदंकार (त्रि) वैद्य
अगम (पु) वृक्ष
अगरी (स) विडंगवृक्ष
अगस्त्य (पु) मुनि
अगाध (त्रि) अत्यंतगहरा
अगार (न) मन्दिर
अगुरु (न) सीसोंवृक्ष
अग्नायी (स) अग्निकीप्रिया
अग्नि (पु) आग
अग्निकण (पु) आगकन
अग्निचित (पु) अग्निका सञ्चयकरनेवाला
अग्निज्वाला (स) आंवला
अग्निभू (पु) स्वामिकार्त्तिक
अग्निमंथ (पु) अरणीकाठ

अग्निमुखी (स) भिलावा
अग्निशिख (न) केसर
अग्निशिखा (स) कलहारी वृक्ष-हालों औषध
अग्नीध्र (पु) ऋत्विज
अग्न्युत्पात (पु) धूमकेतु
अग्र (३) मुख्य
अग्र (न) पुर-अधिक-ऊपर
अग्रज (पु) जेठा भाई
अग्रजन्मा (पु) ब्राह्मण
अग्रतः सर (पु) अगुआ
अग्रतस् (अ) आगा
अग्रमांस (न) कलेजा
अग्निमंथ (पु) अरणी
अग्रिय (पु) जेठा भाई
अग्रिय (३) मुख्य
अग्रेदिधिषु (पु) दोबार बिवाही स्त्री कुटुम्बिनी कापति
अग्रेसर (पु) अगुआ
अघ (न) पाप-दुःख-व्यसन
अघमर्षण (३) सर्वपाप नाशन मन्त्र
अघ्न्या (स) गाय
अंक (पु) चिह्न-कलंक
अंकु (पु) मृगभेद
अंकुर (पु) अँखुआ
अंकुश (पुन) आँकुश
अंकोट (पु) चिलगोजा
अंक्य (पु) मृदंग भेद
अंग (न) वेदांग-शरीर
अंग (अ) संबोधनार्थक
अंगद (पुन) बाजूबंद
अंगन (पु) आंगन
अंगना (स) उत्तर दिग्गज की स्त्री-सुनेत्रा स्त्री
अंगविक्षेप (पु) नाँच विशेष
अंगसंसार (पु) कुंकुमादि से अंगसंस्कार
अंगहार (पु) नाच विशेष
अंगार (पुन) अँगार
अंगारक (पु) मंगल
अंगारधानिका (स) अँगीठी
अंगारवल्लरी (स) कंजा का भेद
अंगारवल्ली (स) भां
अंगारशकटी (स) अँगीठी
अंगीकार (पु) स्वीकार
अंगीकृत (३) अंगीकार किया
अंगुलि (स) तोल भेद
अंगुलिमुद्रा (स) मुहर की अगूँठी
अंगुली (स) अँगुली
अंगुलीयक (पु न) अगूँठी-मुँदरी
अंगुष्ठ (पु) अगूँठा
अंघ्रि (पु) चरण
अंघ्रिवल्लिका (स) सिंहपच्छी औषध
अगुरु (पुन) अगुरु काला वा अगर
अचंडी (स) सीधी गौ
अचल (पु) पहाड़
अचला (स) पृथ्वी
अच्युत (पु) विष्णु

अर्चि(स) आगज्वाला
अर्चि(स न) प्रकाश
अर्चित(३) पूजाकिया
अच्युताग्रज(पु) बलदेव
अच्छ(३) निर्मल
अच्छभल्ल(पु) रीछ
अज(पु) विष्णु वा हरवा बकरा
अजगंधिका(स) बन तुलसीवृक्षभेद
अजगर(पु) सर्प्प
अजगव(न) शिवध-
अजन्य(न) उत्पात
अजमोदा(स) अजवायन औषध
अजशृंगी(स) मेढा
अजस्र(न) लगातार
अजा(स) बकरी
अजाजी(स) जीरा
अजाजीव(पु) गड़रिया
अजित(पु) विष्णु
अजिन(न) मृगचर्म
अजिनपत्रा(स) चिमगादड़जीव
अजिनयोनि(पु) मृग-हिरण
अजिर(न) आँगन-विषय-कोष
अजिह्म(३) सीधा
अजिह्मग(पु) बाण
अज्जुका(स) नाचकरनेकी वेश्या
अज्ञ(३) मूढ
अज्ञान(न) अविद्या
अंजित(३) पूजा
अंजन(पु) पश्चिमदिशाका दिग्गज
अंजनकेशी(स) पर्वार वृक्षविशेष
अंजना(स) उत्तरदिग्गजकी स्त्री
अंजनावती(स) ईशानदिशाकी स्त्री
अंजलि(पु) अँजली
अंजसा(अ) शीघ्र-तावाचक-तत्वार्थक
अज्जकटा(स) आँवला
अरनि(स) धनुषका किनारा
अरनी(स) धनुषका किनारा
अटवी(स) वन, जंगल
अटरूष(पु) अडूसा
अटा(स) फिरना
अट्या(स) जाना
अटाट्या(स) जाना
अट्ट(पु) अटारी
अणक(३) अधम
अणव्य(३) छोटेनाजका खेत
अणि(पु स) गाढ़ीका कुलावा
अणिमा(स) अष्टसिद्धियोंमें १ सिद्धि
अणीय(३) अतिथोड़ा
अणु(पु) सामान्य सूक्ष्म, थोड़ा
अंड(न) अंडा
अंडकोष(पु) फोता

अंडज (पु) मच्छी, पक्षी
अंडज (३) सर्पादि जीव
अतट (पु) पर्वतसे जल
गिरनेका स्थान
अतलस्पर्श (३) अथाह
अतसी (स) अलसी
अति (अ) प्रकर्ष-लंघ-पराक्रम
न-अति-पूजन
अतिक्रम (पु) निडर-
वीरकी यात्रा
अतिचरा (स) कपिला
पद्माक
अतिछत्र (पु) जलतृण
अतिछत्रा (स) सौंफ
अतिजवस् (पु) शीघ्र
चलने वाला
अतिथि (पु) पाहुना
अतिथिसपर्या (स)
मनुष्ययज्ञ, महायज्ञ
अतिनु (३) अतिपराक्
अतिपंथा (पु) अच्छा मार्ग
अतिपात (पु) अतिक्रम
अतिमात्र (न) बहुत

अतिमुक्ता (पु) माधवीलता
अतिमुक्तक (पु) तेंदुआ
अतिरिक्त (३) अधिक
अतिविषा (स) अतीस
अतिवेल (न) अतिशय
अतिशक्तिता (स) अति
अतिशय (पु) बहुत
अतिसर्जन (न) अतिदाम
अतिसारकी (३) बहुत
हगनेवाला
अतिशोभन (३) श्रेष्ठ
अतींद्रिय (३) अप्रत्यक्ष
अतीव (अ) अतिशय
अत्यन्तकोपन (त्रि)
अति क्रोधी
अत्यंतीन (पु) बारंबार
चलनेवाला
अत्यय (पु) मृत्यु-अ-
तिक्रम-कष्ट-दोष-
दंड
अत्यर्थ (न) अतिशय
अत्यल्प (३) अतिथोड़ा

अत्यल्प (३) अतिथोड़ा
अत्याहित (न) महाभय
बड़े साहसका कर्म
अथवा अथो (अ)
प्रश्न-बहुत-मंगल
अनंतर-आरंभ
अदभ्र (३) अधिक
अदर्शन (न) लोप
अदितिनंदन (पु) देवता
अदृश (३) अन्धा
अदृष्ट (न) अदृष्टफल
अदृष्टि (स) टेढ़ा देखना
अद्धा (अ) तत्वार्थक
अद्भुत (पुन) रसविशे-
ष-आश्चर्य
अद्मर (३) खवय्या
अद्य (अ) आज
अद्रि (पु) पहाड़-
वृक्ष-सूर्य
अद्वयवादी (पु)
जिन वा बुध
अधम (३) निकृष्ट
न्यून-निंदित

अधमर्णा(३) ऋणी	अधीन(३)आधीनमात्र	अध्वर्यु(पु)यजुर्वेद
अधर(पु)होठ-नीचे	अधीर(३) व्याकुल	वेत्ता-यजुर्वेदज्ञ
काहोठ-हीन	अधीश्वर(पु)महाराजा	अनक्षर(न)अवाच्य
अधरेद्युस्(अ) पूर्वदिन	अधुना(अ) अब	अनंग(पु)कामदेव
अधिकर्द्धि(३)भरेपूरे	अधृष्ट(३)सलज्ज	अनच्छ(३)गंधाजल
अधिकांग(न) घोड़े	अधोंशुक(न) धोती	अनडुह्(पु)बैल
कीकमरपट्टी	अधोक्षज(पु) विष्णु	अनंत(न) आकाश
अधिकार(पु) व्यवस्था	अधोभुवन(न)पाताल	नागराजा
स्थापक	अधोमुख(३)नीचा	अनंत(३) विनासीमा
अधिकृत(पु)अधिकारी	मुखकरनेवाला	विष्णु-शेष-नाग
अधिक्षिप्त(३)निंदित	अध्यक्ष(पु) अधिकारी	अनंता(स) पृथ्वी-ज-
अधित्यका(स) पहा-	अध्यक्ष(३)प्रत्यक्ष-	वासा-श्यामलता-
ड़केऊपरकीधरती	नियुक्त	हालों-दूब
अधिप(पु) स्वामी	अध्यवसाय(पु) उत्साह	अनन्यज(पु)कामदेव
अधिभू(पु) पति	अध्यापक(पु)पढ़ानेवाला	अनन्यवृत्ति(३) एका-
अधिरोहिणी(स)का	अध्याहार(पु) तर्क	ग्रचित्त
ठकीसीढ़ी	अध्यूढा(स) सौति	अनय(पु)व्यसन-
अधिवासन(न)गंध	अध्येषणा(स) विनय	अशुभदेव-विपत्ति
मालादिकाधारण	अध्वग(पु) पथिक	अनर्थक(न)अर्थशून्य
अधिविन्ना(स) सौति	अध्वनीन(पु) पथिक	अनल(पु) आग
अधिश्रयणी(स)चूल्ही	अध्वन्(पु) मार्ग	अनवधानता(स)
अधिष्ठान(न)पहिया	अध्वन्य(पु) पथिक	भ्रम-भूल
पुर-प्रभाव-चढ़ाई	अध्वर(पु)यज्ञ	अनवरत(न)लगातार

अनवराध्य(उ) मुख्य
अनवाअनस(न) गाढ़
अनाकुल(उ) स्वस्थ
अनाकु(अ) थोड़ा
अनागतार्त्तवा(स)
कुछवड़ीकन्या
अनादर(पु) अपमान
अनामय(न) रोगहीन
अनामिका(स) अंगुली
अनायासकृत(उ) सह-
जकियागया
अनारत(न) लगातार
अनार्य्यतिक्त(पु) चिरा-
यता औषधविशेष
अनाहत(उ) नयावस्त्र
अनिमिष(पु) देवता, म-
छली
अनिरुद्ध(पु) प्रद्युम्नके- पुत्र
अनिल(पु) ४९ गणदे-
वता- पवन-
अनिश(न) लगातार
अनिक(पुन) सेना, समर
अनीकस्थ(पु) रक्षक

अनीकिनी(स) सेना
चमूकीसेनासंख्यासे
३गुणीसेनारखनेवाला
अनु(अ) पीछे, सादृश्य
अनुक(उ) कामी
अनुकंपा(स) दया
अनुकर्ष(पु) रथकेनीचे
काकाठ
अनुकल्प(पु) प्रथम
विधिसेपीछेकीविधि
अनुकामीन(पु) स्वतं-
त्रचलनेवाला
अनुकार(पु) नकलकरना
अनुक्रम(पु) परिपाटी
अनुक्रोश(पु) दया
अनुग(अउ) पीछे
अनुग्रह(पु) अंगीकार
अनुचर(पु) सहायक
अनुज(पु) छोटाभाई
अनुजीवी(पु) सेवक
अनुतर्षण(न) मद्यपीना
अनुताप(पु) पछतावा
अनुत्तम(उ) मुख्य

अनुत्तर(उ) नीचा
दक्षिण- श्रेष्ठ
अनुपद(उ) पीछे(अ)
अनुपदीना(स) मोजा
अनुपमा(स) नैर्ऋ-
तदिग्गजकीस्त्री
अनुप्लव(पु) सहायक
अनुबंध(पु) दोषका
उत्पादन- प्रकृति- प्र-
त्यय- आगम- विन-
स्वर- मातापिता आ-
दिकी आज्ञाकारीपुत्र
प्रकरणसेप्राप्त इष्ट
अनुबोध(पु) गतगं-
धकोगंधयुतकरना
अनुभव(पु) साक्षात्
अनुभाव(पु) अर्थप्र-
काशक- प्रकाश- प्र-
भाव- ज्ञानकानिश्चय
अनुमति(स) कलासे
हीन पूर्णा तिथि
अनुयोग(पु) प्रश्न
अनुरोध(पु) अनुकूल

अनुलाप(पु)बारबारक	अंतर(न)अवकाश	सका अधिकारी
हना	अवधि-परिधान-अं-	अंतर्वत्नी(स)गर्भिणी
अनुवर्त्तन(न)अनुकूल	तरित-भेद-तादर्थ्य-	अंतर्वाणि(उ)शास्त्री
अनुवाक(पु)वेदांग	छिद्र-आत्मीय-वि-	अंतावसायि(पु)नाऊ
अनुशय(पु)चिरकाल	ना-बाहिर-अवसर-	अंतिक(उ)पास
कोबैर-पछतावा	मध्य-अंतरात्मा-सा	अंतिकतम(उ)अति-
अनुष्ण(पु)मंद	दृश्य	पास-अति निकट
अनुहार(पु)नकलकरना	अंतरा(अ)मध्य	अन्तिका(स)बड़ीव-
अनूक(न)शील,वन्श	अंतराय(पु)विघ्न	हिन-चूल्ही
अनूचान(पु)अंगस-	अंतराल(न)वीच	अंतिकाश्रय(पु)पास
हितवेदपाठी	अंतरिक्ष(न)आकाश	का आश्रय
अनूनक(त्रि)सब	अंतरीप(पुन)जलका	अंतेवासी(पु)शिष्य
अनूप(उ)जलयुक्तदेश	मध्यतट	विद्यार्थी-चांडाल
अनूरु(पु)सूर्यकासारथी	अंतरीय(न)धोतीआदि	अन्त्य(उ)अंत-छोर
अनृजु(त्रि)कपटी	अंतरे(अ)मध्य	अन्त्र(न)आँत
अनृत(न)झूठ-खेती	अंतरेण(अ)वर्जनार्थक	अंदुक(पु)लोहेकीहा-
अनेकप(पु)हाथी	मध्य-वीच	थीकीबेड़ी ८
अनेहस(पु)समय	अंतर्गत(उ)भूला	अंदूक(पु)हाथीकीसाँ
अनोकह(पु)वृक्ष	अंतर्द्वार(न)खिड़की	अंध(उ)अंधा,अँधेरा
अंतःपुर(न)रनिवास	अंतर्द्धा(स)छिपना	अंधकरिपु(पु)शिव
अन्त(पु)मृत्यु	अंतर्द्धि(पु)ढांकना	अंधकार(पुन)अँधेरा
अन्त(पुन)छोर	अंतर्मना(उ)उदास	अंधतमस(न)बहुत-
अंतक(पु)यमराज	अंतर्वशिक(पु)रनवा	अँधेरा

अंधस् (न) भात
अंधु (पु) कुआ
अन्न (न) भात-
खायागया
अन्य (त्रि) भिन्न
अन्यतर (त्रि) भिन्न
अन्यतरेद्युः (अ)
परसोंकादिन
अन्येद्युः (अ) कल
कादिन
अन्वक्ष (अ) पीछे
अन्वक् (अ) पीछे
अन्वय (पु) बंश
अन्ववाय (पु) वंश
अन्वाहार्य्य (न)
मासिकश्राद्धादि
अन्विष्ट (त्रि) ढूंढे
अन्वेषण (न) श्र-
द्धमेंब्राह्मणभक्ति-
धर्मादिकाखोजना
अन्वेषित (त्रि) ढूंढे
अपकाङ्क्षी (स) डरना
अपक्रम (पु) भागना

अपगा (स) नदी
अपघन (पु) अंग
अपचय (पु) छीनलेना
अपचायित (त्रि) पूजा-
कियागया
अपचित (त्रि) पूजागया
अपचिता (स) द्रव्य-
पूजादि
अपचिति (स) पूजा
अपटांतर (त्रि) मिला
अपटु (त्रि) रोगी
अपत्य (न) पुत्रकन्या
अपत्रपा (स) औरसेल-
ज्जाकरना
अपत्रपिष्णु (त्रि) ल-
जवंता
अपथ (न) कुमार्ग
अपंथा (न) कुमार्ग
अपदंश (पु) मदिरापी-
नेमेंअंनचिबानेवालाप-
दार्थ
अपदिश (न) दिशोंका
मध्य- कोण

अपदेश (पु) छल-
पद-चिह्नकाहेतु
अपध्वस्त (त्रि) धिक्कारी
अपभ्रंश (पु) अपशब्द
अपभ्रंस (पु) अपशब्द
अपयान (न) भागजाना
अपरस्पर (त्रि) बारबा-
रचलना
अपराजिता (स) विष्णु-
क्रांता-पटसन
अपराद्धपृषत्क (पु)
निशानसेचूका
अपराध (पु) पाप
अपराह्ण (पु) दिनकाभाग
अपरेद्युः (अ) परसों
अपर्णा (स) पार्वती
अपलाप (पु) छिपाना
अपवर्ग (पु) मोक्ष
अपवर्जन (न) दान
अपवाद (पु) निंदा-
आज्ञा-
अपवारण (न)
ढांपना

अपशब्द (पु) अपभ्रंश
अपष्टु (त्रि) उलटा
अपसद (पु) नीच
अपसर्प (पु) हलकारा
अपसव्य (त्रि) उलटा - द-
क्षिणांग
अपस्कर (पु) लत्ता
अपस्नात (त्रि) मृतकस्नायी
अपहार (पु) छीनलेना
अपांग (पु) आंखकाकि-
नारा - तिलक - अंगहीन
अपान (पु) शरीरस्थप-
वन - गुदा
अपामार्ग (पु) चिरचिरा
अपांपति (पु) समुद्र
अपावृत (त्रि) स्वतंत्र
अपासन (न) मारा
अपि (अ) भी - निंदा -
समुच्चय - प्रश्न - शंका
संभावना
अपिगीर्ण (त्रि) स्तुतिकिया
अपिधान (न) ढांपना
अपिनद्ध (त्रि) झिल्लमादि

पहिरे हुया
अपूप (पु) पुआ
अप्याति (पु) स्वरूप
अप्पित (न) अग्नि
अप्रकांड (पु) वृक्षकाठूंठ
अप्रगुण (त्रि) आकुल
अप्रत्यक्ष (त्रि) नसाम्हने
अप्रहत (त्रि) जंगल
अप्रधान (न) अमुख्य
अप्राग्र्य (त्रि) अप्रधान
अप्सरस (पु) देवजाति
अप्सरस (स) अप्सरा
अफल (त्रि) अफलवृक्ष
अबद्ध (न) अर्थशून्य
अबद्धमुख (त्रि) अप्रिय
काकहनेवाला
अबला (स) स्त्री
अब्धिकफ (पु) समुद्रफेन
अब्ज (पु) चन्द्रमा - शं-
ख - कमल
अब्जयोनि (पु) ब्रह्मा
अब्द (पु) वर्ष
अभ्र (न) आकाश

मेघ - बादल
अभ्रमु (स) पूर्वदिग्ग-
जकीस्त्री
अब्रह्मण्य (न) अवध्य
अभय (न) उशीर - खस
अभया (स) हर्ड - हर्र
अभाषण (न) चुप
अभिक (त्रि) कामी
अभिख्या (स) नाम -
शोभा - परमा
अभिशस्त (त्रि) अपराधी
अभिग्रह (पु) लड़ाईमें
पुकारना | करना
अभिग्रहण (न) चोरी-
अभिज्ञ (त्रि) ज्ञाता
अभिघाति (पु) शत्रु
अभिचार (पु) हिंसा
अभिजन (पु) वंश - कु-
ल - जन्मभूमि
अभिजात (त्रि) कुली-
न - पण्डित
अभित (त्रि) समीप
अभितः (अ) समीप

अलंकरिष्णु (३) अलंकारकरनेवाला
अलंकर्मीण (३) कार्यकारी
अलंकार (पु) गहना
अलंकृत (३) गहनेसेयुक्त
अलंक्रिया (स) शृंगार
अलर्क (पु) श्वेतआक पागलकुत्ता
अलस (पु) मंद
अलात (न) कोयला
अलाबू (स) लौकी
अलि (पु) बीछी, भौंरा
अलिक (पुन) माथा
अलिंजर (पु) मटका
अलिन (पु) भौंरा
अलीक (न) अप्रिय झूठ
अल्प (३) थोड़ा
अल्पतनु (पु) छोटेतनुका
अल्पमारिष (पु) चौराई
अल्पसरस (न) छोटा सरोवर
अल्पिष्ठ (३) बहुतथोड़ा

अल्पीयस् (३) बहुतथोड़ा
अवकर (पु) कूड़ाकरकट
अवकीर्णी (पु) ब्रह्मचर्यहीन हुआ
अवकृष्ट (३) निकाला
अवकेशी (३) अफलवृक्ष
अवक्रय (पु) मोल
अवगणित (३) अपमानकिया
अवगत (३) जानागया
अवगीत (३) निंदित अपवाद
अवग्रह (पु) अवर्षा हाथीकामाथा
अवग्राह (पु) अवर्षा
अवचूर्णित (३) पिसा
अवज्ञा (स) अपमान
अवज्ञात (३) अपमान
अवट (पु) पृथ्वीकापोल
अवटीट (पु) नकचपरा
अवटु (पुस) घाँटी
अवतंस (पु) कर्णफूल शिरोभूषण

अवतमस (न) थोड़ाअँधेरा
अवतोका (स) पतितगर्भागौ
अवदंश (पु) मद्यपीनेमेंरुचिबढ़ानेवालाभोजन
अवदात (पु) उजला
अवदात (३) सित, शुद्ध पीला
अवदान (न) सुकर्म
अवदारण (न) कसी-
अवदाह (न) उशीर
अवदीर्ण (३) पिघलाहुआ
अवद्य (३) अधम
अवधि (पु) सीमा, बिल
अवध्वस्त (३) पिसाहुआ
अवन (न) अघाया
अवनत (३) औंधेमुख
अवनाट (पु) चिपटीनाकवाला
अवनाय (पु) गिरना
अवनि (स) धरती
अवनी (स) धरती
अवंतिसोम (न) काँजी
अवन्ध्य (३) फलवान्वृक्ष

अवभृथ(पु)यज्ञांतस्नान
अवभ्रट(पु)चपटीनाकका
अवम(उ) अधम
अवमत(उ)अपमानकिया
अवमर्द(पु)मिटाना
अवमानना(स)अपमान
अवमानित(उ) अपमान-
किया हुआ
अवयव(पु) अंग
अवर(न)हाथीकेपीछेकी
जंघाका भाग
अवरज(पु)छोटाभाई
अवरति(स)निवृत्ति
अवरवर्ण(पु)शूद्र
अवरीण(उ)धिक्कार किया
अवरोध(पु)रनिवास
अवरोह(पु)बरगदकीजटा
अवर्ण(पु) निंदा
अवलग्न(पुन)शरीरका
अवला(स) नारी
अवल्गुज(पु)बकुची
अवश्य(अ) निश्चय
अवश्याय(पु)ठंड

अवक्कयनी(स)बकेनी
गाय
अवष्टब्ध(उ) निकट
अवसर(पु) प्रसंग
अवसान(न) अंत
अवसित(उ) समाप्त-जा-
नागया
अवस्कर(पु) विष्टा-
भग-लिंग
अवस्था(स)विशेषसम-
अवहार(पु)घड़ियाल
अवहित्या(स)कपट
अवहेलन(न)अपमान
अवाक्(उ) गूँगा
अवाक्पुष्पी(स)सौंफ
अवाग्र(उ)औंधेमुख
अवाची(स)दक्षिणदिशा
अवाध(उ)व्याधिरहित
अवाच्य(न) अवाक्
अवार(पुन)इसपार
अवासस(उ)नंगा
अवि(स)रजस्वला-
शैल-मेष-सूर्य्य

अविघ्न(पु) करौंदा
अवित(उ) रक्षित
अविद्या(स) अज्ञान
अविनीत(उ)अन्यायी
अविरत(न)लगातार
अविलंबित(न)शीघ्र
अविस्पष्ट(न)अस्पष्ट
अवीचि(सपु)नरकभेद
अवीरा(स) विनापति-
पुत्रकीस्त्री
अवेक्षा(स)पदार्थोंका
अब्द(पु)मेघ-वर्ष
अब्धि(पु) समुद्र
अब्धिकफ(पु)समुद्रफेन
अव्यक्त(पु) विष्णु
अव्यक्तराग(पु)थोड़ालाल
अव्यंडा(स) कौंच
अव्यथा(स) हर्ड़, प-
द्माक-कपिला
अव्यय(न)विकाररहित
अव्यवहित(उ) मिला
अशनपर्णी(स)पटसन
अशनाया(स)भूख

अशनायित (३) भूखा
अशनि (पुस) वज्र
अशित (३) खायागया
अशिश्वी (स) विना पुत्र की स्त्री
अशेष (३) सब
अशोकरोहिणी (स) कटुकी
अशोक (पु) अशोक
अश्मगर्भ (न) मरकतमणि
अश्मज (न) शिलाजी
अश्मन् (पु) पत्थर
अश्मन्त (न) चूल्हा
अश्मरी (स) मूत्रकृच्छ्र
अश्मसार (पुन) लोहा
अश्रांत (न) लगातार
अश्रि (स) खड्गादि की नोक
अश्रु (न) आँसू
अश्लील (न) ढीलाकरना
अश्व (पु) घोड़ा
अश्वयुज (स) घोड़ी

अश्वकर्णीक (पु) शाल
अश्वत्थ (पु) पीपल
अश्वमेधीय (पु) अश्वमेधयज्ञ का घोड़ा
अश्वा (स) घोड़ी
अश्वारोह (पु) घुड़चढ़ा
अश्विनी (स) नक्षत्र
अश्विनीसुत (पु) स्वर्ग का वैद्य
अश्विन (पु) स्वर्ग का वै
अश्वीय (न) घोड़ों का समूह
अष्टधा (अ) ८ प्रकार का
अषडक्षीण (३) तीसरे से नहीं जानागया - सँमति
अष्टापद (पुन) सोना, चौपड़ - मकड़ी
अष्ठीवत (पुन) घुटना
असकृत (अ) बारंबार
असती (स) छिनार
असतीसुत (पु) कुलटा का पुत्र
असन (पु) विजयसार
असमीक्ष्यकारी (३) अविचारी

असार (पु) सेना का फैलाव
असार (३) निर्बल
असि (पु) तलवार
असिक्री (स) बूढ़ी न हो और आज्ञावर्तिनी और रनवास स्थिता स्त्री
असित (पु) काला
असिधावक (पु) सिकली
असिधेनुका (स) छुरी
असिपुत्री (स) छुरी
असिहेति (पु) तलवारधारक
असु (पु० ब०) प्राण
असुधारण (न) प्राणी
असुर (पु) राक्षस
असूक्षण (न) अवज्ञा
असूया (स) निंदा
असृग्धरा (स) त्वचा
असृक् (न) लोहू
असेचनक (३) परमसुंदर
असौम्यस्वर (३) क्रूरवादी
अस्त (पु) अस्ताचल पर्वत

अस्त (उ) भेजा
अस्तम् (अ) छिपना
अस्ति (अ) होना
अस्तिष्क (न) भेजा
अस्तु (अ) होउ
अस्त्र (न) शस्त्र
अस्थि (न) हाड़
अस्थिर (उ) चंचल
अस्फुटवाक् (उ) जो स्पष्ट न बोले
अस्मपुष्प (न) शिलाजीत
अस्र (न) लोहू आँसू
अस्रप (पु) राक्षस
अस्र (पु) बाल, कोण
अस्रु (न) आँसू
अस्वच्छंद (उ) आधीन
अस्वप्न (पु) देवता
अस्वर (उ) कूखादी
अस्वाध्याय (पु) वेद भ्यासरहित
अहंयु (उ) अभिमानी
अहःपति (पु) सूर्य्य
अहंकार (पु) गर्व

अहंकारवत् (उ) अभिमानी
अहन् (न) दिन
अहमहमिका (स) अभिमानी
अहंपूर्विका (स) हमपहले लड़ेंगे
अहम्मति (स) अज्ञान
अहर्पति (पु) सूर्य्य
अहर्मुख (न) प्रात
अहस्कर (पु) सूर्य्य
अहह (अ) अद्भुत-खेद
अर्हित (उ) पूजा
अहार्य्य (पु) पहाड़
अहि (पु) सर्प, वृत्रासुर
अहित (पु) शत्रु
अहितुण्डिक (पु) सर्प्प पकड़नेवाला
अहिभय (न) अपने सहायक से भय
अहिभुज (पु) मोर-गरुड़-नौला
अहेरु (स) सतावरी
अहो (अ) विस्मय
अहोरात्र (पु न) ३० मुहूर्त्त-पित्र दिन
अह्नाय (अ) शीघ्रता

आ

आ (अ) अंगीकार स्मरण वाक्यस्तुति
आकम्पित (उ) कँपा
आकर (पु) खानि
आकर्ष (पु) जुआ-पाँसा-चौपड़ आदि
आकल्प (पु) अलंकार की शोभा
आकार (पु) खान-चेष्टित-संकेत-आकृति
आकारगुप्ति (पु) कपट
आकांक्षा (स) मनोरथ
आकारणा (स) पुकारना
आकाश (पुन) अम्बर
आकीर्ण (उ) संकुल
आकुल (उ) आकुल
आक्रीड (पुन) राजक्रीड़ाकाबाग
आक्रोड (सन) गोद

आक्रोशन (न) गाली
आक्रन्द (पु) अतिशब्द-
रोया-रक्षक-दारुण, रण
आक्षारण (स) (न) नि-
न्दा करना
आक्षारित (त्रि) अपवादी
आक्षीव (पु) सहजना
आक्षेप (पु) निंदा
आक्षोट (पु) पिलुआ
आक्षोदन (न) शिकार
आखंडल (पु) इन्द्र
आखु (पु) चूहा
आखुभुक् (पु) बिलार
आखेट (पु) शिकार
आख्या (स) नामधेय
आख्यान (त्रि) कहा
आख्यायिका (त्रि) कहानी
आगंतु (त्रि) पाहुना
आगस (न) अपराध-
आग-पाप
आगाम् (न) अपराध
आगार (न) घर
आगू (स) स्वीकार

आग्नायी (स) आग की
प्रिया- [ब्राह्मण]
आग्नीध्र (त्रि) वरणक्रिया
आगुरु (पुन) आगर
आग्रहायणीक (पु)
अगहन का महीना
आग्रहायणी (स) मृग-
शिर नक्षत्र
आङ् (अ) अल्प-सी-
मा-क्रियायोजक
आंगिक (त्रि) शरीर और
मन की चेष्टा
आंगिरस (पु) बृहस्पति
आचमन (न) आचम-
न
आचाम (पु) माँड
आचार्य्य (पु) वेद के मं-
त्रों की व्याख्या करनेवा-
ला
आचार्य्या (स) वेद के
मंत्रों का अर्थ करनेवाली
आचार्य्यानी (स) आ-
चार्य्य की स्त्री
आचित (पुन) १० भार-

की तोल-गाड़ी भर
भार
आच्छादित (न) ढाँ-
पना-वस्त्र
आच्छुरितक (न) नख
सहित हाँसी
आजक (न) बकरों
का समूह
आजानेय (पु) कु-
लीन घोड़ा
आजि (स) युद्ध-स-
म भूमि भाग
आजिह्म (त्रि) सीधा
आजीव (पु) आजी-
विका-
आजू (स) भेजना
आज्ञा (स) आज्ञा
आज्य (न) घी
आटि (स) तीतर
आडंबर-युद्ध का न-
गाड़ा-बाजे का श-
ब्द-मत्त हाथियों
की गर्जन

आडि(स)तीतर
आढक(पुन)तोल है
आढकी(स)अरहर
आढ्य(पु)धनी
आणवीन(३)अणु
धान्यकाखेत
आतंक(पु)रोग-ताप-
शंका
आतंचन(न)दूधमेंजा
वनदेना-तृप्तिकरना-वेग
आततायी(३)मारनेकेयोग्य
आतप(पु)सूर्यकातेज
आतपत्र(न)छाता
आतर(पु)उतराई
आत्रेयी(स)रजस्वला
आतायि(पु)चील
आतिथेय(३)अतिथि
केनिमित्तकर्म
आतिथ्य(३)अतिथि
केनिमित्तकर्म
आतुर(३)रोगी
आतोद्य(न)वाजेकाभेद
आत्तगर्व(३)अहंकार-
रहित पुरुष
आत्मगुप्ता(स)कौंच
आत्मघोष(पु)काग
आत्मज(पु)पुत्र
आत्मजा(स)पुत्री
आत्मा(पु)चैतन्यपुरुष-
परिश्रम-धारण-बुद्धि
स्वभाव-ब्रह्म-देह
आत्मभू(पु)कामदेव-
ब्रह्मा
आत्मंभरि(३)पेटार्थी
आथर्वण(न)अथर्व-
णोंकासमूह
आदर्श(पु)शीशा
आदि(पु)प्रथम
आदिकारण(न)पूर्वहेतु
आदितेय(पु)देवता
आदित्य(पु)देवता,सूर्य
द्वादश१२गणदेवता
आदीनव(पु)क्लेश
आदृत(३)आदरयुत-पू-
जित
आदेष्टु(पु)यज्ञाध्यक्ष
आद्य(पु)पहिला
आद्यमाषक(पु)५
गुंजाकीतोल
आद्यून(३)भखमरा
आधार(पु)बांध
आद्धांत(पु)सिद्धांत
आधि(पु)मनकादुः-
ख-बंधक-व्यसन
चेत-पीड़ा-आश्रय
आधूत(३)कंपा
आधोरण(पु)हाथी-
वान-महावत
आध्यान(न)स्मरण
आनक(पु)बड़ानका-
डा-भेरी-पटह
आनकदुंदुभि(पु)
वसुदेव
आनत(३)अधोमुख
आनद्ध(न)मृदंगादि
बाजा
आनन(न)मुख
आनंद(पु)हर्ष
आनंदथु(पु)हर्ष

आनंदन(पु)कुशलानंद
आनर्त(पु)संग्राम-नाँ
चनेकाघर-देशविशेष
वाजनपद
आनाय(पु)जाल
आनाय्य(पु)आग
आनाह(पु)कुबड़ा
कुब्जा
आनुपूर्वी(स)अनुक्रम
आंधसिक(त्रि)रसोइया
आन्वीक्षिकी(स)न्याय
आप(स)वे० जल
आपक्क(न)अधपका
आपगा(स)नदी
आपण(पु)बाज़ार
आपणिक(पु)साहूकार
आपत्प्राप्त(त्रि)विपत्ती
आपदा(स)विपत्ति
आपत्(स)विपत्ति
आपन्न(त्रि)विपत्ती
आपन्नसत्वा(स)गर्भि-
णीस्त्री
आपमित्यक(न)जो
नियमसेमिलगयाहो
आपान(न)मदिराकीस
भाविशेष
आपीड(पु)शिरकीमाला
आपीन(न)थन
आपूपिक(त्रि)पुआआ-
दि बनानेवाला
आपूपिक(न)पुओंका
समूह
आप्त(त्रि) विश्वासी
आप्य(त्रि) जलविकार
आप्रच्छन्न(न)कुशला-
नंद
आप्रपद(न)लंबालहँगा
आप्रपदीन(त्रि) तथा
आप्लव(पु) स्नान
आप्लाव(पु) स्नान
आप्लवव्रती(पु) वेदव्रत
कोपूराकरगुरूकीआ
ज्ञाकोपानेवाला
आबन्ध(पु)जोतकीरस्सी
आविद्ध(त्रि)टेढ़ा,भेजा
आविध(पु) बर्मा
आभरण(न)गहना
आभा(स)शोभा
आभाषण(न)प्रिय-
बोलनेवाला,मिष्टवादी
आभास्वर(पु)गणदेवताविशेष
आभीर(पु)अहीर
आभीरपल्ली(स)अ-
हीरोंकागाँव
आभीरी(स)अहीरी
आभील(त्रि)पीड़ा
आभोग(पु)सब प-
दार्थसेपरिपूर्ण
आमगंधि(न)अप-
कमांसकीगंधि
आमनस्य(न)पीड़ा
आमिष(न)मांस
आमिष(पुन)ग्रहण
करना
आमिषाशी(त्रि)मां-
सखानेवाला
आमिक्षा(स)द-
धिदूधमिलाहुआ
आमुक्त(त्रि)सनाही

आमोद(पु)हर्ष सुगंध	आरति(स)निवृत्ति	आलंभ(पु)मारा
आमोदी(पु)मुखवास सुगंध	आरात्(अ)दूर समीप	आलय(पु)घर
आम्(अ)अंगीकार	आराधन(न)साधन	आलवाल(न)थाँवला
आम्नाय(पु)वेद उत्तमोपदेश	लाभ-संतोष	आलस्य(पु)मंद
आम्र(पु)आमकावृक्ष	आराम(पु)बाग	आलान(पु)खूँटा
आम्रातक(पु)आवला	आरालिक(त्रि)रसोइया	आलाप(पु)प्रियबोल
आम्रेडित(न)दोतीनवार	आरव(पु)शब्द	आलि(स.पु)पुल
का कहना	आराव(पु)शब्द	पंक्ति, सखी
आयत(त्रि)लम्बा,आधी /नमात्र	आरेवत(पु)अमलतास	आलिंग्य(पु)मृदंग
आयतन(न)यज्ञवेदी	आरोग्य(न)रोगरहित	आली(स)सखी
आयति(स)आनेवाला-	आरोह(पु)वस्त्रादि	आलीढ(न)धनुष
समय- प्रभाव	कीलंबाई-श्रेष्ठस्त्री	का आशन
आयाम(पु)वस्त्रकीलंबाई	कीकमरआदि	आलु(स)करवा
आयु(न)अवस्था	आरोहण(न)सीढ़ी	आलोक(पु)दर्शन
आयुधिक(पु)शस्त्रजीवी	आर्त्तव(न)स्त्रीकारज	आलोकन(न)देखना
आयुधीय(पु)शस्त्रजीवी	आर्त्तवी(स)रजस्वला	आवपन(न)वर्त्तन
आयुष्मान्(त्रि)चिरंजीवी	आर्द्र(त्रि)गीला	आवर्त्त(पु)भँवर
आयोधन(न)युद्ध	आर्द्रक(न)अदरख	आवलि(स)पंक्ति
आरकूट(पुन)पीतल	आर्य्य(पु)श्रेष्ठ,सज्जन	आवसित(त्रि)नाज-
आरग्वध(पु)अमलतास	आर्य्यावर्त्त(पु)देश	काढेर
आरनालक(न)कांजी	आर्षभ्य(पु)स्वच्छंद-	आवाप(पु)थाँवला
आरम्भ(पु)प्रथमारंभ	चारीबैल	आवापक(पु)पहुँची
आरा(स)शस्त्र	आल(न)हरताल	आवाल(पु)थाँवला

आवास(उ) नंगा	आशु(न) शीघ्र	का समूह
आविल(उ) गंधाजल	आशु(पु स) साठी	आषाढ(पु) महीना
आविस(अ) प्रकट	आशुग(पु) पवन-	ब्रह्मचर्य्यका दंड
आवुक(पु) पिता	बाण-वायु-	आसक्त(उ) लीन
आवुत्त(पु) बहनोई	आशुशुक्षणि(पु) आग	आस्न(न) पीठ
आवृत(उ) नदीआदि	आश्चर्य्य(न) अद्भुत	ठहरना-हाथीकाकंधा
सेघिराहुआ	आश्रम(पु न) ब्रह्मचा-	आसना(स) आसन
आवृत(स) अनुक्रम	रीआदिका स्थान	आसन्न(उ) समीप
आवेणी(स) विधारा	आश्रय(पु) आधीन	आसादित(उ) पाया
आवेशन(न) शिल्पघर	आश्रयाश(पु) आग	आसार(पु) मेघधारा
आवेशिक(उ) पाहुना	आश्रव(पु) स्वीकार-	आसुरी(स) राई
आशंसिता(उ) कहनेवाला	लेश	आसेचनक(उ) बहु-
आशंसु(उ) तथा	आश्रव(उ) आज्ञाकारी	तसुंदर
आशम्(अ) आनंदार्थक	आश्रुत(उ) अंगीकृत	आस्र(अ) कोप, पीड़ा
आशय(पु) प्रयोजन	आश्व(न) घोड़ोंका स-	आस्कंदन(न) लड़ाई
आशर(पु) राक्षस	मूह काफल	आस्कंदित(न) घोड़की
आशा(स) दिशा, बड़ी	आश्वत्थ(न) पीपल-	गतिवाचाल
तृष्णा	आश्वयुज(पु) कुआर	आस्तरण(न) हा-
आशितंगवीन(उ) ज-	आश्विन(पु) कुआर	थीकीझूल
हांपहलेगौओंनेखाया	आश्विनेय(पु) स्वर्गवैद्य	आस्था(स) सभा-
आशी(स) हितकीचाह-	आश्वीन(उ) घोड़े	यत्न-प्रयत्न
ना सर्प्पकी दाढ़	का एक दिनका मार्ग	आस्थान(न) सभा
आशीविष(पु) सर्पमात्र	आश्वीय(न) घोड़े	आस्थानी(स) सभा

निवास स्थान
आस्पद (न) स्थान
आस्फोटनी (स) वर्मा
आस्फोत (पु) आक
आस्फोता (स) वेला
आस्य (न) मुख
आस्या (स) आसन
आसव (पु) अर्कादि
आहत (न) असंभावित
आहतलक्षण (त्रि) गु-
णसेप्रसिद्ध
आहव (पु) प्याऊ
आहव (पुन) युद्ध
आहवनीय (त्रि) यज्ञकी
तीन आग
आहार (पु) खाना
आहाव (पु) प्याऊ
आहितुंडिक (पु)
सांपपकड़नेवाला
आहेय (त्रि) सर्पसंबंधी
आहो (अ) विकल्पार्थक
आहोपुरुषिका (स)
हमही पुरुष हैं वा हम-

हीलडेंगे
आहूय (पु) नामधेय
आहूा (स) नामधेय
आह्वान (न) पुकारना

इ

इच्छा (स) मनोरथ
इक्षुर (पु) तालमखाना,
इख
इक्षुगंधा (स) गोखरू
तालमखाने.
इक्ष्वाकु (स) कडुईतोंबी
इङ्ग (त्रि) चलनेवाला
इङ्गित (पु) चेष्टित
इंगुदी (स-पु) गोंदी
इच्छावती (स) धजा-
दिकेचाहनेवाली
इज्जल (पु) समुद्र-
फल
इज्याशील (पु) बारं-
बारयज्ञकरनेवाला
इट्चर (पु) सांड़
इडा (स) गौ-धरती-
वाणी, बुधकीस्त्री

इतर (पु) नीच
इतर (त्रि) भिन्न, अन्य
इति (अ) यह-हेतु-समा-
प्ति-प्रकरण-प्रकर्षादि
इतिह (अ) परंपराकिउ-
पदेश
इतिहास (पु) कथा
इत्वरी (स) छिनारि
इदानीम् (अ)
अब-इसकाल
इसी समय और
अधुना
इंदिरा (स) लक्ष्मी
इंदीवर (स) नीलकमल
इंदीवरी (स) शतावरि
इंदु (पु) चंद्रमा
इंद्र (पु) इंद्र, पूर्वदिशा-
कास्वामी
इंद्रद्रु (पु) अर्जुनवृक्ष
इंद्रयव (न) इंद्रजौ
इंद्रवारुणी (स) इंद्राय-
इंद्रसरस (पु) म्यांढी, सि
मालू

इंद्राणी (स) इंद्रकी स्त्री
इंद्रायुध (न) इंद्र धनुष
इंद्रारि (पु) असुर
इंद्रावरज (पु) विष्णु
इंद्रिय (न) गोचर, वीर्य्य
इंद्रियार्थ (पु) इंद्रिय
इंधन (न) ईंधन
इध्म (न) ईंधन
इन (पु) सूर्य राजा प्रभु
इभ (पु) हाथी
इभ्य (पु) हाथी - धनी
इरम्मद (पु) मेघकी ज्योति
इरा (स) मदिरा - पृथ्वी - वाणी - जल
इर्वारु (पु॰ स) ककड़ी
इला (स) गौ - धरती - वाणी बुधस्त्री
इल्वला (स) मृगशिरके शिरपरके तारे
इव (अ) समतार्थक
इष (पु) कुआर
इषु (पु॰ स) बाण
इषुधि (पु॰ स) तरकस
इष्ट (न) यज्ञकर्म
इष्टकापथ (न) उशीर
इष्टगंध (पु) बड़ा सुगंध
इष्टार्थोद्युक्त (त्रि) इष्टार्थमें युक्त
इष्टि (स) यज्ञ इच्छा
इष्वास (पु) धनुष

ई

ईक्षण (न) आंख देखे
ईक्षणिका (स) शुभाशुभ जाननेवाली स्त्री
ईडित (त्रि) स्तुति किया
ईति (स) उपद्रवादि - विदेश
ईरिण (त्रि) शून्य ऊसर
ईरित (त्रि) भेजा
ईर्म (न) घाव
ईर्ष्या (स) असहन
ईलित (त्रि) स्तुति किया
ईली (स) खांडा -
ईश (पु) शिव - ईशान - नदिशणका स्वामी
ईशान (पु) शिव
ईशिता (पु) स्वामी
ईश्वर (पु) शिव, स्वामी
ईश्वरी (स) पार्वती
ईषत् (अ) थोड़ा
ईषा (स) हलका हल
ईषिका (स) हाथीके नेत्रोंका गोलक, सलाई
ईहा (स) मनोरथ
ईहामृग (पु) भेड़िया
उक्त (त्रि) कहा
उक्ति (स) बोलना
उक्षा (पु) बैल
उक्षाभद्र (पु) बैल
उखा (स) थाली वा बटुआ
उग्र (पुन) शिव क्रोध शूद्रस्त्री और क्षत्रीसे उत्पन्न
उग्रगंधा (स) बच अजवायनि
उच्च (त्रि) ऊंचा
उच्चटा (स) मोथा
उच्चंड (त्रि) शीघ्र

उच्चार (पु) विष्टा	उत्कट (३) मतवाला	उत्तरासंग (पु) दुपट्टा
उच्चावच (३) अनेकप्रकार	उत्कंठा (पु) उमंठा	उत्तरान्ह (अ) आगेकादिन
उच्चैःश्रवा (पु) इन्द्रकाघोड़	उत्कर (पु) अन्नादिकाढेर	उत्तरीय (न) दुपट्टा
उच्चैर्घुष्ट (न) ऊँचेपढ़ना	उत्कर्ष (पु) बड़ाई	उत्तरेद्युः (अ) आगेकादिन
उच्चैस् (अ) ऊँचाई	उत्कलिका (स) उमंठा	उत्तरेद्यि (अ) तथा
उच्छ्रय (पु) वृक्षकीऊँचाई	उत्कार (पु) अन्नादि	उत्तान (३) थाह
उच्छ्राय (पु) तथा	कानिकालना	उत्तानशय्या (स) दूधपी-
उच्छ्रित (३) ऊंचा -उत्प-	उत्क्रोश (पु) कुररी-	नेवालाबच्चा
न्न - अभिमानी-	पुकारकरबोलीदेना	उत्थान (न) पौरुषअन्तंत्र
बढ़ाहुआ	उत्तंस (पु) कर्णफूल	सिद्धांत-बैठेहुओंका
उज्जासन (न) मारा	उत्तंस (पु) कर्णस्थान	उठना
उज्वल (पु) श्रृंगाररस	तन (३) सूतकोविस्तार	उत्थित (३) उत्पन्न-वृ-
उञ्छ (पु) शिला	उत (अ) समुच्चय -वि	द्धिवान्- लगाहुआ
उञ्छसिलवा उञ्छशि-	कल्प	उत्पतिता (३) उछलनेवाला
ल (न) शिलाबीनना	उत्तप्त (न) सूखामांस	उत्पतिष्णु (३) उछलनेवाला
उटज (पुन) मुनियोंकाघर	उत्त (३) गीला	उत्पत्ति (स) जन्म
उडु (सन) नक्षत्र	उत्तम (३) मुख्य	उत्पल (न) कफूला-कूट
उडुप (पुन) बेड़ा	उत्तमर्ण (३) धनवान्	उत्पलशारि (स) श्याम
उड्डीन (न) उड़ना	उत्तमा (स) उत्तमस्त्री	लता - बुलीसर
उत्त (३) विनाहुआवस्त्र	उत्तमांग (न) शिर	उत्पात (पु) उपद्रव
उताहो (अ) विकल्प	उत्तर (न) प्रतिवाक्य-	उत्फुल्ल (३) फूलाहुआ
उत्क (३) प्रीतियुत	उत्तर (३) ऊपर- उत्तर	उत्सर्जन (न) दान
उत्कट (न) तजऔषध	श्रेष्ठ	उत्सव (पु) उद्धव --ऊ-

ल

परकोउठाना-क्रोध	उदन्वा(पु) समुद्र	उदुंबरपर्णी(स) जयपाल
इच्छा-उत्पत्ति-आनं	उदपान(पुन) कुआ	उदूखल(न) ओखली
दका वेग	उदय(पु) उदयाचल	उद्धत(त्रि) उलटाकिया
उत्सादन(न) उबटन	उदर(न) पेट	उद्धमनीय(न) धुएंव-
उत्साह(पु) मनकाबढ़ना	उदर्क(पु) आनेवाला	स्त्र
शक्ति	फल	उद्गाढ(न) अतिशय
उत्साहवर्द्धन(पु) वीर	उदवसित(न) घर	बहुत
उत्सुक(त्रि) इष्टार्थयुक्त	उदश्वित(न) मठा-	उद्गाता(पु) सामवेदज्ञ
उत्सृष्ट(त्रि) त्यागा	जलमिलादधि	उद्गार(पु) डकार
उत्सेध(पु) वृक्षकी ऊंचा-	उदान(पु) शरीरस्थ	उद्गीथ(पु) सामवेद
ई-बेग-देह	पवन	उद्गूर्ण(त्रि) उठाया
उद्ग्राह(पु) डकार	उदार(त्रि) सरलचित्त	उद्वाह(पु) विवाह
उदक(न) जल	दाता-महान्	उद्ध(पु) अच्छा
उदक्या(स) रजस्वला	उदासीन(पु) शत्रु-	उद्धन(पु) काठगाढ़ने
उदग्र(त्रि) ऊंचा	मित्रराजाओंसे भिन्न	काआधार
उद्घ(पु) शुभ	राजा	उद्घट्टन(न) टूट
उदच्(अ) उत्तरदिशा-	उदाहार(पु) उदाहरण	उद्घान(न) चूल्ही
उत्तरदेश-उत्तरकाल	उदित(त्रि) बंधा-कहा	उद्घात(पु) प्रथमारंभ
उदज(पु) पशुओंकालल	उदीची(स) उत्तरदिशा	उद्दान(न) बंधन
कारना	उदीच्य(पु) पश्चिमस-	उद्यत(त्रि) हुल्पाया
उदधि(पु) समुद्र	हित उत्तर	उद्दाल(न) लसेरा
उदन्त(पु) वार्त्ता	उदीच्य(न) नेत्रवाला	उद्द्राव(पु) मसाना
उदन्या(स) प्यास	उदुंबर(पु) गूलरि	उद्धर्ष(पु) उत्सव

उद्भव (पु) उत्सव	उद्वेग (पु) विकल	उपक्रम (पु) ज्ञानकर
उद्भ्रांत (पु) निर्मदहाथी	उन्दुरु (पु) मूसा	आरंभकरना, उद्योग
उद्भ्रांत (त्रि) उलटाकिया	उन्नत (त्रि) ऊंचा	उपायपूर्वकआरंभ-
उद्गार (पु) व्याज	उन्नतानत (त्रि) ऊका	उपक्रोश (पु) निंदा
उद्धृत (त्रि) कूपआदि	हुआ ऊंचा	उपगत (त्रि) अंगीकृत
सेनिकालागया	उन्नयवाउन्नाय	उपगूहन (न) लिपटना
उद्भव (पु) जन्म	(पु) उठाना	उपग्रह (पु) बंधुआ
उद्भिज (त्रि) वृक्षादि	उन्मत्त (पु) धतूरा	उपग्राह्य (न) दहेजा
उद्भिज्ज (त्रि) वृक्षादि	उन्मत्त (त्रि) मतवाला	उपघ्न (पु) पासकाआ
उद्भिद (त्रि) वृक्षादि	उन्मद (त्रि) सिर्री	अथवाआसरा
उद्भ्रम (पु) उद्वेग	उन्मदिष्णु (त्रि) सिर्री	उपचरित (त्रि) सेवित
उद्यत (त्रि) उकसाया	उन्मना (त्रि) उदास	उपचाय्य (पु) आगघर
उद्यम (पु) उद्यम	उन्मथ (पु) मारा	उपचित (त्रि) बढ़ा
उद्यान (न) राजक्रीडा	उन्माथ (पु) फंदा	उपचित्रा (स) मूसरी
काबाग – बलभेद	उन्माद (पु) भ्रम	उपजाप (पु) भेदकरना
उद्युक्त (त्रि) स्वेष्टमेंलगा	उन्मादवान (त्रि) सिर्री	उपजोष (अ) आनंद
उद्योग (पुन) उत्साह	उपकंठ (त्रि) समीप	उपज्ञा (स) प्रथमज्ञान
उद्र (पु) जलजीव	उपकारिका (स) डेरा	उपतप्त (पु) संताप
उद्वर्त्तन (न) उबटन	उपकार्या (स) डेरा	उपताप (पु) रोग
उद्वान्त (त्रि) उलटाकिया	उपकुंचिका (स) इला	उपत्यका (स) पर्वतके
उद्वासन (न) मारा	यची कालाजीरा	नीचेकी धरती
उद्वाह (पु) विवाह	उपकुल्या (स) बड़ीपीपर	उपदा (स) दहेज
उद्वेग (न) सुपारीफल	उपकूप (पु) प्याऊ	उपधा (स) मंत्रीआदि

के कार्य्य को देखना
उपधान (न) तकिया
उपधि (पु) छल
उपनाह (पु) वीणा का बंधन
उपनिधि (पु) धरोहर
उपनिषद (स) धर्म, एकांत
उपनिष्कर (न) पुरमार्ग
उपन्यास (पु) आरम्भ
उपपति (पु) छिनरा
उपभृत (स) स्रुवा का भेद
उपभोग (पु) उपभोग
उपमा (स) उपमा
उपमान (न) उपमा
उपयम वा उपयाम (पु) विवाह
उपरक्त (पु) राहु से स्पर्श ग्रस्त
उपरक्त (उ) कष्टित
उपरक्षण (न) पहरा
उपराग (पु) ग्रहण
उपराम (पु) विरति
उपल (पु) पत्थर
उपलब्धार्था (स) कहानी

उपलब्धि (स) बुद्धि
उपलंभ (पु) साक्षात्कार
उपला (स) पत्थर, रेत
उपवन (न) वन के पास का और वन
उपवर्तन (न) देश
उपवर्ह (पु) तकिया
उपवस्त (न) चांद्रायणादि व्रत
उपवास (पु) तथा
उपविषा (स) अतीस
उपवीत (न) दहने हाथ का जनेऊ
उपशल्य (न) पड़ोस
उपशाय (पु) सोनेवाला
उपश्रुत (उ) अंगीकृत
उपसंव्यान (न) धोती
[illegible]
उपसम्पन्न (उ) [illegible]र- [illegible]
उपसर (पु) प्रथम गर्भ
उपसर्ग (पु) उत्पात
उपसर्जन (न) अप्र-

धान
उपसर्य्या (स) उचित समय पर बैल के पास जानेवाली गौ
उपसूर्य्यक (न) मंडल
उपस्कर (पु) मसाला
उपस्थ (पु) भग, लिंग
उपस्पर्श (पु) आचमन
उपहार (न) दहेज
उपह्वर (न) निर्जन स्थान - समीप पास
उपांशु (अ) एकान्त
उपाकरण (न) वेद पढ़न-
उपाकृत (पु) यज्ञपशु
उपात्यय (पु) अतिक्रम
उपादान (न) लेना
उपाधि (पु) धर्म का चिंता, कुटुंबपालक
उपाध्याय (पु) पढ़ानेवाला
उपाध्याया (स) पढ़ानेवाली स्त्री
उपाध्यायानी (स)

पंडितकी स्त्री
उपाध्यायी (स) पढ़ाने
वाली स्त्री, पंडितकी स्त्री
उपानह् (स) जूता
उपाय (३) उपाय
उपायचतुष्टय (न)
साम१ दाम२ दंड३ भेद४
उपायन (न) दहेज
उपावृत (३) घुड़लोटन
उपासंग (पु) तरकस
उपासन (न) सेवा, बाण
चलानासीखना
उपासित (३) सेवित
उपाहित (पु) उल्कातारा
उपाहित (३) मिलाया
उपेंद्र (पु) विष्णु
उपोदिका (स) पोदीना
उपोद्घात (पु) उदाहरण
उप्तकृष्ट (३) बीजबोकर
जुती हुई पृथ्वी
उभयेद्युस्वा उभयेद्युस
(अ) दोनोंदिन
उत (अ) प्रश्न

उम्य (३) अलसीका
खेत [सी
उमा (स) पार्वती अल-
उमापति (पु) शिव
उरःसूत्रिका (स) मो-
तियोंकीमाला
उरग (पु) सर्प्प
उरण (पु) भेड़ा
उरणाक्ष (पु) पमार
उरभ्र (पु) भेड़ा
उरी (अ) विस्तार-
अंगीकारकियागया
उरव्य (पु) बनिया
उरश्छद (पु) कवच
उरसिल (पु) बड़ीछा-
तीवाला
उरस् (न) छाती
उरस्य (पु) स्वपुत्र
उरस्वत (पु) बड़ीछाती
वाला
उरु (३) बड़ा
ऊरुबुक (पु) एरंड अंड
उरूबक (पु) तथा

उरुबूक (पु) अंड
उर्वरा (स) सबीन्न
युक्तभूमि
उर्वशी (स) अप्सरा
उर्वी (स) पृथ्वी
उलप (पु) फैलीलता
उलूक (पु) घुग्घू
उलूपी (पु) मछली
उलूखल (न) ओखली
उलूखलक (न) गुग्गुल
उल्का (स) तेजसंग्रह
उल्मुक (न) कोयला
उल्लाघ (३) रोगरहित
उल्लोच (पु) शामियाना
उल्लोल (पु) हिलकोर
उल्व (पुन) गर्भजाल
उल्बण (३) स्पष्ट
उशना (पु) शुक्र
उशीर (पुन) खस
उषणा (स) बड़ीपीपरि
उषती (पुस) अकल्यान
उषर्बुध (पु) आग
उषस् (न) प्रात

उष (पु) लोनी मट्टी
उषा (स्त्री) सवेरा
उषापति (पु) अनिरुद्ध
उषित (२) चुराया जरा
उष्ट्र (पु) ऊंट
उष्ण (पु) ग्रीष्मऋतु
उष्णरश्मि (पु) सूर्य्य
उष्णागम (न) गर्मी
उष्णिका (स) लक्ष्मी पत्री
उष्णीष (पुन) पगड़ी-
मुकुट
उष्णोपगम (पु) गर्मी
उष्मक (पु) गर्मी
उष्म (पु) गर्मी
उस्र (पु) किरण
उस्रा (स) गाय

ऊ

ऊरव्य (पु) वनिया
ऊरव्य (२) धनागांस
ऊरुकंटक (२) मंत्र आ-
दिमरक्षा कियाथाया
ऊन (२) सलकाविस्तार
ऊध (न) स्तनगौआदि
ऊम (स्त्री) क्रोधसेकथन
ऊरीकृत (२) मानागया
ऊरी (स्त्री) विस्तार
ऊरी) अंगीकार
ऊरीकृत (२) मानागया
ऊरु (पु) साँथल
ऊरुस्त (न) हड्डानी
ऊरुज (पु) वनिया
ऊरुपर्व (पुन) घुटना
ऊर्ज्ज (पु) कार्त्तिक
ऊर्जस्वल (पु) वली
ऊर्जस्वी (पु) वली
ऊर्णनाभ (पु) मकड़ी
ऊर्णा (स) ऊन-आ-
वर्त-भौंहों का अंतर
ऊर्णायु (पु) भेड़ा कंवल
ऊर्द्धक (पु) मृदंग
ऊर्द्धजानु (पु) ऊंची
जांघवाला
ऊर्मि (पुस) लहर
ऊर्मिका (स) अँगूठी
ऊर्मिमान (२) टेढ़ा
ऊलूक (पु) उल्लू
ऊध (पु) लोनीमट्टी
ऊषा (पु) चतुर
ऊष्मक (पु) ग्रीष्मऋतु
ऊष्मोपगम (पु) तथा
ऊषण (न) मिर्च
ऊषणा (स) वड़ीपीपर
ऊषर (२) ऊसरकीभूमि
ऊषवत (२) तथा
ऊह (पु) तर्क

ऋ

ऋक्थ (न) धन
ऋक्ष (न) नक्षत्र-रीछ
ऋग्लू- सरिवन
ऋक्षगंधा (स) विधारा
ऋक्षगंधिका (स)
श्वेतगंगाफल
ऋचू (स) वेदभेद
ऋजीष (न) तवाकड़ाही
ऋजु (२) सीधा
ऋण (न) उधारलेनां
ऋत (न) सत्य, शिला
ऋतीया (स) घिनकरना
ऋतु (पु) दोमास-

स्त्रीकारज, वसंतादि
ऋतुमती (स) रजस्वला
ऋते (अ) वर्जनार्थक
ऋत्विक् (पु) वरणकरने
वाला-धनसेवरणीय
ऋद्ध (उ) नाजकाढेर
ऋद्धि (स) औषधी
ऋभु (पु) देवता
ऋभुक्षिन (पु) इंद्र
ऋश्य (पु) हिरण
ऋषभ (पु) गानेकास्वर
ककड़ासिंगी, वैल, श्रेष्ठ
केअर्थमें
ऋषि (पु स) ऋषि
ऋष्टि (पु) तलवार
ऋष्यप्रोक्ता (स) कौंच
शतमूली

ए

एक (उ) एक, अकेला,
मुख्य, भिन्न अन्य,
केवल,
एकक (उ) अकेला
एकगुरु (पु) एकगुरुकेपा
सपढ़नेवाला
एकतान (उ) एकचित्त
एकताल (पु) तुल्यस्वर
एकदंत (पु) गणेश
एकदा (अ) एकसमय
एकधुर (पु) एकधुर
कोलेजाने वालावैल
एकधुरवह (पु) तथा
एकधुरीण (पु) तथा
एकपदी (स) मार्ग
एकपिंग (पु) कुवेर
एकयष्टिका (स) एक
लड़का हार
एकसर्ग (उ) एकाग्रचि-
त्त अनाकुल
एकहायनी (स) एक
वर्षकीगायकीवछिया
एकाकी (उ) अकेला
एकाग्र (उ) एकाग्रचित्त
एकाग्य (उ) तथा
एकांत (न) अतिशय
एकाब्दा (स) एकवर्ष
कीवछिया
एकायन (उ) एकाग्रचित्त
एकायनगत (उ) तथा
एकावली (स) हारजो
एकलड़का हो
एकाष्ठील (पु) गुम्मा
एकाष्ठीला (पु) पाढ़र
एड (पु) वहरा
एडक (पु) भेड़ा
एडगज (पु) पमार
एडमूक (उ) गूंगा, वहरा
एडूक (न) पत्थर वा
हड्डीआदिकीभीति
एण (पु) मृगभेद
एत (पु) पीला
एतर्हि (अ) अब
एध (पु) ईंधन
एधस् (न) ईंधन
एधा (स) वढ़ना
एधित (उ) वहुतवढ़ा
एनस् (न) पाप
एंड (पु) आंड अंड
एलावालुक (न) एलुआ
एलाविल (पु) कुवेर

एलापर्णी (स) रायसेन
एवम् (अव) इसप्रकार
अंगीकार निश्चय
एव (अ) तुल्यार्थक
एषणिका (स) सुनारका
कांटा वानराज्

ऐ

ऐकागारिक (पु) चोर
ऐंगुद (न) इंगुदीकाफल
ऐण (उ) हिरणकेचर्मादि
ऐणेय (उ) तथा
ऐतिह्य (न) परंपराकेउपदेश
ऐंद्रियक (उ) प्रत्यक्ष
ऐरावण (पु) इंद्रकाहाथी
ऐरावत (पु) तथा
और पूर्वदिशाकादिग्गज
नारंगी
ऐरावती (स) बिजली
ऐलविल (पु) कुबेर
ऐला (स) बड़ीइलायची
ऐलेय (न) एलुआ
ऐश्वर्य्य (न) सिद्धि-वि
भूति

ऐषम (अ) वर्त्तमान
वर्ष

ओ

ओक (न) घर
ओक (पु) आश्रय
ओघ (न) पाप, शी-
घ्रनृत्यादि-समूह
ओघ (पु) जलकावेग
ओंकार (पु) वेदारंभ
ओज (न) दीप्त-दीप्ति
बल
ओड़पुष्प (न) गुड़हल
ओतु (पु) बिलाउ
ओदन (पु-न) भात
ओम् (अ) अंगीकार
ओमीन (उ) अलसी
काखेत
ओष (पु) जलाना
ओषधि (स) फल-
पाकांतवृक्ष, अन्नमा
त्र
ओषधी (स) तथा
ओषधीश (पु) चंद्रमा

ओष्ठ (पु) होठ

औ

औक्षक (न) बैलों
का समूह
औचिती (स न) उचि
तभाव
औचित्य (स न) तथा
औत्तानपादि (पु) ध्रुव
औदनिक (उ) रसोइया
औदरिक (उ) भुक्खड़
औपगवक (न) गोस-
मूह
औपयिक (उ) न्याय
से युक्तवस्तु
औष्ट्रक (न) ऊँटोंका
समूह
औरस (पु) अपनेसेउ-
त्पन्नपुत्र
औरस्य (पु) तथा
और्ध्वदेहिक (उ) मर
नेकेलिये दान
और्व (पु) वड़वानल
अग्नि

औशीर(पु)चमरदंड-
औशीर (न) उशीर
औशीर(त्रि)शयन,आसन
औषध(न)औषधमात्र
औष्टक(न)ऊँटोंकासमूह

क

कं(न) शिर-पानी
कंस(पुन)काँसेकापात्र
कंसाराति (पु) विष्णु
क(पु)पवन,ब्रह्मा,सूर्य्य,
ककुद(पुन)प्राधान्य-रा-
जचिह्न-बैलकाअंग
ककुद्मती(स)कमर
ककुंदर(न)चूतड़ोंकागढ़ा
ककुभ(स)दिशा
ककुभ(पु)वीणाकीमढ़ी
तिंबी-अर्जुनवृक्ष
कक्कोलक(न)कबाबचीनी
कक्खट(त्रि)कठिन
कक्ष(पु)काँख,तृण,लता
कक्ष्या(स)हाथीकीकमर
बांधनेकीरस्सी-घरआ-
दिकेभीतरकेधर-कंधनी

कंक(पु)श्वेतचील
कंकटक(पु)कवच
कंकण(पुन)कङ्गना
करभूषण
कंकतिका(स)कंघी
कंकाल(पु)हाडकापिंजर
कंगु(स)कगुनी
कच(पु)बार
कच्चर(पु)केश
कच्चर(त्रि)मैलीवस्तु
कच्चित(अ)प्रश्नार्थ
कच्छ(पु)बहुजलयु-
क्तदेश-तूनवृक्ष-व-
स्त्रकाकिनारा ग
कच्छ(अ)जलकाकिना
कच्छप(पु)कछुआ
कच्छपी(स)कछुई-बी-
णकाभेद
कच्छुर(त्रि) वामायु-
करबाज
कच्छु(स) खाज
कंचुक(पु)कंचुली
घोडेकाबरवतर

कंचुकी(पु)नपुंसक
रनवासकासेवक
कटक(पुन)पर्वतका
बीच,पहुंची,कंकण,
राजा,चूतड़ चक्र
कटकिफल(पु)कटहल
कटि(स) कंधनी
कट(पु)कमर,हाथी
कागाल-बीरा
कटभी(स)मालकंगनी
कटम्बरा(स)कटुकी
कटम्भरा (स)आकाश
बेलि
कटाक्ष(पु)आँखोंके
किनारेसेदेखना
कटाह(पु)कड़ाह
कटि(स)कमर-हाथी
कागाल-चटाई
कटिप्रोथ(पु)स्त्रीका
कटिस्थमांसपिंड
कटिल्लक(पु)करेला
कटु(पु)मधुरआदि-
रसकी-रस-

कटु (न) अकार्य्य
कटु (उ) अहंकार तीक्ष्ण
कटुतुंबी (स) कडुतोंबी
कटुरोहिणी (स) कटुकी
कट्फल (पु) कायफल
कट्वंग (पु) अरलू
कठिंजर (पु) बबई-पर्णास
कठिन (उ) कठिन
कठोर (उ) कठिन
कडंगर (पु) भूसा
कडम्ब (पु) सागकादंठ
कडार (पु) पीला
कण (पु) थोड़ा-अति सूक्ष्म-अन्नकाअंश
कणा (स) पीपर, जीरा
कणिका (स) अरणी
कणिश (पुन) बाली
कणीय (उ) बहुतथोड़ा
कंटक (उ) सुईकीनोक छोटाशत्रु-रोमखड़ा होना
कंटकारिका (स) भटकटाई

कंठ (उ) गला
कंठभूषा (स) कंठा
कंडू (स) खुजलाना
कंडूया (स) तथा
कंडूरा (स) कौंच
कंडोलवीणा (स) नीचकीवीणा
कतृण (न) सुगंधिततृण
कथा (स) प्रबंधकल्पना
कदध्वा (पु) कुमार्ग
कदम्बक (न) समूह
कदम्बक (पु) सरसों
कदर (पु) श्वेतकत्था
कदर्य्य (उ) कृपण
कदली (स) केला, मृग
कदाचित (अ) किसीकाल
कदुष्ण (न) थोड़ागर्म
कद्रु (पु) पीला
कद्वद (उ) कटुवादी
कनक (पु) धतूरा
कनक (न) सोना
कनकाध्यक्ष (पु) सोनेकाअधिकारी
कनकालुका (स) सोने

कावना हुआपात्र
कनिष्ठ (पु) छोटाभाई
कनिष्ठ (उ) बालक अल्प
कनिष्ठा (स) छोटीअंगुली
कनीनिका (स) आंखकी पुतली
कनीयस वा कनीयान् (उ) अतिशययुवा-अतिशयथोड़ा
कंथा (स) कथरी
कन्द (पु) जिमीकंद
कंदर (पुस) बनाईगुफा
कंदराल (पु) बड़ीहर्र पिलखन
कंदर्प (पु) कामदेव
कंदली (स) मृगभेद
कंदुक (पु) गेंद
कन्दु (उ) भट्टीवाभार
कंधरा (स) गला
कन्यकाजात (पु) कन्याकापुत्र
कन्या (स) कुआरी
कपट (पुन) छल
कपर्द (पु) महादेवकी जटा ओंकपस्समूह

कपर्द्दी(पु)शिव
कपाट(त्रि)किवाड़
कपाल(पुन)कपार
कपालभृत(पु)शिव
कपि(पु)वानर
कपिकच्छु(स)कौंच
कपित्थ(पु)कैथ
कपिल(पु)पीला
कपिला(स)आग्नेयदि-
ग्गजकी स्त्री,कालीसी
सौं-गगानधूरि
कपिवल्ली(स)छोटी
पीपरिवागजपीपरि
कपिश(पु)वानरसमरंग
कपीतन(पु)आमला-
गजहर्ड-कालीसीसों
कपोत(पु)कबूतर
कपोतपालिका(स)कबू-
तरआदिकाघर
को..तांघ्रि(स)पमार
कपोल(पु)गाल
कफ(पु)कफ
कफी(त्रि)कफवाला

कफोणि(पुस)कुहनी
कबन्ध(न)जल
कबन्ध(पुन)मूड़कटा
कमठ(पु)कछुआ
कमठी(पु)कछुई
कमंडलु(पुन)ऋषिपा-
त्रवाकमंडलुवाकरवा
कमन(त्रि)कामी
कमल(न)जल-पुष्प
विशेष-पद्म
कमल(पु)मृग
कमला(स)लक्ष्मी
कमलासन(पु)ब्रह्मा
कमलोत्तर(न)कुसुम
कमिता(त्रि)कामी
कम्(अ)पानी,माथा
कम्प(पु)कांपना
कम्प्र(त्रि)कांपनेवाला
कम्पन(त्रि)तथा
कम्बल(पु)कंबल,डुपट्टा
कम्बि(स)करछी
कम्बु(पुन)शंख
कम्बु(पु)हाथवापांव-

काकंकण
कम्बुग्रीवा(स)तीनरेखा
सहितगला
कम्र(त्रि)कामी
कर(पु)किरण,राजभाग
भेट-हाथ-वलि
करक(पु)अनार-कमं-
डलु-ओला
करका(पुस)ओला
करकरी(स)करवा
करज(पु)कंजा
करज(न)गंधविशेष
करंजक(पु)कंजुआ
करट(पु)काग हाथीका
गाल
करण(पु)शूद्रस्त्रीऔर
वैश्यसेउत्पन्न-क्रिया
कीसिद्धिमेंउपकारक-
खेत-गात्र-इंद्रिय-क-
र्म्मादि
करंड(पु)पिटारा
करतोया(स)नदी
करपत्र(न)आरा

करपाल (पु) तलवार	करीष (पुन) उपला	कर्णवेष्टन (न) कुंडल
करपालिका (स) खांड़ा	करुणा (स) रसविशेष	कर्णिका (स) टेंटी-
करभ (पु) मणिबंधसेलेके	दया - कृपा	कर्णभूषण - हाथीकी
कनिष्ठअंगुलीकेमूलतक	करेटु (पुस) करकेटा	सूंड़का आगा - कम
का भाग	करेणु (पु) हाथी	लकाबीज
करभूषण (न) कंकण	करेणु (स) हथिनी	कर्णिकार (पु) कनेर
करमर्दक (पु) करौंदा	करोटी (स) खोपड़ी	कर्णीरथ (पु) [illegible]
करम्भ (पु) दहीयुक्तसत्तू	कर्क (पु) श्वेतघोड़ा	कारथ
कररुह (पु) नख	कर्कटी (स) ककड़ी	कर्णेजप (त्रि) चुगिल
करवीर (पु) कनइल	कर्कटक (पु) केकड़ा	कर्त्तरी (स) कतरनी
करशाखा (स) अंगुली	कर्कन्धू (पुस) बेर	कर्दम (पु) कीचड़
करशीकर (पु) हाथीकीसूंड़	कर्करी (स) गगरी	कर्पट (पु) फटाकपड़ा
सेनिकलाजल	कर्करेटु (पुस) करकेटा	कर्परी (स) रसोत
करहाट (पु) कमलकीजड़	कर्कश (पु) कमीला	कर्पर (पु) कपाल
करहाटक (पु) मैनफल	कर्कश (त्रि) साहसिक-	कर्पासी (पुस) कपास
कराल (त्रि) ऊंचेदांतवाला, ऊंचा	कठोर (त्रि) नहीं चिकना	कर्पूर (पुन) कपूर
करिगर्जित (न) हाथियोंकाबोल	कर्कोर (पु) कुम्हेड़ा	कर्बुर (पु) राक्षस
करिणी (स) हथिनी	कर्चूरक (पु) कचूर	कर्बुर (न) सोना
करीन्द्र (पु) हाथी	कर्ण (पु) कान	कर्चूर (पु) कचूर - आ
करिपिप्पली (स) बड़ीपीपर	कर्णजलौका (स)	माहलदी
करिशावक (पु) हाथीकाबच्चा	कानसलाई - कानख	कर्म (त्रि) कामेवाला
करीर (पु) करील - वृक्ष	जूरा	कर्मकर (पु) मजदूर
करीर (पुन) बांसकाअंकुर	कर्णधार (पु) मल्लाह	कर्मकार (त्रि) वेतनी

कर्मक्षम(३) कार्यकारी	अपवाद	कलाय(पु) मटर
कर्मठ(३) पूराकामकर-	कलंब(पु) बाण-साग	कलि(पुन) युद्ध
नेवाला	कीडंडी	कलि(पु) कलियुग
कर्मण्य(स) मज़दूरी	कलत्र(न) कटि-स्त्री	कलिका(स) कली
कर्मार(पु) बाँस	कलधौत(न) चाँदी, सोना	कलिंग(३) इंद्रजौ-खु-
कर्मन्दी(पु) सन्यासी	कलभ(पु) हाथीकाबच्चा	टकबढ़ैय्यापक्षी
कर्मशील(३) कामयुक्त	कलम(पु) छःदिनमेंहोने	कलिद्रुम(पु) बहेड़ा
कर्मशूर(३) पूराकाम	वालाअन्न-साठी	कलिमारक(पु) काँटेदा
करनेवाला त्री	कलंबी(नस) करेला	रकंजा
कर्मसचिव(पु) छोटामं	कलरव(पु) कबूतर	कलल(पुन) गर्भजाल
कर्मार(पु) बाँस	कलल(३) घड़ा	कलिल(३) दुष्प्रवेश
कर्मेन्द्रिय(न) लिंगादि	कलविंक(पु) चिड़ा	कलुष(न) पाप, गंधाजल
कर्वट(पुन) कपड़ा	कलश(३) गगरा	कलेवर(न) शरीर
कर्बूर(पु) पीला	कलशि(स) सिंहपुच्छी	कल्क(पुन) विष्ठा-पाप-
कर्ष(पुन) १६माषा हि	कलहंस(पु) बत्तक	दंभ-हाथीदांत-घीतेल
कर्षक(३) खेतीकरनेवा	कलह(पुन) युद्ध	आदिकाअवशेष
कर्षफल(पु) बहेड़ा	कला(स) चंद्रमंडलका	कल्पना(स) हाथीकाते-
कर्षू(पु) जीविका-उप	सोलहवांभाग-३०कान	यारकरना
लेकीआग	का-शिल्प-कालभेद	कल्पवृक्ष(पु) वृक्ष
कर्षू(स) छोटीनदी	कलाद(पु) सुनार	कल्पांत(पु) प्रलय
कल(३) मधुरस्वर	कलानिधि(पु) चंद्रमा	कल्मष(न) पाप
कलकल(पु) भारीशब्द	कलाप(पु) भूषण-मो	कल्माष(पु) चित्रविचित्र
कलंक(पु) चिन्ह-दोष	रकीशिखा	कल्य(न) प्रात-समय-

विशेष,प्रलय,
कल्प(पु)विधि,न्याय
कल्प(त्रि)रोगरहित-उपा
यसेयुक्त
कल्या(स)कल्याणक
कल्यान(न)मंगल
कल्लोल(पु)हिलकोर
कल्हार(न)सेतकमल
कवच(पुन)कवच
कवल(पु)कौर
कवरी(स)ववई-वालों
की पटियाँ-हींगाकीपत्ती
कवि(पु)शुक्र,पंडित
कविका(स)लगाम
कवोष्ण(न)थोड़ागर्म
कव्य(न)पितृअन्न
कशा(स)चाबुक ।ग्य
कशार्ह(त्रि)बेतमारनेकेयो
कशिपु(पुन)अन्न,ढांकना
कशेरुका(स)रीढ़
कश्मल(न)मूर्च्छा
कश्य(न)घोड़ेकामध्य
भाग-मदिरा-बेतमारने
केयोग्य
कष(पु)कसौटी
कषाय(पुन)रस-काढ़ा
कष्ट(त्रि)पीड़ा,महादन
कस्तूरी(स)मृगभेद
कङ्क(पु) बगला

का

काक(पु)कौआ
काकचिंची(स)घुंघुंची
काकतिंदुक(पु)कडुआ
तिंदुआ
काकमाची(स)काकजंघा
काकमुद्गा(स)वनमूंग
काकली(स)सूक्ष्मस्वर
काकाङ्गी(स)काकजंघा
काकिनी(स)पणका ¼
काकु(स)शोकादिसेबो-
लना
काकुद(न)तालु
काकेंदु(पु)कडुतेंदुआ
काकोदुम्बरिका(स)क-
ठूमरवृक्ष
काकोदर(पु)सर्प
काकोल(पुन)विषभेद
काकभेद
काक्षी(स)अरहर
काच(पु)कांच छींका-
नेत्ररोग
काचस्थली(स)पाढ़र
काचित(त्रि)छींकेमेंधरा
कांचन(पु)नागकेसर
कांचन(न)सोना
कांचनाह्वय(पु) तथा
कांचनी(स)हलदी
कांजिक(न)कांजी ।नी
काञ्ची(स)स्त्रियोंकीकंध-
काण्ड(पु)नरई दंड
काण्ड(पुन)निंदित,वर्ग
अवसर-जल
काण्ड(न)बाण
कांडपृष्ठ(पु)शस्त्रजीवी
कांडवत(पु)केवलबाणधारी
कांडाल(पु)डला ।धारी
काण्डीर(पु)केवलबाण
काण्डेक्षु(पु)तालमखाना
कांडोल(पु)टोकरा छपरा

कातर (उ) व्याकुल
कात्यायनी (स) पार्वती
आधीबूढ़ीविधवा
कादंबरी (स) मदिरा
कादंबिनी (स) मेघमाला
कानन (न) वन
कानीन (पु) कन्याकापुत्र
कान्त (उ) सुंदर
कांतालक (पु) तूनवृक्ष
कांता (स) स्त्री
कान्तार (पु न) कठिनमार्ग
बड़ावन छिद्र
कान्तारक (पु) कालापौं
कांति (स) शोभा-इच्छा
कादम्ब (पु) वत्तक
कांदविक (उ) पुआआ-
दिवनानेवाला
कांदिशीक (उ) डराहुआ
काद्रवेय (पु) सांप
कापथ (पु) कुमार्ग
कापोत (न) कबूतरोंका
समूह
कापोत (पु) सज्जी

कापोतांजन (न) सुर्मा
काम (पु) कामदेव
इच्छा
कामगामी (पु) यथेष्ट
चलनेवाला
कामन (उ) कामी
कामिनी (स) स्त्री-
वृक्षकाबँदा
कामुक (उ) कामी
कामुका (स) धनादि
कीचाहनेवालीनारी
कामुकी (स) मैथुनके
चाहनेवालीस्त्री
कांपिल्ल (पु) कमीला
काम्बल (उ) कंबलादिव
स्त्रसेमढ़ाहुआपदार्थ
काम्बविक (पु) मनिहार
काम्बोज (पु) काम्बोज
देशकाघोड़ा
कांबोजी (स) मूंगमेथी
काम्यदान (न) तुलापु-
रुषादिकादान
काय (पु) वीणाकास्वरूप

शरीर-प्रजापतितीर्थ
अनामिकाकनिष्ठिका
अंगुलियोंकामूल
कारण (न) हेतु
कारण (स) पीड़ा
कारणिक (उ) परीक्षा
करनेवाला
कारंडव (पु) हरियलपक्षी
कारवी (स) अजमोद
सौंफ-कालाजीरा-
हींगकीपत्ती
कारवेल्ल (पु) करेला
कारम्भा (स) फूलप्रियं-
गु-ककुनी
कारा (स) जेलखाना
कारिका (स) नर्तककाले-
श-वृत्ति-विवरण-
श्लोक-कविता-शि-
ल्पादि
कारीष (न) उपलोंकासमूह
कारु (पु) चितेरआदि
कारुणिक (उ) दयालु
कारुण्य (न) करुणा

कारोत्तर(पु)मदिराका	कालकूट(पुन)विषमात्र	कालीयक(पु)पीतचंदन
फूल	कालखंड(न)कलेजा	कालेयक(पु)दारुहलदी
कार्त्तस्वर(न)सोना	कालधर्म(पु)मृत्यु	काल्यक(पु)कचूर
कार्त्तांतिक(पु)ज्योतिषी	कालपृष्ठ(पु)राजाकरण	काल्या(स) उचितसमय
कार्त्तिक(पु)कार्त्तिक	काधनुष	परदेलकेपासजानेवालीगौ
कार्त्तिकिक(पु) तथा	कालमेषिका(स)भंगरा	कावचिक(न)कवचधा
कार्त्तिकेय(पु)स्वामिका-	कालानिसोतवातिधारा	रियोंकासमूह -
र्त्तिक [नाकपड़ा]	कालमेषी(स)वकुची	कावेरी(स)नदीविशेष
कार्पास(पु)कपासकाव	कालशेय(न)मठा	काव्य(पु)शुक्र
कार्मी(पु)सदाकाममें	कालसूत्र(न)नरकभेद	काश(पुन)काँस
लगारहने ला	कालस्कंध(पु)तेंदुआ-	काश्मर्य(पु)खमारी
कार्मण(न)औषधी	तमाल	काश्मरी(स) तथा
केमूलोंसेउच्चाटना	काला(स)नील-निसोत	काश्मीर(पु)पुष्करमूल
दिकर्म	काला कालाजीरा	काश्मीरजन्मा(न)केसर
कार्मुक(न)धनुष	कालागुरु(न)अगर .	काश्यपि(पु)रविकासारथी
कार्षापण(पु)रुपया	कालानुसार्य(न)शैला-	काश्यपी(स) भूमि
कार्षिक(पु)रुपया	शीत-पीलाचन्दन	काष्ठ(न)काठ
कार्ष्य(पु) शाल	कालायस(न)लोहा	काष्ठा(स) दिशा
काल(पु)यमराज	कालिका(स)मेघसमूह	काष्ठा(स)१८आँख
समय-काला	देवी	केपलक [कुदारी]
कालक(पु) लहसना	कालिंदी(स)यमुना	काष्ठकुद्दाल(पु)काठकी
दिचिह्नितपुरुष	कालिंदीभेदन(पु)बलदेव	काष्ठतक्ष(पु) बढ़ई
कालकंठक(पु)कागा	काली(स)पार्वती	काष्ठा(स)बड़ाई-मर्यादा

काष्ठंखुवाहिनी(स)डोंगी
काष्ठीला(स)केला
कास(पु)खाँसी
कासमर्द(पु)रोगभेद
कासर(पु)वड़ाताल,भैंसा
कासार(पु)वड़ाताल
किम(अ)पूछना-निं-
दा करना-विकल्प
किंशारु(पु)तीकुर
किंशुक(पु)ढाक
किं(अ)अतिशयार्थक
किंकिदिवि(पु)नीलकंठ
किंकर(पु)दास
किंकिनी(स)कंधनी
किंचुलक(पु)केंचुआ
जलकेऊपरकेकीड़े
किंजल्क(पु)कमल-
कीधूलि
किटि(पु)सुअर
किंचित(अ)थोड़ा
किट्ट(न)मैल हू
किरण(पु)घावकाचि-
किरणही(स)चिरचिय

किराव(न)मदिरा-
कावीज आरी
कितव(पु)धतूरा जु-
किन्नर(पु)देवजाति-
कुबेरकेदूत
किन्नरेश(पु)कुबेर
किमु(अ)विकल्प
किमुत(अ)अतिशय
विकल्पार्थ
किम्पचान(उ)कृपण
किम्पुरुष(पु)किन्नर
किम्वदंती(स)लोक
कीउड़तीहुईखबर
किर(पु)शूकर
किरण(पु)किरण
किरात(पु)म्लेच्छजाति
किराततिक्त(पु)चिरैता
किरीट(नपु)मुकुट
किर्मीर(पु)चित्रविचित्र
किल(अ)वार्ता-सं-
भावना-निश्चय
किलास(न)सीपरोग
किलासी(उ)सीपवाला

किलिंजक(पु)बोरा
किल्विष(न)पाप अ-
पराध
किशोर(पु)बछेड़ा स्त
किष्कु(पु)हाथ-विल-
किसलय(पुन)नवीन
पत्ता
कीकस(न)हाड़ ड़ी
कीचक(पु)कूजनेवाला
कीनाश(पु)यमराज-
छोटा
कीनाश(उ)खेतीकरने
वाला-क्षुद्र
कीर(पु)तोता
कीर्त्ति(स)यश
कील(सपु)आगकी
कीलक(पु)खूँटा
कीलाल(न)पानी
कीलाल(सन)लोहू
कीलित(उ)बंधुआ
कीश(पु)बंदर
कीशपर्णी(स)चिरचिटा
कु(स)धरती

कु (अ) पाप-निंदा-थोड़ा
कुकर (उ) टूँटा - लुंजा
कुकुंदर (न) चूतड़ का गाढ़ा
कुकूल (न) कीलसे भरा ग-
ढ़ा - ग
कुकूल (पु) भूसी की आ
कुक्कुट (पु) मुर्गा
कुक्कुभ (पु) वनमुर्गा
कुक्कुर (न) कुकरौंधा
कुक्कुर (पु) कुत्ता
कुक्षि (पु) पेट
कुक्षिंभरि (उ) पेटार्थी
कुंकुम (न) कुंकुमा
कुचंदन (न) लालचंदन
कुच (पु) चूची
कुचर (उ) दोषबादी
कुचाग्र (न) कुचों के अ-
ग्रका भाग
कुज (पु) मंगल
कुंचित (उ) टेढ़ा
कुंज (पुन) कुंज हाथीका
दांत - सघनवन
कुंजर (पु) हाथी श्रेष्ठार्थ

कुंजराशन (पु) पीपल
कुंजल (न) कांजी
कुट (पुन) गगरा
कुट (पु) वृक्ष
कुटज (पु) कुडा वृक्ष
कुटन्नट (पु) अरलू
कुटन्नट (न) मोथा
कुटिल (उ) टेढ़ा
कुटुंगक (पु) वृक्षल-
ताका समूह
कुटुंबव्याहृत (पु)
कुटुंबका पालक
कुटुंबिनी (स) पति-
पुत्रयुतस्त्री
कुट्टनी (स) कुटिनी
कुट्टिम (नपु) भीत
कुठर (पु) खंभा
कुठार (पुस) कुठारी
कुठेरक (पु) बबइया
कुडव (पु) तोलभेद
कुड्मल (पुन) फूल-
नी हुई कली
कुड्य (न) भीति

कुणप (पु) निर्जीव
कुणि (पु) तून वृक्ष
टूँटा - लुंजा
कुंठ (उ) आलसी
कुंड (न) बटुआ
कुंड (पु) जारपुत्र जो
पति के जीवत में हो
कुंडी (स) कमंडलु
कुंडल (न) कुंडल
कुंडली (पु) सर्पमात्र
कुतप (पुन) श्राद्ध-
कालविशेष - दिन
का $\frac{१}{८}$ भाग
कुतप (पु) मृगरोम
का कपड़ा
कुतुक (न) खेल
कुतुप (पु) कुप्पी
कुतू (स) कुप्पा
कुतूहल (न) खेल
कुत्सा (स) निंदा
कुत्सित (उ) अधम
कुथ (पु) कुश - हा-
थीकी झूल

कुद्दाल(पु) कचनारि	कुमुदिनी(स) फफुला	गुलावांसा
कुनटी(स) मैनशिल	कुमुद्वत(पु) फफुला-	कुरुबिंद(पु) मोथा
कुनाशक(पु) जवासा	कादेश \[दिनी	कुरुविस्त(पु) सोने की
कुन्त(पु) भाला	कुमुद्वती(स) कमो-	पलभरतोल विशेष
कुंतल(पु) वाल	कुम्बा(स) टट्टी	कुल(न) सजातीयसमू-
कुंद(पुन) पलाँक- वृ-	कुम्भ(पु) गूगुल-	ह- कुल- वंश
क्षविशेष \[शाक	हाथीकेशिरकामांस	कुलक(पु) कटुतंतुआ
कुंदुरु(पु) पलाकका	पिंड	परवर- शिल्पियोंकेकु-
कुंदुरुकी(स) सालिम-	कुम्भ(पु) गागरा, घड़ा	लमें प्रधान
मिश्री	कुम्भकार(पु) कुम्हार	कुलटा(स) छिनारस्त्री
कुपूय(पु) अधम	कुंभसंभव(पु) अगस्ति	कुलत्थिका(स) सुरमा
कुप्य(न) ताम्रादिकमु-	कुंभिका(स) कमल	कुलपालिका(स) कुलवं-
द्रा- पैसा- रुपया	कुम्भी(स) कायफल	तीस्त्री \[कुलमेंप्रधान
कुब्ज(पु) कुवड़ा	कुम्भीर(पु) नाका	कुलश्रेष्ठी(पु) शिल्पियोंके
कुमार(पु) स्वामिका-	कुरंग(पु) हिरन --	कुलसंभव(पु) कुलीन
र्त्तिक- राजपुत्र	कुरंगक(पु) दहनेअं-	कुलस्त्री(स) कुलीनस्त्री
कुमारक(पु) वरनावृक्ष	गकाघायलम्रग	कुलाय(पु) घोंसला
कुमारी(स) घीगुआर-	कुरर(पु) जीवविशेष	कुलाल(पु) कुम्हार
कुमारी- कुआरी	कुरवक(पु) लालपि-	कुलाली(स) कालासुरमा
कुमुद(पु) नैर्ऋतिदि-	यावांसा- लालगुला-	कुलिश(न) वज्र- हीरा
शाकादिग्गज- फफुला	वांसा- लालकटय्या	कुली(स) भटकटाई
कुमुदबांधव(पु) चंद्रमा	कुरुंटक(पु) पीला	कुलीन(पु) सज्जन- कु-
कुमुदिका(स) कांयफल	पियावांसा- पीला	लीनघोड़ा

कुलीर(पु)कैंकड़ा	कुष्मांडक(पु)कुम्हेड़ा	का अग्रभाग
कुल्माष(पु)कुलथी	कुसीद(न)व्याज	कूटि(पु स) सभा
कुल्माष(न)कांजी	कुसीदिक(त्रि)व्याजले	कूटक(न)हलकारा
कुल्य(न)हाड़	नेवाला	हलकाफारा
कुल्या(स)नहर	कुसुम(न)फूल	कूटयंत्र(न)फंदा
कुवल(न)वेरकाफल	कुसुमांजन(न)अंजन	कूटशाल्मलि(पुस)
कुवलय(न)फफुला	कुसुमेषु(पु)कामदेव	कालासेमर
कुवाद(त्रि)दोषवादी	कुसुंभ(न)कुसुम-कु-	कूटस्थ(त्रि)स्थिर
कुवेणी(स)कंडिया	सुमकाफल	कूप(पु)कुआ
कुविंद(पु)कोरिया	कुसुंभ(पु)कमंडलु	कूपक(पु)गाढ़,मस्तूल
कुवेर(पु)इंद्रकाभंडारी-	कुसृति(स)कपट	कूर्च(पुन)भौंहोंकावीच
उत्तरदिशाकास्वामी	कुस्तुंबरु(न)धनियाँ	कूर्चशीर्ष(पु)जीरा
कुवेराक्षी(स)पाढ़रि	कुहना(स)दंभी	कूर्चिका(स)दहीदूध
कुवेरक(पु)तूनवृक्ष	कुहर(न)पोलमात्र	मिलापदार्थ
कुश(पुन)डाभ-जल	कुहू(स)अमावस	कूर्दन(न)लीला
कुशल(न)कल्याण	कूकुद(पु)अलंकृत	कूर्पर(पुस)कुहनी
पूर्णता-क्षेम-पुण्य-	कन्याकादेनेवाला	कूर्पासक(पुन)चोली
शिक्षित	कूट(पुन)पहाड़की	कूर्म(पु)कछुआ
कुशल(त्रि)ज्ञाता	चोटी-ढेरनाजका-	कूल(न)तीर
कुशी(स)कसी	दिका-निश्चलमाया	कूवर(पु)गाढ़ीके
कुशीलव(पु)कत्थक	मृगावांधनेकेयंत्र	जुयेकाकाठ
कुशेशय(न)कमल	कपट-झूठ-समूह	कृकण(पु)तीतर
कुष्ठ(न)कूट,सेतकोढ़	लोहेकाघन-हल-	कृकलास(पु)गिरगिट

कृकवाकु(पु)मुर्गा
कृकाटिका(स)घांटी
कृच्छ्र(३)पीडा,आचार
कृत(न)शतयुग-किया हुआ
कृतक(न)खारीनोन
कृतपुंख(पु)तीरंदाज
कृतमाल(पु)अमलतास
कृतमुख(३)ज्ञाता
कृतलक्षण(३)गुणी
कृतसापत्निका(स)सौति
कृतहस्त(पु)तीरंदाज़
कृतांत(पु)यमराज-सिद्धांत-पूर्वजन्मकृतकर्म
कृती(पु)पंडित
कृती(३)ज्ञाता
कृत्त(३)कटा
कृत्ति(स)मृगचर्म
कृत्तिवास(पु)शिव
कृत्य(३)कर्मकेयोग्य
कृत्या(स)क्रिया-कर्मदेवता

कृत्रिम(न)बनायाहुआ
कृत्रिमधूपक(पु)नानाप्रकारकीसुगंधकरनेवालीधूप
कृत्स्न(पु)सब
कृपण(पु)कृपणी
कृपा(स)करुणा
कृपाण(पु)तलवार
कृपाणी(स)कतरनी
कृपालु(३)दयालु
कृपीटयोनि(पु)आग
कृमि(पु)कीड़ा
कृमिकोशोत्थ(३)रेशमकाबनावस्त्र
कृमिघ्न(पु)वायुविडंग
कृश(३)थोड़ा
कृशानु(पु)आग
कृशानुरेता(पु)शिव
कृशाश्वी(पु)नट
कृषि(स)खेती
कृषिक(३)खेतीकरनेवाला
कृषिक(पु)हल

कृषीवल(३)खेतीकरनेवाला
कृष्ट(३)जुतेखेत
कृष्टि(पु)पंडित
कृष्ण(पु)विष्णु-पक्षभेद-काला-मिरच
कृष्णपाकफल(पु)करौंदा
कृष्णफला(स)वकुची
कृष्णभेदी(स)कटुकी
कृष्णला(स)घुंघची
कृष्णवर्त्मा(पु)आग
कृष्णवृंता(स)पाढरि
कृष्णसार(पु)मृगभेद
कृष्णलोहित(पु)धूमलारंग
कृष्णा(स)बड़ीपीपर
कृष्णिका(स)राई
केकर(पु)कुंजा
केका(स)मोरकीवाणी
केकी(पु)मोर
केतकी(पुस)कैथ
केतन(न)झंडा-न्योता

कार्य्यादि - ध्वजा	कैरर्थ्य (पु) कैंथफल	खड्गादिकीनोक-बड़ाई
केतु (पु) ग्रहभेद, पताका	कैतव (न) कपट जुआ	आश्रय-करोड़
केंद्र (पु) व्यवहार पदार्थ	कैदारक (न) खेतसमूह	कोटिवर्षा (स) शाक
केदार (पु) खेत	कैदारिक (न) तथा	कोटिश (पु) मुगरी
केनिपातक (पु) पतवार	कैदार्य (न) तथा	कोट्ट (पु) कोट
केयूर (पुन) बाजूबंद	कैरव (न) फफुला	कोट्टार (पु) कोट
केलि (पुस) क्रीडा	कैलास (पु) कुबेरकास्थान	कोठ (पु) कोढ़ी
केवल (त्रि) निश्चित, एक	कैवर्त्त (पु) धीमर	कोण (पु) वीणादिके
केवल - सर्व	कैवल्य (न) मोक्ष	बजानेकादंड-खड्गा-
केश (न) नेत्रवाला	कैवर्तीमुस्तक (न) मोथा	दिकीनोक
केश (पु) बाल	कैशिक (न) बालोंकाझुंड	कोदंड (न) धनुष
केशपाशी (स) चोटी	कैश्य (न) तथा	कोद्रव (पु) कोदों
केशर (पुन) कमलकी	कोक (पु) भेड़िया चकवा-	कोप (पु) क्रोध
धूरि - नागकेसरि	चकवी पक्षी	कोपना (स) क्रोधिनीस्त्री
केशव (पु) विष्णु, अच्छे	कोकनद (न) कमल	कोपी (त्रि) क्रोधी
बालवाला टियां	कोकनदच्छवि (पु)	कोमल (त्रि) कोमल
केशवेश (पु) बालोंकी प-	लालजातिका कमल	कोयष्टिक (पु) टिटहरी
केशिक (पु) अच्छे केशवाला	कोकिल (पु) कोयल	कोरक (पु) कली
केशिनी (स) शंखाहुली	कोकिलाक्ष (पु) तालम-	कोरंगी (स) इलायची
केशी (पु) अच्छे केशवाला	खाना	कोरदूष (पु) कोदों
केसर (पु) मौलश्री नागकेसर	कोटर (पुन) खोखला	कोल (पु) बेड़ा
केसरी (पु) सिंह	कोटवी (स) नंगीस्त्री	कोल (न) बेर, शूकर
कैटभजित् (पु) विष्णु	कोटि (स) धनुषकाकि-	कोलक (न) कबाबचीनी

कोलदल(न)कुंदन
कोलंवक(पु)वीणा
कोलवल्ली(स)गज-
पीपरि
कोला(स)बड़ीपीपरि
कोलाहल(पु)बड़ाशब्द
कोलि(पुस)बेर
कोविद(पु)पंडित
कोविदार(पु)कचनारि
कोश(पु)चांदीकेमुद्रा
बनेअनबने चीमी
कोशफल(न)कबाब-
कोष(पुन)अंडा,कली
मयान-धनसमूह,द्रव्य
कोषातकी(स)तुरई
कोषी(त्रि)क्रोधी
कोष्ठ(पु)पेटकेभीतरका
कोठा-कुठिला-घरका
वीच
कोष्ण(न)थोड़ागरम
कौक्कुटिक(त्रि)दूरसे
देखनेवाला
कौक्षेयक(पु)तलवार

कौटतक्ष(पु)बढ़ई
कौटिक(पु)कसाई
कौणप(पु)राक्षस
कौतुक(न)खेल
कौतूहल(न)खेल
कौद्रवीण(त्रि)कोदोंका
खेत
कौंतिक(पु)भालावाला
कौंती(स)मशानधूरि
कौपीन(न)अकार्य्य
गुह्य
कौमुदी(स)चाँदनी
कौमोदकी(स)लक्ष्मी
पतिकीगदा
कौलटिनेय(पु)भिखा
रिनीकापुत्र
कौलटेय(पु)कुलटा-
कापुत्र भिखारिनीका
पुत्र पुत्र
कौलटेर(पु)कुलटाका
कौलत्थीन(त्रि)कुलथी-
काखेत
कौलीन(न)लोकाप-

वाद,पशु,सर्प,पक्षियोंकायुद्ध
कौलेयक(पु)कुत्ता
कौशिक(पु)गुग्गुल-इंद्र-
उल्लूक सर्पग्राही विश्वामित्र
नौला स्त्र
कौशेय(न)रेशमकाबनाव-
कौस्तुभ(पु)लक्ष्मीपतिकी
मणि
क्रकच(पुन)आरा
क्रकर(पु)करील तीतर
क्रतु(पु)यज्ञ
क्रतुध्वंसी(पु)शिव
क्रतुभुज(पु)देवता
क्रथन(न)मारा
क्रंदन(न)वीरोंकानिंदापू-
र्वकपुकारना-रोना
क्रंदित(न)रोना
क्रम(पु)विधि
क्रमुक(पु)लाललोध-तूत
सुपारी
क्रमेलक(पु)ऊँट
क्रयविक्रयक(पु)साहूकार
क्रयक(पु)लेनेवाला

क्रय्य(उ) बेचनेकेयोग्यवस्तु	फल	क्वाण(पु) वीणादिकाश
क्रव्य(न) मांस	क्रोष्टु(पु) स्यार, वरुण	ब्द
क्रव्याद(पु) राक्षस	क्रोष्टुविन्ना(स) सिंहपुच्छी	क्वाथोद्भव(न) रसोत
क्रायक(पु) लेनेवाला	क्रौंच(पु) ठेंक	क्षण(पु) ३०कला उत्स-
क्रिमिज(न) अगर	क्रौंचदारण(पु) स्वामि	व चुपचापठहरना-समय
क्रिया(स) करनेवाला-	कार्त्तिक	विशेष-मुहूर्त्तमात्रका
आरंभ, प्रायश्चित्त, शिक्षा	क्लम(पु) ग्लानि	बारहवांभाग
पूजन विचार उपाय कर्म	क्लमथ(पु) ग्लानि	क्षणदा(स) रात्रि
चेष्टा चिकित्सा [ला]	क्लिन्न(उ) गीला	क्षणन(न) मारण
क्रियावत(उ) कार्य्यकरनेवा	क्लिन्नाक्ष(उ) चुंधा	क्षणप्रभा(स) विजली
क्रीडा(स) लीला	क्लिशित(उ) क्लेशित	क्षतज(न) लोहू
क्रुङ्(पु) ठेंक	क्लिष्ट(न) असंभवकथन	क्षतव्रत(पु) ब्रह्मचर्य्यहीन
क्रुष्ट(न) रोना	क्लिष्ट(उ) कष्टित	क्षत्ता(पु) रथवान्-क्षत्री
क्रुध(स) क्रोध	क्लीतक(न) मुलहेठी	कीस्त्री औरवैश्य से उ-
क्रूर(उ) हिंसक, कठिन	क्लीतकिका(स) नील	त्पन्न-ड्योढ़ीदार
निर्दय	क्लीव(पु न) हिजड़ा	क्षति(स) क्षय-नाश-
क्रेतव्य(उ) लेनेकेयोग्य	क्लीव(उ) अविक्रम	पृथ्वी
क्रेय(उ) तथा	क्लेश(पु) कष्ट	क्षत्रिय(पु) क्षत्री-ठाकुर
क्रोड(पु) शूकर	क्लोम(न) तिल	क्षत्रिया(स) ठकुरानी
क्रोध(पु) कोप	क्वण(पु) वीणादिका	क्षत्रियाणी(स) तथा
क्रोधन(उ) क्रोधी	शब्द - शब्द	क्षत्रियी(स) क्षत्रीकीस्त्री
क्रोशयुग(न) दोकोशप्र	क्वणन(न) तथा	क्षपा(स) रात्रि
क्रोष्ट्री(स) कालागंगा-	क्वथित(उ) अच्छापका	क्षपाकर(पु) चंद्रमा

क्षम(पु)योग्य शक्ति	क्षीर(न)जल दूध	क्षुधाभिजन(पु)राई
क्षम(उ)हित ⌐ल	क्षीरविकृति(स)दही	धित(उ)भूखा
क्षमा(स)धरती सहनशी-	दूध मिला हुआ पदार्थ	क्षुधू(स)भूख
क्षमाभृत(पु)पहाड़ राजा	क्षीरविदारी(स)श्वेत	क्षुप(पु)छोटावृक्ष
क्षमिता(उ)सहनशील	गंगा फल	क्षुमा(स)अलसी
क्षमी(उ)सहनशील	क्षीरशुक्ला(स)काला	क्षुरक(पु)तिलक
क्षय(पु)प्रलय क्षयी हानि	गंगाफल क्ष्मी	क्षुरि(पु)नाई
घर न्यून	क्षीराब्धितनया(स)ल-	क्षुल्लक(पु)नीच
क्षव(पु)छींक राई	क्षीरवी(स)दुधिया	क्षुल्लक(उ)छोटा थोड़ा
क्षवथु(पु)खाँसी	क्षीरिका(स)खिरनी	क्षेत्र(न)खेत-स्त्री-श-
क्षंता(उ)सहनशील	क्षीरोद(पु)समुद्रभेद	रीर-तीर्थ
क्षांत(उ)क्षमायुक्त	क्षीब(उ)मतवाला	क्षेत्रज्ञ(पु)चैतन्य-आ-
क्षांति(स)सहनशील	क्षुत(न)छींक	त्मा-प्रवीण ⌐नेवाला
क्षार(पु)काँच	क्षुत(स)छींक	क्षेत्राजीव(उ)खेतीकर
क्षारक(पु)नवीनकली	क्षुद्र(उ)कृपण क्रूर	क्षेपण(न)फेकना
क्षारमृत्तिका(स)लोनीमट्टी	अधम-अल्प	क्षेपणि(स)नावकाडाँड
क्षारित(उ)अपवादी	क्षुद्रघंटिका(स)कंधनी	क्षेपिष्ठ(उ)अतिशयशीघ्र
क्षिति(स)धरती	क्षुद्रशंख(पु)छोटाशंख	क्षेत्र(न)खेतसमूह
क्षिप्त(उ)भेजा	क्षुद्रा(स)भटकटाई-	क्षेम(न)कल्याण-रा-
क्षिपा(स)फेंकना	हीनांगी-नटी-वेश्या	क्षसीवस
क्षिप्नु(उ)निकालनेवाला	मधुमक्खी	क्षोद(पु)चूर्न ⌐हू
क्षिप्र(न)शीघ्र	क्षुद्रांडमत्स्यसंघात	क्षोदिष्ठ(उ)अतिशयक्षु
क्षिया(स)हानि	(पु)छोटीमछली	क्षोणी(स)धरती

क्षौम(न)घासफूलकेवनेके
पड़े |फड़े
क्षौम(पुन)अटारी रेशमीक
क्षौद्र(न)सहत
क्ष्णुत(त्रि)तीखा
क्ष्मा(स)धरती
क्ष्माभृत(पु)पर्वत
क्ष्वेड(पु)विषमात्र
क्ष्वेडा(स)सिंहकागर्जन
वीरोंकागर्जन-वांसकीश-
लाका-विष
क्ष्वेडित(पुन)वीरशब्द

ख

ख(न)आकाश-शून्य-इं
द्रियादि
खग(पु)पक्षी बाण सूर्य
खगेश्वर(पु)गरुड़
खजाका(स)करछी
खज्जी(पु)लकड़ा |ला
खञ्जन(पु)कौडीलाममो-
खञ्जरीट(पु)तथा
खट्वा(स)खाट
खड्ग(पु)शस्त्रविशेष गेंडा
तलवार
खड्गी(पु)गेंडा
खंड(पुन)भाग
खंडिक(पु)मटर
खंडपरशु(पु)शिव
खदिर(पु)कत्था
खदिरी(स)गुलखेरा
खद्योत(पु)जुगनू
खनि(स)कानि
खनित्र(न)कसी
खपुर(पु)सुपारी
खर(न)बहुतगर्म
खर(पु)गधा |वाला
खरणा(पु)तीखीनाक
खरणस(पु) तथा
खरपुष्पा(स)बबुईत्रा
खरमंजरी(स)चिरचिट
खरा(स)बंदाल,देवताड़
खराश्वा(स)अजमोद
खर्जू(स)खजुआना
खर्जूर(पु)खजूर
खर्जूरी(स)तथा
खर्जूर(न)चांदी
खर्व(पु)वामन लघु
खर्वा(त्रि)छोटा
खल(त्रि)दुष्ट
खलपू(त्रि)झाडू
खलिनी(स) खल-
हानोंकासमूह
खलीन(पुन)लगाम
खलु(अ)निषेध-वा-
क्यालंकार-जानने
कीइच्छा-स्तुति
खल्या(स)खलहानों
कासमूह
खात(न)चौकोनगाढ़ा
खादित(त्रि)खायागया
खारी(स)तोलभेद
खारीक(त्रि)जिसखेत
मेंखारीभरबोयाजाय
खारीवाप(पु)तथा
खिला(त्रि)जंगाल
खुर(पु)ककूदन-घो-
ड़ेकीटाप |कवाला
खुरणस(पु)लंबीना-
खेट(त्रि)अधम

खेय (न) खाई
खेला (स) लीला
खोड (पु) लँगड़ा
ख्यात (न) तालाव
ख्यात (उ) प्रसिद्ध
ख्यातगर्हित (उ) निंदित
ख्याति (स) प्रसिद्धता

ग

गगन (न) आकाश
गंगा (स) गंगानदी
गंगाधर (पु) शिव
गज (पु) हाथी [समूह]
गजता (स) हाथियोंका
गजवंधनी (स) गजवं-
धनशाला ममिश्री
गजभक्ष्या (स) सालि-
गजास्य (पु) गणेश
गंजा (स) मदिराघर
गडक (पु) मछलीभेद
गडु (पु) कुवड़ा
गडुल (पु) कुवड़ा
गण (पु) समूह-गु-
ल्मकीसेनासेत्रगुनी

सेनावाला, शिवसेवक
गणक (पु) ज्योतिषी-
गणनीय (उ) गननेकेयोग्य
गणराज (पु) गणेश
गणरात्र (न) रात्रिसमूह
गणरूप (पु) आक
गणहासक (पु) राक्षसी-
वृक्ष
गणाधिप (पु) गणेश
गणिका (स) जूही-वे-
श्या [गणिवृक्ष]
गणिकारिका (स) अर-
गणित (उ) गिनना
गणेय (उ) गननेकेयोग्य
गंड (पु) गाल-हाथी-
कागाल
गंडक (पु) गेंडा
गंडकाली (स) गुलखेरा
गंडशैल (पु) आरिपत्थर
गंडाली (स) दूव
गंडीर (पु) गाडरदुवी
गंडूपद (पु) केंचुआ
गंडूपदी (स) तथा

गंडूषा (स) जलादि-
सेमुखपूर्ण
गतनासिक (पु) नकटा
गति (पु) चाल
गद (पु) रोग
गदा (स) लाठी
गद्य (न) विना । छंद
कीभाषा
गत्री (स) गाड़ी
गंध (पु) विषय
गंधक (पु) गंधक
गंधकुटी (स) ताली
सपत्र [उठाना]
गंधन (न) ऊपरको
हिंसा-सूचना
गंधनाकुली (स) स-
नाय
गंधफली (स) फूल
प्रियंगु-ककुनी-
चमेलीकीकली
गंधमादन (न) पर्व-
तकाभेद
गंधमूली (स) कचूर

गंधरस (पु) गंधकारस
गंधर्व (पु) देवजाति नाम
विशेष मृगभेद घोडा-
मरण जन्मके बीचस्थित
प्राणी - दिव्यगान
गंधर्वहस्तक (पु) अंड
गंधवह (पु) पवन
गंधवहा (स) नाक
गंधवाह (पु) पवन | द्न
गंधसार (पु) सामान्यचं-
गंधांशुमती (स) शालपर्णी
गंधाश्मन् (पु) गंधक
गंधिनी (स) तालीसपत्र
गंधोत्तमा (स) मदिरा
गंधोली (स) वर्र
गभस्ति (पु) किरण
गंभीर (उ) गहरा
गम (पु) यात्रा
गमन (न) यात्रा
गंभारी (स) खंभारी औ
षध विशेष
गम्य (उ) पानेके योग्य
गरल (न) विषमात्र

गरिष्ठ (उ) अतिशय भारी
गरी (स) वंदाल देवताड़
गरुड़ (पु) जीवविशेष
गरुडध्वज (पु) विष्णु
गरुड़ाग्रज (पु) सूर्यका
सारथी
गरुत् (पु) पंख
गरुत्मा (पु) गरुड़ पक्षी
गर्गरी (स) गागरी
गर्जित (न) मेघकागर्जन
गर्जित (पु) पकतामद
हाथी पोल
गर्त्त (पुस) पृथ्वीका-
गर्दभ (पु) गधा
गर्दभांड (पु) गजहरड
गर्द्धन (उ) लोभी
गर्भ (पु) गर्भ, पेट-गर्भ-
स्थजीव बालक
गर्भक (पु) शिरकेबीचकी
माला
गर्भागार (न) घरकाबीच
गर्भाशय (पु) गर्भजाल
गर्भिणी (स) गाभिन

गर्भोपघातिनी (स) बिना
समयबैलकेपास जाने
वाली गौ | तृण
गर्मुत् (स) नलाद्य
गर्व (पु) अहंकार
गर्हण (न) निंदा
गर्ह्य (उ) अधम
गर्ह्यवादी (उ) कटुवादी
गल (पु) कंठ
गलकम्बल (पु) बैलके-
गलेकालटकाहुआचाम
गलंतिका (स) करवा
गलित (उ) चुआ
गलोद्देश (पु) घोड़ेकेगा-
लेकाबीचकाभाग
गल्या (स) गलोंकासमूह
गवय (पु) मृगभेद
गवल (न) भैंसकासींग
गवांव्रज (पु) गौओंकाझुंड
गवाक्ष (पु) झरोखा
गवाक्षी (स) फूटफल
गवीश्वर (पु) गोस्वामी
गवेदु (स) चैना अन्न

गवेधुका (स) वैना
गवेषण (स) आज्ञमें ब्राह्मणभक्ति-धर्मादिका खोजाना
गवेषित (उ) ढूंढा
गव्य (उ) गौओंका दधिदूध
गव्या (स) गौओंका झुंड
गव्यूति (पुस) दोकोश
गहन (न) वन
गहन (उ) दुःप्रवेश
गह्वर (न) दिनावनाईगुफा दंभ-खोह-कंदरा
गांगेय (न) सोना-कसेरू
गांगेरुकी (स) कंगी
गाढ (न) अतिशय
गाणिक्य (न) वेश्याओंका
गाणेय (उ) गननेकेयोग्य
गांडिव (पुन) अर्जुनकाधनु
गांडीव (पुन) तथा
गात्र (न) अंग-हाथीकी जंघाकाआगेका भाग
गात्रानुलेपनी (स) चोया
गान (न) गान-राग

गांधार (पु) गानस्वर
गायत्री (स) कत्था
गारुत्मन् (पु) मणि
गार्भिणय (न) गर्भिणियोंका समूह
गार्हपत्य (पु) यज्ञाग्नि
गालव (पु) लोध
गिरि (पु) पहाड़
गिरि (स) निगलना
गिरिकर्णी (स) विष्णुक्रांता औषध
गिरिका (स) चूही
गिरिज (न) भोडल-शिलाजीत
गिरिमल्लिका (स) कु-
गिरिश (पु) शिव
गिरीश (पु) शिव
गिर् (स) सरस्वती
गिलित (उ) खाया
गीत (न) गान
गीर्ण (उ) अंगीकृत
गीर्णि (स) निगलना
गीर्वाण (पु) देवता

गीष्पति (पु) बृहस्पति
गुग्गुलु (पु) गूगुल
गुच्छक (पु) फूलोंकागुच्छा
गुड़ (पु) गौंद मीठा
गुडपुष्प (पु) महुआ
गुडफल (पु) पिलुआ
गुडा (स) सेंहुड़
गुडूची (स) गिलोय
गुण (पु) धनुषकीप्रत्यंचिल्ला-रस्सी-रसगंध सतोगुणादि-श्वेतादि-संधिविग्रहादि-गन्दश
गुण (उ) लोईदार-पत्ताहार
गुणवृक्षक (पु) मस्तूल
गुणित (उ) गुणा
गुंडित (उ) धूलिलगा
गुत्स (पु) हारभेद
गुत्सार्द्ध (पु) हारभेद
गुद (न) गुदा, हगनी
गुन्द्र (पु) शरकंडा
गुन्द्रा (स) फूलप्रियंगु-ककनी-नागरमोथा

गुंजा (स) घुंघुंची	गृंजन (पु) लहसन	गैरेय (न) शिलाजीत
गुप्त (उ) छिपा रक्षित	गृध्नु (उ) लोभी	गो वा गौ (पु) बैल
गुप्ति (स) गुफा	गृध्र (पु) गीध	गोकंटक (पु) गोखुरू
गुरण (न) उद्यम	गृध्रसी (स) वातरोगभेद	गोकर्ण (पु) मृगभेद-
गुरु (पु) बृहस्पति पिता	गृष्टि (स) बिलाईकंद	अंगूठासे अनामिका त-
गुर्विणी (स) गर्भिणी	गृह (न) घर	क का भाग जो फैलाव में है
गुल्फ (पु न) गांठ	गृह (पु० ब०) घर स्त्री	गोकर्णी (स) मूर्वा
गुल्म (पु) ठूंठ तिल्ली	गृहगोधिका (स) छिपकली	गोकुल (न) गौओंका स-
सेनामुखकी सेनासे ३	गृहपति (पु) मोदी	मूह
गुल्मी सेना रखनेवाला	गृहयालु (उ) लेनेवाला	गोक्षुरक (पु) गोखुरू
गुल्मिनी (स) फैलीलता	गृहस्थूण (न) थूनी	गोचर (पु) इंद्रिय
गुवाक (पु) सुपारी	गृहाराम (पु) घरके पास	गोजिह्वा (स) गोभी
गुह (पु) स्वामिकार्त्तिक	का बाग ली घरकी	गोडुम्बा (स) फूंट
गुहा (स) विनाबनाई गुफा	गृहावग्रहणी (स) देह-	गोंड (पु) नाभि, जातिभेद
सिंहपुच्छी ग	गृही (स) ब्रह्मचारी आदि	गोत्र (पु) पहाड़
गुह्य (न) एकांत भग लिंग	गृहीता (उ) लेनेवाला	गोत्र (न) वंश नाम गोत्रादि
गुह्यक (पु) देवजाति	गृत्सक (पु) गृहासक्तप-	गोत्रभिद् (पु) इंद्र
गुह्येश्वर (पु) कुबेर	क्षी मृग त्र	गोत्रा (स) धरती गौओं-
गूढ (उ) छिपा	गृह्यक (उ) आधीनमा-	का समूह
गूढपाद (पु) सर्प्प	गेंडुक (पु) तकिआ, गेंद	गोदारन (न) हल
गूढपुरुष (पु) हलकारा	गेह (पु न) घर	गोदुह (पु) अहीर हि
गूथ (न) विष्टा	गैरिक (उ) धातुविशेष	गोधन (न) गौओंका स
गून (उ) हगा हुआ	गैरिक (न) सोना गेरू	गोधा (स न) धनुषकामें दस

गोधापदी (स) हंसपदी
गोधि (पु) माथा
गोधिका (स) गोह
गोधिकात्मज (पु) गो-
हका बच्चा
गोधूम (पु) गेहूँ
गोनर्द (न) माथा
गोनस (पु) छोटासर्प
गोप (पु) बहुतसे गाँवोंमे
ग्रामाध्यक्ष- अहीर- गंध
रस- दूधदुहनेवाला-
गोष्ठपति
गोपति (पु) साँड
गोपानसी (स) छज्जा
गोपायित (त्रि) रक्षित
गोपाल (पु) अहीर
गोपी (स) श्यामलता
गोपुर (न) नगरका फाटक
मोथा- द्वारमात्र
गोप्यक (पु) दास
गोमान् (पु) गौका स्वामी
गोमय (पु न) गोबर
गोमायु (पु) स्यार

गोमी (पु) गोस्वामी
गोरस (पु) मठा
गोर्द (न) भेजा
गोलक (पु) पतिके मरे
परजारकर्मसे पुत्रहो
गोला (स) मनशिल
गोलीढ (पु) पाढरि, लोध
गोलोमी (स) वच श्वेत-
दूब जटामांसी
गोवंदिनी (स) ककुनी, फू-
लप्रियंगु
गोविंद (पु) विष्णु- गौ-
ओंके स्थानका पति
गोशीर्ष (न) चंदनभेद
गोष्ठ (न) गौओंका घर
गोष्ठी (स) सभा
गोष्ठीन (न) गौओंका
पहिलास्थान
गोष्पद (न) गौओंका
घर- खुरादिकोंकामान
गोसंख्य (पु) अहीर
गोस्तन (पु) हारकाभेद
गोस्तनी (स) दाख

गोस्थानक (न) गौ-
ओंका स्थान | लंबी
गौतम (पु) बौद्धमताव
गोधार (पु) गोहका ब-
च्चा | कारवेत
गौधूमीन (त्रि) गेहुंओं
गौधेय (पु) गोहका
बच्चा
गौधेर (पु) तथा
गौ (स) गाय- स्वर्ग-
वाण- पशु, वाणी, हीरा
दिशा, नेत्र- किरण
पृथ्वी
गौ (स न) जल
गौर (पु) श्वेत, पीला,
गौर (त्रि) लाल, सित,
पीत | बड़ीकन्या
गौरी (स) पार्वती, कुल्टा
ग्रंथि (पु) गाँठ
ग्रंथिक (न) पिपरामूल
ग्रंथित (त्रि) गठियाया
ग्रंथिपर्ण (न) ककरौंध
ग्रंथिल (पु) हींस, करील

ग्रस्त (न) असंपूर्णउच्चारित वचन खायागया
ग्रह (पु) ग्रहण, लेना; आ ग्रहविशेष, नवग्रह,
ग्रहणीरुक् (स) संग्रहणी
ग्रहपति (पु) सूर्य्य
ग्रहीता (त्रि) लेनेवाला
ग्राम (पु) गाँव
ग्रैमणी (पु) नाई
ग्रामणी (त्रि) श्रेष्ठ मुख्य
ग्रामतक्ष (पु) बढ़ई
ग्रामता (स) गावोंकासमूह
ग्रामाधीन (पु) बढ़ई
ग्रामांत (पु) ग्रामकेपास कीभूमि
ग्रामीणा (स) नील
ग्राम्य (न) ढीलाकरना
ग्राम्य (न) सुअर
ग्राम्यधर्म (पु) मैथुन
ग्राव (पु) पहाड़ पत्थर
ग्रास (पु) कौर
ग्राही (पु) कैथ
ग्राह (पु) घड़ियाल, लेना

ग्रीवा (स) गला
ग्रीष्म (पु) ऋतुभेद
ग्रैवेयक (न) कंठी कंठा
ग्लस्त (त्रि) खाया
ग्लह (पु) बाजी
ग्लान (त्रि) रोगासेदुःखित
ग्लास्नु (त्रि) तथा
ग्लौ (पु) चंद्रमा

घ

घट (पुन) गगरा घड़ा
घटना (स) हाथियोंकी पंक्ति
घटा (स) तथा
घटीयंत्र (न) रहट
घंटापथ (पु) राजमार्ग
घंटापाटलि (पुस) का-लीपाढ़री
घटारवा (स) सन
घन (पु) मेघ-मध्यम नृत्यादि-मुद्गर-कठि-नता-आकार-निरंतर
घन (त्रि) प्रतिमा, सघन
घन (न) कांसाआदिका बाजा

घनरस (पुन) जल
घनसार (पु) कपूर
घनाघन (पु) इंद्र-हिं-साकारी-मत्तहाथी, वर्षाकरनेवाला, वर्ष
घर्म (पु) पसीना, घाम
घस्मर (त्रि) खानेवाला
घस्र (पु) दिन
घाटा (स) घाँटी
घांटिक (पु) घंटेवाला
घात (पु) मारा
घातुक (त्रि) हत्यारा
घास (पु) घास ठ
घाटिका (स) पाँवकीगां-
घुण (पु) घुन
घूर्णित (त्रि) घूमनेवाला
घृणा (स) करुणा-घिनाना-निंदा-
घृणि (पु) किरण
घृत (न) घी पानी
घृष्टि (पु) शूकर
घोटक (पु) घोड़ा
घोणा (स) नाक

घोणी(पु)सूकर
घोंटा(स)बेरकाफल-सुपारी
घोर(न)डर
घोष(पु)अहीरोंकागाँ-व
घोषक(पु)सेतफूलकी-तुरई
घोषणा(स)घोकना
घ्राण(न)नाक-सूंघा३
घ्राणतर्पण(पु)बड़ासुगंध
घ्रात(३)सूंघा

च

च(अ०)इकट्ठा-समा-हार-इतरेतरयोग-पाद-पूरण
चक्र(न)जलकानिकल-ना-चकवाचकवी(पु)पहिया-सेना-राज्य(न)
चक्रकारक(न)गंधद्रव्य
चक्रपाणि(पु)विष्णु
चक्रमर्द्दक(पु)पमारवृक्ष
चक्रला(स)वज्रमोथा
चक्रवर्ती(पु)महाराजाधिराज
चक्रवर्तिनी(स)चकवत्
चक्रवाक(पु)चकवाचकवी
चक्रवाल(पुन)घेरा-पृथ्वीकेचारोंओरकापहाड़
चक्रांग(पु)हंस
चक्रांगी(स)कटुकी
चक्री(पु)सांपमात्र
चक्रीवत(पु)गधा
चकोरक(पु)चकोर
चक्षुःश्रवस(पु)सर्प्प
चक्षुष्य(पु)सुरमा
चक्षुष्या(पु)कालासुरमा
चक्षुस(न)आँख
चंचल(३)चंचल
चंचला(स)बिजली
चंचु(पु)अंड,चोंच(स)
चटक(पु)चिड़ा
चटका(पु)चिड़ीकीबच्ची
चटिकाशिरस(न)पिपरामूल
चणक(पु)चना
चण्ड(३)अतिक्रोधी
चंडा(स)राक्षसीवृक्ष
चंडिका(स)पार्वती
चंडात(पु)कनैल
चंडातक(पुन)लहँगा
चंडाल(पु)चांडाल-ब्राह्मणीऔरशूद्रसेजात
चंडालिका(स)नीचवीणा
चंडालवल्लकी(स)तथा
चतुःशाल(न)चौक
चतुर(पु)पटु
चतुर्हायणी(स)४वर्षकीगौ
चतुरंगुल(पु)अमलतास
चतुरानन(पु)ब्रह्मा
चतुर्भद्र(न)सर्वधर्मसंयुक्त
चतुर्भुज(पु)विष्णु
चतुर्वर्ग(पु)धर्म,अर्थ,काम मोक्ष
चतुष्पथ(न)चौराहा
चत्वर(न)आंगन-यज्ञकाचौतरा
चन(अ)असंपूर्ण
चंदन(पुन)चंदन
चंद्र(पु)चांद-कमीला-कपूर
चंद्रक(पु)मोरपंखकेचिह्न
चंद्रभागा(स)नदी
चंद्रमस(पु)चंद्रमा
चंद्रबाला(स)बड़ीइलायची

चंद्रशेखर(पु)शिव
चंद्रहास(पु)तलवार
चंद्रिका(स)चांदनी
चपल(न)शीघ्र-पारा(पु)
दोषादिविनाविचारेमारने
कोउद्यत(३)
चपला(स)बिजली-बड़ी पीपर
चपेर(पु)फैलीअंगुलीस
हितहाथ
चमर(पु)मृगभेद
चमरिक(पु)कचनार
चमस(पुन)यज्ञपात्र
चमसी(स) तथा
चमू(स)सेना-पृतनाकी
सेनासंख्यासे३गुणीसे-
नावाला
चमूरु(पु)मृगभेद
चंपक(पु)चमेली
चय(पु)खाई-समूह
चर(पु)हलकारा
चरक(पुन)वैद्यककाग्रंथ
चरण(पुन)पांव
चरणायुध(पु)मुर्गा

चरम(३)अंत
चरमक्ष्माभृत(पु)अ-
स्ताचलपर्वत
चराचर(३)चलनेवाला
चरिष्णु(३)चलनेवाला
चरु(पु)यज्ञकीखीर
चर्चरी(स)ताली
चर्चा(स)विचार-चंद
नादिकालेपन
चर्मकषा(स)सोया
चर्मकार(पु)चमार
चर्मन्(न)ढाल
चर्मप्रभेदिका(स)च-
मारकाचाकू
चर्मप्रसेविका(स) धौंकनी
चर्मी(पु)भोजपत्र-
ढालवाला
चर्य्या(स)ध्यानी
चर्वित(३)चावागाया
चल(३)चंचल
चलदल(पु)पीपर
चलन(३)कांपनेवाला
चलाचल(३)तथा

चलित(न)चलीसेना
चलित(३)कंपा
चविका(स)चाव वा
पीपरिकीलकड़ी
चषक(पुन)मदिरापा
नकावर्त्तन
चषाल(पु)यज्ञस्थंभ
चाक्रिक(पु)घंटेवाला
चांगेरी(स)चूक
चाटकेर(पु)चिड़ाका
चांडाल(पु)चांडाल
चांडालवल्लकी(स)
नीचवीणा
चांडालिका(स)तथा
चाणकीन(३)चनेकाखेत
चातक(पु)पपीहा
चाप(पुन)धनुष
चामर(न)चमर
चामीकर(न)सोना
चाम्पेय(पु)चम्पा-
चमेली-नागकेसरि
चार(पु)हलकारा-
बांधना

चारटी(स)कपिला,पद्मक

चारण(पु)कत्थक

चारु(उ)सुंदर

चार्चिका(न)चंदनादिका

चर्मण(न)समूहचर्मोका

चालनी(स)चलनी

चाष(पु)नीलकंठ

चिकित्सक(उ)वैद्य

चिकित्सा(स)रोगका उपाय

चिकुर(पु)बाल-विनादे

षविचारेमारनेकोउद्यत

चिक्कण(उ)चिकना

चिंचा(स)अमिली

चित्(स)वुद्धि-अपूर्ण(अ)

चिता(स)चिता

चिति(स)चिता

चित्त(न)मन

चित्तविभ्रम(पु)भ्रम

चित्तसमुन्नति(स)प्रतिष्ठा

चित्ताभोग(पु)सुखतत्पर मन

चित्या(स)चिता

चित्र(पुन)चित्रविचित्र

आश्चर्य-आलेख्य

चित्रक(पु)अंड-चीता

चित्रक(न)तिलक

चित्रकर(पु)रंगसाज

चित्रकृत(पु)तेंदूवृक्ष

चित्रतंडुला(स)वायुविडंग

चित्रपर्णी(स)सिंहपुच्छी

चित्रभानु(पु)आग,सूर्य्य

चित्रशिखंडिज(पु)बृहस्पति

चित्रशिखंडी(पु)सप्तर्षि

चित्रा(स)मूसाकर्णी-

मूसरी-फूटफल

चिंता(स)स्मरण

चिपिटक(पु)चिउरा

चिरक्रिय(उ)छिलंगा

चिरंटी(स)युवाविवाहिता

स्त्रीपिताकेघररहनेवाली

चिरंतन(उ)पुराना

चिररात्राय(अ)बड़ासमय

चिरविल्व(पु)कंजावृक्ष

चिरसूता(स)बकेनीगौ

चिरस्य(अ)बड़ासमय

चिराय(अ)तथा

चिल्ल(उ)चुंधा

चिलिचिम(पु)जल

तृणचारीमछली

चिबुक(न)ठोढ़ी

चिह्न(न)कलंक

चीन(पु)मृगभेद

चीर(न)वस्त्र

चीरी(स)झींगुर

चीवर(न)मुनिवस्त्र

चुक्र(पु)अमलवेती

चुक्र(पुन)चूक

चुक्रिका(स)चूक

चुल्ल(उ)चुंधा

चुल्लि(स)चूल्हा

चूचुक(नपु)कुचोंके

आगेकाभाग

चूडा(स)मोरशिखा

चूडामणि(पु)चोटीकी मणि

चूडाला(स)वज्रमोथा

चूत(पु)आमकावृक्ष

चूर्ण(न)चून,चूरा

चूर्णकुंतल(पु)टेढ़ेवा

लवाला

चूर्णि(स)पटविशेष

मूल चूलिका (स) हाथीकाकर्ण	छगलांत्री (स) विधारा	छांदस (पु) वेदज्ञ
चूषा (स) हाथीकेकमर	छत्र (न) छाता	छाया (स) सूर्यकीस्त्री,
बांधनेकीरस्सी	छत्रा (स) सौंफ - जल	कांति - प्रतिबिंब, अनातप
चेत (अ) पक्षांतर	तृण - धनियां	छित (३) कटा
चेटक (पु) दास	छत्राकी (स) सनाय	छिद्र (न) छेदागाया
चेतस् (न) मन	छद (पु) पत्ता - पंख	छिद्रित (३) तथा
चेतकी (स) हरड़, हर्र	छदन (पु) पत्ता	छिन्न (३) कटा
चेतन (पु) जीव	छदिस् (स) छाना	छिन्नरुहा (स) गुर्च
चेतना (स) बुद्धि	छद्म (न) छल	छुरिका (स) छुरी
चेल (न) कपड़ा अधम३	छंद (पु) अभिप्राय -	छेक (पु) घरेलूपक्षी
चैत्य (न) यज्ञवेदी	आधीन	छेदन (न) काटना
चैत्र (पु) चैत्रमास	छंदस् (न) गायत्रीछं-	ज म(३)
चैत्ररथ (न) कुबेरकाबाग	दादि, पद्य, अभिलाष	जगत् (न) लोक, जंग
चैत्रिक (पु) चैत्रमास	छन्न (३) एकांत, ढगा	जगती (स) जगत् -
चोच (न) तज	छमी (स) छोंकर - शमी	लोक - छंदभेद - पृथ्वी
चोरपुष्पी (स) शंखाहुली	छल (न) धोखा	जन
चोल (पु·स) चोली	छवि (स) शोभा	जगत्प्राण (न) पवन,
चौर (पु) चोर	छगल (पु) बकरा	जगल (पु) गुड़, आ-
चौरिका (स) चोरी	छगली (स) बकरी	दिकीकढ़ीवामदिरा
चौर्य (न) चोरी	छात (पु) लटा, कटा३	जग्ध (३) खायागया
च्युत (३) चुया, टपका	छात्रसिंह (पु) शिष्य	जग्धि (स) भोजन
छ	छादन (न) ढांकना	जघन (न) स्त्रीकीना-
छगलक (पु) बकरा	छादित (३) ढंका	भि वा पेड़ू

जघनेफला(स)कठूमरि	जत्रुणी(न)हँसली	जम्पती(पु)स्त्रीपुरुष--
जघन्य(३)अंत-अधम	जन(पु)रनवासाधिकारी	जप(पु)वेदाभ्यास
जघन्यज(पु)छोटाभाई,शूद्र	जनि(स)उत्पत्ति	जम्बाल(पु)कीचड़
जंगम(३)चलनेवाला	जनी(स)वधूवत	जम्बु(न)जामुनकाफल
जंगमेतर(३)वृक्षादि	जनक(पु)पिता	जम्बुक(पु)स्यार
जंघा(स)जाँघ	जनंगम(पु)चांडाल	जम्बू(स)जामुनकाफल
जंघाकारिक(पु)हलकारा	जनता(स)जनोंकासमूह	जम्भ(पु)जभीरी
जंघाल(पु)शीघ्रचलनेवाला	जनन(न)जन्म,वंश	जम्भभेदी(पु)इन्द्र
जटा(स)वृक्षमूल- जटा-	जननी(स)माता	जम्भल(पु)जभीरी
लिपटनेवाल / कासमूह	जनपद(पु)जनवास	जम्भीर(पु)जभीरी-दो
जटाजूट(पु)शिवकीजटाएँ	जनयित्री(स)माता	जय(पु न)त्राणी जीति
जटामांसी(स)औषधभेद	जनश्रुति(स)लोकप्रवाद	जयन(न)जीत
जटिला(स)जटामांसी	जनार्दन(पु)विष्णु	जयंत(पु)इंद्रकापुत्र
जटुल(पु)लहसनवाला	जनाश्रय(पु)मंडप	जयंती(स)जूही रनवास
जठर(पु न)पेट-कठिन(३)	जनी(स)पुत्रवधू	जाया(स) तथा
वृद्ध(३) / मूर्ख	जनुस(न)जन्म	जय्य(पु)जीतनेकोसमर्थ
जड(३)ठंढ़पर्य्यायवाची-	जन्तु(पु)जीव	जरण(पु)जीरा
जडा(स)कौंच	जंतुफल(पु)गूलरि	जरत्(पु)बूढ़ापुरुष
जतु(न)लाख	जन्म(न)उत्पत्ति	जरद्गव(पु)बूढ़ाबैल
जतुक(न)हींग	जन्मी(पु)जन्म	जरा(स)बुढ़ापा
जतुका(स)चिमगादर	जन्य(पु)वरकामित्र	जरायु(पु)गर्भजाल
जतूका(स)[illegible]	जन्य(न)लड़ाई,निंदित वाद(३)	जरायुज(३)मनुष्यपशु
जतूकार(स)[illegible]	जन्यु(पु)जीव	आदि

जल(न) पानी
जलज(पु)जलमहुआ
जलजंतु(पु)जलजीव
जलधर(पु)मेघ
जलनिधि(पु)समुद्र
जलनिर्गम(पु)नाली,नल
जलनीली(स) सिवार
जलप्राय(त्रि)जलयुक्तदेश
जलमुक्(पु)मेघ
जलव्याल(पु)जलसाँप
जलशुक्ति(स) घोंघा
जलाधार(पु)जलस्थान
जलोच्छ्वास(पु)नहर
जलौका(स)जौंक
जलौका(बहु) स)जौंक
जल्पाक(त्रि)अवाक्यकाकहने वाला
जल्पित(त्रि)कहा
जव (पु) वेग वेगी
जवन(पु)बड़ेवेगकाघोड़ा
वेगी(न)वेग
जवनिका(स)कनात
जवापुष्प(न)गुडहल |डा
जवाधिक(पु)बड़ेवेगकाघो

जह्नुतनया(स)गंगा
जागर(पु)कवच
जागर(स)जागना
जागरिता(त्रि)जागनेवाला
जागरूक(त्रि)तथा
जागर्य्या(स)जागना
जांगुलिक(पु)विषवैद्य
जांघिक(पु)हलकारा
जाटलि(सन)मरुआ
जात(न) जाति
जातवेद(पु)अग्नि
जातरूप(न)सोना
जातापत्या(स)प्रसूता-नारी
जाति(स)चमेली.जन्म-जाति
जातिफल(न)जायफल
जातीकोश(न) तथा
जातु(अ) किसीकाल
जाताक्ष(पु)कलोरबैल
जानु(पु-न) घुटना
जाबाल(पु)गडरिया
जामाता(पु)दामाद
जामि(स)बहन,कुलवधू
जांबव(न)जामुनकाफल

जांबूनद(न)सोना
जायक(न)पीतचंदन
जाया(स)विवाहितास्त्री
जायाजीव(पु)नट
जायापती(पु)स्त्रीपुरुष
जायु(पु)औषध
जार(पु)छिनरा
जारज(पु)औरसेउत्पन्न
जाल(न)नामविशेष
समूह-सनकीरस्सी-
झरोका,अधफुलीकली
जालक(न)नईकली
जालिक(पु)जालबनाने
वाला |री(त्रि)
जाल्म(पु)नीच,अविचा
जाली(स)चचेंडा
जिंगी(स)मजीठ
जिघत्सु(त्रि)भूखा
जित्वर(पु)जीतनेवाला
जिन(पु) जिनवा बुध
जिष्णु(पु)इंद्र-जीतने
वाला |गादर
जिनपत्रा(स) चिम-

जिह्म(३)टेढ़ा,आलसी
जिह्मग(पु)सर्पमात्र
जिह्वा(स)जीभ
जीन(पु)बूढ़ापुरुष
जीमूत(पु)मेघ-देवताड
पर्वत-विंदाल
जीरक(पु)जीरा
जीर्ण(पु)बूढ़ापुरुष
जीर्णवस्त्र(न)पुरानावस्त्र
जीर्णि(स)पुराना
जीव(पु)बृहस्पति,प्राणी
जीवक(पु)विजयसार,जीरा
जीवंजीव(पु)पक्षीविशेष
जीवन(न)जल,जीविका
जीवनी(स)रत्नज्योति
जीवनीया(स)तथा
जीवनौषध(न)जीना
जीवंतिका(स)अमरबेल,
गिलोय-गर्च,विदाल,
जीवंती(स)रत्नज्योति
जीवा(स)तथा
जीवातु(पु-न)जीना
जीवांतक(पु)चिड़ीमार

जीविका(स)वृत्ति
जीवितकाल(पु)आयुर्दा
जुगुप्सा(स)निन्दा
जुंग(पु)विधारा
जुहू(स)स्रुवाकाभेद
जूति(स)वेग
जूर्ति(स)ज्वर
जृम्भ(३)जम्हाई
जृंभण(न)जम्हाई
जेता(पु)जीतनेवाला
जेमन(न)खाना
जेय(पु)जीतनेकेयोग्य
जैत्र(पु)जीतनेवाला
जैवातृक(पु)चंद्रमा-आ
बड़ीअवस्थावाला(३)कृ-
जोंगक(न)अगुरु
जोष(अ)चुपचाप,सुख
ज्ञ(पु)पंडित-बुध
ज्ञपित(३)जानागया
ज्ञप्त(३)जानागया
ज्ञप्ति(स)बुद्धि
ज्ञात-कृ
ज्ञातसिद्धांत(पु)ज्योति
ज्ञाति(पु)जातिजन

ज्ञाता(३)जाननेवाला
ज्ञातेय(न)गोत्रसमूह
ज्ञान(न)मोक्षकीबुद्धि
ज्ञानी(पु)ज्योतिषी
ज्या(स)पृथ्वी-धनुषकी
प्रत्यंचा-चिल्ला
ज्याघातवारण(स न)
दास्ताना
ज्यानि(स)जीर्णा
ज्यायस्वाज्यायान्
(पु)अतिबूढ़ापुरुष-
स्तुतिकेयोग्य
ज्येष्ठ(३)बड़ाभाई,अत्युत्तम
ज्यैष्ठ(पु)जेठकामहीना
ज्योतिरिंगण(पु)जुगनू
ज्योतिष्मती(स)मालकांगनी
ज्योतिस्(न)प्रकाश-
नक्षत्र-दृष्टि
ज्योत्स्ना(स)चाँदनी
ज्योत्स्नी(स)चाँदनी-
रात्रि-चन्द्रिका /वी
ज्योतिषिक(पु)ज्योति-
ज्वर(पु)ज्वर,ताप

ज्वलन(पु) अग्नि
ज्वाल(पु.स) आगकीज्वा-ला

झ

झटा(स) भूमि, आँवला
झटामला(स) तथा
झटिति(अ) शीघ्रतावाचक
झर्झर(पु) झर्ना-बाजेका भेद
झर(पु) झर्ना
झल्लरी(स) झालर
झष(पु) मच्छली
झषा(स) बहुप्रकारकीम-
झाटल(पु) कालीपाठरि
झावुक(पु) झाऊ
झिंटी(स) पियाबांसा
झिल्लिका(स) झींगुर
झीरुका(स) झींगर

ट

टंक(पु) टाँकी
टिट्टिभक(पु) टिटहरी
टीका(स) व्याख्या
टुंटुक(पु) सरि बन आरलू

ड

डमर(पु) लूटना
डमरु(पु) बाजा
डम्बर(पु) नगारा
डहु(पु) बड़हल
डिंडीम(पु) बाजेका भेद
डिम्ब(पु) लूटना
डिम्भ(पु) बच्चा-मूर्ख
डिम्भा(स) दूधपीनेवाला बच्चा
डुंडुभ(पु) निर्विषसाप

ढ

ढक्का(स) ढोल
ढकिप(उ) आढकभर जिसखेतमेंबोयाजाय

त

तक्र(न) मठा
तक्षक(पु) सर्प, बढ़ई
तक्षा(पु) बढ़ई
तट(उ) तीर
तटिनी(स) नदी
तडाग(पुन) तालाब
तडित्(स) बिजली
तडित्वत्(पु) मेघ
तंडक(पुन) उत्पात
तंडुल(पु) बायुविडंग
तंडुलीय(पु) चौराई
तत्र(अ) हेतु
तत(न) वीणाकाशब्द
तत्काल(पु) वर्त्तमानसमय
तत्क्रिय(उ) विनामजूरी लियेकामकरनेवाला
तत्पत्री(स) हींगकीपत्ती
तत्पर(उ) लीन
तत्व(न) देरसेनाच
ततः(अ) हेतु
तथा(अ) तैसे
तथागत(पु) जिन, बुध
तथ्य(न) सत्य
तदा(अ) तिससमय
तदात्व(न) वर्त्तमानसमय
तदानीं(अ) तिसकाल
तनपा(स) दूधपीनेवाले बालक
तनय(पु) पुत्र
तनया(स) पुत्री
तनु(स) देह थोड़ा-विरला(उ) खाल
तनुत्र(न) कवच

तनू (स) शरीर
तनूकृत (उ) थोड़ाकिया
तनूनपात् (पु) आग
तनूरुह (न) पंख, बाल-
(पु न)
तन्तु (पु) सूत
तंतुवाय (पु) मकरी
कोरी
तंतुभ (पु) सरसों
तंत्र (न) प्रधान- सिद्ध
तंत्रक (उ) नूतनवस्त्र
तंत्रिका (स) गिलोय
तंद्री (स) आलस्य-निद्रा
तपःक्लेशसह (पु) तप-
स्याकेक्लेशकोसहना
तप (पु) ग्रीष्मऋतु- कृ-
च्छ्रव्रतादि (न) कर्म (न)
तपस (पु) माहमास
तपन (पु) सूर्य- नरकभे
तपनीय (न) सोना
तपस्य (पु) फागुनमास
तपस्वी (पु) तपसी
तपस्विनी (स) जटामां-

तम (पु) अँधेरा- राहु
तमस (न) राहु तमोगु-
ण अँधेरा
तमस्विनी (स) रात्रि
तमाल (पु) वृक्षविशेष
तमालपत्र (न) तिलक
तमिस्र (न) अँधेरा
तमिस्रा (स) रात्रि
तमी (स) रात्रि
तमोनुद (पु) चंद्र- आ
ग- सूर्य्य
तरक्षु (पु) चीता
तरंग (पु) लहर
तरंगिनी (स) नदी
तरण (न) गद्दी मूल
तरणि (स) नाव
तरणि (पु) सूर्य्य- घी
गुवार
तरपण्य (न) उतराई
तरल (पु) हार केबीच
कीमणि, चंचल (उ)
तरला (स) लप्सी
तरस (न) वेग, पराक्रमी

तरस (न) मांस
तरस्वी (पु) वेगी शूर (उ)
तरि (स) नाव
तरु (पु) वृक्ष
तरुण (पु) युवापुरुष
तरुणी (स) ज्वानस्त्री
तर्क्य (पु) ऊह तर्क
तर्कारी (स) १ वासन
तर्जनी (स) अंगुली अंगू-
ठाकेपास की
तर्णक (पु) नयाबछड़ा
तर्दू (पु स) काठकीकरछी
तर्पण (न) पितृयज्ञ- महा
यज्ञ- अघाया
तर्म (न) यज्ञस्तंभका
तला (स न) धनुषादस्ताना
तल (न) नीचे सरूप (न पु)
तलिन (उ) विरला अल्प
तल्प (पु न) शय्या —
अटारी, स्त्री
तल्लज (पु) शुभ
तर्ष (पु) मनोरथ प्यास
तष्ट (उ) थोड़ा किया

तस्कर (पु) चोर
तांडव (पु.न) नाँचना
तात (पु) पिता
तांत्रिक (पु) शास्त्री
तापस (पु) तपसी
तापसतरु (पु) गौंदनी-प
तापिच्छ (पु) तमालवृक्ष
तामरस (न) कमल
तामलकी (स) आंवला
तामसी (स) आँधीरात
ताम्रक (न) तांबा
ताम्रकर्णी (स) पश्चिम दिग्गजकीस्त्री
ताम्रकुट्टक (पु) ठठेरा
ताम्रचूड (पु) मुर्गा
तांबूलवल्ली (स) पान
ताम्बूली (स) पान
तार (पु) उच्चस्वर-अच्छा
तारकजित (पु) स्वामिकार्त्तिक
तारका (स) नक्षत्र-आंख की पुतली
तारा (स) नक्षत्र
तारुण्य (न) तरुणाई

तार्क्ष्य (पु) गरुड़ घोड़ा
तार्क्ष्यशैल (न) रसोत
ताल (पु) तालदेना वृक्षविशेष-अंगूठा-से मध्यमा तक का भाग
हरताल (न)
तालपत्र (न) ढेंढी
तालपर्णी (स) तालीसपत्र
तालमूलिका (स) मूसली
तालवृंतक (न) पंखा
तालांक (पु) बलदेव
ताली (स) आंवला-तालभेद
तालु (न) तालुआ
तावत् (अ) संपूर्ण-अवधि-मान-अवधारण
तिक्त (पु) रस
तिक्तक (पु) परवर
तिक्तशाक (पु) वरनावृक्ष
तिग्म (न) अतिउष्ण
तितउ (पु) चलनी
तितिक्षा (स) सहना
तितिक्षु (उ) सहनशील

तित्तिरि (पु) तीतर
तिथि (पुस) तिथि
तिनिश (पु) तेंदुआ
तिंतिडी (स) अमिली
तिंतिडीक (न) चूक
तिंदुक (पु) तेंदुआ
तिमि (पु) मछली
तिमिंगिल (पु) जलचर जीवमात्र
तिमित (उ) गीला
तिमिर (न) अँधेरा
तिरस् (अ) छिपना-टेढ़ीगति-टेढ़ा
तिरस्करणी (स) कनात
तिरस्क्रिया (स) अपमान
तिरीट (पु) लोध
तिरोधान (न) ढाँपना
तिरोहित (उ) छिपा
तिर्यच् (उ) तिरछा जानेवाला
तिल्य (उ) तिलकाखेत
तिलक (पुन) तिलक
तिलवाला तिल (न)

कालानोन(न)
तिलकालक(पु)तिलवाला
तिलपर्णी(स)रक्तचंदन
तिलपिंज(पु)निष्फलतिल
तिलपेज(पु) तथा
तिलित्स(पु)छोटासाँप
तिल(३)तिल
तिल्व(पु)लोध
तिष्य(पु)पुष्यनक्षत्र-क
तिष्यफला(स)आँवला
तीक्ष्ण(न)बहुतगर्म-
लोहा-विष-युद्ध-तेज-
तेजस्पर्श(३)
तीक्ष्णगंधक(पु)सहजना
तीर(न) किनारा च
तीर्थ(न)कूपादिजलाशय-
शास्त्र-ऋषियोंसे से-
वितजल-गुरु
तीव्र(३)अतिबहुत
तीव्रवेदना(स)पीड़ा
तु(अ)भेद-पादपूरण
निश्चय चाई(३)
तुंग(पु)नागकेसरि उ-

तुंमी(स)बंबई
तुच्छ(३)खाली
तुंड(न)मुख
तुंडिकेरी(स)कपास
तुंडिभ(३)टुंडवाला
तुंडिल(३)तथा
तुत्थ(न)रसोत
तुत्था(स)नील-इला
तुत्थांजन(न)तूतिया
तुंद(न)पेट सी
तुंदपरिमृज(पु)आल
तुंदिक(पु)बड़ापेटवाला
तुंदिल(पु) तथा
तुन्न(पु)तूनवृक्ष
तुन्नवाय(पु)दर्जी
तुवरिका(स)अरहर
तुंबी(स)लोकी
तुमुल(पुन)वीरोंका
तुरग(पु)घोड़ा
तुरंग(पु)घोड़ा
तुरंगम(पु)घोड़ा
तुरंगवदन(पु)किन्नर
तुरासाह(पु)इन्द्र

तुरुष्क(पु)लोहवान
तुला(स)१००पलकी
तोलविशेष व
तुलाकोटि(पु)पायजे
तुल्य(३)समान
तुल्यपान(न)साथ
पीना
तुवर(पुन)रस
तुष(पु)बेहड़ा भूसी
तुषार(पु)ठंड-ठंडप
र्यायी(३) वितार(६)
तुषित(पु)गणदे
तुष्णीक(३)चुपरहना
तुष्णींशील(३)तथा
तुहिन(न)ठंड
तूण(पु)तरकस
तूणि(स)तरकस
तूणीर(पु)तथा
तूर्ण(न)शीघ्र
तूलिका(स)सलाई
तूल(न)तूत रुई(पु)
तूष्णीकां(अ)चु
पचापरहना

तूष्णीं (अ) चुपचाप
तृण (न) तृण
तृणद्रुम (पु) खजूरभेद
तृणधान्य (न) मुनिअन्न
तृणध्वज (पु) बांस
तृणराज (पु) तालवृक्ष
तृणशून्य (न) बेला
तृण्या (स) घूरा
तृतीयाकृत (उ) तीनबार जुतेखेत
तृतीयाप्रकृति (स) नपुंसक
तृप्त (उ) हर्षित
तृप्ति (स) अघाया
तृष् (स) प्यास
तृष्णाकु (उ) लोभी
तृष्णा (स) वांछा-पिपासा
तेजन (पु) बांस
तेजनक (पु) शरकंडा
तेजनी (स) मूर्वा
तेजित (उ) तीखा
तेज (न) वीर्य्य-प्रभाव दीप्ति-बल
तेम (पु) गीलाकरना

तेमन (न) कढ़ी
तैजसावर्त्तनी (स) घड़िया
तैतिर (न) तीतरोंकाझुंड
तैलपर्णिका (न) चंदनभेद
तैलपायिका (स) चमगादड़
तैलीन (उ) तिलोंकाखेत
तैष (पु) पौषमास
तोक (न) पुत्र, कन्या
तोकक (पु) पपीहा
तोक्म (पु) हरितजव
तोत्र (न) पैनाजिससे हांकते
तोदन (न) बैलोंकेहांकनेकापैना
तोमर (पुन) गुर्ज
तोय (न) जल
तोयपिप्पली (स) जलपीपरी
तोरण (पुन) घरकाफाटक
तौर्यत्रिक (न) नाच, बाजा
त्यक्त (उ) त्यागा
त्याक्त (उ) त्यागा
त्याग (पु) दान
त्रपा (स) लज्जा
त्रपु (न) रांग

त्रय (न) पतलादही
त्रयी (स) वेदसमूह
त्रस (उ) चलनेवाला
त्रसर (पु) नरीजुलाहेकी
त्रस्नु (उ) डरपा (न)
त्राण (उ) रक्षित, रक्षा
त्रात (उ) रक्षित
त्रायन्ती (स) विलापिनी
त्रायमाण (स) चिरायतेका फल
त्रास (पु) डर
त्रिक (न) पीठकेबांसके नीचेकाभाग
त्रिककुत (पु) त्रिकूटपर्वत
त्रिकटु (न) सोंठि मिर्च, पीपरी
त्रिका (स) चौखटा
त्रिकूट (पु) पर्वत
त्रिखण्ड (न स) अखाटें
त्रिखट्टी (स) खटिया
त्रिगुणाकृत (उ) तीनबार केजुतेखेत
त्रितक्ष (सन) तीनबढ़ई
त्रितक्षी (पु) तीनबढ़ई

त्रिदश (पु) देवता
त्रिदशालय (पु) स्वर्ग
त्रिदिव (पु) स्वर्ग
त्रिदिवेश (पु) देवता
त्रिपथगा (स) गंगा
त्रिपुटा (स) निसोत-
गुजराती इलायची
त्रिपुरांतक (पु) शिव
त्रिफला (स) हर्ड, बहे
डा, आंवला
त्रिभंडी (स) श्वेत तिधा-
निसोत
त्रियामा (स) रात्रि
त्रिलोचन (पु) शिव
त्रिवर्ग (पु) धर्म, अर्थ,
काम, क्षय स्थान वृद्धि
त्रिविष्टप (न) स्वर्ग
त्रिविक्रम (पु) विष्णु
त्रिवृत (स) निसोत वा
श्वेत निधारा
त्रिवृता (स) तथा
त्रिसीत्य (३) तीनवारके
त्रिस्रोतस (स) गंगा

त्रिहल्य (३) तीनवारके जु
तेखेत
त्रिहायणी (स) ३ वर्ष की
त्रुटि (स) इलायची-सम
य-थोड़ा-संदेह
त्रुटी (स) तथा
त्र्यूषण (न) सोंठि मिर्च
पीपर का मिला पदार्थ
त्रेता (स) तीनों अग्नि-
यों का नाम-दूसरा युग
त्रोटि (स) चोंच
त्र्यम्बक (पु) शिव
त्र्यंवकसख (पु) कुवेर
त्वक्क्षीरा (स) वंशलोचन
त्वक्पत्र (न) तज
त्वक्सार (पु) बांस
त्वच् (स) वक्कल-चाम
त्वच (न) तज
त्वचिसार (पु) बांस
त्वरा (पु, स) वेग
त्वरित (न) शीघ्र
त्वरितोदित (न) धमका
त्वष्ट (३) थोड़ा किया

त्वष्टा (पु) बढ़ई-विश्वक-
र्मा-सूर्य्य
त्व (३) भिन्न
त्विषांपति (पु) सूर्य्य
त्विष् (स) तेज शोभा
त्सरु (पु) तलवार की मूठ

द

दंश (पु) डांस-मच्छर
दंशन (न) कवच
दंशी (स) मसा जीव
दंशित (३) मंत्रादि से रक्षित
दंष्ट्री (पु) शूकर
दक्ष (पु) चतुर
दक्षिण (३) उदार
दक्षिणास्थ (पु) रथवान
दक्षिणाग्नि (पु) यज्ञाग्नि
दक्षिणार्ह (३) दक्षिणा के
योग्य
दक्षिणीय (३) तथा
दक्षिणेर्मा (पु) दहने अंग
में घाववाला मृग
दग्ध (३) जरा
दधिका (स) जला अन्न

दंड(पु) सूर्य्यकेपासका ग्रह- लाठीसेदंडदेना आदि(पु॰न)
दंडधर(पु) यमराज
दंडनीति(स) न्याय
दंडविष्कंभ(पु) खंभा
दंडाहत(न) मठा
दद्रुघ्न(पु) पमार
दद्रुण(उ) दादवाला
दद्रुरोगी(उ) दादवाला
दधित्थ(पु) कैथ
दधिफल(पु) कैथ
दधिशक्तु(पु॰ बहु॰) दहीसे मिला हुआ सत्तू
दनुज(पु) असुर
दन्त(पु) दांत
दन्तधावन(पु) कत्था
दंतभाग(पु) हाथीकेआगेका दंतभाग
दंतशठ(पु) कैथ जभीरी
दंतशठा(स) चूक
दंतावल(पु) हाथी
दंतिका(स) जयपाल-वृक्ष

दंती(पु) हाथी-
दंतशूक(पु) सर्पमात्र
दभ्र(उ) थोड़ा
दम(पु) दंड इंद्रियजीत
दमथ(पु) इंद्रियजीत
दमित(उ) तथा
दमुनस(पु) आग
दम्पती(पु) स्त्रीपुरुष
दंभ(पु) ठग छल
दंभोलि(पु) वज्र
दम्य(पु) तरुणबछड़ा
दया(स) कृपा
दयालु(उ) कृपालु
दयित(उ) प्यारा
दर(पुन) भय गड्ढा
दरत(स) म्लेक्षजाति
दरिद्र(उ) दीन
दरी(स) बनाईहुईगुफा
दर्दुर(पु) मेंडक
दर्पक(पु) कामदेव
दर्पण(पुन) शीशा
दर्भ(पु) डाभ
दर्वी(स) करछी

दर्वीकर(पु) सर्प
दर्श(पु) अमावसवा अमावसकेदिनकायज्ञ
दर्शक(पु) द्वारपाल
दर्शन(न) देखना
दल(न) पत्ता
दव(पु) बन बनकीआग
दवीष्ठ(उ) अतिदूर
दवीयस(उ) तथा
दशन(पुन) दांत
दशनवासस(न) होठ
दशबल(पु) जिन बुध
दशमी(पु) अतिबूढ़ा
दशमीस्थ(पु) अति- बूढ़ा- क्षीणरोग
दशा(पु॰स॰बहु॰) वस्त्रकीगोट- अवस्था
दस्यु(पु) चोर शत्रु
दस्र(पु) स्वर्गकावैद्य
दहन(पु) आग
दाक्षाय्य(पु) गीध
दाक्षायिणी(स) दक्षकीकन्या

दाक्षिणाय(उ) दक्षिणा देने के योग्य
दाडिम(पु) अनार
दाडिमपुष्पक(पु) लालकंजा
दांडपाता(स) लाठीका गिरना
दात्यूह(पु) कालाकाग
दात्र(न) हँसिया
दात(उ) कटा
दान(न) त्याग-हाथीका मद
दानव(पु) असुर
दानवारि(पु) देवता
दानशौंड(उ) अतिदानी
दांत(पु) तपस्याके क्लेशका सहना-इंद्रियजीत(उ)
दान्ति(स) इंद्रियजीत
दापित(उ) अहंकाररहित
दामनी(स) डोरी
दामोदर(पु) विष्णु
दाम्भिक(उ) छली
दायाद(पु) सुत-बांधव
दारा(स) बहु० स्त्री
दारद(पु) विषभेद
दारित(उ) फाड़ा

दारु(न·पु) काठ-देवदारु
दारुण(न) डर
दारुहरिद्रा(स) दारुहलदी
दारुहस्तक(पु) काठकी करछी
दार्वाघाट(पु) कठफोरा जीव
दार्विका(स) गोभी-रसोत
दार्वी(स) दारुहलदी
दार्विक(उ) देविकासे उत्पन्न
दाशपुर(न) मोथा
दास(पु) धीवर-टहलुआ
दासी(स) कालेफूलकी किंटी
दासेय(पु) दास
दासेर(पु) दास
दिगम्बर(उ) नंगा
दिग्ध(उ) विषके भरेवान-चंदन दिलगाहुआ
दित(उ) कटा
दितिसुत(पु) असुर
दिधिषु(पु) दोवार विवाही स्त्रीका पति
दिधिषू(पु) तथा
दिन(न) दिवस

दिनांत(न) सांझ
दिवस(पुन) दिन
दिवसपति(पु) इंद्र
दिव(स) स्वर्ग, आकाश
दिवा(अ) दिनार्थक
दिवाकर(पु) सूर्य्य
दिवाकीर्त्ति(पु) नाईवा नाउ-चांडाल
दिविषद्(पु) देवता
दिवौकस(पु) देवता-चातक
दिव्य(न) नेत्रवालावा नारीकाशाक
दिव्योपपादक(उ) देवता
दिश(स) दिशा
दिश्य(उ) दिशामें होने
दिष्ट(पुन) समय भाग्य
दिष्ट्या(अ) आनंद
दिष्टांत(पु) मृत्यु
दीक्षित(पु) यज्ञमें शिक्षा करनेवाला
दीदिवि(पु) भात
दीधिति(स) किरण
दीन(उ) दरिद्री

दीनार (पु) निष्कमान	दुरध्व (पु) कुमार्ग	दुष्कृत (न) पाप
दीप (पु) दीवा	दुलि (स) कछुवी	दुष्टु (अ) निंदा
दीपक (पु) अजवायन-	दुरालभा (स) जवासा	दुष्पत्र (पु) वृक्षभेद
मोरकीचोटी-प्रकाश	दुरित (न) पाप	दुष्य (न) डेरा तंबू
दीप्ति (स) तेज	दुरोदर (पु) जुआरी-	दुहिता (स) पुत्री
दीप्य (पु) अजमोद	वाजी-जुआ (न)	दुहितुःपति (पु) दामाद
दीर्घ (३) लंबा	दुर्ग (न) गढ़	दूत (पु) दूत
दीर्घकोशिका (स) जौंक	दुर्गत (३) दरिद्र	दूती (स) दूती
दीर्घदर्शी (पु) पंडित	दुर्गति (स) नरक	दूत्य (न) दूतकाकाम
दीर्घपृष्ठ (पु) सर्पमात्र	दुर्गंध (पु) बुरागंध	दून (३) तपा
दीर्घदन्त (पु) अरलू	दुर्गसंचर (पु) कोटमार्ग	दूर (३) दूर
दीर्घसूत्र (३) ढिलंगा	दुर्गा (स) पार्वती	दूरदर्शी (पु) पंडित
दीर्घिका (स) बावड़ी	दुर्जन (३) दुष्ट	दूर्वा (स) दूब
दुःख (३) पीड़ा	दुर्दिन (न) मेघसे ढ	दूष्य (न-व हु) वस्त्रका
दुःप्रधर्षणी (स) बैंगन	दुर्नामक (न) ववासीर	दूषिका (स) कीचड़
दुष्कम् (अ) निंद्य	दुर्नामन् (पु) जौंकभेद	दृढ़ (न) अतिशय
दुःस्पर्श (पु) जवासा	दुर्बल (पु) लटा	वहुत कठिन (३)
दुःस्पर्शा (स) भटकटाई	दुर्मना (३) उदास	समर्थ (३) मोटा (३)
दुकूल (न) रेशमकेकपड़ा	दुर्मुख (३) अप्रियकह	दृढसंधि (३) वड़ामि-
दुग्ध (न) दूध	दुर्वर्ण (न) चाँदी	लापी
दुग्धिका (स) दुधिया	दुर्विध (३) दरिद्र	दृति (पु) मशक
दुद्रुम (पु) हराप्याज	दुर्हृद् (पु) शत्रु	दृब्ध (३) गुथियाया
दुंदुभि (पु) नगारा-अक्ष (स)	दुश्च्यवन (पु) इंद्र	दृशा (स) आँख ज्ञान

दृषत्(स)पत्थर
दृष्ट(न)दृष्टफल
दृष्टरजस(स)प्रथमरजस्व ला
दृष्टांत(पु)तर्कादिशास्त्र-
उदाहरण
दृष्टि(स)आँख-ज्ञान-
देव(पु)राजा
देवकुसुम(न)लौंग
देवकीनंदन(पु)विष्णु
देवखात(न)विनाबनाई
गुफा
देवखातक(न)सरोवर
देवघ्न(उ)देवपूजक
देवछंद(पु)१००लड़-
काहार त्रण
देवजग्धक(न)सुगंध
देवता(स)देवता
देवताड़(पु)वंदाल
देवदारु(पुन)वृक्षभेद
देवद्रूच्(उ)पूजक
देवन(पु)पांशा-खेल(न)
देववल्लभ(पु)नागके
सरि

देवभूय(न)देवमेंमिल ना
देवमातृक(उ)वर्षापा-
लितदेश
देवर(पु)देवर
देवल(पु)पंडा
देवसभा(स)देवत्तोंकी
देवाजीव(पु)पुजारी
देवाजीवी(पु)तथा
देवी(स)बड़ीरानी-पिं
डरशाक
देवृ(पु)देवर
देव्(पु)देवता
देश(पु)देश
देशरूप(न)न्याय
देवसायुज्य(न)देव
देह(पुन)शरीर
देहली(स)डेवढ़ी
दैतेय(पु)असुर
दैत्य(पु)असुर
दैत्यगुरु(पु)भृगु
दैत्या(स)तालीसपत्र
दैत्यारि(पु)विष्णु
दैर्घ्य(न)वस्त्रकीलं
बाई

दैव(न)भाग्य-देव-
तार्थअर्थात्अंगुलियों
काआगा
दैवज्ञ(पु)ज्योतिषी
दैवज्ञा(स)पंडितास्त्री
दैवत(पुन)देवता देव
दिन ली
दोला(स)नील-डो
दोषज्ञ(पु)वैद्य-पंडित
दोषा(अ)रात्रि
दोषैकदृक्(उ)केवलदो
दोस्वादोः(पु)बाँह
दोहद(पुन)मनोरथ
दोहदवती(स)गर्भिणी
कीअभिलाष
द्युः(अ)आकाश
द्युति(स)शोभा,तेज
द्युमणि(पु)सूर्य
द्युम्न(न)धन
द्यूत(पुन)जुआ
द्यूतकारक(प)फड़वा
द्यूतकृत(पु)जुआरी
द्यो(स)स्वर्ग

द्योत(पु)सूर्य्यकातेज	द्रुवय(न)तोलनाप	द्वास्थ(पु)द्वारपाल
द्रव(पु)क्रीडा,भागना	द्रुहिण(पु)ब्रह्मा	द्वास्थित(पु)तथा
द्रवंती(स)मूसाकारणी	द्रोण(पु)तोलभेद	द्विगुणाकृत(उ)दोवार
मूसरी ।धन बल	काग-द्रोणाचार्य्य	जुतेखेत ।ह्मण पक्षी
द्रविण(न)पराक्रमी-	द्रोणकाक(पु)डोम	द्विज(पु)पक्षी-दंत-ब्रा
द्रविणांतरस(न)पराक्रमी	काग दूधकीगौ	द्विजराज(पु)चंद्रमा
द्रव्य(न)धन-सुंदर	द्रोणक्षीरा(स)१०सेर	द्विजा(स)गगनधूरि रेणु
जीव-पृथ्वीआदि	द्रोणदुघा(स)तथा	द्विजाति(पु)ब्राह्मण
द्राक्(अ)शीघ्र	द्रोणी(स)डोंगी,नील	द्विजिह्व(पु)सर्प-चुगल
द्राक्षा(स)दाख ।भू	द्रोहचिंतन(न)द्रोही	द्वितीया(स)विवाहितास्त्री
द्राघिष्ट(उ)अतिप्राय	द्रौणीक(उ)द्रोणभा	द्वितीयाकृत(उ)दोवार
द्राव(पु)भागना	जिसखेतमेंबोया	जुतेखेत
द्राविडक(पु)कचूर	जाय ।लह	द्विप(पु)हाथी
द्रु(पु)वृक्ष ।रू	द्वन्द्व(न)जोड़ा-क	द्विपाद्य(पु)दूनादंड
द्रुकिलिम(न)देवदा	द्वयातिग(पु)व्या-	द्विरद(पु)हाथी
द्रुघण(पु)मुद्गर	सादिऋषि	द्विरेफ(पु)भौंरा
द्रुण(पु)बीछी	द्वादशांगुल(पु)वि	द्विवर्षा(स)दोवर्षकी
द्रुत(न)शीघ्र-पिघ-	द्वादशात्मा(पु)सूर्य	द्विष(पु)वैरी
ला(उ)पिघला(उ)	द्वापर(पु)संशय-	द्विषत(पु)शत्रु
द्रूता(उ)रसीला	युग	द्विष्टापा(अ)आनंदार्थ
द्रुम(पु)वृक्ष	द्वार(स)द्वार	द्विहल्य(उ)दोवारजु-
द्रुमामय(पु)लाख	द्वार(न)द्वार	तखेत-दोहलोंसेजु
द्रुमोत्पल(पु)कनेर	द्वारपाल(पु)पोलि	तखेत

द्विहायनी (स) २ वर्षकी गौ
द्वीप (पु-न) टापू
द्वीपवती (स) नदी
द्वीपी (पु) सिंह
द्वेषण (पु) शत्रु
द्वेष्य (३) वैरकेयोग्य
द्वैध (न) वलवान्केसाथमेल [illegible]
द्वैप (३) व्याघ्रकेचामसेमढा
द्व्यारथ
द्वैमातुर (पु) गणेश
द्व्यष्ट (न) तांबा

ध

धट (पु) तराजू
धन (न) द्रव्य
धनंजय (पु) आग
धनद (पु) कुबेर
धनहरी (स) राक्षसी - वृ-क्षविशेष
धनाधिप (पु) कुबेर
धनी (पु) धनवान्
धन्वी (पु) धनुषधारी
धनिष्ठा (स) नक्षत्रविशेष
धनु (पु) धनुष
धनुर्द्धर (पु) धनुर्धारी

धनुर्मध्य (न) चापकीमूठि
धनुष्पट (पु) चिरौंजी
धनुष्मान (पु) चापधारी
धनुस (पु-न) कमान
धन्य (३) भाग्यवान्
धन्याक (न) धनियां
धन्याम्ल (न) कांजी
धन्वयास (पु) जवासा
धन्वन् (पु) मरुभूमि-ध-
नुष (न)
धमन (पु) नरकुल
धमनी (स) परवार नाड़ी
धम्मिल (पु) वालोंकाचूड़ा
धर (पु) पहाड़
धरणि (स) धरती
धरा (स) धरती
धरित्री (स) धरती
धर्म (पु-न) पुण्य-वेदवि
धि-यमराज-न्याय
स्वभाव-आचार-अ-
मृतपीनेवाला [illegible]
धर्मचिंता (स) धर्मकीठ
धर्मध्वजी (पु) ठग

धर्मपत्तन (न) मिर्च
धर्मराज (पु) जिनवाबुध
यमराज-युधिष्ठिर
धर्मसंहिता (स) स्मृति
धर्षिणी (स) छिनारि
धव (पु) दुलहा-कत्था
मनुष्य-पति
धवल (पु) श्वेत [illegible]
धवला (स) चित्रविचित्र
धातकी (स) आवला
धातु (पु) पहाड़सेउत्पन्न
वस्तु-श्लेष्मादि-रसर-
क्तादि-महाभूत-महाभू-
तोंकेगुणगंधादि-इंद्रि-
यादि-मनःशिलादि
शब्दयोनिअर्थात्भूस-
त्तादि
धातृ (पु) ब्रह्मा [illegible]
धातृपुष्पिका (स) आ-
धात्री (स) उपमाता-ध-
रती-आमलेकावृक्ष
धाना (स-बहु) चोरी
धानुष्क (पु) धनुषधारी

धान्य(न) सामान्यअन्न
धान्याम्ल(न) काँजी
धाम(न) गृह-देह-प्रभाव
धामार्गव(पु) चिरचिटा
धाय्या(स) ऋग्जल नेकीऋचा
धारण(न) वाहन
धारणा(स) मर्य्यादा
धारा(स) घोड़ेकेपांव कीचाल
धाराधर(पु) मेघ
धारासंपात(पु) मेघ-
धार्त्तराष्ट्र(पु) बनतीतर
धावनी(स) सिंहपुच्छी
धिक्(अ) निंदा
धिक्कृत(उ) धिक्कारी
धिष्ण्य(न) स्थान-नक्षत्र-आग
धिषण(पु) बृहस्पति
धिषणा(स) बुद्धि
धिष्णाकु(उ) ढीठ
धी(स) बुद्धि
धींद्रिय(न) ज्ञानेंद्रिय

धीमत(पु) पण्डित
धीमती(स) बुद्धिवानी
धीर(न) केसरी-पंडित पु
धीवर(पु) मल्लाह
धीशक्ति(स) बुद्धिकीश
धीसचिव(पु) मंत्री
धुत(उ) कँपाहुआ
धुनी(स) नदी
धुरंधर(पु) बलवान्बैल
धुर्वाधूः(स) धुरी
धुरीण(पु) बलवान्बैल
धुर्य्य(पु) तथा
धुर्वह(पु) तथा
धुवित्र(न) मृगचर्मसेर-
धुस्तूर(पु) धतूरा
धूः(स) धुरी
धूत(उ) त्यागा
धूपायित(उ) तपागया
धूपित(उ) तथा
धूमकेतु(पु) आग-धूमभयीतारा
धूमयोनि(पु) मेघ
धूमल(पु) मैला

धूम्या(स) धुऑंकासमूह
धूम्याट(पु) खुटकबढ़ैया
धूम्र(पु) धूमिल
धूर्जटि(पु) शिव
धूर्त(पु) धतूरा-जुआरी
धूलि(स) धूरि
धूसर(पु) कछुसेत
धृति(स) धारणा-धैर्य्य
धृष्ट(उ) ढीठ
धृष्णग्विपात(उ) ढीठ
धृष्णज(उ) ढीठ
धृष्णि(पु) किरण
धेनु(स) तरितकीव्याहीगौ
धेनुका(स) हथिनी-नईगौ
धेनुष्या(स) गिरोधरीगौ
धैनुक(न) धेनुओंकासमूह
धैवत(पु) गानविद्याकास्वर
धौतकौशेय(न) रेशमीधुपेवस्त्र
धौरेय(पु) बलवान्बैल
धौतरिक(न) घोड़ेकीगति
ध्याम(न) सुगंधतृण
ध्वज(पुन) झंडा

ध्वजिनी (स) सेना
ध्वनि (पु) शब्द
ध्वनित (त्रि) बाजाहुआ
ध्वस्त (त्रि) चुआ हुआ
ध्वांक्ष (पु) काग-बगला पक्षी
ध्वान (पु) शब्द
ध्वांत (पुन) अँधेरा
ध्रुव (पु) नामविशेष-शाखापत्ररहितवृक्ष-नित्य (त्रि) नक्षत्रभेद-निश्चित (न)
ध्रुवा (स) सालपर्णी-स्रुवाकाभेद

न

नकुलेष्टा (स) सनाय
नक्त (अ) रात
नक्तक (पु) फटावस्त्र-सू
नक्तमाल (पु) करंजुआ
नक्र (पु) नाका
नक्षत्र (न) तारा
नक्षत्रमाला (स) २७ मोतियोंकाहार
नक्षत्रेश (पु) चंद्रमा
नख (पुन) कङ्कूदन
नौ (पुन)
नखर (पुन) नख
नग (पु) पर्वत
नगौकस् (पु) पक्षी
नग्न (त्रि) नंगा
नग्नहू (पु) सुराबीज
नगरी (स-न) नगर
नग्निका (स) कङ्कुवड़ी कन्या-नंगी
नटन (न) नाचना
नट (पु) सरिवंन-अरलू-नट
नटी (स) पवार
नड (पु) नरसर
नडसंहति (पु) नरईका
नडप्रा (स) तथा
नडवत् (त्रि) नरसलका
नड्वल (त्रि) तथा
नत (त्रि) टेढा
नतनासिक (पु) चपटी
नदी (स) नदी
नदीमातृक (त्रि) जिस देशमेंनदीउत्पन्नहो
नदीसर्ज (पु) अर्जुनवृक्ष
ननांदा (स) ननद
ननु (अ) प्रश्न-अवधारण-अनुज्ञा-अनुनय-आमंत्रण-विरोधोक्ति
नन्दक (पु) लक्ष्मीपतिकाखड्ग
नंदन (न) इंद्रकाबाग
नंदिवृक्ष (पु) तूनवृक्ष
नंद्यावर्त्त (पुन) गृहभेद
नपुंसक (न-पु) हिजरा
नप्त्री (स) नातिन
नद्ध्री (स) चामकीरस्सी
नभ (न) आकाश-श्रावनमास (पु)
नभसंगम (पु) पक्षी
नभस्य (पु) भाद्रपदमास
नभस्वत् (पु) पक्षी
नभसित (त्रि) पूजा
नमस् (अ) नमस्कार
नमस्कारी (स) गुलखेरा
नमस्या (स) पूजा

नमस्यि॥(३) पूजा	नवमालिका(स) वर्षा	नागर(न) सौंठ - नगार
नमुचिसूदन(पु) इंद्र	कीवेलि | कीव्याईगो	मोथा - कसेरू
नय(पु) नीति	नवसूतिका(स) लरित	नागरंग(पु) नारंगी
नयन(न) आंख	नवांवर(न) नयावस्त्र	नागलोक(पु) पाताल
नर(पु) मनुष्य	नवीन(३) नया	नागवला(स) कंकही
नरक(पु) स्थानविशेष	नवोद्धृत(न) मक्खन	नागवल्ली(स) पान
नरवाहन(पु) कुवेर	नव्य(३) नया	नागसंभव(न) सेंदुर
नर्त्तकी(स) नाचनेवाली	नष्ट(३) छुपा हुआ	नागांतक(पु) गरुड
नर्त्तन(न) नाचना	नष्टचेतना(स) मूर्छा	नाट्य(न) नाचना
नर्मदा(न) नदीविशेष	नष्टाग्नि(पु) आग्नष्ट	नाडिंधम(पु) सुनार
नर्म(न) क्रीडा	नष्टेंदुकला(स) अमाव	नाडी(स) नाडी नरई
नल(न) तृण त्रि	सविशेष	घड़ी - समय - ६ क्षण
नलकूवर(पु) कुवेरका पु	नस्तित(पु) बैल	नाडीव्रण(पु) नहरूर
नलद(न) खस	नस्योत(पु) तथा	नाथवत्(३) परतंत्री
नलमीन(पु) जलतृणचा	ना(अ) नहीं	नाद(पु) शब्द
रीम छली	नाक(पु) स्वर्ग	नादेयी(स) जलवेत -
नलिन(न) कमल	नाकु(पु) वल्मीक	नारंगी - खांसन - भू-
नलिनी(स) कमलनी	नाकुली(स) सनाय	मि जामुन
नली(स) पमार	नाग(पु) सांप - हाथी	नाना(अ) अनेक -
नल्व(पु) ४०० हाथ	सीसा(न) अर्शार्थक	उभयार्थक - वर्जनार्थक
नव(३) नया	नागकेसर(पु) नागके	नानारूप(३) नाना
नवदल(न) नवीनदल सर	[illegible]	प्रकार
नवनीत(न) मक्खन	नागजिह्विका(स) [illegible]	नांदीकर(३) आशि

षुसेस्तुतिकर्त्ता	नालं (न.) कमलदंड	निःश्रेयस (न.) मोक्ष
नांदीवादी (त्रि) तथा	नाई	निःषम (अ.) निंद्य
नापित (पु.) नाई	नाविक (पु.) पतवार-	निःसरण (न.) निकल-
नाभि (स्त्री) गाड़ीकी हाल	कड़नेवाला	नेका द्वार
क्षत्रिय (पु.) मुख्य	नाव्य (त्रि) नावके	निःस्व (त्रि) दरिद्र
नाम (अ.) प्रसिद्धि, क्रो-	द्वारा उतरनेके योग्य	निकट (त्रि) पास
ध, सत्यस्वरूपका अं-	जल	निकर (पु) समूह
गीकार, निंदा	नाश (पु.) नाश	निकर्षण (न) अच्छा-
नामन् (न) नाम	नासत्य (पु.) स्वर्गवैद्य	स्थान
नामधेय (न.) तथा	नासा (स.) चौखटके	निकष (पु.) कसौटी
नाय (पु.) नीति	ऊपरका काठ, नाक	निकषा (अ.) समीप
नायक (पु.) स्वामी	नासिका (स.) नाक	निकषात्मज (पु.)
नारक (पु.) नरक, प्रेत	नास्तिकता (स.) मि-	राक्षस
नाराच (पु.) लोहमय-	थ्याज्ञान	निकाम (न) चाह
बाण	निःकासित (त्रि) नि-	निकाय (पु.) धर्मिवा-
नाराची (स.) सुनारका	काला हुआ	लोंका समूह
कांटा	निःप्रभ (त्रि) बिनातेज	निकाय्य (पु) घर
नारायण (पु.) विष्णु	निःशलाक (त्रि) एकांत	निकाय्य (पु.) तथा
नारायणी (स.) शता-	निःशेष (त्रि) सब	निकार (पु.) अपकार,
वरी	निःशोध्य (त्रि) मल-	निकालना, अन्न-
नारिकेर (पु.) नारियल	रहित	दिका
नारी (स.) स्त्री	निःश्रेणी (स.) काठ	निकारण (न) मारे
नाल (पु.) कमलदंड	की सीढ़ी	निकुञ्चक (पु.) तोल

विशेष्य	वेद और खानयाँ	अतिशय,बहुत
निकुञ्ज(पु-न)कुंज	पन-	नित्य(न-)लगातार
निकम्म(पु-)जग्य-	निगाद(पु-)कह	सदैव(३)
पास,बज्रदंती	ना,बोलना	निदाघ(पु-)पसीना
निकरम्ब(न-)समू-	निगार(पु)खाना	ग्रीष्म-ऋतु
ह,कुंड	निगाल(पु-)घोड़े-	निदान(न-)आ-
निकृत(३)निकाल	कि गले	दि कारण
दुष्ट,कपटी	निग्रह(पु-)नमा	निदग्ध(३)बढ़ा
निकृति(स)छल	ना	निदिग्धिका(स)
नितम्ब(पु-)चौका	निघ(पु-)बराबर	भटकटाई
चूतर	वृक्षजमे हुये	निदेश(पु-)आज्ञा
निकृष्ट(३)अधम	निघस(पु-)खाना	निद्रा(स)नींद
निकेतन(न-)घर	निघ्न(३)आधीन	निद्राण(३)सोया
निकोचक(पु-)चि-	जभात्र फैल	निद्रालु(३)सो-
नगोजा	निचाल(पु-)समुद्र	नेवाला
निकाण(पु-)वीणा	निं ल(३)परी	निधन(पु-न)मृ-
आदि का शब्द	निज(३)अपना	त्यु,काल
निक्काण(पु-)तथा	नित्य जीव	निधि(पु)भंडार
निखिल(३)सब	नितंवतरु(पु-)	निधुवन(न)मैथु-
निगड(पु-न)हाथी	नितंवस्थ(पु-)नि-	थुन
की सांकर	तम्बकश द्ध	निध्यान(न)दे-
निगद(पु-)कहना	नितस्विनी(स)स्त्री	खना
निगम(पु)नगर	नित्यांत(न-)	निनद(पु-)शब्द

निनाद (पु) शब्द
निंदा (स) बुराकहना
निप (पु.न) घड़ा
निपठ (पु) पढ़ना
निपाठ (पु) पढ़ना
निपान (न) प्याऊ
निपात (न) गिरना
निपुण (त्रि) ज्ञाता
निवर्हण (न) मारा
निभ (त्रि) सदृश
निभृत (त्रि) विनीत
निमित्त (न) हेतु-चिन्ह
निमेष (पु) पलकपात
निम्न (त्रि) गहरा
निम्नगा (स) गाहरा
निम्ब (त्रि) गहरा, नींब
निम्बतरु (पु) नींब
नियति (स) भाग्य
नियंता (पु) रथवान
नियम (पु) स्वीकार-व्रत-कर्मविशेष-लेन देन ने वाला
नियामक (पु) खेव-

नियुत (न) संख्याभेद
नियुद्ध (न) बाहुयुद्ध
नियोज्य (पु) दास
निरंतर (त्रि) सघन
निरय (पु) नरक
निरर्गल (त्रि) अबाध
निरर्थक (त्रि) व्यर्थ
निरवग्रह (त्रि) स्वतंत्र
निरसन (न) निरादर
निरस्त (न) धमकाया फेंकेगयेबाण (त्रि) निरादरकियाहुआ (त्रि)
निराकरिष्णु (त्रि) निकालनेवाला
निराकृत (त्रि) निरादरा
निराकृति (पु) वेदभ्यासरहित-निरादर (स)
निरामय (त्रि) अरोग
निरीष (न) हलकाफा रा
निर् (अ) निषेध
निर्ऋति (स) अलक्ष्मी
निर्गुंडी (स) स्योंड़ी-सिंभालु-हरसिंगार

फालसा
निर्ग्रथन (न) मारा
निर्घोष (पु) शब्द
निर्जर (पु) देवता
निर्जितेंद्रियग्राम (पु) जितेंद्रिय
निर्झर (पु) झरना
निर्णय (पु) निश्चय
निर्णिक्त (त्रि) मलरहित
निर्णेजक (पु) धोबी
निर्देश (पु) आज्ञा
निर्बंधन (न) वीणाकाबंधन
निर्वृत्त (त्रि) घिराहुआ
निर्भर (न) बहुत
निर्मद (पु) विनामदका हाथी
निर्मुक्त (पु) कैंचुलीहीनसर्प
निर्मोक (पु) कैंचुली
निर्याण (न) हाथीका देखना
निर्यातन (न) वैरशुद्धि-दान-धरोहरि-लौटादेना

निर्यूह(पु)द्वार-शिरोभूषन काढ़ाहुआरस-खूंटी
निर्वपन(न)दान
निर्वर्णन(न)देखना
निर्वहण(न)नाटकसंधि
निर्वाण(न)मोक्ष-बुझा(३)
निर्वात(३)पवनरहित
निर्वाद(पु)निंदा
निर्वापित(न)माराहुआ
निर्वार्य(३)दुखमेंभीआनंदसेकार्यकर्त्ता
निर्वासित(न)माराहुआ
निर्वृत्त(३)सिद्धजन
निर्वेश(पु)वेतन-बदला
निर्व्यथन(न)छेद-पोल
निर्हार(पु)युक्तिसेशल्यादिनिकालना
निर्हारी(पु)बहुतदूरजानेवालासुगंध
निलय(पु)घर
निवह(पु)समूह
निवात(३)निवास-वायुरहित-बखतर

निवाप(पु)पितरोंकेलियेदान
निवीत(न)कंठमेंमालाकारजनेऊ |रा
निवीत(३)गोट-किन
निवेश(पु)सेनानिवास
निशा(स)रात्रि
निशांत(न)घर
निशापति(पु)चंद्रमा
निशारण(न)मरा
निशाह्वा(स)हलदी
निशित(३)तीखा
निशीथ(पु)आधीरात
निशीथिनी(स)रात
निश्चय(पु)निर्णय
निषंग(पु)तरकस
निषंगी(पु-न)धनुषधारी
निषद्या(स)बाजार
निषद्वर(पु)कीचड़
निषध(पु)पर्वतोंकाभेदविशेष-

निषाद(पु)गानेकास्वर-चांडाल
निषादी(पु)
निषूदन(न)मारा
निष्क(पु-न)१०८कर्षभरसोना-सोनेकाछातीकागहना-पलमात्रतोल-दीनार
निष्कला(स)विनारजवालीस्त्री
निष्कासित(३)निकाला
निष्कुट(पु)घरकेपासकाबाग
निष्कुटि(स)इलायची
निष्कुह(पु)खोखला
निष्क्रम(पु)बुद्धिकीशक्ति
निष्ठा(स)नाटककीसंधि-सिद्धि-नाश
निष्ठान(न)कढ़ी
निष्ठीवन(न)थूकना
निष्ठेव(पु)थूकना

निष्ठुर(न)कर्कशकह-
ना- कठिन (त्रि)
निष्ठ्यूत(त्रि)भेजा
निष्णात(त्रि)ज्ञाता
निष्पक्क(त्रि)अच्छापका
निषन्न(त्रि)सिद्ध
निष्पाव(त्रि)अन्नादि शुद्धकरना [ति
निष्क्रम(पु)तिनाका-
निष्प्रवाणि(त्रि)नयावस्त्र
निसृष्ट(त्रि)फेंका [हुआ
निसर्ग(पु)स्वभाव-स्व[रूप
निस्त्र्हण(न)मारना
निस्तल(त्रि)गोल
निस्त्रिंश(पु)तलवार
निस्राव(पु)मांड
निस्वन(पु)शब्द
निस्वान(पु)शब्द
निहनन(न)मारना
निहाका(स)गोह
निहिंसन(न)मारना
निहीन(पु)नीच

निह्नव(पु)छिपाना
निह्राद(पु)शब्द
नीकाश(त्रि)सदृश
नीच(पु)नीच
नीचि(त्रि)छोटा
नीचैस्(अ)थोड़ा
नीड(पु·न)घोंसला
नीडोद्भव(पु)पक्षी
नीध्र(न)घरछाने केसमीपकीभीति
नीप(पु)कदंब
नीर(न)जल
नील(पु)काला
नीलकंठ(पु)मोर-
शिव- [कीड़ा
नीलंगु(पु)छोटा
नीललोहित(पु)
महादेव-शिव
नीला(स)मक्खी
नीलांबर(पु)बलदेव
नीलांबुजन्मा(न)
नीलकमल [गार
नीलिका(स)हरसिं

फालसा
नीलिनी(स)नील
नीली(स)नील
नीवाक(पु)धनादि
कासंग्रह [न्न
नीवार(पु)मुनिअ-
नीवी(स)मूलधन
स्त्रीकेकमरमेंकीवस्त्र
कीगांठि [वास
नीवृत(पु·स)जन-
नीशार(पु)रजाई
नीहार(पु)हिम
नु(अ)पूछना-वि
कल्पार्थक
नुति(स)स्तुति
नुत्त(त्रि)भेजा
नुन्न(त्रि)भेजा
नूतन(त्रि)नया
नूत्न(त्रि)नया
नूद(पु)तूत
नूनं(अ)तर्क-
अर्थनिश्चय
नूपुर(पु·न)

बिछिया - पांयजेब
नृत्य (न) नाचना
नृप (पु) राजा
नृपलक्ष्म (पु) राजाका छत्र
नृपासन (न) राजगद्दी
नृशंस (उ) हिंसक
नेत्र (न) आंख - जड़ बस्त्र
नेत्राम्बु (न) आंसू
नेता (पु) पति
नेदिष्ट (उ) अतिपास
नेपथ्य (न) सांगकाघर
नेमि (स) गाड़ीकीहाल - कूपकाचौखटा
नेकभेद (उ) अनेकप्रकार
नैगम (पु) बनियां, नागर
नैचिकी (स) उत्तमगौ
नैपाली (स) मलाप्रिल नैपाल देशकी
नैमेय (पु) लेनदेन
नैयग्रोध (न) बड़काफल
नैर्ऋत (पु) राक्षस

नैर्ऋतीदिशाकापति
नैष्किक (पु) खजांची
नैस्त्रिंशिक (पु) तलवारकाधारणकरनेवाला
नो (अ) अभाव - नहीं
नौ (स) नाववानौका
नौकादंड (पु) डांड़, कर
न्यक्ष (उ) संपूर्ण - अधम
न्यग्रोध (पु) वरगद - व्यामअर्थात् वेमा
न्यग्रोधी (स) मूसरी
न्यंकु (पु) मृगभेद
न्यकु (उ) छोटा
न्यस्त (उ) फेंका
न्याद (पु) खाना
न्याय (पु) न्याय
न्याय्य (उ) न्यायसे - उचित
न्यास (पु) धरोहर
न्युङ्ख (पु) सामवेदकाओंकार
न्युब्ज (उ) कुबड़ा
न्यून (उ) निंद्य

प

पक्कण (पु-न) जंगलियोंकागांव
पक्व (उ) पका
पक्ष (पु) १५दिनरात - पंख केशसमूह - धनुषकापंख सहाय
पक्षद (न) द्वारकेपासकाद्वार
पक्षति (स) पड़वातिथि पंखकीमूलवाजड़
पक्षद्वार (न) द्वारकेपासकाद्वार
पक्षभाग (पु) हाथीकीबगल
पक्षमूल (न) पंखकीजड़
पक्षांत (स) अमावसऔरपौर्णमासी
पक्षिणी (स) पूर्वदिनऔरपरदिनसेयुक्तरात्रि
पक्षी (पु) पक्षी
पक्ष्मा (न) पलक - केसर - वड़ेसूक्ष्मसूतकाभाग
पंक (पु-न) पाप, कीचड़
पांकिल (उ) कीचड़सेयुक्तदेश

पंक्ति(स)दशवांछंद-
पाँति-श्रेणी-क़तार
पंकेरुह(न)कमल
पंग(पु)पंगुला लदी
पच्चम्पचा(स)दारुह-
पचा(स)पकाना
पंचजन(पु)पुरुष
पंचता(स)मृत्यु र्णी
पंचदशी(स)अमा-पू
पंचम(पु)गानविद्या-
कास्वर
पंचलक्षण(न)पुराण
पंचशर(पु)कामदेव
पंचशाख(पु)हाथ
पंचांगुल(पु)अंडवृक्ष
पंचास्य(पु)सिंह
पंजर(न)पिंजरा
पंजिका(स)शेषपदकी
पट(पुन)अच्छावस्त्र
पटच्चर(न)पुरानावस्त्र
चोर-
पटल(न)घरछाद
नेकेपासकीभीति-छ

प्पर-छाना-वमन
नेत्ररोग-समूह(सन)
पटलप्रांत(पुन)घर
छादनेकासामान
पटवासक(पु)वकुन्दा
पटह(पुन)वड़ानगा-
रा-जुझाऊनगारा(पु)
पटु(पु)परवर-चतुर
दक्ष(२)तीक्ष्ण(२)
नीरोग(३)
पटोल(पु)परवर
पटोलिका(स)चचेंड़ा
पट्ट(पु)काठका,पटा
पट्टिकाख्य(पु)लाल
लोध ध
पट्टिन्(पु)लाललो
पट्टिश(पु)पीढ़ा
पण(पु)पैसा-वेतन
जुआ-नौकरी-
मूल-धन द
पणव(पु)बाजेकाभे
पणा(स)बाजी दि
पणायित(२)स्तुतिकि

परिणत(२)स्तुतिकिया
परिणतव्य(२)लेनेकीवस्तु
पंड(पु)हिजड़ा
पंडित(पु)विद्वान्
पण्य(२)लेनेकीवस्तु
पण्यवीथिका(स)हाट
पण्या(स)मालकगुनी
पण्याजीव(पु)साहूकार
पतंग(पु)पक्षी
पतत्(पु)पाँख
पतंग(पु)टीड़ी-पक्षी
पतंगिका(स)लघुमक्खी
पतत्र(न)पंख
पतत्(पु)पक्षी
पतत्रि(पु)पक्षी
पतत्री(पु)पक्षी
पतद्ग्रह(पु)पीकदान
पतयालु(२)गिरनेवाला
पताका(स)झंडा
पताकी(पु)ध्वजधारक
पत्ति(पु)पैदल-जाना
सेनाभेद वालीस्त्री
पतिंवरा(स)आपवरने

पतिव्रता(स) सतीस्त्री	वस्तु-सुबंत-तिङंत	पद्मी(पु) हाथी
पतिवत्नी(स) सुहागिनि	पदग(पु) पैदल	पद्मिनी(स) कमलनी
पत्तन(न) नगर	पदवी(स) मार्ग	पद्य(न) श्लोक
पति(पु) भर्त्ता-स्वामी	पदाजि(पु) पैदल	पद्या(स) मार्ग
पतिसंहति(स) पैदलों	पदाति(पु) पैदल	पद्धति(स) मार्ग
का समूह |बाण	पदातिक(पु) पैदल	पनस(पु) कटहल
पत्री(पु) बाज-पक्षी	पदिक(पु) पैदल	पनायित(त्रि) स्तुतिकिया
पत्नी(स) विवाहितास्त्री	पद्ग(पु) पैदल	पनित(त्रि) तथा
पत्र(न) पंख-वाहन	पद्धति(स) सड़क	पन्न(त्रि) चुआ
पत्ता-चिट्ठी	पद्म(न) संख्याका	पन्नग(पु) सर्पमात्र
पत्रपरशु(पु) रेती |ना	भेद-कमल	पन्नगाशन(पु) गरुड़
पत्रपाश्या(स) वंदीबे-	पद्मक(न) हाथीकी	पय(न) पानी-दूध
पत्ररथ(पु) पक्षी |दि	पद्मचारिणी(स) प	पयस्य(न) घी-आदि
पत्रलेखा(स) तिलकभे	द्माक-कपिला	पयाट्(अ) संबोधनार्थक
पत्रांग(न) पतंगवृक्ष	पद्मनाभ(पु) विष्णु	पयोधर(पु) कुच-मेघ
पत्रांगुलि(स) तिलकभेद	पद्मपत्र(न) पुहकरमूल	बादल धिकवाला
पत्रोर्ण(न) धोयेहुये रे	पद्मराग(पु) माणि	परःशत(त्रि) १०० सेअधि-
शमी वस्त्र	पद्मा(स) लक्ष्मी-	पर(पु) शत्रु-दूर(त्रि)
पंथान(पु) मार्ग	भंमारा-कपिला-प	अनात्म(त्रि) उत्तम(त्रि)
पथिक(पु) चलनेवाला	द्माक	परजात(पु) परसेपैदा
पथ्या(स) हर्ड	पद्माकर(पु) तलाव	परतंत्र(त्रि) पराधीन
पद(न) उद्यम-रक्षण	पद्माट(पु) पमार	परपिंडाद(त्रि) परान्नजीवी
स्थान-चिह्न-पांव-	पद्मालया(स) लक्ष्मी	परभृत(पु) कोयल

परभृत् (पु) काग
परं (अ) अंगीकार
परमा (स) शोभा
परमांन्न (न) खीर
परमेष्ठी (पु) ब्रह्मा
परम्पराक (न) यज्ञका
परवत (त्रि) परतंत्र
परशु (पु॰ स) फ़रसा
परश्वध (पु) तथा
परश्वस (अ) परसों
परस्परपराहत (न) अ
संभव कहना
पराक्रम (पु) उपाय—
पराक्रमी
पराग (पु) फूलकीधूर
गंधचूर्ण—ग्रहण—धूर
पराङ्मुख (त्रि) विमुख
पराचित (पु) परपुत्र
पराचीन (त्रि) विमुख
पराजय (पु) हार
पराजित (त्रि) हारा
पराधीन (त्रि) परतंत्र
परान्न (त्रि) पराया अन्न

पराभूत (त्रि) हारा
परायण (त्रि) आसंग
वचन
परारि (अ) तीसरावर्ष
परार्द्ध्य (त्रि) मुख्य
परासन (न) मारा
परासु (त्रि) मृतक
परास्कंदि (पु) चोर
पराह्न (अ) परसों
परिकर (पु) पर्य्यंक—
परिवार
परिकर्म (न) कुंकुमा—
दिसेअंगसंस्कार
परिक्रम (पु) खेल
मेंपावसेचलना
परिक्रिया (स) परिवार
परिक्षिप्त (त्रि) घिरा
परिखा (स) खाई
परिग्रह (पु) स्त्री—प—
रिजन—स्वीकार—
मूलधन—शाप
परिघ (पु) गदा, अ
परिघातन (पु) तथा

परिचय (पु) संग्रह
परिचर (पु) सेनार—
क्षक
परिचर्य्या (स) सेवा
परिचाय्य (पु) अग्नि—
कास्थान
परिचारक (पु) दास
परिणत (त्रि) पका
परिणय (पु) विवाह
परिणाम (पु) अंत
परिणाय (पु) गर्दै
काचलना
परिणाह (पु) वस्त्र
कीचौड़ाई—ढोल
परितस (अ) चारों
ओर किरना
परित्राण (न) रक्षा
परिदान (न) लेनदेन
परिदेवन (न) रोना
परिधान (न) धोती
परिधि (पु) मंडल
यज्ञकीवृक्षशाखा
परिधिस्थ (पु) सेना

रसक /न—	परिवृढ (पु) स्वामी	परिस्रुता (स) मदिरा
परिपण (पु-न) मूलध	परिवेत्ता (पु) वहछोटा	परीक्षक (उ) पारखी
परिपंथिन् (पु) शत्रु	भाईजोवड़ेभाईके	परीवर्त्त (पु) लेनदेन
परिपाटी (स) अनुक्रम	विवाहविनाविवाहकरे	परीवाद (पु) निंदा
परिपूर्णता (स) परिपूर्ण	परिवेष (पु) मंडल	परीवाप (पु) ढका
परिप्लव (न) मोथा	परिव्याध (पु) कनेर	परीवाह (पु) बाहा
परिप्लव (उ) चंचल	परिव्राज् (पु) सन्यासी	परीवार (पु) पटमं-
परिबर्ह (पु) राजाकेयो-	परिषद् (स) सभा	डप—सर्वत्रबोना
ग्यवस्तु—धन—परिच्छद	परिस्कार (पु) गहना	जलस्थिति—जंग
परिभव (पु) अपमान	परिस्कृत (उ) अलंका	म—खड्गकामया
परिभाव (पु) तथा	रयुत	न—सहायक
परिभाषण (न) खिझाना	परिष्वंग (पु) लिपटना	परीष्टि (स) श्राद्ध
परिभूत (उ) अपमानकिया	परिसर (पु) नदीवा	मेंब्राह्मणभक्ति
परिमल (पु) सुगंध—मस	पर्वतकेपासकीभूमि	परीसार (पु) सब
लना—मीजना	परिसर्प (पु) परिवार	ओरफैला
परिरम्भ (पु) लिपटना	परिसर्पा (स) चारोंओ	परीहास (पु) क्रीड़ा
परिवर्जन (न) मारना	रसेफैला	परुत् (अ) पूर्वगत
परिवादनी (स) वीणाभेद	परिस्कंद (पु) परपुत्र	वर्षवापारसाल
परिवापित (उ) मुँडाहुआ	परिस्तोम (पु) हाथी	परुष (न) कर्कश
परिवित्ति (पु) वहबडाभा-	कीरस्सी	कहना
ई जिसकाविवाह नहुआ	परिस्पंद (पु) माला	परुषी (स) गाँठ
हो और छोटेभाईकाहो	आदिकाबनाना	परेत (उ) मृतक
गया हो	परिस्रुत् (स) मदिरा	परेतराट् (पु) यम

परेद्यवि (अ) परदिन
परेष्टुका (स) बहुतवच्चादेनेवा
लीगौ
परैधित (पु) परपुत्र
परोष्णी (स) चिमगादरि
पर्कटी (पु) पाकर
पर्जनी (स) दारुहलदी
पर्जन्य (पु) मेघ · इंद्र
पर्ण (न) पत्ता - ढांक
पर्णशाला (स) मुनियोंकाघर
पर्णाश (पु) बबई
पर्य्यंक (पु) खाट
पर्य्यटन (न) फिरना
पर्य्यंतभू (स) नदी पहाड़के
[निकटकीभूमि]
पर्य्यय (पु) अतिक्रम
पर्य्यवस्था (स) विगाड़
पर्य्याप्त (न) चाह
पर्य्याप्ति (स) रक्षाकरना
पर्य्याय (पु) परिपाटी - क्रम
पर्य्युदंचन (न) उधारलेना
पर्य्येषणा (स) श्राद्धमेंविप्र
भक्ति
पर्वत (पु) पहाड़

पर्व (न) गांठ - क्षण
तिथिभेद
पर्वसंधि (पु) पूर्णिमा अ
मावसकीसंधि
पर्शुका (स) पंसली
पल (न) ४ कर्ष वा ४
तोलेकीतोल - पलमान
मांस
[तभीत बनाने वा-ला]
पलगंड (पु) राजअर्था
पलंकषा (स) गोरखुरू
पलल (न) मांस
पलांडु (पु) प्याज
पलाल (पु न) प्यार
पलाशी (पु) वृक्ष
पलिक्नी (स) बूढ़ीस्त्री
पलित (पु न) अतिबुढ़ापा
पल्यंक (पु) खाट
पल्लव (पु न) नयापत्ता
पल्वल (पु न) लघुताल
पव (पु) अन्नादिकाकाट[ना]
पवन (पु) वायु [रना]
पवन (न) अन्नादिकाका
पवनाशन (पु) सर्प

पवमान (पु) पवन
पवि (पु) वज्र
पवित्र (न) कुश, पूतरे
पवित्रक (न) सुतरी
पशु (पु) पशुजाति
पशुपति (पु) शिव
पशुप्रेरण (न) पशुओं
काललकारना
पशुरज्जु (स) डोरी
पश्चात् (अ) पश्चिम
दिशा - चामवाचर्म
पश्चात्ताप (पु) पछताव
पश्चिम (त्रि) अंत
पांशु (पु) धूरि
पांशुला (स) छिनार
पाक (पु) वच्चा - पका
पाकल (न) कूट
पाकशासन (पु) इंद्र
पाकशासनि (पु) इं-
द्रकापुत्र
पाकस्थान (न) रसो-
ईकाघर [न]
पाक्य (न) खारीनों

जवारवार (पु)
पांचजन्य (पु) लक्ष्मीप
तिका शंख
पांचालिका (स) गुड़िया
पाटल (पु) श्वेत लाल, साठी
पाटला (स) पुष्प, पाढर
पाटलि (पु स) पाढरि
पाठ (पु) महायज्ञ-विधि
से वेदादि पठन-ब्रह्मय-
ज्ञ-पढ़ना
पाठा (स) पाढरि
पाठिन् (पु) चीता
पाठीन (पु) बहुदंतवाली मछली
पाड् (अ) संबोधनार्थक
पाणि (पु) हाथ
पाणिगृहीती (स) विवा
हिता स्त्री
पाणिघ (पु) ताली बजा
नेवाला
पाणिपीडन (न) विवाह
पाणिवाद (पु) ताली ब-
जानेवाला
पांडु (पु) श्वेतपीला

पांडुकंबलिन् (उ) श्वेतपी-
लाकंबल पाला
पांडुर (पु) उजला-श्वेत
पाताल (न) अधोलोक
वडवानल-आग
पातुक (उ) गिरनेवाला
पात्र (न) पार और इस
पार का बीच-स्रुवादि
कयज्ञपात्र-बर्तन (पु)
(न) योग्य-रथ
पाथ (न) जल
पाद (पु) पर्वत के पास का
पर्वत-पाँव-चौथाई
किरण पायजेब
पादकटक (पु) बिछिया
पादग्रहण (न) प्रणाम
पादप (पु) वृक्ष
पादस्फोट (पु) बिवाई
पादात (न) पैदलों का स
मूह गाड़ी
पादाग्र (न) पाँव की अ-
पादातिक (पु) पैदल
पादबंधन (न) चौपाये

पादच्छाद (न) बिछिया
पायजेब
पादुका (स) जूती
पादू (स) जूता
पादूकृत (पु) चमार
पाद्य (उ) पाँव धोने का
जल मदिरापान की सभा
पानगोष्ठिका (स) मदि
पानपात्र (न) मदिरा
पीने का पात्र
पानभाजन (पु न)
थाली-कटोरा
पानीय (न) जल
पानीयशालिका (स)
प्याऊ
पान्थ (पु) पथिक
पाप (न) पाप-हिंस
क (उ) पाठरि
पापचेली (स) पाठा
पाप्मन् (पु) पाप
पामर (पु) नीच (न)
पाम (न) खाज-पा
मायुक्त खाज (उ)

पामा (स) खाज
पायस (पु) देवदारु धूपवा तार्पीन कातेल
पायु (पु) गुदा
पाय्य (न) तोल नाप
पार (न) नदीका उसपार
पारद (पु न) पारा
पारम्पर्य्योपदेश (पु) परंपरा का उपदेश
पायस (पुन) खीर
पारशव (पु) शूद्रीसे ब्राह्मणकापुत्र
पारश्वधिक (पु) फरसाधारक
पारस्त्रैणेय (पु) परस्त्रीसे पुत्र
पारायण (न) साकल्यवचन
पारसीक (पु) फारसिदेशकाघोड़ा
पारावत (पु) कबूतर
पारावताङ्घ्रि (स) मालकाङ्गि
पारावार (पु) समुद्र
पाराशरी (पु) सन्यासी
पारिकांक्षी (पु) तपसी [illegible]
पारिजातक (पु) कल्पवृक्ष
पारितथ्या (स) बेंना
पारिपात्रक (पु) पर्वतोंकाभेद
पारिपार्श्विक (पु) स्त्र-र्यकेचारोंओरकेरहनेवाले
पारिप्लव (पु) चंचल
पारिभद्र (पु) नीब
पारिभद्रक (पु) देवदारु
पारिभाव्य (न) कूट
पारिषद (पु) शिवदास
पारिहार्य्य (पु) पहुँची
पारुष्य (न) कठोर
पार्थिव (पु) राजा
पार्वती (स) शिवस्त्री
पार्वतीनंदन (पु) स्वामिकार्त्तिक
पार्श्व (पुन) बगल-पार्श्वोंकासमूह
पार्श्वभाग (पु) हाथीकी बगल
पार्श्वास्थिन्वा पार्श्वस्थनि (न) पँसली
पार्ष्णि (पु) एड़ी
पार्ष्णिग्राह (पु) अपने राज्यसेपीछेकाराजा
पालंक्या (स) पलाँक
पालघ्न (न) जलतृण
पालाश (पु) हरा
पालि (स) खड्गादिकी नोक-गोद-पंक्ति कोण
पालिंधी (स) तिधारा निसोत
पावक (पु) आग
पाश (पु) केशसमूह
पाशक (पु) पासा
पाशी (पु) वरुण
पाशुपत (पु) गुम्मा-अगस्त्य
पाशुपाल्य (न) रेवती
पाषंड (पु) पाखंडी
पाषाण (पु) पत्थर
पाषाणदारण (पु) टाँकी
पाश्चात्य (पु) अंत
पाश्य (न) पाशोंका

समूह
पिक (पु) कोयल
पिंग (पु) पीला
पिंगल (पु) सूर्यकापरि
पार्श्वकग्रह-पीला
पिंगला (स) दक्षिणदिग
गजकीस्त्री
पिचिंड (पु) पेट
पिचिंडवत् (पु) वाजार
पिचिंडिल (पु) बड़ापेटवा
पिचु (पु) रूई
पिचुमर्द (पु) नीमवृक्ष
पिचुल (पु) काऊ
पिच्चट (न) रांगा
पिच्छ (न) मोरकाचंदा
पिच्छा (स) सेमरकागोंद
पिच्छल (त्रि) पनीले भोजन वा व्यंजन
पिच्छिला (स) सीसों
पिच्छिला (स) सेमर
पिञ्ज (पु) मारण
पिंजर (न) हरताल
पिंजल (पु) आकुलनीसे
पिट (पु) छप्परा
पिटक (त्रि) फोड़ा, पिटारी
पिठर (पु) बटलोई-
पिठर (न) मोथा
पिंड (न) लोहा-बांध
पिंडक (पु) लोहवान
पिंडिका (स) गाड़ी-
कीहाल
पिंडीतक (पु) मैनफल
पिण्याक (पुन) लोहवान-खल-पीना
पितरौ (पु) मातापिता
पितामह (पु) ब्रह्मा-
पिताकाबापवादादा
पिता (पु) बाप
पितृदान (न) पितरों
केलियेदान
पितृपति (पु) यमराज
दक्षिणदिशाकापति
पितृवित (पु) श्राद्ध
पितृप्रसू (स) गोधूलि
पितृवन (न) श्मसान
पितृव्य (पु) पिताकाभाई
पितृसन्निभ (त्रि) पितृतुल्य
पित्त (पु) पित्त
पित्सत् (पु) पक्षी
पिधान (न) ढांकना
पिनद्ध (त्रि) वखतरबद्ध
पिनाक (पु) शिवचाप
त्रिशूल (पुन) धूलिकीवर्षा
पिनाकी (पु) शिव
पिपासा (स) प्यास
पिपीलिका (स) चींटी
पिप्पल (पु) पीपरी
पिप्पली (स) वड़ीपीपरी
पिप्पलीमूल (न) पिपरामूल
पिप्लु (पु) लहसनवा-लामसुष्य
पियाल (पु) चिरौंजी
पिल्ल (पु) चील
पिल्ल (त्रि) चुंधा
पिशंग (पु) पीला
पिशाच (पु) देवजाति
पिशित (न) मांस

पिशुन (न) कुंकुम, केसरि दुष्ट (३) सूचक (३)
पिशुना (स) पिंडारशाक
पिष्टक (पु) पुआ-वरा
पिष्टपचन (न) तवा
पिष्टात (पु) वकुचा
पीठ (न) पीढ़ा
पीड़न (न) पदार्थोंकान
पीडा (स) दुःख
पीत (पु) पीला
पीतक (न) हरताल
पीतदारु (न) देवदारु
पीतद्रु (पु) दारुहलदी
पीतन (पु) आमलावृक्ष
पीतन (न) कुंकुमकेसर
पीतसालक (पु) विजैसार
पीता (स) हलदी
पीताम्बर (पु) विष्णु
पीति (पु) घोड़ा
पीन (३) मोटा
पीनस (पु) नाकका रोग
पीनोध्नी (स) मोटे थनवाली गौ

पीयूष (न) अमृत-पेवसी वा खिजरी
पीलु (पु) पिलुआवृक्ष हाथी-वाण-पुष्प
पीलुपर्णी (स) मूर्वा-कुंदुरू
पीवर (३) मोटा
पीवरस्तनी (स) मोटे थं
पीवी (३) मोटा
पुंश्चली (स) छिनारि
पुक्कस (पु) चांडाल
पुंख (पु) वाणका भाग
पुंगव (अ) श्रेष्ठार्थक
पुच्छ (पुन) पूंछ
पुञ्ज (पु) अन्नादिका
पुटभेद (पु) जलकानिकलना
पुटभेदन (न) नगर
पुटी (३) मट्टीकापात्र
पुंडरीक (पु) आग्नेयदिशाका दिग्गज-व्याघ्र-श्वेतकमल
पुंडरीकाक्ष (पु) विष्णु

पुंडर्य्य (न) गुलाब
पुंड्र (पु) गांडा-गन्ना
पुंड्रक (पु) माधवीलता
पुण्य (न) धर्म सुंदर ३
पुण्यक (न) उपवासादि विहितव्रत
पुण्यजन (पु) राक्षस
पुण्यजनेश्वर (पु) कुबेर
पुण्यवान् (३) भाग्यवान्
पुण्यभूमि (पु) विंध्याचल और हिमालय पर्वत की बीच की भूमि
पुत्तिका (स) छोटी मक्खी
पुत्र (पु) सुत
पुत्री (स) कन्या
पुत्रौ (पु) कन्यापुत्र
पुत्रिका (स) गुड़िया
पुनःपुनः (अ) बारंबार
पुनर् (अ) दूसरा-भेद निश्चय
पुनर्नवा (स) विसखपरा
पुनर्भव (पु) नख
पुनर्भू (स) दोबार विवाही स्त्री

हाथीके कुंभके पास
कामांस
पेटक (पु) पिटारी
पेटा (स) पिटारी
पेटी (त्र) पिटारी
पेलव (त्र) विरला
पेशल (पु) चतुर- सुंदर
(त्र) दक्ष (त्र)
पेशी (स) अंडा
पैगर (त्र) पकामांस
पैतृष्वसेय (पु) बुआका
पैतृष्वस्रीय (पु) तथा
पैत्र (पु) पितृदिन- पितृ
तीर्थ- अर्थात् अंगूठा
और तर्जनी अंगुलीके
बीचका भाग
पोगंड (पु) विकलांगी
पोटगल (पु) नरकुल--
कांस लक्षण का
पोटा (स) पुरुषस्त्रीके
पोत (पु) बच्चा- पीनेकापा
त्र/हलकीनोक
पोत्र (न) सुअरकामुख

पोतवणिक् (पु) म
ल्लाह /खिवैया
पोतवाह (पु) नाव
पोताधान (पु) लघु
मच्छी नतिनी (स)
पौत्री (पु) सुअर-
पौर (न) सुगंधतृण
पौरस्त्य (त्र) पूर्व
पौरुष (त्र) पुरुषभाव
पौरोगव (त्र) रसोई
कामालिक
पौर्णमास (पु) पूर्ण
मासीकेदिनकायज्ञ
पौर्णमासी (स) पूनो
पौलस्त्य (पु) कुबेर
पौलि (पु) आधपका
हुआ अन्न
पौष (पु) पौषमास
पौष्पक (न) अंजन
प्रकांड (पुन) अच्छा
वृक्षकाभाग
प्रकाम (न) चाह
प्रकार (पु) भेद--

सादृश्य
प्रकाश (पु) तेज-
अतिप्रसिद्ध (त्र)
प्रकीर्णक (न) चमर
प्रकीर्य (पु) कंटिदार
कंजा
प्रकृति (स) स्वभाव
संसिद्धि- राज्यके
अंगराजादि- भग
लिंग
प्रकोष्ठ (पु) कुहनी
सेमणिबंधरेखा
तकका भाग
प्रक्रम (पु) उद्योग
प्रक्रिया (स) व्यवस्था
स्थापक
प्रक्वण (पु) वीणा
आदिकाशब्द
प्रक्वाण (पु) तथा
प्रक्ष्वेड (पु) लोह
मयबाण
प्रगंड (पु) कुहनीसे
बगलतकका भाग

प्रगतजानुक (पु) टेढ़ी जांघवाला
प्रगल्भ (त्रि) बुद्धिवान्
प्रगाढ़ (त्रि) सामर्थ्य, दुःख
प्रगुण (त्रि) सीधा
प्रगे (अ) प्रभात
प्रग्रह (पु) बंधुआ - तरा-जूका सूत - अश्वादि की रस्सी
प्रग्राह (पु) तथा - मूढ़
प्रग्रीव (पु न) झरोखा [घर का]
प्रग्र्य (त्रि) मुख्य
प्रघण (पु) चौपार वा बाह्
प्रचक्र (न) चलीहुई सेना
प्रचलायित (त्रि) घूमनेवाला
प्रचुक्र (पु) अम्लवेत
प्रचुर (त्रि) अधिक
प्रचेतस (पु) वरुण
प्रचोदनी (स) भटकटाई
प्रच्छदपट (पु) पर्दा
प्रच्छन्न (न) खिडकी
प्रच्छर्दिका (स) उलटी
प्रजन (पु) प्रथमगर्भ

प्रजावी (पु) वेठी
प्रजा (स) बुद्धि - संतति प्रजा
प्रजाता (स) प्रसूता स्त्री
प्रजापति (पु) ब्रह्मा
प्रजावती (स) भौजाई
प्रज्ञा (स) बुद्धिमती
प्रज्ञान (न) बुद्धि - चिन्ह
प्रज्ञु (पु) टेढ़ी जांघ का
प्रडीन (न) उडना
प्रणय (पु) प्रेम - विश्वा[स] मांगना
प्रणव (पु) ओंकार
प्रणाद (पु) प्रीतिका शब्द
प्रणाली (स) पतनाला
प्रणिधि (पु) हकारकरनेवाला - प्रार्थना - चार
प्रणिहित (त्रि) प्राप्त
प्रणीत (पु) यज्ञाग्निविशेष - रसाउरि (त्रि)
प्रणुत (त्रि) स्तुतिकिया
प्रणेय (त्रि) वशी
प्रत्न (त्रि) पुराना

प्रतन (त्रि) पुराना
प्रतल (पु) फैलीअंगुलीका हाथ
प्रतानिनी (स) फैलील[ता]
प्रताप (पु) प्रभाव
प्रतापस (पु) श्वेतअर्क
प्रति (अ) प्रतिनिधि - वीप्सा - लक्षण - प्रयोग
प्रतिकर्मन् (न) नेपथ्य
प्रतिकूल (त्रि) उलटा
प्रतिकृति (स) प्रतिबिंब
प्रतिजागर (पु) पदार्थोंका देखना
प्रतिज्ञात (त्रि) अंगीकृत
प्रतिज्ञान (न) स्वीकार
प्रतिदान (न) फेरदेना
प्रतिध्वान (पु) प्रतिशब्द
प्रतिपत् (स) पडवातिथि-बुद्धि
प्रतिपन्न (त्रि) जाना
प्रतिपादन (न) दान
प्रतिबद्ध (त्रि) टूटेमनका
प्रतिबंध (पु) कार्यकारोकना

प्रतिबिंब(न) प्रतिच्छाया
प्रतिभय(न) डर [न्]
प्रतिभान्वित(उ) बुद्धिवा
प्रतिभू(पु) गवाह
प्रतिमा(स) प्रतिबिंब
प्रतिमान(न) हाथीकेदां-
तोंकाबीच-प्रतिबिंब
प्रतिमुक्त(उ) बखतरधारक
प्रतियत्न(पु) वांछा-अ-
नुकूल [बिंब]
प्रतियातना(स) प्रति
प्रतिरोधि(पु) चोर
प्रतिवाक्य(न) उत्तर
प्रतिविषा(स) अतीस
प्रतिशासन(न) सेवकों
कांभेजना
प्रतिश्याय(पु) पीनसरोग [य]
प्रतिश्रय(पु) सभा-आश्र
प्रतिश्रव(पु) स्वीकार
प्रतिश्रुत्(स) प्रतिशब्द
प्रतिष्टम्भ(पु) कार्यकारो
कना
प्रतिसर(पु) सेनाका

पीछेकाभाग-हाथ
राखी(पु·न)
प्रतिसीरा(स) कनात
प्रतिहत(उ) टूटेमनका
प्रतिह्रास(पु) कनेल [डा]
प्रतीक(पु) अंग-विग्र-
प्रतीकार(पु) वैरमिटाना
प्रतीकाश(उ) सदृश
प्रतीची(स) पश्चिम
प्रतीक्ष्य(उ) पूज्य
प्रतीत(उ) प्रसिद्ध
प्रतीपदर्शिनी(स) वि-
शेषस्त्री
प्रतीर(न) तट [पाल]
प्रतीहार(पु) द्वार-द्वार
प्रतीहारी(स) डोढ़ीदा-
रिन् [मार्ग]
प्रतोली(स) भीतरका
प्रत्न(उ) पुराना
प्रत्यक्(अ) पश्चिमदि-
शा-पश्चिमदेश-पश्चि
मकाल [दा]
प्रत्यक्पर्णी(स) चिरचि

प्रत्यक्श्रेणी(स) मूसाक-
र्णीवामूसरी-जयपाल
दन्तदंती
प्रत्यक्ष(उ) साम्हना
प्रत्यग्र(उ) प्रत्यक्ष
प्रत्यंत(पु) म्लेछदेश
प्रत्यंतपर्वत(पु) पर्वत
केपासकापर्वत-छेद-
शब्द
प्रत्यय(उ) नया-अधीन
सौगंद-ज्ञान-विश्वास
हेतु
प्रत्ययित(उ) विश्वासी
प्रत्यर्थी(पु) शत्रु [या]
प्रत्यवसित(उ) खायागा
प्रत्याख्यात(उ) निरादर
कियाहुआ [र]
प्रत्याख्यान(न) निराद
प्रत्यादिष्ट(उ) निरादर
कियाहुआ
प्रत्यादेश(पु) निरादर
प्रत्यालीढ(न) धनुष
कास्थान

छा
प्रत्यासार (पु) किलेकाणी-
प्रत्याहार (पु) लेना
बटाव
प्रत्युत्क्रम (पु) युद्धका
प्रत्यूष (पु) प्रात
प्रत्यूषस (न) प्रात- वि
घ
नीच
प्रथगजन (पु) मूर्ख-
प्रथम (त्रि) पूर्व- प्रधान
प्रथा (स) प्रसिद्धता
प्रथित (त्रि) प्रसिद्ध
प्रदर (पु) भंग- बाण
स्त्रियोंकारोगविशेष
प्रदीप (पु) दीवा
प्रदीपन (पु) विषभेद
प्रदेशन (पु) भेंट
प्रदेशनी (स) अंगूठेकेपा सकीउंगली
प्रदोष (पु) रातका आरंभ
प्रद्युम्न (पु) कामदेव
प्रद्राव (पु) भागना
प्रधन (न) लड़ाई
प्रधान (न) प्रकृति- मु
ख्यमंत्री (पु-न) मुख्य
(न) परमात्मामेंबुद्धि-

प्रधि (पु) गाड़ीकीहाल
प्रपंच (पु) विपरीत- बड़ा
ई- ठगना ड़ी
प्रपद (न) पाँवकीअग्र
प्रपा (स) पौशाला
प्रपात (पु) पर्वतसेजल
निकलनेकास्थान
प्रपितामह (पु) परदादा
प्रफुल्लाड (पु) पर्वोरत्नदक्ष
प्रपौण्डरीक (न) गुलाब
प्रफुल्ल (त्रि) विकसित
प्रबंधकल्पना (स) कथा
प्रवाल (पु) वीणादिवा-
जेकादंड, मूंगा (पु-न)
अंकुर (पु-न)
प्रबोधन (न) गतगंध
कोगंध युतकरना
प्रभंजन (पु) पवन
प्रभव (पु) जन्म- हेतु
गोमरवपर्वत
प्रभा (स) तेज
प्रभाकर (पु) सूर्य्य
प्रभात (न) प्रात

प्रभाव (पु) शक्ति, प्रताप
प्रभिन्न (पु) मस्तहाथी
प्रभु (पु) पति
प्रभूत (त्रि) अधिक
प्रभ्रष्टक (न) शिरसेच्यो
टीतककीमाला
प्रमथ (पु) शिवसेवक
प्रमथन (न) मारा
प्रमथाधिप (पु) शिव
प्रमद (पु) हर्ष
प्रमदवन (न) रानियों
काबाग़
प्रमदा (स) स्त्री
प्रमना (त्रि) हर्षित
प्रमा (स) सच्चाज्ञान
प्रमाण (न) हेतु- मर्याद
षट्दर्शन- प्रमाण- ज्ञाना
प्रमाद (पु) भ्रम- भूल
प्रमातामह (पु) परनाना
प्रमापण (न) मारण
प्रमिति (स) सच्चाज्ञान
प्रमीत (त्रि) मृतक
प्रमीला (स) आलस्य

प्रमुख(३) मुख्य
प्रमुदित(३) हर्षित
प्रमोद(पु) हर्ष
प्रमोह(पु) हर्ष
प्रयत(पु) पवित्र
प्रयस्त(३) पूरी आदि-
प्रयाम(पु) धनादिका
संग्रह [बिछाव
प्रयोगार्थ(पु) युद्धका
प्रलंबघ्न(पु) बलदेव
प्रलय(पु) क्षय-मूर्छा
प्रलाप(पु) बकना
प्रवण(३) पृथ्वीका
क्रमसे उतारचढ़ाव
प्रवयस(पु) बूढ़ा पुरुष
प्रवर्ह(३) मुख्य
प्रवह्लिका(स) पहेली
प्रवह(पु) बाहर जाना
प्रवहण(न) स्त्रियोंका
रथ [आदिकादान
प्रवारण(न) तुलापुरु
प्रवाल(पु) वीणादंड
प्रवासन(न) मारा

प्रवाह(पु) बहना
प्रवापण(न) मारा
प्रवाहिका(स) संग्रह-
णी [प्रसिद्ध
प्रविख्याति(स) अति
प्रविदारण(न) लड़ाई
प्रविश्लेष(पु) खड़ावियो
ग
प्रवीण(३) ज्ञाता
प्रवृत्ति(स) वार्त्ता-व
प्रवृद्ध(३) बहुत बढ़ा
हुआ-फैला
प्रवेक(३) मुख्य
प्रवेणि(स) वेणी
प्रवेणी(स) हाथीकी
झूल
प्रवेष्ट(पु) बाँह
प्रव्यक्त(३) स्पष्ट
प्रश्न(पु) पूँछना
प्रश्रय(पु) प्रेम
प्रश्रवण(पु) झर्ना
कास्थान
प्रश्रित(३) नम्र

प्रष्ठवाह(पु) परिहारी
प्रष्ठौही(स) प्रथमगर्भि-
णीगौ
प्रसन्न(३) निर्मल
प्रसन्नता(स) निर्मलता
प्रसन्ना(स) मदिरा
प्रसभ(न) हठ
प्रसर(पु) धावका
फैलना [विस्तार
प्रसरण(न) सेनाका
प्रसव(पु) जन्म-फल
पुष्प-उत्पत्ति
प्रसवबंधन(न) गुच्छका
प्रसव्य(३) उलटा
प्रसह्य(अ) हठ
प्रसाद(पु) प्रसन्न-अ
नुग्रह-काव्यगुण
प्रसाधन(न) नेपथ्य
प्रसाधनी(स) कंघी
प्रसाधित(३) अलंकार
युत
प्रसारी(३) जानेवाला
प्रसारिणी(स) आकाश

प्रसित(उ)लीन
प्रश्रिति(स)बाँधना
प्रसिद्ध(उ)विख्यात
भूषित ।ड़ी
प्रसू(स)माता-घो
प्रसूता(स)सौरिस्त्री
प्रसूति(स)जन्म
प्रसूतिका(स)सौरिकी
स्त्री
प्रसूतिज(उ)पीड़ा
प्रसून(न)फूल
प्रसूता(स)सौरिस्त्री
प्रसृत(पु)हाथोंका
निउड़ाकरना-फैला
(उ)
प्रसृता(स)जाँघ
प्रसेव(पु)थैली
प्रसेवक(पु)वीणाकी
तोंबी
प्रस्तर(पु)पत्थर
प्रस्ताव(पु)प्रसंग
प्रस्थ(पुन)पर्वतका
तट-तोलभेद(पु)

प्रस्थपुष्प(पु)दोना
मरुआ
प्रस्थान(न)यात्रा
प्रस्फोटन(न)सूप
प्रस्राव(पु)मूत
प्रहर(पु)पहर
प्रहरण(न)शस्त्र
प्रहस्त(पु)फैलीअंगु-
लीसहितहाथ
प्रहि(पु)कूप
प्रहेलिका(स)पहेली
प्रहृष्ट(उ)हर्षित
प्रांशु(उ)ऊँचा
प्राक्(अ)भूतकाल
पूर्वदिशा-पूर्वदेश
प्रकार(पु)घेरा
प्राकृत(पु)नीच
प्राग्वंश(पु)सामग्री
कि घरसे पूर्वगृह
प्राग्रहर(उ)मुख्य
प्राघार(पु)घीआदि
काटपकना
प्राची(स)पूर्वदिशा

प्राचीना(स)पाठा
प्राचीनावीत(न)वाम
हाथकाजनेऊ
प्राचीर(न)घेरा
प्राच्य(पु)पूर्वसहितद- क्षिणदिशा
प्राजन(न)हाँकनेकापैना
प्राजिता(पु)गाढ़ीवान
प्राज्ञ(पु)पंडित ।स्त्री
प्राज्ञा(स)अतिबुद्धिवाली
प्राज्ञी(स)अतिबुद्धिवाली
प्राज्य(उ)अधिक [illegible]
प्राड्विवाक(पु)पंच-प्र
प्राण(पु)शरीरकापवन
पराक्रमी-प्राण-गंधरस
प्राणी(पु)जीव [illegible]
प्राणिद्यूत(न)जीवोंकी
प्रातर्(अ)प्रभात
प्रातिहारक(पु)इंद्रजाली
प्राथमकल्पिक(पु)नया-
विद्यार्थी
प्रार्थित(उ)माँगा
प्रादुर्(अ)नाम प्रकाश
प्रकट

प्रादेश(पु)अंगूठासेतर्ज-
नीअंगुलीतकका भाग
प्रादेशन(न)दान
प्राध्वन(अ)अनुकूलता
प्रांत(पु.न)घरकोनेकी
समीपकीभीत]देश
प्रांतर(न)दूरकोअरण्य
प्राप्त(उ)पाया
प्राप्तपंचत्व(उ)मृतक
प्राप्तरूप(उ)पंडित-मनो-
हर
प्राप्ति(स)उदय-लाभ
प्राप्य(उ)मिलनेकेयो-
ग्य
प्राभृत(न)भेट
प्राय(पु)सन्यासभेद
वहुधा-अंतगमन
प्राय्य(उ)मुख्य
प्रायस(अ)वहुताई
प्रालम्ब(न)लंवीमाल
प्रालंविका(स)सोनेकी
लंवीकंठी
प्रालेय(न)हिम
प्रावार(पु)दुपट्टा

प्रावृत(उ)गोट
प्रावृष(स)वर्षाऋतु
प्रावृषायणी(स)कौंच
प्रास(पु)साँग]अ
प्रासंग(पु)रथकाजु-
प्रासंवय(पु)वेलभेद
प्रासाद(पु)राजघर
प्रासिक(पु)भालावाला
प्राह्ण(पु)दिनकाभाग
प्रिय(पु)पति,प्यारा(उ)
प्रिया(स)स्त्री
प्रियक(पु)कदम्व
विजेसार-ककनी-
फूलप्रियंगु-मृगभेद
प्रियंगु(स)ककुनी-
फूलप्रियंगु
प्रियता(स)प्रेम
प्रियंवद(उ)प्याराबोल
प्रीणन(न)अघाया
प्रीत(उ)हर्षित
प्रीति(स)हर्ष
प्रुष्ट(उ)जरा
प्रेक्षा(स)वुद्धि-ना-

प्रेंखा(स)दोला,डोली
प्रेंखित(उ)कंपा
प्रेत(उ)मृतक-परेत
प्रेत्य(अ)जन्मांतर
प्रेम(न)प्रिय
प्रेमन्(पु)प्रेम
प्रेष्ठ(उ)अतिशयप्रिय
प्रैष(पु)आज्ञाकरना
मर्द्दनवाक्लेश
प्रैष्य(पु)दास
प्रोक्षण(न)यज्ञपशु
मारना-जलसेछींटा
देना]पशु
प्रोक्षित(उ)माराहुआ
प्रोथ(पु.न)घोड़ाकी
नाक]द्रपदनक्षत्र
प्रोष्ठपदा(स)पूर्वाभा
प्रोष्ठी(पु.स)श्वेतम-
छली
प्रोष्ठपद(पु)भादों
प्रोष्ठपदा(स)पूर्वा
भाद्रपदनक्षत्र
प्रौढ(उ)वहुतवढा

प्लवङ्गम (पु) वानर-मेंडक
प्लक्ष (पु) पाकर वृक्ष
प्लव (पु) वेड़ा-मोथा (न) हरियलपक्षी-चांडाल
प्लवग (पु) वानर-मेंडक सारथी
प्लवंग (पु) वानर
प्लाक्ष (न) पिलखन-वृक्ष-गजहर्ड [फि]
प्लीहन् (पु) तिल्लीका
प्लीहशत्रु (पु) लालकंजा
प्लुत (न) घोड़ेकीचाल
प्लुष्ट (३) जरा
प्लोष (पु) जलाना
प्सात (३) खायागया

फ

फंजिका (स) भांगरा
फण (पु, स) फण
फटा (पु, स) फण
फणिजक (पु) दोनाम वृक्ष
फणि (पु) सर्प्प

फल (न) फल-ढाल-फाल-व्याज लाभ
फलक (पु न) ढाल
फलकपाणि (पु) ढालवाला
फलत्रिक (न) त्रिफला
फलपूर (पु) बिजोरा नींबू
फलवत (३) फलवालावृक्ष
फलाध्यक्ष (न) खिरनी
फली (३) सफलवृक्ष
फलिन (३) तथा
फलिनी (स) फूलप्रियंगु-कंगुनी-हालों
फलेग्राहि (३) फलवालावृक्ष
फलेरुहा (स) पाढर
फल्गु (स) कठूमर निर्वल (३)
फाणित (न) राव
फांट (३) सहजक्रिया

फाल (३) कपासकावनावस्त्र-हल (पु न)
फाल्गुन (पु) फागुन
फाल्गुनिक (पु) तथा
फुल्ल (३) फूलाहुआपुष्प
फेन (पु) समुद्रफेन
फेनिल (पु) रीठा-वेर
फेरव (पु) स्यार
फेरु (पु) स्यार
फेला (स) झूंठा

ब

वद्ध (३) बंधाहुआ
वध (पु) मारा
वधिर (पु) वहरा
वधोद्यत (३) मारनेकेयोग्य
वध्य (३) तथा
वंधक (न) धरोहर
वंधकी (स) छिनारि
वंधन (न) बांधना
वंधनालय (पु) जेलखाना
वंधस्तम्भ (पु) खूंटा
वंधु (पु) भाई
वंधुजीवक (पु) दुपहरीआ
वंधुता (स) वंधुसमूह

वंधुर (उ) झुका हुआ ऊंचा	वला (स) खरहटी	वालेय (पु) गधा
वंधुल (पु) कुलटापुत्र	वलात्कार (पु) हठ	वालेयशाक (पु) भांगरा
वंधूक (पु) दोपहरिआ	वलाराति (पु) इंद्र	वाल्य (पु) वालकपन
वन्ध्य (उ) अफलवृक्ष	वलिध्वंसी (पु) विष्णु	वाहुलेय (पु) स्वामिकार्त्तिक
वन्ध्या (स) वांझ-वांझगौ	वलिसद्म (न) पाताल	
वभ्रु (पु) वड़ा नौला-	वलीवर्द्द (पु) वैल	वीभत्स (उ) डर
विष्णु-पीला (उ)	वा (अ) उपमा-विकल्प	वुक्का (उ) कलेजा
वर्हिर्मुख (पु) देवता	वाण (पु) वाणासुर-	वुद्ध (पु) जिन-वुध
वल (पु) वलदेव-सेना	वाण [लकीर] की टी	जानागया (उ)
(न) पराक्रमी (न)	वाणा (पु-स) कालेफूल-	वुद्धि (स) मता
वलज (न) खेत-नगर	वाधा (स) पीड़ी	वुद्बुद (पु) ववूला
का द्वार	वांधकिनेय (पु) कुलटा का पुत्र	वुध (पु) ग्रह-पंडित
वलदेव (पु) कृष्णभ्राता		वुधित (उ) जाना गया
वलवा (स) उत्तम स्त्री	वांधव (पु) गोती भाई	वुभुक्षा (स) भूख
वलभद्र (पु) वलदेवजी	वाल (न) नेत्रवाला-	वुभुक्षित (उ) भूखा
वलभद्रिका (स) त्रायमाणा	वालक (पु) वाल (पु)	वुस (न) भूसा
वलभी (स) छज्जा	वछेड़ा-मूर्ख (उ)	वृंदारक (उ) देवता
वलयित (न) नदी आदि से घिरा हुआ	लड़का (उ)	वृंदिष्ठ (उ) अतिशय
	वालगर्भिणी (स) प्रथमगाभन गौ	वाधकर (पु) स्त्रियोंका
वलवत (अ) अतिशय		दिसराजाओंको जगाना
वलवान (पु) पुष्ट-वलवाला	वालतनय (पु) कत्था	
वलविन्यास (पु) किला	वालधि (पु) वालयुत पूंछ	वोधिद्रुम (पु) पीपल
		ब्रह्मचारी (पु) ब्रह्मचारी

ब्रह्मण्य (पु) तूत	ठकी अंजली	भगंदर (पु) व्याधि भेद
ब्रह्मत्व (न) ब्रह्मपन	ब्रह्मासन (न) आसन	भगवत्त (पु) जिनवाबुध
ब्रह्मदर्भा (स) अजवायन	विशेष भांगरा	भगिनी (स) वहिन
ब्रह्मदारु (न) तूत	ब्राह्मणयष्टिका (स)	भंग (पु) लहर
ब्रह्म (न पु) ब्रह्म-वेद	ब्राह्मण (पु) विप्र	भंगा (स) भाँग भेद
तत्व-तपस्या	ब्राह्मणी (स) भाँगरा	भंगी (स) कुटिलताका
ब्रह्मन् (पु) ब्रह्मा-विप्र	ब्राह्मी (स) सप्तमाता	भंगुर (उ) भाँगकेखेत
प्रजापति	सरस्वती-औषधी	भजमान (उ) न्यायसे
ब्रह्मपुत्र (पु) विषभेद	ब्राह्म (पु) ब्रह्माकादि	युक्तवस्तु
ब्रह्मभूय (न) ब्रह्ममें	ब्रह्मतीर्थ अर्थात् अंगु	भट (पु) जोधा
मिलना	ठाकी मूल	भटित्र (उ) शूलपरभुने
ब्रह्मवर्चस (न) सदाचा	ब्राह्म्य (न) तथा	भट्टारक (पु) राजा-भ-
रऔरवेदभ्यासफल	भ	टाकी (स) वेंगन
ब्रह्मबंधु (उ) निंदित-	भ (न) नक्षत्र	भट्टिनी (स) वड़ीरानी
आत्मा	भक्त (न) भात	सेऔर रानी
ब्रह्मविंदु (पु) अंजली	भक्षक (उ) खानेवाला	भंडाकी (स) वनभटा
सेवापढ़नेकेसमय	भक्षित (उ) खायागया	भंडिल (पु) सिरस
मुखसे निकलावुंद	भस्मकार (उ) पुत्रआ	भंडी (स) भाँगरा
ब्रह्मसायुज्य (न) ब्रह्म	आदिकाबनानेवाला	भद्र (न) कल्याण-बैल
में मिलना	भग (न) योनि (श्री)	भद्रकुम्भ (पु) पूर्णकलश
ब्रह्मसू (पु) अनिरुद्ध	कामना-महात्म्य	भद्रदारु (पु न) देवदारु
ब्रह्मांजलि (पु) वेदपा	वीर्य्य-यत्न-सूर्य्य	भद्रपर्णी (स) खभारी
ठकेआदिमेंशांतिपा-	कीर्त्ति	भद्रमुस्तक (पु) नागरमो

भद्रयव (उ) इन्द्रजव
भद्रवला (स) आकाश वेलि चंदन
भद्रश्री (स) सामान्य
भद्रासन (न) राजगद्दी
भय (न) डर
भयंकर (न) डर
भयद्रुत (उ) डरा हुआ
भयानक (पु) रसविशेष डर
भर (पु) बहुत
भरण (न) वेतन
भरण्य (न) वेतन
भरण्यभुक् (उ) वेतनी
भरत (पु) नट
भरद्वाज (पु) लवा
भर्ग (पु) शिव
भर्त्ता (पु) पति पुत्र
भर्त्तृदारक (पु) राज
भर्त्तृदारिका (स) राजकन्या
भर्त्सन (न) डराना
भर्म (न) सोना वेतन

भल्ल (पु) रीछ
भल्लातकी (उ) भिलावा
भल्लुक (पु) रीछ
भव (पु) शिव-जन्म
भवन (न) घर
भवानी (स) पार्वती
भविक (न) कल्याण
भविता (उ) होगा
भविष्णु (उ) होनेकी इच्छावाला
भषक (पु) कुत्ता
भस्त्रा (स) धौंकनी
भस्मगंधिनी (स) ठाग नधूरि सीसौ
भस्मगर्भा (स) काली
भस्म (पु) भस्म-ऐश्वर्य
भा (स) तेज
भाग (पु) अंश-बांट
भागधेय (न) भाग्य
राजभाग (पु) हि
भागीन (उ) भागका

भागिनेय (पु) भांजा
भागीरथी (स) गंगा
भाग्य (न) दैव-शुभाशुभकर्म
भाजन (न) पात्र
भांड (न) पात्र-घोड़ेका गहना-वनियेका मूलधन
भाद्र (पु) भादौं
भाद्रपद (पु) भादौं
भाद्रपदा (स) उत्तराभाद्रपद
भानु (पु) सूर्य, किरण
भामिनी (स) क्रोधिनीस्त्री
भार (पु) २० तुलाभर
भारत (न) वर्ष-लोक
भारती (स) सरस्वती
भारद्वाजी (स) कपास
भारयष्टि (स) बहंगी
भारवाह (पु) बोकिल
भारिक (पु) तथा
भार्गव (पु) शुक्र
भार्गी (स) भांगरा
भार्गवी (स) दूब हि
भार्या (स) विवाहिता

भार्य्यापती (पु) स्त्रीपु-	भित (त्रि) भाठा	कूड़ा वा जूठा
रुष	भित्ति (स) भीति	भुग्न (त्रि) टेढ़ा-टूटा
भाल्लूक (पु) रीछ	भिदा (स) फूटना	भुज (पु स) बांह
भाव (पु) पंडित-मन	भिदुर (न) वज्र	भुजग (पु) सर्प्प
का विकार-सत्व-सत्ता	भिंदिपाल (पु) गदा	भुजंगभुक् (पु) मोर
स्वभाव-अभिप्राय	भिन्न (त्रि) और विदारण	भुजंगम (पु) सर्प्प
चेष्टा-आत्मा-स्वरू-	भिषज (पु) वैद्य	भुजंगाक्षी (स) रसनाय
प-जन्म पाथा दार्थ-	भिस्सा (स) भात	भुजशिर (न) कंधा
भावित (त्रि) ह्रौंकाप	भिस्सटा (स) जलाअन्न	भुजांतर (न) गोद
भाविनी (स) स्त्री	भिस्सा (स) भात	भुजिष्य (पु) दास
भावुक (न) कल्याण	भी (स) डर	भुवन (न) जल-जग
भास (स) तेज-	भीति (स) डर	भूत (पु) देवजाति-पा-
भाषा (स) सरस्वती	भीम (पु) शिव-डर	राया-न्याय (न)
भाषित (न) बोलना	भीरु (स) नारी-डर-	पृथिव्यादिपंचतत्व
कहा (त्रि)	पोक (त्रि)	(न) सत्य-जंतु (न)
भाष्य (न) विवरण	भीरुक (त्रि) डरपोक	गतकाल (न) सदृश (न)
भास (स) तेज	भीरुपत्री (स) सतावर	भू (स) पृथ्वी ।सी
भास्कर (पु) सूर्य्य	भीलुक (त्रि) डरपोक	भूतकेश (पु) जटामां-
भास्वत (पु) सूर्य्य	भीषण (न) डर	भूतवास (पु) बहेड़ा
भिक्षा (स) भीखमा-	भीष्म (न) डर	भूतवेशी (स) श्वेतफू-
गना-सेवा-वेतन	भीष्मसू (स) गंगा	लकाहरसिंगार
भिक्षु (पु) सन्यासी	भुक्त (त्रि) खायागया	भूतावास (पु) बहेड़ा
भिक्षुकी (स) भिखारिन	भुक्तसमुज्झित (न)	भूतात्मा (पु) ब्रह्मा, देह

भूति (स) सिद्धि-ऐश्वर्य्य-
वेतन-भस्म
भूतिक (न) चिरायता-तृण
गंध-कुकुरमुता
भूतेश (पु) शिव
भूधर (पु) सुनार
भूदेव (पु) ब्राह्मण
भूनिंब (पु) चिरायता
भूप (पु) राजा
भूपदी (स) बेला
भूभृत (पु) पहाड़-राजा
भूमि (स) पृथ्वी
भूमिजंबुका (स) नारंगी-
भूमिस्पृश (पु) बनियाँ
भूयस (२) अधिक
भूरि (२) अधिक-सोना
(पु) चंद्र (उ)
भूरिफेना (स) सोयारक्ष
भूरिमाय (पु) स्यार
भूरुंडा (स) हाथीशुंडा
भूर्ज्ज (पु) भोजपत्र
भूषा (स) शृंगार
भूषित (२) अलंकारयुत

भूष्णु (२) होनेकी-
इच्छावाला गा
भूस्तृण (न) जलद
भृंग (न) तज-खटक
बढ़ैया-भौंरा
भृंगराज (पु) भंगरा
भृंगार (पु) स्वर्णरचित
पात्र
भृंगारी (स) कींगुर
भृगु (पु) पर्वतसेजल
निकलनेकास्थान
भृतक (पु) मजदूर
भृति (स) वेतन
भृतिभुक् (पु) मजदूर
भृत्य (पु) दास
भृत्या (स) वेतन
भृश (न) वारंबार
भेक (पु) मेड़क
भेकी (स) मेड़की
भेद (पु) भेदकरना
भेदित (२) फाटा
भेरी (स) नगारा बाजा
भेषज (न) औषध

भेरुंड (न) भीरुका झुंड
भैरव (न) डर
भैषज्य (न) औषध
भोग (पु) स्त्रीकिसुख
आदि-हाथी-घोड़ा
आदिकेसुख-सर्प-
काफण-शरीर
भोगवती (स) सर्पोंकी
नदी -नगरी
भोगी (पु) सर्प्पमात्र
भोगिनी (स) रानी
भोजन (न) खाना
भो (अ) संबोधनार्थ
भौम (पु) मंगल
भौरिक (पु) सोनेकाअ-
भ्रंश (पु) गिरना ला
भ्रकुंश (पु) नाचनेवा
भ्रकुटि (स) भौंहेंटेढ़ी
करना
भ्रकुटी (स) तथा
भ्रम (पु) भ्रांति, नाली
जल-भ्रम
भ्रमर (पु) भौंरा

भ्रमरक (पु) ललाटपरलुके बाल	मकरंद (पु) पुष्परस	मणि (पु) रत्नविशेष
भ्रमि (स) भ्रम	मकुट (न) मुकुट	मणिक (पु) मटका
भ्रष्ट (३) टपकाहुआ	मकूलक (पु) जयफल	मणिबंध (पु) मणि-
भ्राजिष्णु (३) अलंकारादिसे	वज्रदंती	मालारेखा / का आधा
भ्रातरौ (पु) बहनभाई	मख (पु) यज्ञ	[illegible]
भ्रातृज (पु) भतीजा	मक्षिका (स) मक्खी	मंडन (न) गहना-भूष
भ्रातृजाया (स) भौजाई	मगध (पु) यशगायक	[illegible]
भ्रातृभगिनी (पु) भाईबहन	मंक्षु (अ) शीघ्र	
भ्रातृव्य (पु) भतीजा-शत्रु	[illegible]	[illegible]
भ्रात्रीय (पु) भतीजा	मंगल्यक (पु) मसूर	[illegible]
भ्रांति (स) भ्रम	मंगल्या (स) अगर	[illegible]
भ्राष्ट्र (पु) भूजनेकाखपरा	मघवा (पु) इंद्र	मंडल (न)
भ्रुकुंस (पु) नाचनेवालापुरुष	मचर्चिका (स) [illegible]	[illegible]
भ्रुकुटि (स) भौंहेंटेढीकरना	मज्जन (पु) सार	मंडलाग्र (पु) तलवार
भ्रूण (पु) गर्भ	मंच (पु) खाट	मंडलेश्वर (पु) [illegible]
भ्रू (स) भौंह रूप	मंजरि (स) मंजरी	मंडहारक (पु) कल्लार
भ्रूकुंस (पु) नाचनेवालापु	मंजिष्ठा (स) मजीठ	मंडित (३) अलंकारयु
भ्रूकुटि (स) भौंहेंटेढीकरना	मंजीर (पुन) पाजेब	त
भ्रूण (पु) गर्भ-बालक	मंजु (३) सुंदर	मंडूक (पु) मेंडक
भ्रेष (पु) अन्याय	मंजुल (३) सुंदर	मंडूकपर्णी (पु) अरलू
म	मंजूषा (स) पिटारी	मंडूकपर्णी (स) भांगरा
मकर (पु) जलजीव	मठ (पु) शिष्यघर	मंडूर (पुन) लोहमैल
मकरध्वज (पु) कामदेव	मड्डु (पु) बाजेकाभेद	मतंगज (पु) हाथी

मतल्लिका (स) शुभ
मति (स) बुद्धि
मत्त (पु) मतवाला हाथी
हर्षित (त्रि) स्त्री
मत्तकाशिनी (स) उत्तम
मत्स्य (पु) मछली
मत्सर (पु) परसंपतिको
नदेखसके (मत्सरसेयु-
क्त (त्रि)
मत्स्यंडी (स) राव या
मत्स्याधानी (स) कंडि-
मत्स्यपित्ता (स) कुटकी
मत्स्यवेधन (न) वंसी
मत्स्याक्षी (स) ब्राह्मी
मथित (न) मठाभेद
मद (पु) हाथी कामद-आ
मदकल (पु) मदांधहाथी
मदन (पु) कामदेव-मैन
फल-धतूरा नेकाघर
मदस्थान (न) मदिरापी
मदिरा (स) मदिरा
मदिरागृह (न) मदिरा
मदोत्कट (पु) मदांधहाथी

मद्गु (पु) हारिलपक्षी
मद्गुर (पु) मछली
मद्य (न) मदिरा
मधु (पु) चैत्रमास-र-
त्नजोति (स) सहत (न)
महुआकी मदिरा (न)
मदिरा (न) पुष्परस (न)
मधुकर (पु) भौंरा
मधुक्रम (पु) मदिराघर
मधुद्रुम (पु) महुआ
मधुप (पु) भौंरा
मधुपर्णिका (स) नील
मधुपर्णी (स) गिलोय
मधुमक्षिका (स) मक्खी
मधुयष्टिका (स) मुल
हेठी
मधुर (पु) मीठारस-
स्वादु (त्रि) प्रिय (त्रि)
मधुरक (पु) जीरा र्वा
मधुरसा (स) दाख-मू-
मधुरा (स) सौंफ
मधुरिपु (पु) विष्णु
मधुलिट् (पु) भौंरा

मधुवार (पु) मदिरा
पीनेका समय
मधुव्रत (पु) भौंरा
मधुशिग्रु (पु) ला-
लफूलका सहजना
मधुश्रेणी (स) मूर्वा
मधुष्ठील (पु) महुआ
मधूच्छिष्ट (न) मोम
मधूक (पु) महुआ
मधूलक (पु) तथा
मधूलिका (स) मूर्वा
मधुक (न) मुलहेठी
मध्य (न) बीच-श-
रीरकासन्धि (पुन)
न्याय (त्रि) विशेष
मध्यदेश (पु) देश
मध्यम (पु) गाने
कास्वर-देशभेद
शरीरकाबीच (पुन)
मध्यमा (स) प्रथम
रजस्वला-बीच
कीअंगुली
मध्याह्न (पु) सं-

ध्याकाल-मध्याह्नका
ल
मध्वासव (पु) महुआ कीमदिरा
मनःशिला (स) मनसिल औषध
मनसिज (पु) कामदेव
मनस् (न) चित्त
मनस्कार (पु) सुखमें तत्परमन
मनाक् (अ) सुखार्थ-क
मनित (त्रि) जाना
मनीषा (स) बुद्धि
मनीषी (पु) पंडित
मनुज (पु) मनुष्य
मनुष्य (पु) पुरुष
मनुष्यधर्मन् (पु) कुबेर
मनोगुप्ता (स) मनसिल
मनोजव (त्रि) पितृसम
मनोज्ञ (त्रि) सुंदर
मनोरथ (पु) इच्छा
मनोरम (त्रि) सुंदर
मनोहत (त्रि) टूटेमन-का
मनोह्वा (स) मनसिल

मन्तु (पु) अपराध
मंत्रज (पु) शान्ति
मंत्री (पु) सचिव
मंथ (पु) रई
मंथा (पु) रई
मंथदंडक (पु) रई
मंथनी (स) मथानी
मंथर (पु) मंदगामी
मंथान (पु) रई
मंद (पु) मूर्ख-अल्प
मंदगामी (पु) धीरे२ चलनेवाला
मंदाकिनी (स) आक
मंदाक्ष (न) लज्जा
मंदार (पु) कल्पवृक्ष नींव-आक
मंदिर (न) घर
मंदुरा (स) घुड़साल
मंदोष्ण (न) थोडागरम
मंद्र (पु) गंभीरशब्द
मन्मथ (पु) कामदेव कैथावृक्ष

मन्या (स) गलेकी पिछलीनस
मन्यु (पु) शोक-दीनता यज्ञ-क्रोध
मन्वंतर (न) ७१दिव्य युग
मपष्टक (पु) वनमूंग
मपुष्टक (पु) तथा
मय (पु) ऊंट
मयु (पु) किन्नर
मयूख (पु) किरण-शो भा
मयूर (पु) अजमोद-मोर
मयूरक (पु) चिरचिरा-तृतिया (न)
मरकत (न) मणि
मरण (न) मृत्यु
मरिच (न) मिरच
मरीचि (पु) किरण
मरीचिका (स) मृगतृष्णा
मरु (पु) मरुभूमि वा-रेतलीभूमि-निर्जल देश-पर्वत
मरुत (पु) पवन-वा-यव्यदिशाकास्वामी-

देवता
मरुत्वत् (पु) इंद्र
मरुन्माला (स) शाक
मरुवक (पु) मैनफल
दोनामरुआ
मर्कट (पु) वानर
मर्कटक (पु) मकड़ी
मर्कटी (स) कौंच-करं-
जावृक्षकाभेद
मर्त्य (पु) मनुष्य
मर्द्दन (न) अंगमींजना
मर्द्दल (पु) वाजेकाभेद
मर्म (न) हड्डियोंकीसंधि
मर्मर (पु) खड़खड़ाना
मर्मस्पृक्‌वामर्मस्पृश
(३) मर्मभेदी
मर्यादा (स) मर्यादा
मल (पुन) मैल-पाप
मूत्रकाविष्टा
वस्तु
मलदूषित (३) मैली
मलपू (स) कठूवर
मलयज (पुन) चंदन
मलिन (३) मैला

मलिनी (स) रजस्वला
मलिम्लुच (पु) चोर
मलीमस (३) मैलीवस्तु
मल्ल (पु) पैलवान
मल्लिक (पु) हंसभेद
मल्लिका (स) बेला
वा हंसविशेष
मसी (स) कज्जल
मसूर (पु) अन्नभेद
मसूरविदला (स) काली
निसोतवातिधारा
मसृण (३) चिकना
मस्कर (पु) बांस
मस्करी (पु) सन्यासी
मस्तक (पुन) सिर
मस्तिष्क (न) गूदा
मस्तु (न) दहीकाजल
मह (पु) उत्सव
मन
महत् (३) बड़ा, राज्य
महती (स) नारदकी
वीणा-सुभाग्यी
महस् (न) उत्सव
महाकंद (पु) लहसन

महाकुल (३) सज्जन
महांग (पु) ऊंट
महाजाली (स) तुरई
महादेव (पु) शिव
महाधन (न) बड़ाधन
महानस (पुन) रसोईकी
घर
स्त्री
महामात्र (पु) मुख्यमं-
महायज्ञ (पु) यज्ञभेद
महारजत (न) सोना
महारजन (न) कुसुम
महारराय (न) बड़ाजंगल
महाराजिक (पु) गण
देवता२२०
भेद
महारौरव (पु) नरकभे
महाशय (३) उदार
महाशूद्री (स) अहीरी
महाश्वेता (स) स्वेतगो-
णाफल
महासहा (स) सेवती
कांटेदार-गुलाबांस
मूंग-मैथी-कटसरैया
महासेन (पु) स्वामिका

दानदी
...का (स) नर्म
त्तिक ...) स्त्रियोंकी कंध
महिका ...रका पत्तला
महिला ...) मेह
यंगु- ...ाति (पु) मेघक्रांति
वती ...ष्य (न) जल
महि... ...तादानुलासी (पु) मोर
मा... ...नामन् (उ) मोथा
...र्जन
...निर्घोष (न) मेघकाग...
...माला (स) मेघपंक्ति
...घवाहन (पु) इंद्र
...चक (पु) काला-मोरपंख चिह्न
...(पु) लिंग· भेड़ा
...म (न) चर्बी
...क (पु) गुड़का मदिरा
...दिनी (स) धरती
मेदुर (उ) मेघ-चिक्कन
मेधा (स) धारणावतीबु...
...द्धि बंधनदंड
मेधि (पु) मेढ़ी वा पशु
मेध्य (उ) पवित्र
मेरु (पु) सुमेरुपर्वत

मेलक (पु) मेल
मेष (पु) मेढ़ा वा भेड़ा
मेषकंबल (पु) कम्बल
मेह (पु) व्याधिभेद
मेहन (न) लिंग
मैत्रावरुणि (पु) अगस्ति
मैत्री (स) मिताई
मैत्र्य (स-न) मिताई
मैथुन (न) रतिकरना
मैरेय (न) मदिरा
मोक्ष (पु) मुक्ति-का-ली पाठरि
मोघ (उ) व्यर्थ
मोचक (पु) सहजना
मोचा (स) सेमर-केला
मोद (न) आनंद
मोदक (पु-न) लड्डु
मोरट (न) ऊखकीजड़
मोरटा (स) मूर्वा
मोषक (पु) चोर
मोह (पु) मूर्छा
मौक्तिक (न) मोती

मौञ्जीन (उ) मूँगरेवत
मौन (न) चुप
मौरजिक (पु) मृदंग बजानेवाला
मौलि (उ) शिर वा-किरीट-बंधकेश ...चा
मौर्वी (स) धनुषकी प्रत्यं...
मौष्ट (स) क्रीडाभेद
मौष्टा (स) तथा
मौहूर्त्त (पु) ज्योतिषी
म्लिष्ट (न) अस्पष्ट
म्लेक्ष (पु) म्लेक्षभेद
म्लेक्षदेश (पु) देशभेद
म्लेक्षमुख (न) तांबा

य

यकृती (न) कलेजा
यक्ष (पु) कुबेर देवजाति
यक्षकर्दम (पु) महासुगंधकी धूप
यक्षधूप (पु) राल
यक्षराट् (पु) कुबेर
यक्ष्मा (पु) क्षयीरोग
यजुस् (न) वेदभेद

यज्ञ (पु) यज्ञ, यज्ञसूत्र (न)	यम (पु) यमराज	यष्टः पटह (पु) ढोल
दक्षिणहाथकाजनेऊ	नित्यकर्म-संयम	यष्टा (पु) यज्ञाध्यक्ष
यज्ञांग (पु) गूलरवृक्ष	यमराज (पु) यम	यष्टि (स) लाठी ।री
यज्ञिय (त्रि) यज्ञकीवस्तु	यमुना (स) नदी	यष्टिमधुका (स) मुलहे
यज्वा (पु) विधिसेयज्ञकर्ता	यमुनाभ्राता (पु) यम	यष्टीक (पु) लाठीधारक
यत् (अ) कारण	ययु (पु) अश्वमेध	याग (पु) यज्ञ
यतः (अ) कारण	यज्ञकाघोड़ा [illegible]	याच्नक (त्रि) याचक
यती (पु) जितेंद्रिय	यव (पु) जौ	याच्ना (स) मांगना
यतिन् (पु) जितेंद्रिय	यवक्य (त्रि) जौअन्न ।र	याचित (न) जोमांगने
यत्पान (न) मदकरना	यवक्षार (पु) जवाखार	सेमिले ।सेमिला
यथा (अ) तुल्यतार्थक	यवन (पु) बड़ेवेगका	याचितक (न) मांगने
यथातथ्य (अ) सत्य	घोड़ा	याच्ञा (स) मांगना
यथाजात (त्रि) मूर्ख	यवफल (पु) बांस	याजक (पु) यज्ञक
यथापथ्य (अ) यथायोग	यवस (पुन) घास	यातना (स) पीड़ा
यथायथ्य (अ) सत्य-	यवागू (स) लप्सी	यातयाम (त्रि) पुराना
यथायोग्य ।रा	यवाग्रज (पु) जवा	रचाकरत्यागकिया
यथार्हवर्ण (पु) हलका	खार ।जवायन	यातु (न) राक्षस
यथास्वम् (अ) यथायो	यवानिका (स) अ	यातुधान (पु) राक्षस
ग्य	यवास (पु) जवासा	यातर (स) देवरानीजि
यथेप्सित (न) चाह	यवीय (पु) छोटाभाई	ठानी /कलना-गमन
यदि (अ) पक्षांतर	यव्य (त्रि) जौकेयोग्य	यात्रा (स) प्रस्थान-नि
यदृच्छा (स) स्वतंत्रता	खेत	यादःपति (पु) समुद्र
यंता (पु) रथवान	यशस् (न) कीर्ति	यादस् (न) जलजीव

यादसांपति(पु)वरुण
यान(न)गमन-वाहन
यानमुख(न)धुरा
याप्य(त्रि)अधम
याप्ययान(न)पालकी
याम्ययान(न)तथा
याम(पु)प्रहर, संयम
यामिनी(स)रात
यामुन(न)सुरमा
यायजूक(पु)वारंवार
यज्ञकरनेवाला
याव(पु)लाख
यावक(पु)कुरथी
यावत्(अ)संपूर्ण-अ-
वधि-मान-अवधार
ण
यावन(पु)लोहवान
याष्टीक(पु)लट्ठधारी
यास(पु)जवासा
युक्त(त्रि)न्यायसेयुक्त
वस्तु
युक्तरसा(स)रायसेन
युग(न)दो-गाढ़ी
आदिकाजुआ(पु)
सत्ययुगादि(न)
युगकीलक(पु)हल
कीसैल
युगंधर(पु)रथके
जुयेकाकाठ नार
युगपत्रक(पु)कच-
युगपद्(अ)एकसमय
युगपार्श्वग(पु)नि
कालनेकाकाठ,जोत
नेकेयोग्य
युगल(न)दो
युग्म(न)दो
युग्य(न)वाहन-
युगकोलेजाना
बैल
युद्ध(न)लड़ाई
युत्(स)युद्ध
युवति(स)ज्वानस्त्री
युवा(पु)युवापुरुष
युवराज(पु)राजपुत्र
यूथ(पुन)जंतुओं
कासमूह
यूथनाथ(पु)मुख्यहाथी
यूथिका(स)जूही
यूप(पु)तूत
यूपक(पु)पुआ
यूपकटक(पु)यज्ञस्तंभ
यूपाग्र(न)यज्ञस्तंभकाशिर
योक्त्र(न)जोतेकीरस्सी
योग(पु)शस्त्रबांधना-उ-
पाय-ध्यान-संगति
युक्ति
योगेष्ट(न)सीसा
योग्य(न)ऋद्धिऔषध
योजन(न)४कोश
योजनवल्ली(स)मंगारा
योत्र(न)जोतकीरस्सी
योध(पु)योधा
योधसंराव(पु)वीरोंका
निंदापूर्वकपुकारना
योधा(पु)योधा
योनि(पु-स)स्त्रीकीभग
योषा(स)नारी
योषित्(स)नारी
योतव(न)तोल माप

यौवन (न) ज्वानी

र

रंहस (न) वेग
रक्त (पु) लाल-लो-
हू (न) कुंकुम केसरि
(न) नीलादि रंग (३)
रक्तक (पु) दुपहरिया
रक्तचंदन (न) पतंग
रक्तपा (स) जोंक
रक्तफला (स) कुंदुरू
रक्तसंध्यक (न) रक्तपद्म
रक्तसरोरुह (न) लाल
कमल
रक्तांग (पु) कमीला
रक्तोत्पल (न) लालकमल
रक्षस (न) देवजाति, रा
क्षस म्लेच्छ
रक्षकट्या (पु) रथस-
रक्षित (३) रखाया
रक्षिवर्ग (पु) रखवार
रक्षण (पु) रक्षा
रंकु (पु) मृगभेद
रंग (न) रंग

रंगाजीव (पु) रंगसाज़
रचना (स) बनाना
रजक (पु) धोबी
रजत (न) चाँदी-हार
(३) सोना (३) श्वेत (३)
रजनी (स) रात, हल्दी
रजनीमुख (न) रातका
रज (न) रजोगुण-धू-
रि-स्त्रीकारज
रजस्वला (स) रजवा
रज्जु (स) रस्सी
रञ्जन (न) लालचंदन
रंजनी (स) नील
रण (पुन) युद्ध
रणसंकुल (न) वीरों
का गर्जना
रंडा (स) मूसली
रत (न) मैथुन
रतिपति (पु) कामदेव
रत्न (न) रत्नमात्र
रत्नसानु (पु) पर्वत
रत्नाकर (पु) समुद्र
रथ (पु) वेत, रथ

रथकार (पु) करणी स्त्री
और माहिष्य से उत्पन्न
बढ़ई / [illegible]
रथगुप्ति (स) रथकालो
रथद्रु (पु) तेंदुआ वृक्ष
रथांग (पु) चकवा चकवी
[illegible] (न) पहिया (न)
रथिक (पु) रथवाला
रथी (पु) रथपर बैठकर ल-
ड़नेवाला। रथवाला
रथिर (पु) रथवाला
रथ्य (पु) रथका घोड़ा
रथ्या (स) भीतर का मार्ग
रथ समूह
रद (पु) दांत
रदन (पु) दांत
रदनच्छद (पु) दांत
रन्ध्र (न) पोल
रभस (पु) हर्ष
रमणी (स) स्त्री
रमा (स) लक्ष्मी
रंभा (स) केला
रय (पु) वेग

	[ति]	[वाले]
रल्लक (पु) कंबल	रहस्य (त्रि) एकांतकीबा	राजबला (स) आकाश
रव (पु) शब्द [ला]	राका (स) कलासहित	राजबीजिन् (पु) राजवंश।
रवण (त्रि) शब्दकरनेवा	पूर्णमासी	राजवृक्ष (पु) अमलतास
रवि (पु) सूर्य्य	राक्षस (पु) राक्षस	राजसदन (न) राजघर
रश्मि (पु) किरण-रस्सी	राक्षसी (स) वृक्षभेद	राजसभा (स) राजसभा
रस (पु) विषय, पारा, गंध	राक्षा (स) लाख	राजसूय (न) यज्ञभेद
रस-शृंगारादि विषय	रांकव (त्रि) मृगरोमसे	राजहंस (पु) चोंचचरन
वीर्य्य-गुण-राग-द्रव	बनावस्त्र	लालश्वेतवर्णकाहंस
रसगर्भ (न) रसोत	राज (पु) राजा [illegible]	राजादन (पु-न) चिरौंजी
रसज्ञा (स) जीव-जीभ	राजक (न) राजाओं	खिरनी
रसना (स) जिह्वावाजीभ	राजन् (पु) राजा-चंद्र	राजार्ह (न) अगुरु
स्त्रियोंकीकंधनी	क्षत्री-राजारिष्ट (न)	राजि (स) निरंतरपंक्ति
रसवती (स) रसोईकाघर	क्षेम-अशुभ शुभ	राजिका (स) राई [पं]
रसा (स) रस-पृथ्वी-पा-	राजन्य (पु) क्षत्री	राजिल (पु) विषरहितस
ठरि-सालिवमिश्री	राजपृष्ठ (न) राजाकान	राजीव (पु) मछली
रसांजन (न) रसोत	काधनुष [योंकागण]	राजीव (न) कमल
रसातल (न) पाताल	राजन्यक (न) क्षत्रि	राज्यांग (न) राज्यके
रसाल (पु) आम, ऊख	राजन्वत् (त्रि) नीतिमा	अंग
रसाला (स) चटनी	न्राजासेयुक्तदेश	रात्रि (स) रात
रसित (न) मेघकागर्जन	राजराज (पु) कुबेर	रात्रिंचर (पु) राक्षस
रसोनक (पु) लहसन	राजवंश्य (पु) राजवंश	रात्रिचर (पु) राक्षस
रहस्य (न) एकान्त	राजवत् (त्रि) राजकी	राद्धांत (पु) सिद्धांत
रह (न) एकांत	आज्ञासेयुक्तदेश	राध (पु) वैशाख

राधा (स) विशाखा
राम (पु) बलदेव-मृग
भेद-नीला (त्रि) काला
(त्रि) रमणीय (त्रि) श्वेत (त्रि)
रामठ (न) हींग
रामा (स) स्त्री
राम्भ (पु) बांसकावृक्ष
राशि (पु. स) समूह-अ-
श्वादिकोढेर-मेषादिल-
ग्न
राष्ट्र (नपुं) देश-उपद्रव
राष्ट्रिका (स) भटकटाई
राष्ट्रिय (पु) राजाकासाला
रासभ (पु) गधा
रास्ना (स) रायसेन-सना
राहु (पु) ग्रहविशेष
रिक्तक (त्रि) रीता
रिक्थ (न) धन
रिंगण (न) गिरना
रिपु (पु) बैरी
रिष्टि (पु) तलवार
रीढा (स) अपमान
रीण (त्रि) बहता हुआ

रीति (स) पीतल-प्रचार
टपकना
रीतिपुष्प (न) अंजन
रुक्प्रतिक्रिया (स) औ-
षधकाउपाय
रुक्म (न) सोना
रुक्मकारक (पु) सुनार
रुक्ष (त्रि) अप्रेम-अ-
चिक्कण
रुग्न (त्रि) टूटा
रुच् (स) तेज
रुचक (पु) एरंड-बिजो-
रुचि (स) तेज-क्रोध
कीरुच्छा-आशक्त
किरणादि
रुचिर (त्रि) सुंदर
रुच्य (त्रि) सुंदर
रुज् (स) रोग
रुजा (स) रोग
रुत (न) पक्षियोंकाश-
रुदित (न) रोना
रुद्ध (त्रि) नदीआदिसे
रुद्र (पु) गणदेवता ११

शिव
रुद्राणी (स) पार्वती
रुधिर (न) लोहू
रुरु (पु) मृगभेद
रुष् (स) क्रोध
रुहा (स) दूब
रूप (न) विषय
रूपाजीवा (स) वेश्या
रूप्य (न) तांबा-चांदी
के मेलका रुपया)
चांदी, अच्छीचांदी (
रूपाध्यक्ष (पु) रूप-
योंकाअधिकारी
रूषित (त्रि) धूरिलगा
रेचित (न) घोड़ाकी
चाल
रेणु (पु. स) धूरि
रेणुका (स) गगन
धूरि
रेतसी (न) वीर्य्य
रेवतीरमण (पु) ब-
लभद्र
रेफ (त्रि) अधम

र् अक्षर (पु) कुत्	रोष (पु) क्रोध | कुष्ठ	लक्ष्मी (स) लक्ष्मी-ऋ
सित (त्रि)	रोहित (न) सीधाइंद्र	द्धि-औषधि-संपति
रेवा (स) नर्मदा	लाल (पु) मछली-मृ-	लक्ष्मीवत् वा लक्ष्मीवान्
रैवारा (पु) धन सोना	गभेद | लालकंजा	(त्रि) श्रीमान् | ना
रोक (न) पोल	रोहितक (पु) रुहेली	लक्ष्य (न) छल-निशा-
रोग (पु) व्याधि	रोहिताश्व (पु) आग	लगुड (पु) लाठी | द्य
रोगहारिन (त्रि) वैद्य	रोहिन् (पु) रुहेली-	लग्न (न) राशियों काम
रोचन (पु) कालासेमर	लालकंजा | उर (त्रि)	लग्नों का उदय
रोचनी (स) निसोत-	रौद्र (पु न) रसविशेष	लग्नक (पु) मध्यस्थ
कवीला-श्वेततिधारा	रौमक (न) सामर	लघु (न) शीघ्र-पिंडरक
रोचिष्णु (त्रि) अलंकार	रौरव (पु) नरकभेद	शाक-इष्ट (त्रि) अल्प (त्रि)
से अतिशोभित	रौहिणी (स) गाय	लघुलय (न) उसीर
रोचिस् (न) तेज	रौहिणेय (पु) वलदेव	लंका (स) रावणकी पुरी
रोदन (न) आँसू	बुध | रा-मृगभेद	लंकोपिका (स) पिंडरशाक
रोध्नी (स) जवासा | र्ग	रौहिष (न) सुगंधतृ	लज्जा (स) लाज
रोदस (न) भूमि-स्व	ल	लज्जाशील (त्रि) लोक
रोध (न) तीर	लकुच (पु) वडहल	में लाजशील
रोप (पु) वाण | छिद्र	लक्षण (न) कलंक	लज्जित (त्रि) लज्जित
रोमन् (न) वार वा-	लक्ष (न) निशाना	लट्वा (स) चिड़ा
रोमन्थ (पु) रोंछयाना	लक्ष्म (न) चिह्न-	लता (स) वेलि-शाखा
रोमहर्षण (न) रोम	प्रधान वान्	ऊपरको गई लता-फूल
खड़ा होना | हृष्ट	लक्ष्मण (त्रि) लक्ष्मी	प्रियंगु-ककुनी-पिंडर
रोमांच (पु) रोमखड़ा	लक्ष्मणा (स) सारसि	कशाक-मालकाकुनी

नी

लतार्क (पु) हराप्याज
लपन (न) मुख
लपित (न) बोलना
लब्ध (त्रि) पाया
लब्धवर्ण (पु) पंडित
लब्धानुज्ञ (पु) गुरुसे
आज्ञालब्ध
लभ्य (त्रि) न्यायसे मु-
कवस्तु
लम्बन (न) लंबीकंठी
लम्बोदर (पु) गणेश
लय (पु) तालमिलाना
ललना (स) स्त्री
ललंतिका (स) लंबी
कंठी
ललाट (न) माथा
ललाटिका (स) बंदी
ललाम (न) पुच्छ-
तिलक-अश्व-आ
भूषण-प्राधान्य
ध्वजा /की माला ललाट तक
ललामक (न) सिरसे
ललित (न) स्त्रियोंका

स्त्रविशेष /काटना
लव (पु) थोड़ा, अन्न
लवंग (न) लौंग /स
लवण (पु) मधुरादि-
लवणोद (पु) समुद्रभेद
लवन (पु) काटना
लवित्र (न) हँसिया
लशुन (न) लहसन
/मध्य
लस्तक (पु) धनुषका
लाक्षा (स) लाख
लाक्षाप्रसादन (पु)
लाललोध
लांगल (न) हल /हलकी लकड़ी
लांगलदंड (पु) हल
लांगलपद्धति (स) कूँड
लांगलिकी (स) कलह
री /री-नारियल
लांगली (स) जलपीपल
लांगूल (न) पूंछ /कीलक
लाजा (पु० बहु०) धान
लांछन (न) कलंक
लाभ (पु) व्याज
लामज्जक (न) उशीर

लालसा (स पु) चाहना
लाला (स) लार /थूक
ललाट (न) हाथीका
लालाटिक (त्रि) स्वामी
के कार्यको असमर्थ
लाव (पु) लवापक्षी
लासिका (स) नाचने
वाली स्त्री
लास्य (न) नाचना
लिकुच (पु) बडहल
लिक्षा (स) परिमाण
लिखित (न) लिखा
लिंग (न) चिह्न
लिंगवृत्ति (पु) ठग
लिपि (स) लिखा
लिपिकार (पु) लेखक
लिप्त (त्रि) चंदनादि
लगा-खायागया
लिप्तक (त्रि) विषके भ
रे बाण
लिप्सा (स) मनोरथ
लिवि (स) लिखा
लीला (स) स्त्रियों

कारसविशेष-क्रीड़ा-
विलास-क्रिया /ना
लुठित(३)घोड़ेकालोट
लुब्ध(३)लोभी
लुब्धक(पु)व्याधा
लुलाप(पु)भैंसा
लूता(स)मकरी
लून(३)कटाहुआ
लूम(न)पूंछ
लेख(पु)देवता /ला
लेखक(पु)लिखनेवा
लेखर्षभ(पु)इंद्र
लेखा(स)लीला-नि-
रंतरपंक्ति
लेप(पु)खाना
लेपक(पु)राज
लेश(पु)थोड़ा
लेष्टु(पु)ढेला
लोक(पु)जगत-स्व
र्ग-मृत्यु-पाताल
लोकजित(पु)जिन,बुध
लोकमाता(स)लक्ष्मी
लोकायत(न)चार्वाकशा
स्त्रविशेष

लोकालोक(पु)पृथ्वी
केचारोंओरकालोक
लोकेश(पु)ब्रह्मा
लोचन(न)आंख
लोचमस्तक(पु)अ-
जमोद
लोध्र(पु)लोध
लोपामुद्रा(स)अग
स्तिकीस्त्री /द्रव्य
लोप्त्र(न)चोरीका
लोमन्(न)बाल
लोमशा(स)जटामां
सीऔषध
लोमहर्षण(न)रोमा
वलीहोना /त खासाहि
लोल(३)चंचल-तृ
लोलुप(३)अतिलोभी
लोलुभ(३)तृष्णा
लोष्ट(पुन)ढेला
लोष्टभेदन(पु)मुगरी
लोह(न)अगुरु
लोह(पुन)लोहा /र
लोहकारक(पु)लुहा

लोहपृष्ठ(पु)सेतचील
लोहप्रतिमा(स)लोहे
कीमूर्त्ति /बोलताहै
लोहल(३)अस्पष्ट
लोहाभिहार(पु)श-
स्त्रपूजन /हू(न)
लोहित(पु)लाल,लो
लोहितक(पु)पद्मराग
मणि /कुमकेसर
लोहितचंदन(न)कुं-
लोहितांग(पु)मंगल
लोह(न)सबधातु
ल्यु(पु)प्रत्ययभेद
व /गोत्र
वंश(पु)बांस,कुल
वंशिक(न)अगुरु
वंशरोचना(स)वंश-
लोचन /बहुल
वंहिष्ठ(३)अतिशय
वक(पु)ठग्गा-अ
गस्त्यवृक्ष,बगुला
वकुल(पु)मोरश्री
वक्र(३)टेढ़ा

वक्तव्य (३) निंद्य, आधीन	वटक (पु) वड़ा, वरा	वत्सादनी (स) गिलोय
वक्ता (३) बोलनेवाला	वडभी (स) धरनि	वद (३) बोलनेवाला
वक्त्र (न) मुख	वडवा (स) घोड़ी	वदन (न) मुख
वक्ष (न) छाती	वड़वानल (पु) समु-	वदर (न) बेरकाफल
वंक्षण (पु) दिहनी	द्रकेभीतरकीआग	वदरा (स) कपास-वि
वंग (न) रांग	वडिश (न) वंशी	लाईकंद-रूई
वचा (स) बचन	वड्ढ (३) फैला-वड़ा	वदरी (पु स) वेर
वचन (न) बोलना	वणिग्भाव (पु) वनियापन	वदान्य (३) अतिदानी
वचस् (न) बोलना	वणिक् (पु) साहूकार	वदावद (३) बोलनेवाला
वचनेस्थित (३) आज्ञा	वणिज (पु) तथा /पन	वधू (स) पिंडरकशाक
वज्र (पुन) हीरा, शस्त्र	वणिज्या (स) वनियां	वन (न) जल-जंगल
वज्रद्रु (पु) सेंहुड	वत (अ) भांति	वनतिक्तिका (स) पाठा
वज्रनिर्घोष (पु) बिजली	वत (अ) खेद-दया	वनप्रिय (पु) कोयल
का गर्जन	संतोष-विस्मय-आ	वनमक्षिका (स) डांस
वज्रपुष्प (न) तिलपुष्पी	मंत्रण	वनमाली (पु) विष्णु
वज्रिन् (पु) इंद्र (३)	वत्स (न) छाती-व-	वनमुद्ग (पु) वनमूंग
वंचक (पु) स्यार, छली	छड़ा (पु) वर्ष (न)	वनशृंगाट (पु) गोखरू
वंचित (३) ठगाहुआ	वत्सक (पु) कुड़ा	वनसमूह (पु) वनों
वंजुल (पु) तेंदुआवृक्ष	वत्सतर (पु) तरुणव	कासमुदाय / फल ध्यका
वेत-अशोक	वत्सनाभ (पु) विषभेद	वनस्पति (पु) बिनापु
वंटक (पु) भाग	वत्सर (पु) दोअयन,	वनिता (स) डरनेवा
वट (पु) वरगद	वर्ष	लीस्त्री-वड़ीप्यारी
वटी (३) रस्सी	वत्सल (३) स्नेही	स्त्री-स्त्रीमात्र

वनीयक(त्रि)याचक
वनौकस(पु)बांदर
वंदा(स)अमरवेलि
वंदारु(त्रि)वंदनाकर
नेवाला
वंदी(पु)यशगायक
वधू(स)स्त्री-पुत्र-
वहू-स्त्रीमात्र
वंधूक(पु)दुपहरिया
वंधकी(स)छिनारि
वंधूकपुष्प(पु)विज
यसार ह
वन्या(स)वनसमूह
वपा(स)छेद,चर्वी
वप्र(पुन)खाई-खेत
वपु(न)अंग
वभ्रु(पु)बड़ानौला
वमथु(पु)उलटा
भूंड़सेनिकलाजल
वमि(स)उलटी
वय(न)खग-वा
ल्यादिअवस्था
वयस्थ(पु)युवानर

वयस्था(स)आंमला
हर्ड-ब्राह्मी-काको
ली य-प्रिय
वयस्य(पु)समानव
वयस्या(स)सहेली
वर(न)कुंकुमकेसर
वरदान(पु)श्रेष्ठ(त्रि)
थोड़ाप्रिय(न)
वरटा(स)हंसिनी-
भिर्र(पु-स)
वरण(पु)घेर,वरना
वरंड(पु)मुखरोग
वरत्रा(स)हाथीकेक
मर वांधनेकीरस्सी-
चामकीरस्सी
वरद(त्रि)वरदानदेने
वरवर्णिनी(स)उत्तम
स्त्री-हलदी
वरांग(न)मस्तक-
वरांगक(न)तज
वराटक(पु)कमल
रस्सी स्त्री
वरारोहा(स)उत्तम

वराशि(पुन)मोटावस्त्र
वराह(पु)सूकर
वरिवसित(त्रि)सेवित
वरिवस्या(स)सेवा
वरिवस्यित(त्रि)सेवित
वरिष्ठ(न)तांबा श्रेष्ठ
वरी(स)शतावरि
वरीयस्वावरीयान्(त्रि)
अतिशयवड़ा-अतिश्रेष्ठ
वरुण(पु)जलकादेवता
पश्चिमदिशाकास्वामी
वरनावृक्ष
वरुणात्मजा(स)मदिरा
वरूथ(पु)रथकालोहे-
कापरदा
वरूथिनी(स)सेना
वरेण्य(त्रि)मुख्य
वर्कर(पु)वकरा
वर्ग(पु)वृंदभेद-स-
जातीयप्राणीका अपर-
राशिकासमूहवासमूह
वर्च(न)तेज-विष्ठा
वर्चस्क(पुन)विष्ठा

वर्ण (पु) ब्राह्मणादि	वर्द्धमान (पु) एरंड	वर्वोत्पल (पु) ओला /गा
हाथीकीकूल, शुक्ल	वर्द्धमानक (पुन) सरवा	वर्ह्मन् (न) अंग-प्रमा
पीतादि-स्तुतिवर्णन	वर्द्धिष्णु (त्र) बढ़नेवाला	वर्ह (पुन) पत्ता-मोरका
अक्षर (पुन)	वर्ध्री (स) चामकी	पुच्छ
वर्णक (पुन) चोया	रस्सी	वर्हिरा (पु) अग्नि-मोर
वर्णित (त्र) स्तुतिकिया	वर्वरा (स) अकरवी	वर्ही (पु) मोर
वर्णिन् (पु) ब्रह्मचारी	वर्म (न) कवच	वल (न) सेना-मुटाई
वर्त्तक (पु) वटेर-घोड़े	वर्मित (त्र) मंत्रादिसे	सामर्थ्य-काक-वलदेव
कारखुर-वत्तक	रक्षित	वलक्ष (पु) श्वेत
वर्त्तन (त्र) वर्त्तनेवाला	वर्या (स) आपवरने वालीस्त्री	वलदेव (पु) वलिराम
वर्त्तन (न) जीविका	वर्य्य (त्र) मुख्य	वलय (पुन) कंकण-व-
वर्त्तनि (स) मार्ग	वर्वर (पु) भांगरा	लयित (त्र) नदीआदि
वर्त्ति (स) चोया	वर्वरा (स) ववई-व	सेधिरा भेद
वर्त्तिका (स) वटेर	नतुलसी	वलाका (स) वगुलेका
वर्त्तिष्णु (त्र) वर्त्तनेकी	वर्ष (न) वर्षा-मेघ	वलाहक (पु) मेघ हि
इच्छाकरनेवाला	कायरसना-जंबूद्वी	वलिन (पु) सिरटेचाम
वर्त्तुल (न) गोल	पकारवंड (वर्ष (पुन)	वलि (पु) महायज्ञ-भूत
वर्त्म (न) मार्ग-नेत्रों	वर्षवर (पु) नपुंसक	यज्ञ-कर-राजभाग
कीवरोनियां	वर्षा (स) ऋतुविशेष	पूजा-त्रिवली (स)
वर्द्धक (पु) आँगारा	वर्षाभू (पु) मेंडक	वलिपुष्ट (पु) काग
वर्द्धकि (पु) वढ़ई	वर्षाभ्वी (स) मेंड़की	वलिभ (पु) सिरटेचाम
वर्द्धन (त्र) बढ़नेवाला	वर्षीयस (पु) अतिवृद्ध	वाला
काटना (म)	[illegible]	वलिभुज् (पु) काग

वलिर (पु) कुंजा	पितरोंकेअर्थहविदा न	वस्त्र (न) कपड़ा
वलीमुख (पु) वानर	वसुद्रुत (त्रि) अग्निमें	वस्त्य (न) घर
वलीक (पु न) घरछाद	हुनेकेयोग्य	वस्त्रयोनि (स) वस्त्रों
नके समीपकीभीति	वसुश्रनी (स) वंकेनीछौ	केवनानेकाकारण
वल्क (न पु) वक्कल	वसति (स) राति घर	वस्नसा (स) नाड़ी
वल्गित (न) घोड़ेकीगति	वसती (स) तथा	वर्ह (न) मोरपंख
वल्मीक (पु न) नमतिथि	वस्त (पु) मोल	वह (पु) वैलकाकंधा
वल्लकी (स) वीणा	वसन (न) कपड़ा	वहिर्द्वार (न) फाटक
वल्लभ (त्रि) प्यारा	वसंत (पु) ऋतुविशेष	वहिष्ठ (न) नेत्रवाला
वल्लरि (स) मंजरी	वसा (स) चर्वी	वहिस् दाबाहिर (अ)
वल्लव (त्रि) रसोईदार-अ	वसु (पु) ८गणदेवता	बाहर) धा
वल्ली (स) लता-वेलि	गुरुता- अगस्त्य- ध-	वर्हिपुष्प (न) कुकरों
वल्लूर (त्रि) सूखामांस	न (न) रत्न (न) देखमे	वहु (त्रि) अधिक
वल्वज (पु बहु) वैद	द- आठ- किरण	वहुकर (त्रि) झाडू
वश (पु) इच्छा	वसुक (पु) आक-	वहुगर्ह्य (त्रि) निंदित
वशक्रिया (स) वशीकरण	सांभर (न)	वहुगर्ह्यवाच्- कू (त्रि)
वशा (स) हथिनी- स्त्री	वसुदेव (पु) कृष्णपिता	अवाच्यकाकहनेवाला
वंझगौ	वसुधा (स) धरती	वहुपाद् (पु) वरवाद
वशिक (त्रि) भून्य- रीता	वसुंधरा (स) तथा	वहुप्रद (त्रि) अतिदानी
वशिर (पु) छोटीपीपरि	वसुमती (स) तथा	वहुमूल्य (न) दुशाला
गजपीपर- समुद्रनोन (न)	वस्त (पु) वकरा	वहुरूप (पु) राल
वश्य (त्रि) वशी	वस्ति (पु स) मूत्रस्थान	वहुल (त्रि) अधिक
वषट् (अ) देवतोंकोऔर	न- पेडू- वस्त्रकाकिनारा	आगा (पु) सितवर्ण (त्रि)

ची		
वृहुला (स) वडी इलाय	वाच् (स) सरस्वती	वाडव्य (न) ब्राह्मणों
कृत्तिका (वहु०) गौ	वाचंयम (पु) मुनि	का समूह
वहुलीकृत (त्रि) विना भुसी	वाचक (पु) शब्द	वाढ (न) अतिशय—
का अन्न	वाचस्पति (पु) गुरु	प्रतिज्ञा—अत्यर्थ
वहुवारक (पु) लभेरा	वाचाट (त्रि) तथा	वाण (पु) तीर
वहुविधि (त्रि) नानाभांति	वाचाल (त्रि) अवाच्य	वाणप्रस्थ (पु) ब्रह्मचा
वहुसुता (स) सतावरि	काकहनेवाला	वाणि (स) वीनना
वृहुस्तुति (स) वहुतवच्चे	वाचिक (न) दूतकाक	वाणिनी (स) दूती—न
देनेवाली गौ	वाचोयुक्तिपटु (त्रि) नैया	चनेवाली
वह्नि (पु) आग—आग्ने	यिक	वाणिज (पु) साहूका—
यदिशाका स्वामी, चीता	वाज (पु) शरपक्ष	वाणिज्य (न) खेती
वह्निशिख (न) कुसुम	वाजपेय (न) यज्ञभेद	वनियापन
वा (अ) उपमा—विकल्प	वाजि (पु) पक्षी—घोड़ा	वाणी (स) सरस्वती
तुल्य—निश्चय	वाण सा	वात (पु) पवन
वाकुची (स) वकुची ला	वाजिदंतक (पु) अडू—	वातक (पु) पटसन
वाक्पति (त्रि) वडा वोलनेवा	वाजि (पु) घोड़ा	वातकी (त्रि) वाईवाला
वाक्य (न) सुवंततिङंतके	वाजिशाला (स) घुड	वातप्रमी (पु) मृगभेद
पद समूह वाला	वांछा (स) मनोरथ	वातपोथ (पु) ढाक
वागीश (त्रि) वडा वोलने—	वाटी (त्रि) वगीचा टी	वातमृग (पु) मृगभेद
वागुरा (स) जाल	वाद्यालक (पु) खरहू	वातरोगी (त्रि) वाईवाल
वागुरिक (पु) जालिक	वाडव (पु) वडवान—	वातायन (न) झरो
वाग्मी (त्रि) नैयायिक	ल अग्नि—ब्राह्मण—	वातायु (पु) मृग
वाङ्मुख (न) आरंभ	घोड़ियोंकासमूह (त्रि)	वातूल (पु) वायुक

समूह-वायुकासहनेवाला	स्त्री	वार्त (३) रोगरहित-
वात्सक (न) बछड़ोंकास	वामी (स) घोड़ी	लघु-आसार
मूह /वस्त्र	वायदंड (पु) जुलाहे	वार्त्ता (स) बात-वेग
वादर (३) कपाससेबना	वायस (पु) काग	जीविका
वादित्र (न) बाजेकाभेद	वायसाराति (पु) उल्लू	वार्त्ताकी (स) बेंगन
वाद्य (न) तथा	वायसी (स) काकजंघा	वार्त्तावह (पु) सदे-
वान (३) शुष्कफल	वायसोली (स) काकोली	सिया /कासमूह
वानप्रस्थ (पु) महुआ	वायु (पु) पवन	वार्द्धक (न) बुढ़ापा
वानर (पु) बंदर	वायुसखि-ख (पु)	वार्द्धुषि (३) ब्याज
वानस्पत्य (पु) वनस्पति-	आग	खानेवाला
पुष्पसेफलआवे /का घोड़ा	वार (न) पानी /सर	वार्द्धुषिक (३) तथा
वैनायुज (पु) वानायुदेश	वार (पु) समूह-अव	वार्षिक (न) त्रिराय
वानीर (पु) बेत	वारण (पु) हाथी	तेकाफलवात्राय
वानेय (न) मोथा	वारणबुसा (स) केला	माण /काफल
वापी (स) बावड़ी	वारमुख्या (स) वेश्या	वार्हत (न) भरकटेरी
वाष्प (न) कूट	वाराही (स) बिलाईकंद	वालतृण (न) नवीन
वाम (३) वामांग, सुंदर	वारि (न) जल	घास /नाभूषण
वामदेव (पु) शिव	वारिद (पु) मेघ	वालपाश्या (स) वें-
वामन (पु) दक्षिणदिशा	वारिपर्णी (स) पुरइन	वाल्य (न) लड़कपन
कास्वामी-छोटा (३)	वारिप्रवाह (पु) झरना	वारि (स) गजबंधन
वामलूर (पु) वल्मीक	वारिवाह (पु) मेघ	घरवाशाला
वामलोचना (स) स्त्री	वारुणी (स) मदिरा	वालमूषिका (स)
वामा (स) अच्छेअंगकी	पश्चिमदिशा	छोटीचूही

बाला(स)कन्या /क्

बालिश(३)मूर्ख-बाल

बालुक(न)एलुआ

बाल्क(३)घासआदि

कावनावस्त्र

वावदूक(३)बहुभाषी

वाशित(न)पक्षियोंका

शब्द /स्र-वाफ

वाष्प(पु)ऊष्म-आँ

वाष्पिका(स)हींगकी

पत्ती

वासर(पु)कचहरी

वासक(पु)अडूसा

वासगृह(न)घरकाबीच

वासंती(स)माधवीलता

वास(३)कंबलादिसे

ढकारथ /सुका चूर्णी

वासयोग(पु)सुगंधव-

वासर(पु·न)दिन

वासव(पु)इंद्र

वासस्वावास(न)वस्त्र

वासिका(स)अडूसा

वा प्रित(न)पक्षियों

काशब्द

वासित(३)सुगंधित

वासिता(स)स्त्री-

हथिनी /जा

वासुकि(पु)नागरा-

वासुदेव(पु)विष्णु

वासू(स)कन्या

वास्तु(पु·न)नींव

वास्तूक(न)बथुआ

वास्तोष्पति(पु)इंद्र

वाह(पु)घोड़ा,तोल

वाहद्विषत(पु)भैंसा

वाहन(न)सवारी

वाहस(पु)अजगार

वाहित्थ(न)हाथीके

ललाटकानीचेका

भाग

वाहिनी(स)सेना

गराकीसेनासे३गुनी

सेनावाला-नदी

वाहिनीपति(पु)सेना

कास्वामी

वाहु(पु·स)भुजा

वाहुज(पु)क्षत्री /त्री

वाहुदा(स)अर्जुनन

वाहुमूल(न)कांख

वाहुयुद्ध(न)युद्धभेद

वाहुल(पु)कार्तिक

वाल्हिका(पु)वाल्ही

कदेशकाघोड़ा

वाल्हीक(न)कुंकुम

केसर-हींग-काबु-

लकाघोड़ा(पु)

विंशति(स्त्री)एकव

चन-बीस

विकंकत(पु)हींस

विकच(३)फूला

हुआफूल

विकर्त्तन(पु)सूर्य्य

विकलांग(पु)विक

लांगवाला

विकसा(स)मजीठ

विकसित(३)फूलित

विकस्वर(३)फूलने

वाला /कावदलना

विकार(पु)प्रकृति

विकासी (३) फूलनेवा ला
विकिर (पु) पक्षी
विकीरण (पु) आक
विकुर्वाण (३) हर्षित
विक्लृत (३) डर- रोगी
विकृति (स) विरुद्धचाल
विक्रम (पु) अतिपराक्रम
क्रांति
विक्रय (पु) बेचना
विक्रयिक (पु) बेचनेवा- ला
विक्रांत (पु) शूरवीर
विक्रिया (स) विरुद्धकरन
विक्रेता (पु) बेचनेवाला
विक्रेय (३) लेनेकीवस्तु
विक्लव (३) मात्रभंग
विक्षाव (पु) छींक
विगत (३) विनातेज
विगतार्त्तवा (स) विना
रजकीस्त्री
विग्र (पु) नकटा
विग्रह (पु) शरीर- वैर
युद्ध (पुन) विस्तार
विघस (पु) श्राद्धका

शेषभोजन
विघ्न (पु) बिगाड़
विघ्नराज (पु) गणेश
विचक्षण (३) पंडित
विच्छयन (न) छूटना
विचर्चिका (स) खाज
विचारणा (स) विचार
विचारित (३) विचारागया
विचिकित्सा (स) संदेह
विच्छंदक (पुन) गृहभेद
विच्छाय (न) छाया
विजन (३) एकान्त
विजय (पु) जीत / जान
विजिल (३) पनीलेव्यं
विज्ञ (३) ज्ञाता
विज्ञात (३) प्रसिद्ध
विज्ञान (न) शिल्पशा
स्त्रमेंबुद्धि
विट् (पु) बनियां
विटंक (पुन) कबूतरस्त्र
विटप (पुन) शाखा-
तृणादिकागुच्छा

विटपिन् (पु) वृक्ष
विट्खदिर (पु) दुर्गंधि
काकत्था त्रार
विट्चर (पु) गांवकासु
विड (न) खारीनोन ग
विडंगा (पुन) वायुविडं
विडाल (पु) बिलार
विडौजस् (पु) इंद्र
वितंडा (स) वादभेद
वितथ (न) असत्य
वितरण (न) दान
वितर्दि (स) वेदी
वितस्ति (पुस) बिलांद
वितान (पुन) चँदोवा
यज्ञ- विस्तार- तुच्छ
(३) मन्द (३)
वितुन्न (न) विसखपरा
वितुन्नक (पु) भूमित्रां
वला- धनियां (३)
तूतिया (३)
वित्त (न) धन- प्राप्ति
हु (३) विचार (३)
विदर (पु) फूटना

विदल (न) बांसकाब
ना पात्र
विदारक (पु) गाढ़ा
विदारीगंध (स) काला
गंगाफल [र्शी
विदारिगंधा (स) सालप
विदिक् (स) दिशाओंके
बीचका कोन
विदित (उ) जाना
विदिशा (न) दिशाओं
विदु (पु) हाथीकेकुंभों
कावीच
विदुर (उ) जाननेवाला
विदुल (पु) बेत
विद्ध (उ) छेदाहुआ
विद्धकर्णी (स) पाठा
विद्याधर (पु) देवजाति
विद्युत (स) बिजली
विद्रधि (स) व्याधिभेद
विद्रव (पु) भागना
विद्रुत (उ) पिघलाहुआ
विद्रुम (पु) मूंगा [ष्व
विद्रुमलता (स) पमारव

विद्वान् (पु) पंडित
विज्ञ (उ)
विद्वेष (पु) वैर
विधवा (स) रंडा
विधा (स) मज़दूरी-
विधान-प्रकार
विधातृ (पु) ब्रह्मा
विधि (पु) ब्रह्मा-भा-
ग्य-प्रकार-विधान
विधिदर्शिन् (पु) य-
ज्ञदर्शक [श्मा
विधु (पु) विष्णु-चं
विधुत (उ) त्यागा
विधुंतुद (पु) राहु
विधुर (न) बड़ावि-
योग
विधुवन (न) कांपना
विधूनन (न) तथा
विधेय (उ) आज्ञाका-
री [ज्ञाकारी
विनयग्राही (उ) आ-
विना (अ) वर्जन
विनायक (पु) जिन

बुध-गणेश-गरुड़
विनाश (पु) लोप
विनाशोन्मुख (उ) प-
काहुआ
विनीत (पु) सीखाहु-
आ-घोड़ा-नम्र (उ)
विन्दु (न) जलकण
जाननेवाला (उ)
विंदुजालक (न) हा-
थीकीसूंडकाजल
विन्ध्य (पु) पर्वत
विन्न (उ) पाया-वि-
चारा
विपक्ष (पु) शत्रु
विपंची (स) वीणा
विपण (पु) बेचना
विपणि (पु-स) दूकान
बाज़ारकीगली
विपति (स) विपत्ति
विपथ (पु) मार्ग
विपद् (स) विपत्ति
विपर्यय (पु) उलटा
विपर्यास (पु) तथा

विपश्चित (पु) पंडित
विपादिका (स) बिवाई
विपाश वा विपाशा (स) व्यासानदी
विपिन (न) वन
विपुल (उ) ढेर
विप्र (पु) ब्राह्मण
विप्रकार (पु) अपकार
विप्रकृत (उ) निकालागया, निकालाहुआ
विप्रकृष्टक (उ) दूर /वा
विप्रतीसार (पु) पछता-
विप्रयोग (पु) स्नेहतोड़
ना /आ
विप्रलब्ध (उ) ठगाहु-
विप्रलाभ (पु) उलटा
कहना - आज्ञाभंगक
विप्रलंभ (पु) स्नेहतो-
ड़ना /अभव्यास्त्री
विप्रश्निका (स) अभा
विप्रसून (न) कमल
विप्लव (पु) लूटना
विप्रुष (स) जलकण

विबंध (पु) मलमूत्र
बंध
विबुध (पु) देवता
विभव (पु) धन
विभाकर (पु) सूर्य
विभावरी (स) रात
विभावसु (पु) सूर्य
अग्नि /ऐश्वर्य
विभूति (स) सिद्धि
विभीतक (उ) बहेड़ा
विभूषण (न) गहना
विभ्रम (पु) चेष्टा
अलंकार - स्त्रि-
योंकारसविशेष
भ्रांति
विभ्राज (उ) अ-
लंकारसेशोभित
विमना (उ) उदास
विमर्दन (न) मलना
विमल (उ) जोस्व-
भावसेमैलाहो
विमला (स) सोया
का शाक

विमातृज (पु) सौते
लाभाई /न
विमान (पु-न) विमा
बिम्ब (पु-न) प्रतिछाया
बिंबिका (स) कुंदुरू
वियत (न) आकाश
वियद्गंगा (स) आका
शगंगा
वियम (पु) संयम
वियात (उ) ढीठ
वियाम (पु) संयम
विरजस्तमस (पु)
व्यासादिऋषि
विरति (स) निवृत्ति
विरल (उ) विरला
विराज (पु) क्षत्री
विराव (पु) शब्द
विरंचि (पु) ब्रह्मा
विरूपाक्ष (पु) शिव
विरोचन (पु) सूर्य
चंद्र - आग
विरोध (पु) बैर
विरोधन (न) वि-

विरोधोक्ति (स) उलटा
कहना
विल (न) पोलमात्र-वि-
नावनायीगुफा
विलक्ष (३) विस्मयी
विलक्षण (न) विनाका
रणस्थिति
विलम्बित (न) देर
विलम्भ (पु) अतिदान
विलाप (पु) रोना
विलास (पु) स्त्रियोंका
रसविशेष /क्रा
विलीन (३) पिघलाहु-
विलेपन (न) तिलक
विलेपी (स) लपसी
विलेशय (पु) सर्पआदि
विल्व (पु) बेल /वि
विवध (पु) धानादि-
विवर (न) पोलमात्र
विवर्ण (पु) नीच /विर्व
विवश (३) मरणासन्न
विवस्वत (पु) सूर्य-देव
विवाद (पु) झगड़ा

विवाह (पु) व्याह
विविक्त (३) एकांत-
पवित्र /कार
विविध (३) नानाप्र-
विवेक (पु) विचार
विव्वोक (पु) स्त्रियों
कारसविशेष
विश (पु) बनियां
विशंकट (३) फैला
विशद (पु) उजला
विशर (पु) मारा
विशल्या (स) गिलो-
य-हालों-दंतीवृक्ष
विशसन (न) मारण
विशारद (पु) खा
विशालीक
विशाखा (स) नक्षत्र
विशाय (पु) सेनेका-
ला /ठीठ
विशारद (३) पंडित
विशाल (३) बड़ा
विशल्ला (स) नवञ्ज
की औ बाई

विशल्यकृत् (पु) सप्त
पर्णी
विशाखा (स) [illegible]
विशिख (पु) बाण
विशिखा (स) भीतर
का मार्ग /कि
विशोधक (पु) किल
विश्रम्भ (पु) विश्वास
शृंगारस्त्रीकर्मनिना
विश्राणन (न) दान
विश्राव (पु) अतिप्रसि
द्ध
विश्रुत (३) प्रसिद्ध
विश्व (पु) संसार देवता
ग्र सौंठि (सन) सब (३)
विश्वकद्रु (पु) शिकारी
कुत्ता
विश्वकर्मा (पु) सूर्य्य
देवोंकाराजा
विश्वकेतु (पु) अनि
रुद्ध
विश्वभेषज (न) सोंठ
विश्वंभर (पु) विष्णु

विश्वंभरा (स) धरती
विश्वसृज (पु) ब्रह्मा
विश्वस्ता (स) विधवा
विश्वा (स) अतीस
विश्वास (पु) विश्वास
विष (न.पु) गरल-
विषा (स) जल (न)
विषधर (पु) सर्प
विषमच्छद (पु) सप्तप
विषय (पु) देश-प्रयो
जन-जिसकाजो-
ज्ञात-शब्द-स्पर्श
रूप-रस-गंध
विषयिन् (न) इंद्रिय
विषवैद्य (पु) विषका
वैद्य
विषा (स) अतीस
विषाक्त (न) विषके
वधेवाण
विषाण (त्रि) पशुओं
कासींग-हाथीकादंत
विषाणी (स) मेढ़ाशृं-
गी

विषुव (न) समरात्रि
दिन
विष्किर (पु) पक्षी
विष्टप (न) जगत्
विष्टर (पु) वृक्ष-मुष्टि
कापरिमाण-पीढ़ा
आदि आसन
विष्टरश्रवस (पु) विष्णु
विष्टि (स) भेजना
विष्ठा (स) गू
विष्णु (पु) विष्णु
विष्णुक्रांता (स) भौ
विष्णुपद (न) आका-
विष्णुपदी (स) गंगा
विष्णुरथ (पु) गरुड़
विष्य (पु) विषदेनेके
योग्य
विष्वक् (अ) चारो
विष्वक्सेन (पु) विष्णु
विष्वक्सेनप्रिया (स)
विलाईकंद
विष्वक्सेना (स)
फूलप्रियंगु-कंकुनी

विष्वद्र्यङ् (त्रि) विश्वमें
चलनेवाला
विस (न) कमलककड़ी
विसकंठिका (स) बगले-
काभेद
विसप्रसून (न) कमल
विसम्वाद (पु) आज्ञाभं
गक
विसर (पु) समूह
विसर्जन (न) दान-त्याग
विसर्पण (न) पावका
फैलाना
विसार (पु) मच्छी
विसारी (त्रि) जानेवाला
विसिनी (स) कमलनी
विसृत (त्रि) फैला
विसृत्वर (त्रि) जानेवाला
विसृमर (त्रि) तथा
विस्त (पु न) १तोलासौना
विस्तर (पु) शब्दविस्तार
विस्तार (पु) फैलाव
विस्तृत (त्रि) फैला
विस्रसा (पु) बुढ़ापा

विस्फार (पु) धनुषकाशब्द
विस्फोर (पु) फोड़ा
विस्मय (पु) आश्चर्य्य
विस्मयान्वित (त्रि) अचर्जी
विस्मृत (त्रि) भूला
विस्र (न) बिना पका मांस की गंध
विस्रब्ध (त्रि) [illegible] प्रार्थना
विलंभ (पु) शृंगार रस
विहग (पु) पक्षी
विहंग (पु) पक्षी
विहंगिका (स) बहंगी
विहसित (न) मध्यमहास
विहस्त (त्रि) व्याकुल
विहायित (न) दान
विहायस् (न) आकाश
विहायस (पु) आकाश
विहार (पु) खेलने में पांवसे चलना
विह्वल (त्रि) व्याकुल
वीकाश (पु) एकांत, प्रकाश
वीचि (पु-स) लहर
वीज (न) कारण, वीर्य्य

वीजकोश (पु) कमलगट्टा
वीजपूर (पु) बिजोरानीबू
वीजाकृत (त्रि) वोयाफिर जुते खेत
वीज्य (पु) कुलीन
वीणा (स) बाजाविशेष
वीणादंड (पु) वीणाबाजे का दंड
वीणावाद (पु) वीणाव[illegible] जानेवाला
वीतंस (पु) फंदा
वीत (न) हाथी वा घोड़ा जो युद्धके अयोग्य हो
वीतिहोत्र (पु) आग
वीथी (स) पंक्ति, मार्ग
वीध्र (त्रि) स्वभावसे पवित्र
वीनाह (पु) कुयेका चौखटा
वीभत्स (पु) रसविशेष, क्रूर (त्रि)
वीर (पु) रसविशेष - शूर
वीरण (न) गांडर
वीरतर (न) गांडर
वीरतरु (पु) अर्जुनवृक्ष

वीरपत्नी (स) वीरकी स्त्री
वीरपाण (न) मद-पानकरना
वीरभार्य्या (स) वीर पुरुषकी स्त्री
वीरभद्र (स) वीरकी [illegible]
वीररस (पु) मिलाना
वीराशंसन (न) भयावनी रणभूमि
वीरसू (स) वीरमाता
वीरहा (पु) नष्टाग्नि
वीरुध् (स) फैली लता
वीर्य्य (पु न) बल-उत्साह-प्रभाव
वीवध (पु) व्याना-दि-मार्ग
वुध्न (पु) जड़
बुधित (त्रि) जानागया
वुन् (प्रत्यय) वास्ता
वृंहित (न) हाथियों का गाजना
वृक (पु) भेड़िया
वृकधूप (पु) रवदा

रु धूप
वृक्ण (त्रि) कटाहुआ
वृक्ष (पु) पेड़
वृक्षभेदी (पु) वसूला
वृक्षरुहा (स्त्री) अमरवेलि
वन्दा [का बाग / मंत्री वा वेश्या]
वृक्षवाटिका (स्त्री) राज
वृक्षादन (पु) वसूला
वृक्षादनी (स्त्री) अमर वे
लि-वन्दा
वृक्षाम्ल (न) चूक
वृज (पु) गौओंकाघर
मार्ग-समूह
वृजिन (न) पाप-टेढा
(त्रि) केश (पु) [illegible]
वृत (पु) वरणकियाहु-
वृत्ति (स्त्री) जीविका, व
र्तान, कौशिकीनदी
वृत्त (त्रि) गोल, वरण-
वर्णकिये श्लोक (न)
चरित्र (न) भूतकाल
(त्रि) दृढ (त्रि)
वृत्ताध्ययनर्द्धि (स्त्री)

सदाचार और वेदाभ्या
सका फल
वृत्तांत (पु) वार्त्ता, प्रक
रण आदि-अभिप्राय
संपूर्ण
वृत्रहन् (पु) इंद्र
वृत्र (पु) अंधकार-
शत्रु-दैत्य [illegible]
वृथा (अ) निरर्थक
वृद्ध (न) शिलाजीत
बूढा-पंडित
वृद्धत्व (न) बुढापा
वृद्धदारुक (पु) विधारा
वृद्धश्रवस् (पु) इंद्र
वृद्धसंघ (पु) बुढापों
का समूह
वृद्धा (स्त्री) बूढी स्त्री
वृद्धि (स्त्री) बढती [illegible]
वृद्धिजीविका (स्त्री) व्या
वृद्धोक्ष (पु) बूढा बैल
वृध्याजीव (त्रि) व्याज
[illegible]नदाक
वृन्त (न) गुच्छा

वृंद (न) समूह
वृंदभेद (पु) गणभेद
वृंदारक (पु) देवता
मनोज्ञ (त्रि) श्रेष्ठ (त्रि)
वृंदिष्ठ (त्रि) अतिशय
मुख्य
वृश्चन (पु) रेती
वृश्चिक (पु) कैंचुआ
बीछी, आठवींराशि
वृष (पु) प्रताप, अडू
सा-ककड़ाश्रृंगी
बैल-फोता-चूहा
श्रेष्ठ-सुकृत
वृषण (पु) फोता
वृषदंशक (पु) बिलार
वृषध्वज (पु) शिव
वृषन् (पु) इंद्र
वृषभ (पु) बैल
वृषल (पु) शूद्र
वृषस्यन्ती (स्त्री) मैथुन
चाहनेवाली
वृषा (स्त्री) मूसरी
वृषाकपायी (स्त्री)

लक्ष्मी- पार्वती
वृषाकपि(पु) शिव-विष्णु
वृषी(स) ऋषिआसन
वृष्टि(स) वर्षा
वृष्णि(पु) भेड़ा
वृहत्(त्रि) बड़ा
वृहतिका(स) दुपट्टा
वृहती(स) भटकटाई
छंदभेदविपुलाछंद
वृहत्कुक्षि(पु) बड़ीकोख
वाला
वृहद्भानु(पु) आग
वृहस्पति(पु) गुरु
वेग(पु) प्रवाह-बलसे
वेगी(पु) शीघ्रचालक
वेणि(स) वेणी
वेणी(स) देवताड़, बंदी
वेणु(पु) बांस
वेणुध्म(पु) बांसरीवाद
वेतन(न) मजदूरी
वेतस(पु) बेत
वेतस्वत्(त्रि) बहुतबेतो
वेताल(पु) भूत

वेत्रवती(स) बेतवानदी
वेद(पु) श्रुति
वेदना(स) अनुभवज्ञा
वेदि(पु) यज्ञभूमि
वेदिका(स) वेदी
वेध(पु) छेदना
वेधनिका(स) बर्मा
वेधमुख्यक(पु) कचूर
वेधा(पु) ब्रह्मा, विष्णु
वेधित(त्रि) छेदाहुआ
वेपथु(पु) कांपना
वेमन(पु न) जुलाहेका
वेला(स) समुद्रकील
हद-समय-मर्यादा
वेल्ल(पु न) बायविडंग
वेल्लज(न) मिरच
वेल्लित(त्रि) टेढ़ा, कंपा
वेश(पु) वेश्याघर-श्र
लंकारकीशोभा
वेशंत(पु) छोटासर
वेश्म(न) घर
वेश्मभू(स) घरकी
वेश्या(स) रंडी

वेश्याजनसमाश्रय
(पु) वेश्याकाघर
वेष्टित(त्रि) नदीआ-
दिसेघिराहुआ
वेसवार(पु) सागका
मसाला
वेहत्(स) बिनासम
येबैलकेपासजाने
वालीगो
वै(अ) पादपूरण-
वैकक्षक(न) जने-
ऊकेसमान छाती
परतिरछीलटकी
माला
वैकुंठ(पु) विष्णु
वैजनन(पु) जनका
मास
वैजयंत(पु) इंद्रका
घर
वैजयंतिक(पु)
ध्वजधारक
वैजयंतिका(स)
१ बांसन २ हस
वैजयंती(स) पताका

वैज्ञानिक(त्रि) ज्ञाता
वैणव(न) वेणुकाफल
वैणविक(पु) बांसुरी बजानेवाला
वैणिक(पु) वीणाबजानेवाला
वैणुक(न) हाथीकेहांकनेकादंड
वैतरणी(स) नरककीनदी
वैतंसिक(पु) कसाई
वैतनिक(पु) मजूर
वैतालिक(पु) स्तुतिकरके राजोंको जगानेवाला
वैदेहक(पु) साहूकार ब्राह्मणीमें और वैश्यसे उत्पन्न
वैदेही(स) बड़ीपीपर
वैद्य(त्रि) वैद
वैद्यमात(स) अडूसा
वैधात्र(पु) सनत्कुमार
वैधेय(त्रि) मूर्ख
वैनतेय(पु) गरुड
वैनीतक(पुन) परंपरकावाहन

वैमात्रेय(पु) सौतेला भाई
वैयाघ्र(त्रि) व्याघ्रकेचामसेमढ़ा
वैर(न) विरोध
वैरनिर्यातन(न) वैरनि[illegible]
वैरशुद्धि(स) तथा
वैरी(पु) शत्रु
वैवधिक(पु) संदेशा [illegible]
वैवस्वत(पु) यमराज
वैशाख(पु) वैशाख मास - रई
वैश्य(पु) बनियां
वैश्रवण(पु) कुबेर
वैश्वानर(पु) आग
वैसारिण(पु) मछली
वोल(पु) गंधरस
वौषट्(अ) देवताके हवनमें - बोलते हैं
व्यक्त(त्रि) पंडित-प्रकाशित
व्यक्ति(स) स्वरूप
व्यग्र(त्रि) द्विविधा आकुल

व्यजन(न) पंखा
व्यंजक(पु) अभिप्रायप्रकाशक
व्यंजन(न) चिन्ह मूछ-डाढ़ी-गीला करना-अंग
व्यड्डक(पु) एरंड
व्यत्यय(पु) उलटा
व्यत्यास(पु) तथा
व्यथा(स) पीड़ा
व्यध(पु) छेदना
व्यघ्र(पु) छेदना
व्यध्व(पु) कुमार्ग
व्यय(पु) खर्च
व्यलीक(न) पीडा
व्यवधा(स) ढापना
व्यवहार(पु) झिगड़ा
व्यवाय(पु) मैथुन
व्यसन(न) दुःख-नाश-कामदेवसे उत्पन्नदोष-कोपसे उत्पन्नदोष
व्यसनार्त्त(त्रि) कष्टित

व्यस्त(त्रि)आकुल
व्याकुल(त्रि)तथा
व्याकोष(त्रि)फूला
हुआ पुष्प
व्याघ्र(पु)सिंह-श्रे
ष्ठार्थकवाचक
व्याघ्रनख(न)न-
खनामकगंधद्रव्य
व्याघ्रपाद(पु)[illegible]
व्याघ्रपुच्छ(पु)अंड
व्याघ्राट(पु)लवा
व्याघ्री(स)भटकटाई
व्याज(पु)छल
व्याड(पु)सर्प-
पशु-पक्षी,व्याघ्र
व्याडायुध(न)न-
खनामकगंधद्रव्य
व्याध(पु)व्याधा
व्याधि(पु)कूट,रोग
व्याधिघात(पु)
अमलतास
व्याधित(त्रि)रोगी
व्यान(पु)शरीर

कीपवन
व्यापाद(पु)परद्रोह
व्याप्य(न)कूट
व्याम(पु)फैलाहाथ
व्याप्त(त्रि)अतिशय
व्याल(पु)सर्प-शठ
(त्रि)मारनेवालाजंतु
व्यालग्राह(पु)सर्प
पकड़नेवाला
व्यावृत्त(त्रि)वरणकि
याहुआ
व्यास(पु)विस्तार
व्याहार(पु)बोलना
व्युत्थान(न)तिरस्
कार-विरुद्धाचरण
व्युष्टि(स)फल-ऋं
द्ध
व्यूढ(त्रि)छोड़ाहु-
आ-मिलाहुआ
सेनाविशेष
व्यूढकंकट(त्रि)मंना
दिसेरक्षित
व्यूति(स)बीनना

व्यूह(पु)समूह-ग
ठबांधना
व्यूहपार्ष्णि(पु)किले
का पीछा
व्योकार(पु)लुहार
व्योमकेश(पु)शिव
व्योम(न)आकाश
व्योमयान(न)विमान
व्योष(न)सोंठ,मिर्च
पीपर
व्रज(पु)समूह
व्रज्या(स)यात्रा
व्रण(पुन)घाव
व्रत(पुन)नियम
व्रतति(स)बेलि,बढ़ाई
व्रताध्ययनर्द्धि(स)
सदाचारऔरवेदा
भ्यासकाफल
व्रतिन(पु)यज्ञाध्यन
व्रध्न(पु)सूर्य
व्रश्चन(पु)रेती
व्रात(पु)समूह
व्रात्य(पु)असंस्कारी

शब्दग्राम(प)शब्दोंका	शक्तिधर(प)स्वामिका	शंठ(प)हिजरा /न
समूह	र्त्तिक /कावाधनेवाला	शणपुष्पिका(स)स
व्रीडा(स)लज्जा	शक्तिहेतिक(प)बरछे	शणसूत्र(न)सुतरी
व्रीहि(प)साठी	शक्तु(उ)प्रियवक्ता	शतकोटि(प)वज्र
व्रीहिभेद(प)सर्वांअन्न	शक्र(प)इंद्र-कुरा	शतद्रु(स)सतलज
व्रैहेय(प)धानकाखेत	शक्रधनुस(न)इंद्रध	शतपत्र(न)कमल
श /ढ़	नुष	शतपत्रक(प)कठ-
शकट(पन)गाड़ी,ल	शक्रपादप(प)देवदारु	फोराजीव /हुदहुदा
शकल(पन)खंड	शक्रपुष्पी(स)हालों	शतपदी(स)कान-
शकली(प)मछली	शक्रपुष्पिका(स)सोया	शतपर्व(प)बांस
शकुन(प)पक्षी	शंकर(प)शिव	शतपर्विका(स)बच
शकुंत(प)पक्षी	शंकु(प)जलजीव-	दूब-घास
शकुन्ति(प)पक्षी	शाखापत्ररहितपेड़	शतपुष्पा(स)सौंफ
शकुल(प)मछली /व	फरकावृक्ष	शतप्रास(प)कनेल
शकुलाक्षक(प)श्वेतदू	शंख(प)संख्या-ल	शतमन्यु(प)इंद्र /दि
शकुलादनी(स)कुटकी	लाटकीहड्डी-शंख	शतमान(न)तोलभे-
शकुलार्भक(प)गलफ-	शंखनख(प)छोटा	शतमूली(स)सतावर
टीमछली	शंख /कुली	शतयष्टिक(प)१००
शकृत(न)विष्टा	शंखिनी(स)शंखा	लड़काहार /व
शकृत्करि(प)बछड़ा	शचि(स)इंद्राणी	शतवीर्या(स)श्वेतदू
शक्ति(स)बलाव-उ-	शचीपति(प)इंद्र	शतवेधिन(प)अमल
त्साह-मंत्रज-पराक्र	शटी(स)कचूर	वेली
मी-बर्छी-सामर्थ्य	शठ(उ)कपटी	शतह्रदा(स)बिजली

शतांग (पु) लड़ाई का रथ
शतावरी (स) सतावरि
शत्रु (पु) पडोसी राजा वैरी – शत्रु
शनैश्चर (पु) ग्रह विशेष
शनैस् (अ) धीरे
शपथ (पु) सौगंद
शपन (न) सौगंद
शफ (न) टाप
शफरी (स.पु) श्वेत मछली
शबरालय (पु) जंगलियों का गांव
शब्द (पु) ध्वनि विषय-वाचक की शैल
शम् (अ) आनंद
शब्दग्रह (पु) कान
शब्दग्राम (पु) समूह
शब्दन (उ) शब्दकर्ता
शम (पु) शांति [illegible]
शमथ (पु) शांति
शमन (पु) यमराज – य[illegible]
शमनस्वसा (स) यमुना
शमल (न) विष्ठा
शमित (उ) मिट जानेवाला

शमी (स) फली [illegible]
शमीधान्य (न) फलीवा
शमीर (पु) छोटा रूँड़
शम्ब (पु) वज्र
शम्भु (पु) शिव-ब्रह्मा
शम्बर (न) जल, मृगभेद
शम्बरारि (पु) कामदेव
शम्बरी (स) मूसली
शम्बल (पु.न) रंग
शम्बूक (पु.स) घोंघा
शंभली (स) कुटनी स्त्री
शम्पा (स) बिजली, हल
शय (पु) हाथ
शयु (पु) अजगर सर्प
शयन (न) सोना – बिछौना
शयनीय (न) बिछौना
शयालु (उ) सोनेवाला
शयित (उ) सोया हुआ
शय्या (स) खाट
शर (पु) सरकंडा – बाण
शरजन्मा (पु) स्वामिकार्तिक

शरण (न) घर – रक्षाकर
शरद् (स) ऋतु – वर्ष
शरभ (पु) मृगभेद
शरव्य (न) निशाना
शराभ्यास (पु) बाण चलाना सीखना
शरारि (स) वनतीतर
शरारु (उ) हत्यारा
शराव (पु.न) [illegible]
शरावती (स) नदी
शरासन (न) धनुष
शरीर (न) अंग
शरीरिन् (पु) जीव
शर्करा (स) बालूयुक्त देश – मिश्री – पत्थर खाँड – मीठा
शर्करावत् (उ) कंकड युक्त देश
शर्करिल (उ) बालूयुक्त देश
शर्वरी (स) रात
शर्मन् (न) हर्ष

शल (न) सेहीजीवका
रोम
शलभ (पु) टीडी /ड्डि
शलल (न) सेहीजीव
शलली (स) तथा
शलाटु (त्र) गीलाफल
शल्क (न) खंड, वकला
शल्य (पु) मेनफल-
सेहीजीव-फर (पुन)
शल्लकी (स) सालिब-
मिश्री
शव (पुन) निर्जीव
शवर (पु) म्लेच्छभेद
शवल (पु) पीला
शवली (स) चित्रवि-
चित्रगाय
शश (पु) मृगभेद
शशधर (पु) चंद्रमा
शशलोमन् (न) खर-
गोशाकारोम /शी
शशादन (पु) बाजप-
शशोर्ण (न) खरगो-
शकारोम

शश्वत् (अ) बारंबार-
सहार्थक-साथ-नि-
रंतर
शष्प (न) नवीनघास
शस (न) कल्याण
स्तुतिकियाकुत्सा /हि
शस्त्र (न) आयुध-लो
शस्त्रक (न) लोहा /हि
शस्त्रमार्ज (पु) शिक-
शस्त्राजीव (पु) शस्त्र-
धारी
शस्त्री (स) छुरी
शस्य (न) फल
शस्यमंजरी (स) वाली
शस्यशूक (न) वालि-
केऊपरकातीकुर /ड्डि
शस्यसम्बर (पु) शाल
शाक (न) तर्कारी
शाकट (पु) गाडीका-
लेजानेवालाबैल
शाकुनिक (पु) चिड़ीमा /र
शाक्तीक (पु) बरछीवर-
दार

शाक्यमुनि (पु) बौद्धमतका-
धारक
शाक्यसिंह (पु) तथा
शाखा (स) लता
शाखानगर (न) उपनगर
शाखामृग (पु) बंदर
शाखिन् (पु) वृक्ष
शांखिक (पु) मनिहार
शाटक (पु न) सारी
शाटी (पु न) सारी
शाठ्य (न) कपट
शाण (पु) कसौटी
शांडिल्य (पु) बेल
शात (न) हर्ष तीरवार
शातकुंभ (न) सोना
शात्रव (पु) शत्रु /शा
शाद (पु) कीचड़, बालत-
शादहरित (त्र) हरीघास /शा
शाड्वल (त्र) हरीघासकादे-
शांत (त्र) नाशप्राप्त
शांति (स) शांति
शाम्बरी (स) इंद्रजाल
शार (पु) पवन, कर्बुरवर्ण (त्र)

शारद (त्रि) अतिनया, कच्चा, अधीर
शारदी (स्त्री) सप्तपर्णी — जलपीपरि
शारिफल (न) चौपड़
शारि [illegible] (स्त्री) [illegible]
शार्कर (त्रि) कंकड़युक्त
शार्ङ्गिन् (पु) विष्णु
शार्दूल (पु) सिंह-श्रेष्ठ-र्थक हिंस्रक
शार्वर (न) गाढ़ अंधकार
शाल (पु) मछली, घेर-वृक्षभेद धृतारवा
शाला (स्त्री) सभा-स्कं
शालावृक (पु) बंदर-स्यार-कुत्ता
शालि (पु) साठी
शालीन (त्रि) [illegible]
शालूक (न) धूरि-मकरंद-फूलों का तत्त्व
शालूर (पु) मेंडक
शालेय (पु) सौंफ-धा
[illegible] (त्रि)

शाल्मलि (पु) सेमर
शाल्मलीवेष्ट (पु) [illegible]
[illegible]
शावक (पु) बच्चा
शावर (पु) लोध
[illegible] नित्य
शष्कुलिका (स्त्री) पूरी
शासन (न) आज्ञा
शास्त्र (न) [illegible]
शास्त्र (न) आज्ञा, ग्रंथ
शास्त्रविद् [illegible]
शिंशिपा (स्त्री) सीसों का वृक्ष
शिक्य (न) छींका
[illegible]
२ [illegible] शाखा
१ शि[illegible] (स्त्री) उपदेश
शिखंड (पु) [illegible]
शिखंडिन् (पु) [illegible] रवा
शिखर (न) [illegible]
शिखा [illegible]
शिखरिन् (पु) पहाड़-
शिफा (स्त्री) वृक्ष की

ज्वाला-किरण, शिर की चोटी
शिखावत् (पु) आग
[illegible] (स्त्री) आग
[illegible]
[illegible] मोर
[illegible] तूतिया
[illegible] (पु) भौंर-
[illegible] निकालने वाला
[illegible] (पु) [illegible]
शिग्रु (पु) सहजना
[illegible] निरख
[illegible] (न) श्वेत
शिंजित (न) गहनों का शब्द
शिंजिनी (स्त्री) धनुष
[illegible] ढीला
[illegible] (स्त्री) [illegible]
शिपिविष्ट (पु) शिव
[illegible]
[illegible] (पु) [illegible] का-
सारंग
[illegible] (पु) [illegible]

दुश्चर्म महादेव
शिफा (स) [illegible] जड़
शिफाकंद (पु न) कमल
कीजड़
शिर (न) [illegible]
शिरस्त्र (न) टोप
शिरस्य (पु) [illegible]
शिरोज (पु) शिरस
शिरोधि (स) गला
शिरोरत्न (न) चोटीकी
शिरोरुह (पु) बाल
शिरोस्थि (न) खोपड़ी
शिल (न) शिला
शिला (स) चौखटकेनी
चेकीशिला - पत्थर
शिलाजतु (न) शिला
जीत
शिली (स) छोटेकीड़े
शिलीमुख (पु) भौंरा
बाण
शिलोच्चय (पु) पहाड़
शिल्प (न) कारीगरी
शिल्पशाला (स) का-

शिवजीकाघर
शिल्पिन् (पु) चितेरा
शिव (न) कल्याण
शिवा (स) पार्वती - हर्र
[illegible] - आंवला
सिवार
शिवक (पु) खूंटा
शिवमल्ली (स) [illegible]
शिबिका (स) पालकी
शिबिर (न) सेनास्थान
शिशिर (पु) ठंड, ऋतु
शिशि[illegible] (पु न)
शिंशिपा (स) सीसों
शिशु (पु) बच्चा - [illegible]
बच्चा
शिशुक (पु) शिशुमार
जलजीव
शिशुत्व (न) लड़कपन
शिशुमार (पु) [illegible] लज्जी
शिश्न (पु) लिंग
शिश्विदान (पु) पुण्यमान
शिष्टि (स) आज्ञा
शिष्य (पु) विद्यार्थी

शीकर (पु) जलकण
फुहार
शीघ्र (न) शीघ्र
शीत (न) ठंड - ठंडप-
[illegible] (स) बेत, लम्बे
ए
शीतक (पु) मंद
शीतभीरु (पु) बेला
शीतल (न) ठंड - पद्म
शीतशिव (पु) सौंफ
शीधु (पु न) मदिरा
शीर्ष (न) शिर
शीर्षक (न) टोप
शीर्षच्छेद्य (पु) शिर
काटनेकेयोग्य
शीर्षण्य (पु) टोप
शील (न) शुद्धचरित
स्वभाव - यश
शुक (न) कुकरौंधा -
शुक्ल (पु) पक्षभेद
उजला
शुकनाश (पु) आलू
शुक्ति (स) सीपी - क

शिलाजीत (न)

शुद्ध- [illegible] निठुर(३)	शुभांशु(पु) चंद्रमा	शूलाहत(३) शूल
शुक्र(पु) आग- शुक्राचार्य	शुल्क(पुन) घाटपरदेना	परभुना मांस
ज्येष्ठमास-वीर्य्य(न)	शुल्व(न) तांबा, रस्सी	शूलिन(पु) शिव
शुक्रशिष्य(पु) असुर	शुश्रूषा(स) सेवा	शूल्य(३) शूलपर
शुच्(स) शोक	शुषि(स) [illegible]	भुनामांस
शुचि(पु) आग- आषाढ़	शुषिर(न) बंसीकरन	शृगाल(पु) स्यार
मास- उजला- शृंगाररस	बाजा, [illegible]	शृंखल(३) सांकली
मंत्री- धर्मादिपरीक्षाक-	शुषिरा(स) [illegible]	हाथीकीसांकर
रनेसेंशुद्धचित्त- पवित्र	शुष्कमांस(न) [illegible]	शृंखलक(पु) ऊँट
(३) सितवर्ण (३)	शुष्कन्(पु) आग- पत	केछोटेबच्चेकाठ
शुंठी(स) सोंठि	कमी(न) / २- दंष्ट्रा	केबंधे हुये
शुंडापान(न) मदिरापी	शूक(पुन) चिकनातीकु	शृंग(न) पहाड़की
शुद्धांत(पु) रनिवास- रा	शूककीट(पु) कौंचुआ	चोटी, जीरा(पु) प
जधानी	शूकधान्य(न) चावल.	शृंग(पु) [illegible] ख
शुनक(पु) कुत्ता	शूकर(पु) गाँवकासूअर	शृंगबेर(न) अदरक
शुनी(स) कुतिया	शूकशिम्बि(स) कौंच	शृंगाटक(न) चौराहा
शुभंयु(३) शुभयुक्त	शूद्र(पु) शूद्र	शृंगार(पु) रसविशेष
शुभ(न) कल्याण	शूद्रा(स) शूद्रकीस्त्री	शृंगिणी- णी(स) गौ
शुभान्वित(३) शुभयुक्त	शून्य(३) रीता	शृंगी(स) विशेषम
शुभ्र(पु) उजला- मलीन	शूर(पु) वीर	च्छकीमच्छी-
३) शुक्ल(३)	शूरसेन(पु) [illegible]	अतीस- ककड़ा
शुभ्रदंती(स) वायव्यादि	शूर्प(पुन) सूप, [illegible]	शृंगी [गहना] (न) सोनेका
गजकीस्त्री	शूल(पुन) रोग, आयुध	शृंगीकनक(पु)

श्टत (त्रि) [illegible]	शोचिस् (न) तेज	शौद्धोदनि (पु) बौद्ध
शकवान /कीमाला	शोण (पु) लालकमल	शौरि (पु) विष्णु, शनि
शेखर (पु) शिरबापर	शोन नदी	शौर्य्य (न) पराक्रमी
शेफसी (न) लिंग	शो राक (पु) अरलू	शौल्विक (पु) ठठेरा
शेफालिका (स) हार	शोणरत्न (न) पद्मरा	शौष्कल (त्रि) मांसरवा
श्रृंगार- फालसा	ग मणि	नेवाला /काटपकना
शेमुषी (स) बुद्धि	शोणित (न) लोहू	श्च्योत (पु) घी आदि
शेलु (पु) लभेरा	शोथ (पु) सूजन	श्मसान (न) मरघट
शेवधि (पु) भांडार	शोथघ्नी (स) बिसख	श्मश्रु (न) डाढ़ी /(पु)
शेष (पु) नागेश्वर	परा	श्याम (पु) काला, पलाश
शैक्ष (पु) नयाविद्या	शोधनी (स) बुहारी	काला (त्रि)
शै /श	शोधित (त्रि) बिनाकूड़ा	श्यामल (पु) काला
शैरीक (पु) चिरचि	शोन- मलरहित	श्यामा (स) फूलप्रियंगु
शैल (पु) पहाड़	शोफ (पु) सूजन	ककुनी, कालानिसोत-
शैलालिन (पु) नट	शोभन (त्रि) सुंदर	कालातिधारा- श्यामल
शैलूष (पु) मल्ल, नट	शोभा (स) सुंदरता	ता- सतावर- रात
शैलेय (न) शिलाजीत	शोभांजन (पु) सैजना	श्यामाक (पु) सामक
शैवल (पु) सिवार	शोष (पु) क्षयीरोग	श्याल (पु) स्त्रीकाभाई
शैवलिनी (स) नदी	शौक (न) तोतोंकासमूह	श्याव (पु) खंदरवर्ण
शैवाल (न) नदी	शौक्लेकेय (पु) विषभेद	श्येत (पु) उज्ज्वला
शैशव (न) लड़कपन	शौंड (त्रि) मतवाला	श्येन (पु) बाजपक्षी
शोक (पु) सोच	शौंडिक (पु) कलार	श्योनाक (पु) सरि बन
शोचिष्केश (पु) आग	शौंडी (स) बड़ीपीपरि	अरलू

श्रद्धा (स) आदर- विश्वा
स- आकांक्षा
श्रद्धालु (स) गर्भिणी
की अभिलाष- श्रद्धा
वान् (त्रि)
श्रयण (पु) आश्रय
श्रवण (पु.न) कान
श्रविष्ठा (स) धनिष्ठा
श्राण (स) लपसी
श्राद्ध (न) पितृकर्म
श्राद्धदेव (पु) धर्मराज
श्राय (पु) आश्रय
श्रावण (पु) सावनमास
श्रावणिक (पु) सावन
श्री (स) लक्ष्मी, संपत्ति
श्रीकंठ (पु) शिव
श्रीघन (पु) बुध
श्रीद (पु) कुबेर
श्रीपति (पु) विष्णु /ल
श्रीपर्ण (न) अरणी, कम
श्रीपर्णिका (स) कायफ
ल
श्रीपर्णी (स) खंभारी

श्रीफल (पु) बेल
श्रीफली (स) नील
श्रीमान् (पु) तिलक- ल
श्रील (त्रि) लक्ष्मीवान्
श्रीवत्सलांछन (पु) विष्णु
श्रीवास (पु) देवदारु धूप
श्रीवेष्ट (पु) तथा
श्रीसंज्ञ (न) लौंग /आ
श्रीहस्तिनी (स) हाथीसुंड
श्रुत (न) शास्त्र- सुना
हुआ
श्रुति (स) वेद- कान
श्रुवस् (पु.स) स्रुवा
श्रेणी (स) पंक्ति- जा-
तिसमूह (पु.स)
श्रेयस् (न) श्रेष्ठ- पुण्य
श्रेयसी (स) हर्रै, पाढ़र
गजपीपर वा छोटीपी
पर
श्रेयान् (त्रि) श्रेष्ठ
श्रेष्ठ (त्रि) सत्तम
श्रोण (पु) पंगुला
श्रोणिफलक (न) कमर

श्रोणी (स) कमर
श्रोत्र (न) कान /थी
श्रोत्रिय (पु) वेदाध्या-
श्रौषट् (अ) देवतों औ
र पितरों के लिये हवि
दान
श्लक्ष्ण (त्रि) थोड़ा
श्लेष (पु) मिलाप /ना
श्लेष्मण (त्रि) कफी
श्लेष्मा (पु) कफ
श्लेष्माल (त्रि) कफी /ला
श्लेष्मातक (पु) लभे
श्लोक (पु) छंद- यश-
कीर्ति /ल्याण
श्वःश्रेयस (न) क-
श्वदंष्ट्रा (पु स) गोखरू
श्वा (पु) कुत्ता
श्वनिशा (स.न) कुत्तों
की रात
श्वपच (पु) चंडाल
श्वभ्र (न) छेद
श्वपद (पु) स्वजन
श्ववृत्ति (स) पराधीनता

श्वसुर (पु) ससुर	षड्ग्रंथा (स्त्री) वच	करनेकेयोग्य
श्वसुरौ (पु) सासुससुर	षड्ग्रंथिका (स्त्री) कचूर	संग्रह (पु) इकट्ठाकरना
श्वसुर्य्य (पु) देवर-साला	खा आंबाहलदी [हि]	संग्राम (पुन) युद्ध
श्वश्रू (स्त्री) सासु [हि]	षड्ज (पु) गानेकास्वर	संग्राह (पु) ढालकीमूठ
श्वश्रूश्वसुरौ (पु) सासु	षडानन (पु) स्वामिका	मुठीबांधना
श्वस् (अ) आगेकादिन	र्तिक	संज्ञपन (न) मारडालना
श्वसन (पु) पवन-मैन	षष्टिक (पु) बहरेता	संज्ञा (स्त्री) बुद्धि-नाम
फल [सेहीजीव]	जिसमें ६० दिनमें	हाथआदिसेअर्थबता
श्वाविध्वा श्वाविद (पु)	अन्न उत्पन्न हो [हि]	ना-स्नान [वाला]
श्वित्र (न) श्वेतकोढ	षाण्मातुर (पु) स्वामि	संज्ञु (पु) मिलीजांघ
श्वेत (पु) उजला-चांदी	षंड (पुन) कमलोंका	संज्वर (पु) जलना
(न) द्वीपविशेष (न)	समूह	संडीन (न) उड़ना
श्वेतगरुत (पु) हंस [चि]	स	संदाव (पु) भगाना
श्वेतमरिच (न) सेतमरि-	संक्रंदन (पु) इंद्र [हि]	संद्राव (पु) भगाना [हि]
श्वेतरक्त (पु) पाटल	संक्राम (पुन) कोटकी	संफुल्ल (त्रि) फूलितपु
श्वेतसुरसा (स्त्री) श्वेतफू-	संक्षेपण (न) संक्षेप	संमार्जनी (स्त्री) बुहारी
लकाहारश्रृंगार [हि]	संख्य (न) लड़ाई	संमृष्ट (त्रि) अन्नजोशु-
ष	संख्या (स्त्री) विचार-	द्धकियागयाहो [श्रा]
षंड (पु) सांड	गिंती [स्त्री]	संपत (पु·स) युद्ध, बंधु
षट्कर्मन् (पु) षट्कर्म	संख्यात (त्रि) गिनाहु-	संयम (पु) संयम
षट्पद (पु) भौंरा	संख्यावत् वासंख्या-	संयाम (पु) संयम
षडभिज्ञ (पु) जिन-बु	वान् (पु) पंडित	संयुग (पुन) युद्ध
षड्ग्रंथ (पु) कंजा	संख्येय (पु) संख्या	संयोजित (त्रि) मिलाया

संराव (पु) शब्द [ना	संस्तर (पु) कुशशय्या-	सकृत (अ) साथ
संलाप (पु) परस्परकह-	दि – यज्ञ	एकबार
संव्यान (न) दुपट्टा	संस्तव (पु) परिचय	सकृत्प्रज (पु) कौआ
संशप्तक (पु) अतियोद्धा	संस्ताव (पु) यज्ञोंमें ब्रा-	सकृत्फला (स) कदली
संशय (पु) संदेह	ह्मणोंकीस्तुतिभूमि	सक्थि (न) साथल
संशयापन्नमानस (त्रि	संस्त्याय (पु) समुदाय	सखा (पु) मित्र
संशयी	पुरुषादिकेबाहरकादेश	सखी (स) सहेली
संश्रव (पु) स्वीकार	संस्था (स) मर्य्यादा	सख्य (न) मित्रता
संश्रुत (त्रि) अंगीकृत	संस्थान (न) चौराहा	सगर्भ्य (पु) सगा भाई
संश्लेष (पु) लिपटना	संस्थित (त्रि) मृतक	सगोत्र (पु) गोती भाई
संसक्त (त्रि) मिला	संस्पर्शा (स) चकवंत	सग्धि (स) साथ खाना
संसद (स) सभा	संस्फोट (पुन) युद्ध	सङ्कट (त्रि) संकट
संसरण (न) राजमार्ग	संहत (त्रि) बड़ा मिलापी	सङ्कर (पु) कूड़ाकरकट
जीवोंका जन्मादि-दि	संहतजानुक (पु) मी-	संकर्षण (पु) बलदेव
नारोक्त सेनाकागमन	लीजांघवाला	संकलित (त्रि) जुड़ाहु-
नगरमार्ग	संहतल (पु) बांयेदांये	आ [कर्म
संसिद्धि (स) स्वभाव	हाथकामेल	सङ्कल्प (पु) मानस
संस्कार (पु) गंधादिभा	संहति (स) समूह	सङ्कसुक (त्रि) चंचल
वना [रहीन	संहनन (न) अंग	सङ्काश (त्रि) सदृश
संस्कारहीन (पु) संस्का	संहार (पु) नरकभेद	सङ्कीर्ण (पु) बर्णसं-
संस्कृत (त्रि) बनायेहुये	संहूति (स) गप्प	कर संकुल (त्रि)
पदोंकेअर्थ-शास्त्रके	सकल (त्रि) सब [हि	व्याप्त (त्रि) अशुद्ध (वा
लक्षणोंसे युक्त	संकुल (न) असंभवक	संकुल (त्रि) संकुल

सङ्कोच (न) कुंकुमकेसर	(उ) साधु (उ) विद्यावान्	सद (स·न) सभा
सङ्ग (पु) मेल	(उ) श्रेष्ठ (उ) पूजित (उ)	सदस्य (पु) यज्ञका
संगत (न) ठीककहना	सतत (अ) लगातार	देखनेवाला
संगम (पु) मेल	सतीर्थ्य (पु) एकगुरुके	सदा (अ) सबदिन
संगर (पु) प्रतिज्ञा-युद्ध-	पासपढ़नेवाला	सदागति (पु) पवन
सत्यभाषी-विपत्ति	सतीलक (पु) मटर	सदातन (उ) नित्य
सङ्कीर्ण (उ) अंगीकृत	सत्तम (उ) श्रेष्ठ	सदानीरा (स) करतो
सङ्कुल (उ) जोड़ाहुआ	सत्पथ (पु) अच्छामार्ग	यानदी
संघ (पु) जंतुसमूह	सत्य (न) सांच, सौगंद	सदाय (पु) कन्यादान
संघात (पु) समूह	सत्यंकार (पु) बयाना दे-ना	मेंजोवस्तुदीजाय
संचय (पु) समूह	सत्यवचस (पु) ऋषि	सदृश (उ) समान
सचिव (पु) मंत्री-सहाय	सत्याकृति (स) बयाना	सदृश (उ) तथा
सजम्बाल (न) कीचड़	सत्यानृत (न) बनियापन	सदृक् (उ) तुल्य
युक्त / रक्षित	सत्यापन (न) बयाना	सदेश (उ) पास
सज्ज (उ) मंत्रादिसे	सत्र (न) ढकना-यज्ञ	सद्म (न) घर
सज्जन (पु) कुलीन	सदादान - वन	सद्यस (अ) तत्काल
पहरा (न) / रना / तय्यारक	सत्रा (अ) साथ	सध्रचवा सध्र्यङ्
सज्जना (स) हाथीका	सत्रिन् (पु) मोदी	(उ) साथकाजानेवाला
संचारिका (स) दूती	सत्व (न) सतोगुण-द्रव्य	सनत्कुमार (पु) ऋषि
संजवन (न) चौक	वार्यकीअधिकता -	सना (अ) नित्य
सटा (स) जटा	प्राण-जंतु (पु न)	सनातन (उ) नित्य
सटासूत्र (न) सुतरी	सत्वर (न) शीघ्र	सनाभि (पु) भाई
सत (पु) पंडित-सत्य	सदन (न) घर	सनि (स) विनय

संनिष्ठेव (न) थूकसहित
बोल
सनीड (३) पास
संतत (न) लगातार
संतति (स) वंश
संतप्त (३) तपा हुआ
संतमस (न) सर्वव्यापी
अँधेरा विंश
संतान (पु) कल्पवृक्ष-
संताप (पु) जलना
संतापित (३) तपा हुआ
संदान (न) खूंटा
संदानित (३) बँधा
संद्राव (पु) भागना
संदित (३) बँधा
संदेशवाच् (पु·स) दूत
तका कहना
संदेशहर (पु) दूत
संदेह (पु) संशय
संदोह (पु) समूह
सन्धा (स) प्रतिज्ञा
सन्धान (न) मदिरा
कावनाना

सन्ध्या (स) साँझ
संधि (पु) मेल
संधिनी (स) गाभनगौ
सन्नकद्रु (पु) चिरौंजी
सन्नद्ध (३) मंत्रादिसे
छिन्न मारनेके योग्य
सन्नय (पु) सेनाके पी
छेरहनेवाली सेना-
समूह
सान्निकर्षण (न) परोस
सानि (स) विनय
सन्निकृष्ट (३) समीप
सन्निधि (पु) परोस
सन्निवेश (पु) अच्छा
स्थान
सपत्न (पु) वैरी
सपदि (अ) शीघ्र
सपर्या (स) पूजा
सपिंड (पु) भाईवंधु
सपीति (स) साथपीने
वाला
सप्तकी (स) स्त्रियोंकी
कंधनी

सप्ततंतु (पु) यज्ञ
सप्तपर्ण (पु) सतपदी
सप्तर्षि (पु·व) ऋषि
सप्तला (स) सोया
सप्तार्चिष (पु) आग
सप्ताश्व (पु) सूर्य्य
सप्ति (पु) घोड़ा
सभर्तृका (स) सुहागन
सभा (स) कचहरी-गो
ष्ठी-सभामें बैठनेवाले
सभाजन (न) आनंदी
सभासद (पु) सभामें
बैठनेवाला
सभास्तार (पु) तथ्य
सभ्य (पु) तथ्य, सज्जन
सम (न) फूल, समान (३)
समग्र (३) सब
समं (अ) साथ
समंगा (स) मजीठ
समज (पु) पशुओंका
समूह
समज्या (स) सभा
समंजस (न) न्याय

समधिक (उ) अधिक	समा (स) वर्ष	योग्य
समनस् (उ) पंडित	समांसमीना (स) ब्याति	समासार्था (स) समस्या
समंततः (अ) चारोंओर	वर्षवच्चादेनेवालीगौ	समाहार (पु) बटोरना
समंतदुग्धा (स) सेंहुड	समाकर्षिन् (स) बड़ी	समाहित (उ) अंगीकृत
समंतभद्र (पु) जिन, बुध	दूरजानेवालागंध	समाहृति (स) संग्रह
समन्वितलय (पु) तुल्यलय	समाघात (पु) युद्ध	समाहूय (पु) जीवोंकी
समग्र (उ) सब	समाज (पु) औरोंका	बाजी
समय (पु) समय-सौंह	समूह, मनुष्योंकाझुंड	समिक (पु) फड़बाज
आचार-काल-सिद्धांत	समाज्ञा (स) यश	समित् (स) युद्ध
अच्छा-भाषा [ध्य	समाधि (पु) स्वीकार	समिति (स) सभा
समया (अ) समीप-म	समाधान-अवाकू	युद्ध-संग
समर (पुन) युद्ध	नियम	समिध (स) ईंधन
समर्थ (उ) शक्तिमान-	समान (पु) शरीरकी	समीक (न) लड़ाई
संबंधार्थ-हित [मर्थ	पवन, तुल्य (उ) पंडि-	समीप (उ) पास
समर्थन (न) युक्तायुक्त	त-सदृश-मुख्य	समीर (पु) पवन
समर्द्धक (उ) बढ़नेवाला	एक (उ) [भाई	समीरण (पु) पवन-
समर्याद (उ) पास	समानोदर्य (पु) सगा	दोनामरुआ [ना
समवर्तिन् (पु) यमराज	समालंभ (पु) तिलक	समुच्चय (पु) बटोर
समवाय (पु) समूह	करना	समुच्छ्रय (पु) विरोध
समष्ठिला (स) गुंदरदुबी	समावृत्त (पु) गुरुसे	ऊंचाई [गा
समसन (न) संक्षेप	गृहस्थाश्रम-आदिके	समुज्झित (उ) त्या-
समस्त (उ) सब	लिये आज्ञापानेवाला	समुत्पिंज (पु) अकु
समस्या (स) पूराकरना	समासाद्य (उ) पानेको	लानी सेना

समुदक्त (३) कूपआदिसे निकालना	युद्ध-उत्तरकाल सम्पाक (पु) अमला	वर्ष संवत्सर (पु) वर्ष
समुदय (पु) समूह	सम्पुटक (पु) डिब्बा	संवदन (न) वशीकरन
समुदाय (पु) समूह-युद्ध (पुन)	संप्रति (अ) अब	संवर्त्त (पु) प्रलय
	सम्प्रदाय (पु) उत्तमो पदेश	संवर्त्तिका (स) कमला
समुद्गक (पु) डिब्बा		दिकोनवीनपत्ते
समुद्धत (३) अन्यायी	संप्रधारणा (स) यु-	सम्वसथ (पु) गाँव
समुद्धरण (न) उगला अन्न-उखाड़डारना	क्तायुक्तपरीक्षरण	सम्वहन (न) आगमीजना
	संप्रहार (पुन) युद्ध	सम्वित (अ) वर्ष
समुद्र (पु) सिंधु	संवाकृत (३) दोवार जुतेखेत	सम्विद् (स) बुद्धि-स्वीकार, ज्ञान-संभाषरण
समुद्रांता (स) जवासा कपास-पिंडरकशाक		
	संवाध (३) संकट	क्रियाकार-युद्ध-नाम
समुन्दन (न) गीलाकरना	सम्भेद (पु) मुहाना	अर्थात्संज्ञा
समुन्न (३) गीला	सम्भ्रम (पु) दौड़, वेग	संविदित (३) अंगीकृत
समुन्नद्ध (३) मूर्ख	सम्मद (पु) हर्ष	संवीक्षण (न) ढूंढना
समूह्य (पु) यज्ञाग्नि कास्थान	सम्मूर्च्छन (न) सर्वत्र व्याप्त	संवीत (३) नदी आदि सेघिरा
सम्रूरु (पु) मृगभेद	सम्यक्त्व (न) सत्य	संवेग (पु) दौड़ादौड़
समूह (पु) झुंड	सम्राज् वा सम्राट् (पु) राजसूययज्ञ से हीनो रमंडलेश्वरका राजा वा सबका जो का राजा	सम्वेद (पु) अनुभव ज्ञान
समृद्ध (३) भरापूरा		
समृद्धि (स) बढ़ना		संलाप (पु) परस्परकहन
सम्पाति (स) लक्ष्मी		सम्वेश (पु) सोना
सम्पराय (पु) दुःख	सम्यक् वा सम्यद् (अ)	सरक (पुन) मदिरापान

सरघा (स) मधुमक्खी
सरट (पु) गिरगट
सरणा (स) प्रसारणी बेलि
सरणि (स) आली
सराति (पु. स) मुठी
सरमा (स) कुतिया
सरल (पु) वृक्ष विशेष, उ-
सरलद्रव (पु) देवदारु धूप
तारपीन तेल
सरला (स) निसोत
सरस (न) बड़ा सरोवर
सरसीरुह (न) कमल
सरसी (स) बड़ा सरोवर
सरस्वत वा सरस्वान् (पु)
समुद्र- नद /दी
सरस्वती (स) वाणी- न
सराव (पु न) सरवा
सरित् (स) नदी
सरित्पति (पु) समुद्र
सरीसृप (पु) सर्पमात्र
सर्ग (पु) स्वभाव- त्याग
निश्चय- अध्याय- सृ
ष्टि

सर्ज (पु) कोरों, शाल
सर्जक (पु) विजैसार
सर्जरस (पु) राल
सर्जिकाक्षार (पु) सज्जी
सर्प (पु) सांप, चलना
सर्पराज (पु) नागेश्वर
सर्पिस्वा सर्पि (न) घृत
सर्वसहा (स) पृथ्वी
सर्व (पु) शिव- सब
सर्वज्ञ (पु) जिन बुध-
शिव /र
सर्वतस (अ) चारों ओर
सर्वतोभद्र (पु न) नीव
सर्वतोभद्रा (स) गंभीरी
सर्वतोमुख (न) जल
सर्वदा (अ) सब दिन
सर्वधुरावह (पु) सब
बोझ काले जाने वाला
बैल
सर्वधुरीण (पु) तथा
सर्वमंगला (स) पार्वती
सर्वरस (पु) राल
सर्वला (स) गुर्ज

सर्वलिंगिन् (पु) पाखंडी
सर्ववेदस (पु) सर्वस्व
नाम दक्षिणा यज्ञ
सर्वसन्नहन (न) सेना
की तय्यारी
सर्वाणी (स) पार्वती
सर्वानुभूति (स) निसोत
सर्वान्नभोजी (त्र) सब
काल खाने वाला
सर्वान्नीन (त्र) सर्वभक्षी
सर्वाभिसार (पु) सेना की
तय्यारी /तावलंबी
सर्वार्थसिद्ध (पु) बुद्ध
सर्वौघ (पु) सेना की तैयारी
सर्षप (पु) सरसों
सलिल (न) जल
सव (पु) यज्ञ
सवन (न) यज्ञ की ओ
षधियों का कूटना
सवयस (पु) समवय
प्रिय- समआयु
सवितृ (पु) सूर्य
सविध (त्र) पास

सवेश(वि)पास
सव्य(वि)वामांग
सव्येष्टृ(पु)रथवान्
सब्रह्मचारिन्(पु)सपाठी
सह(न)पराक्रमी
सह(अ)साथ
सहकार(पु)सुगंधवाला
सहचरी(पुस)सुनहरीपि
याबासा
सहज(पु)सगाभाई
सहधर्मिणी(स)स्त्री
सहन(वि)सहनशील
सहभोजन(न)साथखाना
सहस्वासह(पु)अगहन
बल(न)
सहसा(अ)अकस्मात्
सहस्य(पु)पौष
सहस्रदंष्ट्र(पु)बहुदां
तवाली मछली
सहस्रपत्र(न)कमल
सहस्रवीर्य्या(स)दूब
सहस्रवेधि(न)हींग
सहस्रवेधिन्(पु)अम-

लवेती
सहस्रांशु(पु)सूर्य
सहस्राक्ष(पु)इंद्र
सहस्रिन्(स)सहस्र
सेनावाला
सहा(स)घीकुमार-
नकंदबालकौड़ी
सहाय(पु)सहायक
सहायता(स)सहाई
सहित(वि)सहगामी
सांयात्रिक(पु)मल्लाह
सांयुगीन(पु)रणमेंकुश
ल
सांशयिक(वि)संशयी
साकं(अ)साथ
साक्षात्(अ)प्रत्यक्ष
सागर(पु)समुद्र
साचि(अ)टेढा
सातला(स)सोया
साति(स)अंत,दान
सातिसार(वि)बहुतहग
नेवाला
सात्विक(वि)शरीरऔर मनकीचेष्टा

सादिन(पु)सारथी
साधन(न)मारण-मृ
रेकासंस्कार-गति-
द्रव्य-धनदेना,अ-
र्थकीसिद्धि-उपाय
पीछेजाना
साधारण(वि)समान
सामान्य रहित
साधित(वि)अहंकार
साधिष्ठ(वि)अतिश
यबहुत
साधीयस्वासाधीया
न्(वि)अतिशयसाधु
अतिशयवाढ
साधु(पु)सज्जन,सुंद
र(वि)मनोज्ञ(वि)
साधुवाहिन्(पु)सी
खाहुआघोड़ा
साध्य(पु)१२गणदेव
साध्वस(न)डर
साध्वी(स)पतिव्रता
सानु(पुन)पर्वततट
सान्त्व(न)अतिमधु

रकहना (मिलाप
सान्दृष्टिक(न)तुरंतफल
सान्द्रस्निग्ध(३)मेघ
चिकना
सान्द्र(३)सघन
सान्नाय्य(न)साकल्य
साप्तपदीन(न)मित्रता
सामधेनी(स)आगज-
लानेकीऋचा [लाप
भेद,मि
सामन्वासाम(न)वेद
सामाजिक(पु)सभामें
बैठनेवाला
सामान्य(न)जाति-सा
धारण(३) [दित
सामि(अ)आधा-निं
सामुद्र(न)समुद्रनोन
साम्परायिक(न)लड़ाई
साम्प्रतं(अ)युक्त,अब
साम्वत्सर(पु)ज्योतिषी
सायं(अ) सांझ,संध्या
सायक(पु)तीर- खड्ग
सार(पु)वृक्षकातत्व
बल- स्थिरांश,न्याय

(न)श्रेष्ठ(३)
सारंग(पु)पपीहा-
हरिण,विचित्ररंग(३)
सारथि(पु)रथवान्
सारमेय(पु)कुत्ता
सारव(३)सरयूसेउत्प [न्न
सारस(न)कमल
सारसन(न)स्त्रियों
कीकंधनी,घोड़की
कमरपट्टी
सारसना(स)तथा
सारिका(स)मैना
सार्थ(पु)जंतुसमूह
सार्थवाह(पु)धनी
सार्द(३)गीला
सार्द्धं(अ)साथ
सार्वभौम(पु)उत्तर
दिशाकादिग्गज
महाराजाधिराज
साल(पु)कोरों [लिवि
सालपर्णी(स)औषध
सास्ना(स)बैलकेग
लेकालटकाहुआचर्म

साहस(न)दंड
साहस्र(पु)सहस्रसेना
कंत-हजारोंकासमूह(न)
सिंह(पु)पशुविशेष
सिंहनाद(पु)वीरोंकागर्जन
सिंहपुच्छी(स)नाम
विशेष [सुंदर
सिंहसंहनन(पु)अति
सिंहान(पुन)लोहका
मैल
सिंहास्य(पु)अडूसा
सिंही(स)अडूसा,बेंगन
सिकता(स)वालू-वा-
लूकास्थान [स्थान
सिकतामय(न)वालूका
सिकतावत्(३)तथा
सिक्थक(न)मोम
सित(पु)श्वेत-बंधु(३)
समाप्त(३)अर्जुन-
शुक्लपक्ष
सितछत्रा(स)सोंफ
सितशूक(पु)जो
सिताभ्र(पु)कपूर

सिताम्भोज (न) श्वेतकमल	सीव्य (पु) जोतनेयोग्यखेत	सुगत (पु) जिन, बुद्ध
सिद्ध (पु) देवजाति, सिद्ध (३)	सीमन् (स) सीमा	सुगृहनादृति (पु) टट्टी
सिद्धार्थ (पु) उजलीसरसों	सीमंत (पु) बंधकेश	सुगंधा (स) रास्ना
सिद्धांत (पु) सिद्धांत	सीमंतिनी (स) स्त्री	सुगंधि (न) खुशबू
सिद्धि (स) ऋद्धि औषधी	सीता (स) स्त्री	बहुसुगंधि ताम्री
सिध्मन् (न) सीपरोग	सीर (पु) हल	सुचरित्रा (स) पतिव्र-
सिध्मल (न) सीपवाला	सीरपाणि (पु) बलदेव	सुचेलक (पु) अच्छेव-
सिध्य (पु) पुष्यनक्षत्र	सीवन (न) सीना	स्त्र
सिध्मका (स) क्षुद्ररोगभेद	सीसक	सुत (पु) पुत्र-राजा
सिनीवाली (स) वह अमावस्या	सीहुंड (पु) सीहुंडवृक्ष	सुतश्रेणी (न) मूसाली
जिसमें चंद्रमा दीखे	सु (अ) अतिशय, पूजन	सुता (स) पुत्री
सिन्दुक (पु) सम्भालू	सुकंदक (पु) प्याज	सुतात्मजा (स) पोती
सिंदुवार (पु) त [illegible] था	सुकरा (स) सीधीगौ	सुत्वन् (पु) यज्ञांतकोलि
सिंदूर (न) सेंदुर	सुकल (३) दाता भोक्ता	ये स्नानकरनेवाला
सिंधु (पु) समुद्र-देशभे	सुकुमार (३) कोमल	सुदर्शन (पु न) लक्ष्मी
द-नदविशेष-स्रावा-	सुकृत (न) पुण्य	पतिकाचक्र
न्यनदी (स)	सुकृती (३) भाग्यवान्	सुदूर (३) अतिदूर
सिंधुज (न) सैंधा	सुख (न) हर्ष	सुधर्मा (स) देवसभा
सिंधुसंगम (पु) मुहाना	सुखमा (स) शोभा	सुधांशु (पु) चंद्रमा
सिम्बा (स) फली	सुखवर्चक (पु) सज्जी	सुधा (स) अमृत
सिरा (स) नाड़ी	सुखसंदोह्या (स) दुहने	लिप-सेहुंडवृक्ष
सिह्लक (पु) लोहबान	कोसुशीलागौ	सुधी (पु) पंडित
सीता (स) कूँड़		सुनासीर (पु) इंद्र

सुनिषण्णक (प्र) चिरचिरा	सुरभि (पु) वसंतऋतु	सुवहा (स) फालसा
सुंदर (प्र) शोभन	बड़ा सुगंध - गौ (स)	हरसिंगार - सनाय
सुंदरी (स) स्त्री	सुरभी (स) सालिवामि	हंसपदी - सालिम
सुपथिन् (पु) अच्छामार्ग	सुरर्षि (पु) देवऋषि	[illegible]
सुपर्ण (पु) गरुड़	सुरलोक (पु) स्वर्ग	सुषमा (स) शोभा
सुपर्वन् (पु) देवता	सुरवर्त्मन् (न) आकाश	सुषवी (स) करेला
सुपार्श्वक (पु) गजहड़ी	सुरसा (स) सनाय	कालाजीरा
सुप्रतीक (पु) ईशानदिशा	सुरा (स) मदिरा	सुषिर (न) पोलमात्र
सुप्रयोगविशिख (पु) तीरंदाज	सुराचार्य (पु) बृहस्पति	सुषीम (३) ठंढवाली
सुप्रलाप (पु) अच्छा कहना	सुराभांड (पु) मदिराका	सुषेण (पु) करोंदा
सुभगाह्वय (पु) [illegible] फूल		सुषेणिका (स) काला
सुभिक्ष (न) [illegible]	सुरालय (पु) सुमेरुपर्वत	निसोत वाति धारा
सुमन (पु) गोहूँ	सुराष्ट्रज (न) आरहर	सुष्ठु (अ) अतिशय
सुमना (स) चमेली	सुरी (स) राई	प्रशंसा
सुमनोरज (पु) फूलकीधूल	सुवचन (न) अच्छावचन	सुसंस्कृत (३) घृतप
सुमनस् (पु) देवता, फूल	सुवर्ण (पुन) एक तोलाभर	क्वादि पदार्थ
सुमेरु (पु) पर्वतविशेष	सोना (न)	सुसम (३) सुंदर
सुर (पु) देवता	सुवर्णक (पु) अमलतास	सुहृद् (पु) मित्र
सुरज्येष्ठ (पु) ब्रह्मा	सुवल्ली (स) बाकुची	सुहृद्य (३) सीधा
सुरदीर्घिका (स) आकाशगंगा	सुवासिनी (स) कुटुम्ब	सूक्ष्म (३) थोड़ा-
सुरद्विष् (पु) असुर	वा विवाहिता जो पिता के	लिंगदेह
सुरनिम्नगा (स) गंगा	घर रहती है	सूचक (३) चुगिल
सुरपति (पु) इंद्र	सुव्रता (स) सुशीला गौ	सूचि (स) सुई

सूद (पु) रसोईदार
सूत (पु) रथवान-पारा
अथवा रथी और सारथी से उत्पन्न
बढ़ई । घर
सूतिकागृह (न) सौरिका
सूतिमास (पु) जन्मकाल
सूत्थान (पु) चतुर । दि
सूत्या (स) सोम अभिषेका
सूत्र (न) सूत । ना
त्रिलपट-
सूत्रवेष्टन (न) नलीपरस
सूत्रामन् (पु) इंद्र
सूद (पु) व्यंजन, रसोइया
सूना (स) घाँटी
सूनु (पु) पुत्र-सूनी (स)
सूनृत (न) प्यार और सत्य
वचन
सूनृद (पु) उन्मत्त
सूपकार (पु) रसोइया
सूर (पु) सूर्य
सूरत (पु) दयालु
सूरसूत (पु) सूर्य का
सूरि (पु) पंडित
सूर्मी (स) लोहे की मूर्ति

सूर्य (पु) ग्रह विशेष
सूर्यतनया (स) यमुना
सूर्येन्दुसंगम (पु) अमा
सृक्किणी (न) होठों का
किनारा वा अखवारे
सृज (पु) मुदा
सृणि (पु-स) हाथी का अंकुश
सृणिका (स) लार
सृति (स) मार्ग
सृपाटी (स-पु) तोल
सृमर (पु) मृग भेद
सृष्टि (स) निश्चित-
बहुत
सेकपात्र (न) डोलची
सेचन (न) तथा
सेतु (पु) पुल, वरना पेड़
सेना (स) सेना
सेनांग (न) हाथी-घोड़ा-रथ-पैदल आदि
सेनापति (पु) १ हाथी
२ रथ ३ घोड़े ४ पैदल
का स्वामी । क
सेनानी (पु) स्वामिकार्तिक

सेनामुख (न) सेनापति
की सेना से त्रिगुनी सेना
वाला । दार
सेनारक्षक (पु) चौकी
सेवक (पु) नौकर
सेवन (न) सीना
सेवा (स) पराधीनी
सेव्य (न) उसीर
सैंहिकेय (पु) राहु । न
सैकत (न) बालू का स्था
सैतवाहिनी (स) नदी
सैनिक (पु) चौकीदार
सेना (पुन)
सैंधव (पु) घोड़ा, सैंधा
सैन्य (पु) सेना
सैरिक (पु) हलवाहा
सैरिंध्री (स) निजवश
भूत और शिल्पकारिणी
परघर रहने वाली स्त्री
सैरिभ (पु) भैंसा
सैरीयक (पु) पियाबांसा
सोढ (त्रि) क्षमायुक्त
सोदर्य (पु) सगा भाई

सोपप्लव (पु) राहु से चंद्र ग्रसा हुआ
सोपान (न) सीढ़ी
सोम (पु) चंद्रमा
सोमप (पु) सोमरसपी
सोमपीतिन् (पु) तथा
सोमराजी (स) वकुची
सोमवल्क (पु) श्वेतकत्था कायफल
सोमवल्लरी वा सोमवल्लिका (स) वकुची
सोमवल्ली (स) गिलोय
सोमोद्भवा (स) नर्मदा
सौगंधिक (न) श्वेतकमल- सुगंधतृण, गंधक (पु)
सौचिक (पु) दर्जी
सौदामिनी (स) बिजली
सौध (पु न) राजगृह
सौभागिनेय (पु) सुभगा पुत्र
सौम्य (पु) बुध- सुंदर देवता--
सौरभेय (पु) बैल
सौरभेयी (स) गौ

सौराष्ट्रिक (पु) विष भेद
सौवर्चल (न) सौंचर नोन
सौविद (पु) कंचुकी
सौविदल्ल (पु) रनवास का रक्षक नेवाला सेवक
सौविदल्ल (पु) तथा
सौवीर (न) बेर के फल कांजी - सुरमा
साहित्य (न) [illegible]
स्कंद (पु) स्वामिकार्तिक
स्कंध (पु) कंधा- सेना समूह - राजा
स्कंधदेश (पु) [illegible]
स्कंधशाखा (स) टहनी
स्खन्न (२) चन्द्रमा हुआ
स्खलन (न) गिरना
स्खलित (न) [illegible]
स्तन (पु) कुच
स्तनधयी (स) दूधपी नेवाला बच्चा
स्तनपा (स) तथा
स्तनयित्नु (पु) मेघ

स्तनित (न) मेघ का गर्जन / पेड़ का ठूंठ
स्तम्ब (पु) गुच्छा-
स्तम्बकरि (पु) सामा न्य धान्य (कोठेती
स्तम्बघन (पु) काटने
[illegible] (पु) तथा
स्तम्बेरम (पु) हाथी
स्तम्भ (पु) खंभा, मूर्खता
स्तब्धरोमन् (पु) सुअर
स्तव (पु) स्तुति
स्तवक (पु) गुच्छा
स्तिमित (२) गीला
स्तुत (२) स्तुति किया
स्तुति (स) स्तव
स्तुतिपाठक (पु) भाट
स्तुभ (पु) बकरा
स्तूप (पु) ढेरा, ढेरी
स्तेन (पु) चोर
स्तेम (पु) गीला करना
स्तेय (न) चोरी
स्तैन्य (न) चोरी
स्तोक (२) थोड़ा

स्तोत्र (न) स्तुति
स्तोम (पु) समूह-स्तो-
यज्ञ-छंद
स्त्री (स्त्री) नारी
स्त्रीधर्म्मिणी (स्त्री) रज-
स्वला
स्थंडिल (न) यज्ञका
चौतरा- भूमिशायी (पु)
स्थंडिलशायी (पु) भूमि
शायी
स्थपति (पु) बृहस्पति
यज्ञकाकर्त्ता-कारीगर
स्थल (न) स्थल
स्थली (न) स्थल
स्थविर (पु) वृद्धपुरुष
स्थविष्ठ (त्रि) अतिशय-
मोटा
स्थाणु (पुन) शिव-ठू-
ठकाठूंठ, ठहरीवस्तु
स्थान (न) अवकाश
स्थिति
स्थानीय (न) नगरी
स्थाने (अ) युक्त
स्थापत्य (पु) रनवासका

स्थापनी (स्त्री) पाढरि
स्थामन् (न) पराक्रमी
स्थायुक (पु) ग्रामाध्य-
क्ष
स्थाल (न) बड़ाथा-
लवाथाली
स्थाली (स्त्री) थाली
स्थाविर (त्रि) वृद्ध
स्थाविर (न) बुढ़ापा
स्थासक (पु) चंदना-
दिलेपन
स्थास्नु (त्रि) अतिथि-
रस्थिर
स्थिति (स्त्री) मर्य्यादा-
आश्रय
स्थिरतर (त्रि) अतिस्थि-
र
स्थिरा (स्त्री) पृथ्वी-शा-
लपर्णी
स्थिरायु (पु) सेमर
स्थूणा (स्त्री) खम्भा-
लोहेकीप्रतिमा
स्थूल (त्रि) मोटा-जड़
स्थूललक्ष्य (त्रि) अति-
दानि
स्थूलशाटक (त्रि) मो-

स्थूलोच्चय (पु) असं-
पूर्ण-गजकी मध्यम
गति | (त्रि) अतिस्थिर
स्थेयस्तथास्थेयान् (
स्थौणेय (न) कुकरौंध
स्थौरी वा स्थौरिन् (पु
लद्दू-घोड़ा-खिच्चर
स्नव (पु) झरना
स्नातक (पु) वेदव्रतको
पूराकर गुरुकी आज्ञा
का पालनेवाला
स्नान (न) न्हान
स्नायु (स्त्री) नाड़ीभेद
स्निग्ध (पु) समवय,
प्रिय-चिकना (त्रि)
स्नेही (त्रि)
स्नु (पुन) पर्वतकाप्र-
स्नुत (त्रि) बहताहुआ
स्नुषा (स्त्री) पुत्रवधू
स्नुह (स्त्री) सेहुंड़
स्नुही (स्त्री) तथा
स्नेह (पु) प्रेम-स्पर्श
(पु) चर-उत्साही

स्पर्श (पु) विषय, संताप	स्मर (पु) कामदेव	स्रुत (२) वहताहुआ
स्पर्शन (पु) पवन, दान (न)	स्मरहर (पु) शिव	स्रुव (पु) यज्ञपात्र
स्पष्ट (२) शुद्ध संताप	स्मित (न) मंदहास	स्रुवा (स) मूर्वा
स्पृशी (स) भटकटाई	स्मृति (स) धर्मसंहिता	स्रुवावृक्ष (पु) हींस
स्पृष्टि (स) छूना	स्मरण	स्रोतस्वास्रोत (पुन)
स्पृक्का (स) शाक	स्यद (पु) वेग	कर्ण, इंद्रिय (न) नदी
स्पृहा (स) मनोरथ	स्यंदन (पु) तेंदुआ-ल	कावेग (न)
स्पृष्ट (पु) संताप	स्यंदनारोह (पु) रथी	स्रोतस्विनी (स) नदी
स्फरण (न) फरकना।	स्यंदिनी (स) लार	स्रोतोंजन (न) सुरमा
स्फाति (स) बढ़ती	स्यन्न (३) वहताहुआ	स्व (पु) गोतीभाई-
स्फिच् (स) स्त्रीकेकमर	स्यश (पु) हरकारा	आत्मा- स्वसंबंधी (२)
स्फिर (३) अधिक	स्यूत (पु) थैली- सूतका	धन (पुन)
स्फुट (२) फूलाफूल, स्पष्ट	विस्तारा हुआ	स्वच्छंद (३) स्वतंत्र
स्फुटन (न) फूटना	स्यूति (स) सीना	स्वजन (पु) गोतीभाई
स्फुरन-रण (न) फरकना	स्रंसिव (पु) पिलुआ	स्वतंत्र (२) स्वच्छंद
स्फुलिंग (२) आगकेकण	स्रज (स) शिरकीमाला	स्वधा (अ) देवतोंऔर
स्फूर्जक (पु) तेंदुआ	स्रव (स) कर्णी गौ नेवाली	पितरोंकोहविदेना
स्फूर्जिक (पु) तथा	स्रव दुर्गा (स) शर्मागिर	स्वधिति (पु-स) फरसा
स्फूर्जथु (पु) विजलीकी	स्रवंती (स) नदी	स्वन (पु) शब्द
स्फेन (पु) जलकाफेन	स्रष्टृ (पु) ब्रह्मा	स्वनित (३) वाजताहुआ
स्फेष्ठ (२) अतिशयवहुत	स्रस्त (३) टपकाहुआ	स्वप्न (पु) सोना
स्म (अ) पादपूरण- भूत	स्राक् (अ) शीघ्रतार्थक	स्वप्नजस्वा स्वप्नक् (३)
काल- अतीतकाल	स्रुच (पु) स्रुवाकाभेद	सोनेवाला

हाला (स) मदिरा
हालिक (पु) हलवाहा
हाव (पु) स्त्रियोंकारसभेद
हास (पु) हँसी
हास्तिक (न) हाथियोंका
हास्य (पु) रसभेद - हँसी
हाहा (पु) गंधर्वकानाम
हिंसा (स) मारना वा चोरी आदिकेकर्म
हिंसाकर्मन् वा हिंसाकर्म (न) हिंसा - मारना
हिंस्र (त्रि) हत्यारा
हि (अ) हेतु - निश्चय
हिक्का (स) स्वरभेद हँसी
हिंगु (पुन) हींग
हिंगुनिर्यास (पु) नींब
हिंगुली (स) बैंगन
हिंगुलु (पु) ईंगुर
हिंडीर (पु) समुद्रफेन
हिंताल (पु) सुपारीकाफल
हिम (न) ठंड - ठंडपथ्यारी (त्रि)
हिमवत् (पु) पर्वत

हिमवालुक (पु) कपूर
हिमसंहति (स) बड़ीठंड
हिमांशु (पु) चंद्रमा
हिमानी (स) बड़ाहिम
हिमावती (स) [illegible]
हिरण्य (न) धन - सोनेको रूपावलनेत्र्यवले सोना
हिरण्यगर्भ (पु) ब्रह्मा
हिरण्यरेतस् (पु) आग
हिरण्यबाहु (पु) नदी
हिरुक् (अ) वर्जनार्थक समीप
लिसा
हिल्लोलिका (स) हि-
ही (अ) विस्मय
हीन (त्रि) त्यागाहुआ
हुतभुक्प्रिया (स) आगकीप्रिया
हुतभुज् (पु) आग
हूति (स) पुकारना
हुम् (अ) वितर्क - परिप्रश्न - तर्क
हूहू (पु) गंधर्वकानाम
हृणीया (स) घिनाना

हृद् (न) मन, हृदय
हृदय (न) मन - हृदे
हृदयंगम (त्रि) [illegible]
हृदयालु (त्रि) सीधा
हृद्य (त्रि) प्यारा
हृषीक (न) इंद्रिय
हृषीकेश (पु) विष्णु
हृष्ट (त्रि) हर्षित
हृष्टमानस (त्रि) हर्षित
हृषित (त्रि) आश्चर्यको प्राप्त
हे (अ) संबोधनार्थक
हेति (स) अग्निकीज्वाला - सूर्यकातेज - शस्त्र
हेतु (पु) कारण
हेमकूट (पु) पर्वतभेद
हेमदुग्धक (पु) गूलरि
हेमन् (न) सोना
हेमन्त (पु) ऋतुभेद
हेमपुष्पक (पु) चमेली
हेमपुष्पिका (स) पीले फूलकीजूही
हेमाद्रि (पु) सुमेरुपर्वत

हेरम्ब (पु) गणेश

हेला (स) स्त्रियों का रस विशेष

हेषा (स) घोड़े का शब्द

है (अ) सम्बोधनार्थक

हैम (न) सोना सिंहासन

हैमवती (स) पार्वती, हर्रे, श्वेतवच

हेमकोय - सोनामक्खी

हैयङ्गवीन (न) मक्खन

होता (पु) ऋग्वेदवित्, होमकरनेवाला

होम (पु) देवयज्ञ, महायज्ञ

ह्रद (पु) गहरा जलस्थान

ह्रस्व (पु) वामन - लघु

ह्रस्व (पु) छोटा

ह्रस्वगवेधुका (स) कंगनी

ह्रस्वांगता (पु) जीर्ण, बौना

ह्लादिनी (पु.न) वज्र, बिजली, नदी

ह्री (स) लज्जा

ह्रीण (पु) लज्जित

ह्रीत (पु) लज्जित

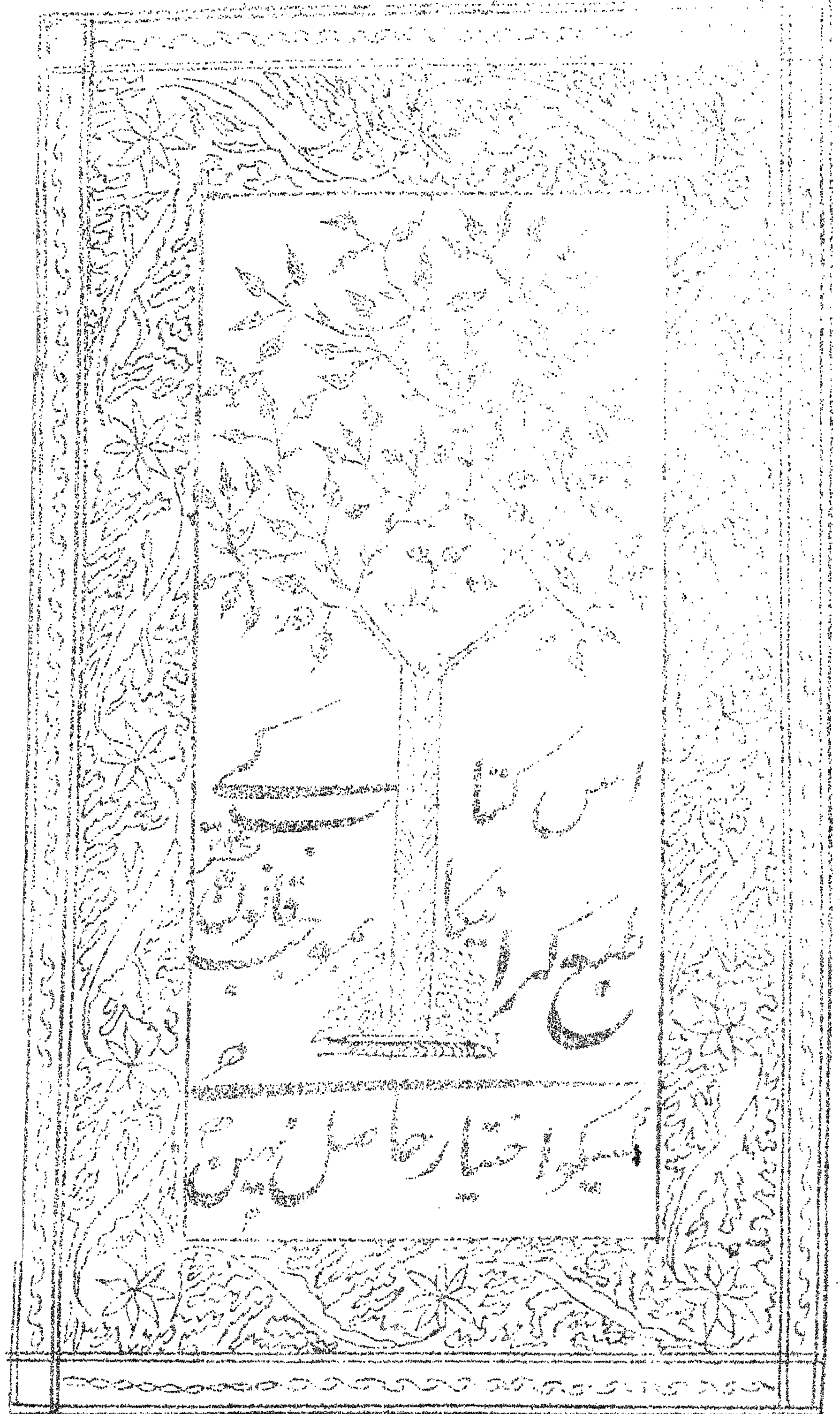
ह्रीवेर (न) नेत्रवाला - हाऊवेर

ह्रेषा (स) बोली घोड़े की

ह्लादिनी (स) मिश्री

शुभम्

सम्वत् १९३८ मार्गमास में छपी सन १८८१ ईसवी


اس کتاب کے
طبع کرانیکا حقوق
کسیکو اختیار حاصل نہیں

१॥ श्रीः ओ३म् तत्सत् श्रीहरिः

पूर्वार्द्ध

सारस्वत प्रकाशिका

अर्थात्

सारस्वत के पूर्वार्द्ध का भाषाटीका आर्य्यभाषा में

इस टीका से [illegible] भाषाटीका छोटे२ लड़कों और लड़कियों और [illegible] के नव [illegible] विद्यार्थियों और जो [illegible] के पढ़कर भूले उन लोगों और नार्मल स्कूल और अन्य देशी पाठशालाओं और सरकारी पाठशालाओं के विद्यार्थियों और पाठकों के उपकार के लिये

श्रीमत्पण्डित [illegible] जी संस्कृत अध्यापक पाठशाला गवर्नमेंट [illegible] और श्रीमत्पण्डित बटुकनाथ जी - प्रयागवासी की सहायता से दीक्षित [illegible] ने मुन्शी मोतीलाल साहब हेडमास्टर नार्मल स्कूल प्रयाग की सम्मति से

बनाई

विज्ञापन

हे महाशयो जो संस्कृत विद्या पढ़ने की रुचि और अभिलाषा रखते हो तो इस सारस्वत के सूत्र और सूत्रों के पदविभक्ति सहित और अर्थ उदाहरणसहित और शब्दों के रूप वचन आदि का पढ़ का लो

मोल प्रति पुस्तक का ...... ◇ .... ८ आना है

विद्याविलास यंत्रालय में लाला मोतीलाल के प्रबंध से आगरा में छपी

सङ्केत

सूत्रों और परिभाषा और वार्त्तिक आदि के शिरोपर अंक आदि दिये हैं वे विभक्तियों और वचन आदि के चिन्ह हैं जैसे ११ इस अंक से प्रथमाविभक्ति का एकवचन जाने और १२ इस अंक से प्रथमाविभक्ति का द्विवचन जाने और १३ इस अंक से प्रथमाविभक्ति का बहुवचन जाने और २१ इस अंक से द्वितीयाविभक्ति का एकवचन जाने ऐसे ही सप्तमीविभक्तितक के अंकों को जान लेना

क्रि० से क्रियापद

ऽ से अव्यय

ऽ से ही अ का लोप

। से पदच्छेद

कृ० से कृदंत

निवेदन

पहले यह विचार था कि सारस्वत के मूल सूत्रों की भाषा तिलक किया जाय तो इस विचार के अनुसार बहुत बातें रही जाती थीं इस कारण सारस्वत में जो परिभाषा और वार्त्तिक आदि थीं उनको भी लिखकर भाषा तिलक कर दिया है और उन का कुछ भाग बिना मूलके छोड़ दी

[illegible]

अ इ उ ण् ऋ ऌ क् एओङ् ऐऔच् अ,इ,उ,ऋ,ऌ, ये ५ [illegible] हैं अर्थात् [illegible] हैं ॥ ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः सवर्णाः ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेद के वर्ण आपस में सवर्णी हैं [illegible] जैसे अ ह्रस्व का आ दीर्घ और आ३ प्लुत सवर्णी हैं ऐसे ही इ,उ,ऋ,ऌ, को जानो एकमात्रो ह्रस्वः जिसके उच्चारण में १ के समान समय लगे वह ह्रस्व है द्विमात्रो दीर्घः जिसके उच्चारण में २ के समान समय लगे वह दीर्घ है त्रिमात्रः प्लुतः जिसके उच्चारण में ३ के समान समय लगे वह प्लुत है अर्धमात्रं व्यञ्जनम् जिसके उच्चारण में आधी मात्रा समय लगे वह व्यंजन है [illegible] इनके और भी उदात्तादि भेद हैं उच्चैरुपलभ्यमान उदात्तः ऊँचे स्वर से उच्चारण करने में जो प्रमाण प्राप्त होता है वह उदात्त है नीचैरनुदात्तः नीचे स्वर से उच्चारण करने में जो प्रमाण प्राप्त होता है वह अनुदात्त है समवृत्त्या स्वरितः सम वृत्ति से उच्चारण करने में जो प्रमाण प्राप्त होता है वह स्वरित है सानुनासिको निरनुनासिकश्च मुख और नासिका से बोला हुआ वर्ण सानुनासिक और केवल मुख से बोला जाता है वह निरनुनासिक कहाता है ए ऐ ओ औ संध्यक्षराणि एषां ह्रस्वा न सन्ति ए ऐ ओ औ ये ४ वर्ण संधि के हैं इनकी ह्रस्व संज्ञा नहीं है केवल दीर्घ हैं और अ,इ,उ,ऋ,ऌ, के १८ भेद एक २ के हैं जैसे अ के भेद १८ यह हैं ह्रस्व १ दीर्घ २ प्लुत ३ उदात्त ४ अनुदात्त ५ स्वरित ६ ह्रस्व सानुनासिक ७ ह्रस्व निरनुनासिक ८ दीर्घ सानुनासिक ९ दीर्घ निरनुनासिक १० प्लुत सानुनासिक ११ प्लुत निरनुनासिक १२ उदात्त सा-

[illegible] नुनासिक [illegible] अननुनासिक [illegible]

[illegible] अनुनासिक [illegible]

इसीप्रकार इ,उ,ऋ,लृ, के [illegible] यदि लृ [illegible]

माने [illegible] ए,ऐ,ओ,औ [illegible]

अचःस्वराः अ,इ,उ,ऋ, [illegible] स्वर कहाते हैं

और [illegible] हैं जैसे [illegible] ऋ,ॠ,लृ,ॡ,ए,ऐ,ओ,औ, ॥

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] हार को ग्रहण

करने की इच्छा से [illegible] ॥

हयवरल, ञणनङम, [illegible] जडदगब, [illegible] थ, चटतकप, शषस, [illegible] ' कखगघङ आदि वर्णों का

क्रम छोड़ हयवरल, आदि [illegible] बनाने के लिये किया है आदि

का और अंत का [illegible] प्रत्याहार बनता है जैसे अ से न तक अन् प्र-

त्याहार (अ आ इ ई उ ऊ [illegible] हयवरल [illegible] ङ म झ-

भ घढध जडदगब) कहाते हैं ऐसे ही (चटतकप) चय प्रत्याहार और

(जडदगब) जब प्रत्याहार कहाता है ऐसे ही क्रम, हस आदि जानो

प्रत्याहाराणां संख्यानियमो नास्ति प्रत्याहारों की संख्या का

नियम नहीं है ॥

हलो व्यंजनानि' ह से स तक व्यंजन कहाते हैं व्यंजनों में स्वर नहीं

होता बोलने के लिये उन में (अ) स्वर मिला लेते हैं और वह हल कहाता है

कार्य्यार्थं' प्रत्यय, आगम, आदेश, से रहित किसी कार्य के लिये उ-

श्रूयमान वर्ण इत्संज्ञक होय जैसे आर भ्रत्यय में इर, और लुट्
आगम में उट्, अलुट् आदेश में उट्, इत्संज्ञक है यस्येत्संज्ञा तस्य
लोपः जिसकी इत्संज्ञा हो तिसका लोप होवे कित् दादागमः आग-
म कित् की भांत आता है शत्रुवदादेशः आदेश शत्रु की भांत आता है
वर्णाविरोधे लोपश्च लोप रहे जो एक वर्ण का नाश करे और फिर दू-
सरे वर्ण का बाधक हो वर्णादर्शनं लोपः वर्ण का न दीखना लोप कह-
ता है प्रत्ययादर्शनं लुक् प्रत्यय का न दीखना लुक् कहाता है
हलोऽनन्तराः संयोगः स्वर के बिना दो आदि हल संयोग
कहाता है ॥
कुचुटुतुपु वर्गाः (कु) कखगघङ कवर्ग (चु) चछजझञ चवर्ग,
(टु) टठडढण टवर्ग (तु) तथदधन तवर्ग (पु) पफबभम पवर्ग कहा-
ते हैं इस सूत्र में उकार स्वर पांचवां वर्ण लेने के लिये कहा है ॥
आदेल्नामिनो गुणः नामी के स्थान में उत्पन्न अर् और अल्
अर्थात् ए और ओ अर्थात् ओ गुण कहाते हैं ऋ ॠ का अर् लृ ॡ
का अल् इ ई का ए और उ ऊ का ओ गुण होता है ॥
आरैदौ वृद्धिः आ और आर् और ऐ और औ वृद्धि कहाते हैं अ
की आ, ऋ ॠ की आर्, लृ ॡ की आल्, इ ई ए की ऐ, उ ऊ ओ की औ,
वृद्धि होती है ॥
अन्त्यस्वरादि टिः स्वरांत शब्दों का अंत का स्वर और हलंत शब्दों
का हल के आदि का स्वर और हल की टि संज्ञा होय जैसे हल में ल में
अ और मनस् में अस् की टि संज्ञा है ॥
अन्त्यात्पूर्व उपधा शब्द के केवल अंत के अक्षर से पहला स्वर

[illegible] संज्ञा होता है जैसे [illegible] में न्, से पहले [illegible] स्वर

उपधा संज्ञक होता है ॥

असंयोगादिपरोह्रस्वोलघुः [illegible] संयोग —

विसर्ग, अनुस्वार न हो तो उस ह्रस्व की [illegible] संज्ञा है [illegible] ह्रस्व

स्वर के आगे संयोग, विसर्ग, अनुस्वार हों [illegible]

है और दीर्घ भी गुरु संज्ञक होता है [illegible]

आव [illegible]

[illegible] अनुस्वार होता है [illegible]

[illegible] के

[illegible] का

[illegible] **कार शब्द के ग्रहण से के-**

[illegible]

[illegible]

कहे जैसे [illegible]

१४ स्वर हैं [illegible] अनुस्वार, विसर्ग, और

जिह्वामूलीय, **उपध्मानीय**, प्लुत, सब मिल कर ५० वर्ण हैं और [illegible]

[illegible] **उत्पन्न होता है इन अक्षरों के उच्चारण**

के स्थान हैं **जैसे** ॥

अकुहविसर्जनीयानांकंठः **अ, आ, आ३, क, ख, ग, घ, ङ, ह, और**

विसर्ग इन का कंठ स्थान है इचुयशानांतालु इ, ई, ई३, च, छ, ज,

झ, ञ, य, **श, इन का तालु स्थान है** उपूपध्मानीयानामोष्ठौ

उ, ऊ, ऊ३, **प, फ, ब, भ, म,** और उपध्मानीय इन का ओष्ठ स्थान है ॥

[illegible] ट ठ ड ढ ण, ऋ, र, ष, इनका मूर्द्धा स्थान है ॥

[illegible] लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स, इनका दंत स्थान है ॥

जि[illegible] जिह्वामूलीय का जिह्वामूल स्थान है ॥

अनुस्[illegible] है ॥

[illegible] ए, ऐ, अर्थात ए ऐ का कंठ तालु स्थान है ॥

[illegible] ओ, औ, अर्थात ओ औ का कंठ ओष्ठ स्थान है ॥

[illegible] वकार का दंत ओष्ठ स्थान है ॥

[illegible] ञ, ण, न, ङ, म इनका नासिका और [illegible] स्थान है [illegible] की अंतस्थ, शषसह की ऊष्म ≍क की जि-ह्वामूलीय ≍प की उपध्मानीय अं की अनुस्वार अः की विसर्ग संज्ञा है

[illegible] यह संज्ञा प्रक्रिया पूरी हुई अथ [illegible] संधि [illegible] ॥ अब [illegible] संधि कही जाती है ॥

[illegible] इ उ ऋ लृ को यण होय स्वर के परे जैसे कवि+आदि तिसका कव्य् आदि हुआ [illegible] वर्ण [illegible] तो कव्यादि सिद्ध हुआ ऐसे ही अति+आचार: = अत्याचार:, दधि+आदि = दध्यादि, सखि+उत्तमम् = सख्युत्तमम् प्रति+ऊह: = प्रत्यूह:, मुनि+ऋषभ: = मुन्यृषभ:, प्रति+एकं = प्र-त्येकं, अति+ऐश्वर्यं = अत्यैश्वर्यं, पचति+ओदनं = पचत्योदनं नदी+अंबु = नद्यंबु, दधि+आनय इसमें इयं स्वरे से दध्य्+आनय ऐसा हुआ ॥

[illegible] स्वर से परे [illegible] वर्जित हल [illegible] हल के परे तो [illegible] आनय ऐसा हुआ ॥

[illegible] ! [illegible] इध्य्य [illegible]

स्वरही० [illegible] सिद्ध हुआ गौरी + अत्र इयं० [illegible]

[illegible] : स्वर [illegible] दो [illegible] स्वरही०

गौर्य्यत्र सिद्ध हुआ स्वरे इत्यनुवर्त्तते [illegible]

[illegible] में जो पद और लिया [illegible]

[illegible] है मधु + अत्र ऐसा [illegible] है ॥

उवं उ, ऊ, व् को [illegible] स्वरके परे [illegible] ॥

[illegible] : स्वरही० मध्वत्र सिद्ध [illegible]

[illegible] ॥ सिद्ध + अर्थः

ऋरं ऋ, ॠ, र् को प्राप्त होय स्वरके [illegible] स्वरही०

[illegible] कस्योद्गमनं [illegible]

[illegible] सिद्धार्थः सिद्ध हुआ मातृ + अर्थः = मात्रर्थ

होतृ + आदि = होत्रादि ॥ ऌ + अनुबंधः

ऌलं ऌ, ॡ, ल् को [illegible] स्वरही० लनुबंधः, ऌ + आ-

कृतिः = लाकृतिः, ऌ + औ = लौ ॥— ने + अनं

एअय् ए, अय् होय स्वरके परे स्वर० नयनं ऐसेही [illegible]

[illegible], से + [illegible] = सयुक्ता, [illegible] ॥— नै + अकः

ऐआय् ऐ, आय् होय स्वरके परे स्वर० नायकः, विनै + अकः = वि-

नायकः, रै + ए = राये, नै + आ = नाया ॥— भो + अति

ओअव् ओ, अव् होय स्वरके परे स्वरही० भवति, गो + आ = गवा,

गो + अजिनं = गवाजिनं, पो + इत्र = पवित्र, गो + ए = गवे ॥

गवादेरवर्णागमोक्षादौ वक्तव्यः गवादि शब्दोंके अवर्णका —

[illegible] गो+ग्राह्यः [illegible]

गवाक्ष:, गो,इंद्र: = गवेंद्र:, गो+ अग्रं = गवाग्रं, गो+ अजिनं = गवाजि-

नं, स्व+ईरं = स्वैरं, अक्ष+ ऊहिणी = अक्षौहिणी, प्र+ऊढ: = प्रौ-

ढ: ॥

औ आवू औकार [illegible] जैसे पौ+ अक: = पाव-

क: तौ+इह = ताविह [illegible] = नावागत: ॥

[illegible] पदांतमें [illegible]

[illegible] = [illegible] वा तआगता, पटो+ इह = पटविह

वा पटइह, तौ+ इमौ = ताविमौ वा ताइमौ ॥

एङोतोति: [illegible] ए ओ से परे अ का लोप होय ते+अत्र =

तेत्र, पटो+ अत्र = पटोत्र, सखे+अर्प्पय = सखेऽर्प्पय ॥

सवर्णो दीर्घ: सह [illegible] सवर्णपरे दोनोंमिलकर दीर्घ होय

श्रद्धा+अत्र = श्रद्धात्र, तत्र+ आदि तत्रादि, भानु+ उदयं = भानूदयं,

अइ ए अ,आ जो इ,ई पर हों तो दोनों मिलकर ए होय जैसे

मम+इदं = ममेदं, तव+ इदं = तवेदं, पूर्ण+ इंदु: = पूर्णेंदु: ॥

हलादेरीषादौ टेर्लोपो वक्तव्य: हल आदि शब्दोंकी टि का

लोप होय ईषा आदि शब्दोंके परे जैसे हल+ ईषा = हलीषा, लांगल

+ईषा = लांगलीषा, मनस्+ ईषा = मनीषा, अद्य+ओम् = अद्योम्,

शक+अंधु: = शकंधु:, कर्क+ अंधु: = कर्कंधु:, सीमन् + अंत: =

सीमंत:, कुल+ अटा = कुलटा, पतत्+ अंजलि: = पतंजलि:

सार+ अंग: = सारंग: ॥

उ औ अ,आ जो उ,ऊ पर हों तो दोनों मिलकर औ होय चंद्र+उद

सोहर्गगश्चतुर्थोभवति जिसवर्गकाचपहोय तिसवर्गकाचौथा अक्षर होय तत्+हविः=तद्धविः, तद्हविः, वाक्+हरिः=वाग्घरिः, वाग्हरिः, अप्+हारः=अब्भारः, अब्हारः ॥

सोश्चुभिःश्चुः सकाश और तवर्गकाचवर्ग होय श और चवर्ग केयोग से कस्+छादयति=कश्छादयति, कस्+शरः=कश्शरः कस्+चरति=कश्चरति तत्+चित्रं=तच्चित्रं, तत्+च= तच्च ॥

शात् श से परे पूर्व न होय जैसे विश्+नः=विश्नः ॥

ष्टुभिःष्टुः ष और टवर्गकेयोगसे सकाष तवर्गका टवर्ग होय ॥ कस्+टीकते=कष्टीकते कस्+षष्ठः=कष्षष्ठः तत्+टीका=तट्टीका

तोर्लिलः तवर्गका ल होय ल के परे परंतु न को अनुनासिक ल होय जैसे तत्+लुनाति=तल्लुनाति, भवान्+लिखति=भवाँल्लिखति, तत्+ललाटं=तल्ललाटं, तत्+न=तन्न ॥

नषि षके परे ष्टुभिःष्टुः सूत्रकीप्राप्ति न होय भवान्+षष्ठः=भवान्षष्ठः

टोरन्त्यात् पदके अंत में टवर्ग हो और उसके परे सका तवर्ग हो तो सकोष तवर्गका टवर्ग न होय जैसे षट्+नरः अमेन ० स्वरा ० षण्नरः वा षण्णरः ० स्वर ० षड्नरः, षट्+सीदंति स्वरही ० षट्सीदंति ॥

नः सक् छते नकारांतपदके आगे सक् आगम होय छत प्रत्याहारकेपरे राजन्+चित्रं=राजन्+सक्+चित्रं हुआ ककारः कित्कार्य्यार्थः ककार कितकार्य्यार्थहै अकार उच्चारणार्थः अकार उच्चारणाके अर्थहै कित्वादंते कित्व अंत में होता है ॥ राजन्+स्+चित्रं स्तोःश्चुः ० राजन्+श्+चित्रं हुआ ॥

[illegible]

प्रत्याहारकेपरे राजंश्चित्र, भवान्+तनोति=भवाँस्तनोति, भवान्+छा

दयति=भवान्+स+छादयति स्तो:श्चु० नश्छ्वा० स्वरही० भवाँश्छादयति

११। १३ ।११। ३१ ।११। ३१ ।३१। १३।
यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्ग्रहणेनैव गृह्यंते जो आगम होते हैं

वे तद्गुणी होकर तिसके ही ग्रहणसे ग्रहण होते हैं इसकारण ऊपरके उदा

हरणोंमेंसे तक अपदांत है यशान्+सि=यशांसि, पुम्+भ्यां=पुंभ्यां

३१। ११ ।३१।
प्रेन्चकूवा नकारांत पदके आगे सकू आगम विकल्पसे होय शा

केपरे भवान्+शूरः=भवान्+च्+शूरः चपाच्छश: स्तो० स्वर०

भवाञ्छूरः, भवाञ्शूरः, ॥

१३। ५१ । ११। ७२।
ङ्णो हूस्वाड्डिः स्वरे हृस्वस्वरसे आगे पदांतमें और स्वरकेपरे

ङ्,ण्,न्, दो होयं प्रत्यङ्+इदं=प्रत्यङ्ङिदं, सुगण्+इह=

सुगण्णिह, राजन्+इदं= राजन्निदं ॥

११।
छः हृस्वस्वरसे आगे छ् दो होयं तव+छत्रं=तव+छ्+छत्रं

७२। १३। ६३।
खसेचपा झसानां झसोंके चप होयं खस प्रत्याहारकेपरे ॥

३१ ३१ ११
वर्ग्यो वर्ग्येण सवर्णः वर्गका अक्षर अपने वर्गके अक्षर से स

वर्ण होता है ऊपरके उदाहरणमें छ् चवर्गका है इसलिये छ् का

३१ ५१ ११ ११
च् हुआ स्वरही० तवच्छत्रं क्वचिद्दीर्घादपि वक्तव्यः कहीं

दीर्घस्वरसे आगे भी छ् दो होयं जैसे ह्री+छः=ह्री छ् छः खसे०

स्वर० ह्रीच्छः मले+छः=खसे० स्वर० मलेच्छः ॥

६३। ११।
मोनुस्वारः पदांत मे का अनुस्वार होय हस प्रत्याहार केपरे ॥

तम्+हसति=तंहसति, पदुम्+तृथा=पटुंतृथा ॥

१३। ७२।६३।५।
ञमायपेस्यवा अनुस्वारका ञम विकल्पसे होय यप प्रत्या-

हारके परे और जिसवर्गका यप हो उसवर्गका पांचवां अक्षर हो

य जैसे शं+तः=शान्तः, अं+कितः=अङ्कितः, अं+चितः=अञ्चितः, कुं+ठितः=कुण्ठितः, गुं+फितः=गुम्फितः, ॥

७१, '१३, अ' यवलपरे यवला वा अनुस्वार का विकल्पसे यवल के परे यवल होय सं+यंता=सँय्यंता, सं+वत्सरः=सँव्वत्सरः, यं+लोकं=यँल्लोकं, तं+लोकं=तँल्लोकं, ॥

११, ७१ ॐ छंदसि वेद में अनुस्वार का ॐ शषसह और रेफ के परे होय हं+सः=हॐसः तं+रविः=तॐरविः सं+हिता=सॐहिता ॥

इति व्यंजनसंधिः. यह व्यंजनसंधिहुई अथ विसर्गसंधिर्निरूप्यते और विसर्गसंधिकही जाती है ॥

६१, ११, विसर्जनीयस्य सः विसर्जनीयका स होय खस के परे जैसे कः+तनोति=कस्तनोति, कः+त्वं=कस्त्वं, ॥

७१, अ' शर्परे वा विसर्जनीयका विकल्पसे स होय शषस के परे वा शषस के परे शषस ही होवें कः+शेते=कश्शेते कः+षंडः=कष्षंडः कः+साधुः=कस्साधुः वा कःशेते, कःषंडः, कःसाधुः रहे

६२, १२, अ' कुप्वोः ᳵक ᳶपौ वा कवर्ग पवर्ग संबंधित विसर्जनीय का ᳵक ᳶप विकल्पसे होयं खस के परे कः+करोति कᳵकरोति विस० कस्करोति कः+पठति=कᳶपठति वा कस्पठति ६२ तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च चोर और देवता वाच्य हों तो कर पति शब्द के परे तत् और बृहत् शब्द के त का लोप होय और कर पति शब्द के सुट् आगम होय उ, ट् उच्चारण और टित्व के लिये ये जाते रहे ११, ६१ टित्वाद् आदौ टित्व से आदि में आगम होता है तत्+करः=तस्करः, बृहत्+पतिः=बृहस्पतिः, ॥

६१ । ११ । ५ । ७२
अह्नोरोरात्रिषु पदांत में अहन् शब्दकी विसर्जनीयका र् होय और रात्रि आदि गणके परे न होय जैसे अहः+पतिः = अहर्पतिः

एघ० जलतु० अहर्पतिः अहः गणाः = अहर्गणाः रात्रि आदिगणाय

ह है रात्रि, राजन्य, रजनी, रत्न, राघव, रावण, रज, रमण, रूप रथंतर, इन शब्दोंकेपरे विसर्जनीयका रेफ न होय जैसे अहः+रात्रं हवे उओ अहोरात्रं ऐसे ही और भी जाने ॥ कः+अर्थः

५१ । ७२ । ११ ।
अतोऽदुः अकार से परे विसर्जनीयका उ होय अत केपरे तपरक उओ कोर्थः देशः+अयं अओ० रसो० सन्धी० देशोऽयम् ॥

७१
हवे अ से परे विसर्जनीयका उ होय हव प्रत्याहार केपरे जैसे कः गतः = कोगतः देवः याति = देवोयाति मनः+रथः = मनोरथः ॥

५१ । ५१ । ११
आदवेलोपश्च अवर्ण से परे विसर्जनीयका लोपश्च होय अव के परे मनः+इति = मन इति **लोपशिपुनर्नसंधिः** लोपश्च करने में फिर संधि न हो वाताः+वांति = वातावांति, देवाः+अत्र = देवाअत्र

७१ । औ । ११
छंदसितुभवति लोपश्च करने में वेद में संधि होय देवाः+अत्र = देवात्र ॥

११ । ११ । ११
स्वरेयत्वंवा अआ से परे विसर्जनीयका य विकल्प से होय स्वर केपरे कः+इह = कयिह आदवे० क इह, देवाः+अत्र = देवायत्र देवाअत्र ॥

५१
भोसः भोस् भगोस् अघोस् शब्दों से परे विसर्जनीयका लोपश्च होय अब केपरे भोः+एहि = भो एहि भगोः नमस्ते = भगोनमस्ते अघोः+याहि = अघोयाहि ॥

५१ । ११
नामिनोरः नामि संज्ञक से परे विसर्जनीयका रेफ होय अव के

पर अग्निः + अत्र = अग्निरत्र भानुः + इति = भानुरिति

रेफप्रकृतिकस्यैरत्वं पदे वा रेफप्रकृति की विसर्जनीय को रेफ होय विकल्पसे रेफ के परे जैसे गीः + पतिः राद्य० गीर्पतिः ॥

र: रेफसंबंधि विसर्जनीय को रेफ होय अव के परे प्रातः + अत्र = प्रातरत्र, अंतः + गतः = अंतर्गतः पुनः + आगतः = पुनरागतः ॥

रि लोपो दीर्घश्च रेफ के परे रेफ का लोप होय और पूर्व स्वर का दीर्घ होय पुनर् + रमते = पुनारमते शुक्तिर् + रूप्यात्मना भाति = शुक्तीरूप्यात्म०

सैषाद्धसे स शब्द और एष शब्द से परे विसर्जनीय का लोप होय हस के परे सः + चरति = सचरति, सः + गतः = सगतः एषः + हसति = एषहसति

क्वचिच्चापि लोपोऽचि वेदे लोपश्च कहीं नामि से परे भी विसर्जनीय का लोप होय अच के परे भूमिः + आददे = भूमि आददे वेद में भूम्याददे सैष सिद्धरूप आगे के श्लोक में आया है सैष दाशरथी रामः सो यह दाशरथी राम है सैष राजा युधिष्ठिरः सो यह राजा युधिष्ठिर है सैष कर्णो महात्यागी सो यह कर्ण महात्यागी है सैष भीमो महाबलः सो यह भीम महाबलवान है इनमें पादपूर्ति के लिये संधि की है

वेद के प्रयोगों की विशेषता कहते हैं यदुक्तं लौकिकं कार्यं तद्वेदे बहुलं भवेत् जो सूत्र इस शास्त्र में प्रयोग सिद्धि करने के लिये कहा सो वेद में बहुल अर्थात् कहीं होता है कहीं नहीं होता है इसका उदाहरण देते हैं सेमां भूम्याददे सोषामित्यादीनामदुष्टता सः + इमां आददे० अइए स्वरही० सेमां और भूमिः + आददे क्वचिन्ना० इयं स्वरही० भूम्याददे और सा + उषां उओ स्वर० सोषां ऐसे प्रयोगों की वेद में अदुष्टता है अर्थात् दोष नहीं है क्वचित्प्रवृत्तिः

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ॥ विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ॥ कहीं संधिके नि-
षेधमें भी प्रवृत्ति अर्थात् संधिकी है जैसे सैषः इस सिद्ध प्रयोग में लो-
प शब्द फिर आइए इसकी प्रवृत्ति की है ॥१॥ कहीं संधिके करने में
संधि की अप्रवृत्ति अर्थात् संधि नहीं की जैसे भूमिः+आददे, में
नामिनोरः सूत्रकी प्राप्ति होती परंतु नहीं की ॥२॥ कहीं विभाषा अ-
र्थात् विकल्प है जैसे देवैः देवभिः ॥३॥ कहीं और ही है जैसे भूमिः
आददे में विसर्ज नीय का लोप करना और ही है ॥४॥ इस प्रकार से
पंडित बहुधा बाहुलक विधिके विधानको देखकर ४ विधका
कहते हैं वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकार ना-
शौ ॥ धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पंचविधं निरुक्तम्
वर्णका आगम १ वर्णविपर्यय २ और दो और वर्णविकार ३ और व-
र्णनाश ४ और धातुके तदर्थका अतिशय योग ५ यह पांच विधका नि-
रुक्त व्याकरणके उदाहरणों में कहा है वर्णागमो गवेंद्रादौ सिंहे व-
र्णविपर्ययः ॥ षोडशादौ विकारः स्याद्वर्णनाशः पृषोदरे ॥ गवें-
द्रादिमें वर्णागम है सिंह में वर्णविपर्यय है षोडश में वर्णविकार
है पृषोदर में वर्णनाश है वर्णविकारनाशाभ्यां धातोरतिशये-
न यः ॥ योगः स उच्यते प्राज्ञैर्मयूरभ्रमरादिषु धातुके वर्णविकार
नाशसे जो धातुके तदर्थका अतिशय होता है वह मयूर और भ्रमर
आदिमें है इति विसर्गसंधिः यह विसर्गसंधि समाप्ति हुई अथ
विभक्तिर्विभाव्यते आगे विभक्ति कही जाती है सा द्विधा सो
दो प्रकार की है स्यादिस्त्यादिश्च सि आदि और तिप आदि

विभक्त्यंतंपदं विभक्ति जिसके अंत में होवे वह पद कहाता है जै-
से रामम् और भवति तत्रस्यादि विभक्तियों को जोड़ते पहले
सि आदि विभक्ति नाम से जोड़ी जाती है ॥

अविभक्तिर्नाम विभक्ति से रहित और धातु से भिन्न और अर्थ-
वान् जो शब्द रूप है वह नाम कहाता है कृत्तद्धितसमासाश्च प्राति-
पदिकसंज्ञकाः इति केचित् कृदंत और तद्धित और समास से सिद्ध श-
ब्दों को कोई आचार्य्य प्रातिपदिकसंज्ञक कहते हैं ॥

तस्मात् सि औ जस्।१। अम् औ शस्।२। टा भ्याम् भिस्।३। ङे भ्याम्
भ्यस्।४। ङसि भ्याम् भ्यस्।५। ङस् ओस् आम्।६। ङि ओस् सुप्।७।
तिसी नाम से परे सि आदि सात विभक्तियें होवें प्रथम अकारांत पुल्लिं-
ग देव नाम से सातो विभक्तियें साधते हैं पहले प्रथमा विभक्ति के एक
वचन में देव+सि है इकार उच्चा० तो देव+स ऐसा रहा अब
सोर्विसर्गः स, र की विसर्ग होय पदांत में और आगे अवसान के परे और
धातु से कार्य के परे देवः प्रथमा के द्विवचन में देव+औ है ओ औ औ
स्वरहीं० देवौ प्रथमा के बहुवचन में देव+जस् है जकारस्येत्सं-
ज्ञायांलोपः जकार का इत् संज्ञा में लोप होय सवर्णो० स्वर० स्रो० देवाः

अकारात् जसोऽसुक् क्वचित् वक्तव्यः अ से परे जस् के कहीं
असुक् वक्तव्य है तो देव+जस्+असुक् हुआ उकक् उच्चा० जस् भी
जसी सूत्र के विशेषणार्थ है सवर्णो० स्वरहीं० स्रो० देवासः ब्राह्मणासः
द्वितीया के एकवचन में देव+अम् है ॥

अम्शसोरस्य समान से उत्तर अम् शस् के अ का लोप होय देवं
द्वितीया के द्विवचन में देव+औ है ओ औ औ स्वरहीं० देवौ द्वि-

[illegible] बहुवचन में देव+शस् है शकारोऽनुबंधः श अनुबंध है लोप होगया तो देव+अस् रहा अस्म० देव+स् रहा ॥

सो नः पुंसः पुल्लिंग समानसे उत्तर शस् के स का न होय फिर शासि शस् के परे पूर्वस्वर का दीर्घ होय देवान् प्रत्ययलोपे प्रत्यय लक्षणं न याति प्रत्यय के लोप में प्रत्यय का लक्षण नहीं जाता है ॥

यदादेशस्तद्वद्भवति जो आदेश है सो लिंग ही की भांति होता है ॥

तृतीया के एकवचन में देव+टा है ट् अनुबंध है लोप होगया तो देव+आ रहा प्रत्ययलोपेप्र० यहां आ टा के स्थान में जानो ॥

टेन अ से परे टा इन होय अदूए स्वर० स्रो० देवेन तृतीया के द्वि-वचन में देव+भ्याम् है ॥

आद्भि अ का आ होय भ के परे देवाभ्याम् तृतीया के बहु० देव+भिस्

अ भिसः अ से परे भिस् के भ का अ होय अदूए एऐऐ स्वरही० स्रो०

देवैः चतुर्थी के एकवचन में देव+ङे है ङ्‌ ङित्कार्य्यार्थ है लोप हो गया है तो देव+ए रहा ॥

ङे रक् अ से परे अक् का आगम ङे के होय कित्वा० के कित० एत्र्यय

सवर्णे० स्वर० देवाय चतुर्थी के द्विवचन में देव+भ्याम् है आद्भि

देवाभ्याम् चतुर्थी के बहुवचन में देव+भ्यस् है ॥

एस्मि बहुत्वे अ का ए होय बहुवचन में स भ के परे स्रो० देवेभ्यः

पंचमी के एकवचन में देव+ङसि है ॥

ङसिरत् अकार से परे ङसि अत् होय तपरक० सवर्णे० देवात्

पंचमी के द्विवचन में देव+भ्याम् है आद्भि देवाभ्याम् पंचमी के बहुवचन में देव+भ्यस् है एस्मि० स्रो० देवेभ्यः षष्ठी के एकवचन में देव+ङस्